• श्रीः •

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

पहिला हिस्सा

पहिला बयान

मेरे पिता ने तो मेरा नाम गदाधरसिंह रक्खा था और बहुत दिनों तक मैं इसी नाम से प्रसिद्ध भी था परन्तु समय पडने पर मैंने अपना नाम भूतनाथ रख लिया था और इस समय यही नाम बहुत प्रसिद्ध हो रहा है। आज मैं श्रीमान् महाराज सुरेन्द्रसिंहजी की आज्ञानुसार अपनी जीवनी लिखने बैठा हू, परन्तु मैं इस जीवनी को वास्तव में जीवनी के ढंग और नियम पर न लिख कर उपन्यास के ढंग पर लिखूंगा, क्योंकि यद्यपि लोगों का कथन यही है कि तेरी जीवनी से लोगो को नसीहत होगी, परन्तु ऐबो और भयानक घटनाओ से भरी हुई मेरी नीरस जीवनी कदाचित लोगो को रुचिकार न हो, उस खयाल से जीवनी का रास्ता छोड इस लेख को उपन्यास के रूप में लाकर रस पैदा करना ही मुझे आवश्यक जान पड़ा। प्रेमी पाठक महाशय, यही समझें कि किसी दूसरे ही आदमी ने भूतनाथ का हाल लिखा है, स्वयम् भूतनाथ ने नही, अथवा इसका लेखक कोई और ही है।

जेठ का महीना और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी का दिन है। यद्यपि रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है और आँखो मे ठण्ढक पहुचाने वाले चन्द्रदेव भी दर्शन दे रहे है परन्तु दिन भर की धूप और लू की बदौलत गरम भई हुई जमीन मकानो की छतें और दीवारें अभी तक अच्छी तरह ठण्ढी नही हुई। अब भी कभी कभी सहाग दे देने वाले हवा के झपेटे में गर्मी मालूम पडती है और बदन से पसीना निकल रहा है। बाग मे सैर करने वाले शौकीनो को भी पखे की जरूरत है और जगल मे भटकने वाले मुसाफिरो को भी पेडो की आड बुरी मालूम पडती है।

ऐसे समय में मिर्जापूर से बाईस कोस दक्खिन की तरफ हट कर छोटी सी पहाडी के ऊपर जिस पर बडे बडे और घने पेडो की कमी तो नही है मगर इस समय पत्तो की कमी के सबब से जिनकी खूबसूरती नष्ट हो गई है, एक पत्थर की चट्टान पर हम ढाल तलवार तथा तीर कमान लगाए हुए दो आदमियो को बैठे देखते है जिनमे से एक औरत और दूसरा मर्द है। औरत की उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी मगर मर्द की उम्र बीस वर्ष से कम मालूम नही होती। यद्यपि इन दोनो की पोशाक मामूली सादी और बिल्कुल ही साधारण ढग की है मगर सूरत शक्ल से यही जान पडता है कि ये दोनो साधारण व्यक्ति नही है बल्कि किसी अमीर बहादुर और क्षत्री खानदान के होनहार हैं। जिस तरह मर्द चपकन पायजामा कमरबन्द और मुडासा पहिरे हुए है उसी तरह औरत ने भी चपकन पायजामा कमरबन्द और मुडासे से अपनी सूरत मर्दाने ढग की बना रक्खी है। यकायकी सरसरी निगाह से देख कर कोई यह नही कह सकता कि यह औरत है, मगर हम खूब जानते है कि यह कमसिन और नौजवान लडकी है जिसकी खूबसूरती मर्दानी पोशाक पहिरने पर भी यकताई का दावा करती है, मगर जिसकी शर्मीली आखें कहे देती है कि इसमे ढिठाई और दबगता बिल्कुल नही है। इस समय ये दोनो परेशान और बदहवास है, दिन भर के चले और थके हुए है, चेहरे पर गर्द पटी है, सुस्त होकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए है, तथा

रात्रि का समय भी है, इसलिए यहाँ पर इन दोनो की खूबसूरती तथा नख-शिख का वर्णन करके हम शृंगार रस पैदा करना उचित नही समझ कर केवल इतना ही कह देना काफी समझते है कि ये दोनो सौ दो सौ खूबसूरतो में खूबसूरत है। इन दोनो की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जायगी अस्तु आइए और छिप कर सुनिए कि इन दोनो में क्या बातें हो रही है।

औरत०। वास्तव में हमलोग बहुत दूर निकल आए।

मर्द०। अब हमे किसी का डर भी नही है।

औरत०। है तो ऐसा ही परन्तु घोडो की तरफ से जरा सा खुटका होता है, क्योकि हम दोनो के मरे हुए घोडे अगर कोई जान पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रान्त में हम लोगो को खोजेगा।

मर्द०। फिर भी कोई चिन्ता नही, क्योकि उन घोडो को भी हम लोग कम से कम दो कोस पीछे छोड आए है।

औरत०। बेचारे घोडे अगर मर न जाते तो हमलोग और भी कुछ दूर आगे निकल गए होते।

मर्द०। यह गर्मी का जमाना, इतने कडाके की धूप और इस तेजी के साथ इतना लम्बा सफर करने पर भी घोडे जिन्दा रह जाय तो बडे ही ताज्जुब की बात है॥

औरत०। ठीक है, अच्छा यह बताइए कि अब हम लोगो को क्या करना होगा ?

मर्द०। इनके सिवाय और किसी बात की जरूरत नही है कि हम लोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुच। ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा, क्योकि हम लोग किसी का खून करके नही भागे हैं, न किसी की चोरी की है, और न किसी के साथ अन्याय या अधर्म करके भागे है, बल्कि एक अन्यायी हाकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिए भागे हैं। ऐसी अवस्था में किसी न्यायी राजा के राज्य में पहुच जाते ही हमारा कल्याण होगा।

जेठ का महीना और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी का दिन है। यद्यपि रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है और आँखो मे ठण्ढक पहुचाने वाले चन्द्रदेव भी दर्शन दे रहे है परन्तु दिन भर की धूप और लू की बदौलत गरम भई हुई जमीन मकानो की छतें और दीवारें अभी तक अच्छी तरह ठण्ढी नही हुई। अब भी कभी कभी सहारा दे देने वाले हवा के झपेटे मे गर्मी मालूम पडती है और बदन से पसीना निकल रहा है। बाग मे सैर करने वाले शौकीनो को भी पखे की जरूरत है और जगल मे भटकने वाले मुसाफिरो को भी पेडो की आड बुरी मालूम पडती है।

ऐसे समय मे मिर्जापूर से बाईस कोस दक्खिन की तरफ हट कर छोटी सी पहाडी के ऊपर जिस पर बडे बडे और घने पेडो की कमी तो नही है मगर इस समय पत्तो की कमी के सबब से जिनकी खूबसूरती नष्ट हो गई है, एक पत्थर की चट्टान पर हम ढाल तलवार तथा तीर कमान लगाए हुए दो आदमियो को बैठे देखते है जिनमे से एक औरत और दूसरा मर्द है। औरत की उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी मगर मर्द की उम्र बीस वर्ष से कम मालूम नही होती। यद्यपि इन दोनो की पौशाक मामूली सादी और बिल्कुल ही साधारण ढग की है मगर सूरत शक्ल से यही जान पडता है कि ये दोनो साधारण व्यक्ति नही है बल्कि किसी अमीर बहादुर और क्षत्री खानदान के होनहार है। जिस तरह मर्द चपकन पायजामा कमरबन्द और मुडासा पहिरे हुए है उसी तरह औरत ने भी चपकन पायजामा कमरबन्द और मुडासे से अपनी सूरत मर्दाने ढग की बना रक्खी है। यकायकी सरसरी निगाह से देख कर कोई यह नही कह सकता कि यह औरत है, मगर हम खूब जानते है कि यह कमसिन और नौजवान लडकी है जिसकी खूबसूरती मर्दानी पौशाक पहिरने पर भी यकताई का दावा करती है, मगर जिसकी शर्मीली आखें कहे देती है कि इसमे ढिठाई और दबगता बिल्कुल नही है। इस समय ये दोनो परेशान और बदहवास है, दिन भर के चले और थके हुए है, चेहरे पर गर्द पडी है, सुस्त होकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए है, तथा

रात्रि का समय भी है, इसलिए यहाँ पर इन दोनो की खूबसूरती तथा नख-शिख का वर्णन करके हम शृंगार रस पैदा करना उचित नही समझ कर केवल इतना ही कह देना काफी समझते हैं कि ये दोनों सौ दो सौ खूबसूरतो में खूबसूरत हैं। इन दोनो की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जायगी अस्तु आइए और छिप कर सुनिए कि इन दोनो मे क्या बातें हो रही हैं।

औरत०। वास्तव में हमलोग बहुत दूर निकल आए।

मर्द०। अब हमें किसी का डर भी नही है।

औरत०। है तो ऐसा ही परन्तु घोडो की तरफ से जरा सा खुटका होता है, क्योकि हम दोनो के मरे हुए घोड़े अगर कोई जान पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रान्त मे हम लोगो को खोजेगा।

मर्द०। फिर भी कोई चिन्ता नही, क्योकि उन घोडो को भी हम लोग कम से कम दो कोस पीछे छोड आए हैं।

औरत०। बेचारे घोडे अगर मर न जाते तो हमलोग और भी कुछ दूर आगे निकल गए होते।

मर्द०। यह गर्मी का जमाना, इतने कडाके की धूप और इस तेजी के साथ इतना लम्बा सफर करने पर भी घोडे जिन्दा रह जायं तो बड़े ही ताज्जुब की बात है!!

औरत०। ठीक है, अच्छा यह बताइए कि अब हम लोगो को क्या करना होगा?

मर्द०। इसके सिवाय और किसी बात की जरूरत नही है कि हम लोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुंचे। ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा, क्योकि हम लोग किसी का खून करके नही भागे हैं, न किसी की चोरी की है, और न किसी के साथ अन्याय या अधर्म करके भागे है, बल्कि एक अन्यायी हाकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिए भागे है। ऐसी अवस्था मे किसी न्यायी राजा के राज्य मे पहुंच जाते ही हमारा कल्याण होगा।

औरत०। निःसन्देह ऐसा ही है, फिर आपने क्या विचार किया? किसके राज्य मे जाने का इरादा है?

मर्द०। मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है, वह राजा धर्मात्मा और न्यायी है तथा उनका राज्य भी बहुत दूर नही है, यहां से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर उनकी सरहद मे पहुंच जायगे।

औरत०। वाह वाह! तो इससे बढ कर और क्या बात हो सकती है! आप यहा क्यो अटके हुए है! आगे बढ चलिए, जहां इतनी तकलीफ उठाई तहा थोडी और सही!

मर्द०। मै भी इसी खयाल मे हू मगर अपने नौकरो का इन्तजार कर रहा हू क्योंकि उन्हे अपने से मिलने के लिए यही ठिकाना बताया हुआ है।

औरत०। जब राजा सुरेन्द्रसिंह की सरहद इतनी नजदीक है और रास्ता आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था मे यहाँ ठहर कर नौकरो का इन्तजार करना मेरी राय में तो ठीक नही है।

मर्द०। तुम्हारा कहना ठीक है और नौगढ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ का जगल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीला है, सम्भव है कि रास्ता भूल जाऊ और किसी दूसरी ही तरफ जा निकलू। यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरो से भरे हुए ऐसे घने जगल में घुसना उचित नही जान पडता। मगर देखो तो सही (गर्दन उठा कर और गौर से नीचे की तरफ देख कर) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे है? मगर गिनती मे कम मालूम होते है।

औरत० (गौर से देख कर) ये तो केवल तीन ही चार आदमी है शायद कोई और हो!

मर्द०। देखो वे लोग भी इसी पहाडी के ऊपर चले आ रहे है, अगर वे कोई और है तो उनका यहां आकर तुम्हें देख लेना अच्छा न होगा इस-

लिए मैं जरा आगे बढ कर देखता हू कि कौन हैं।

इतना कह कर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ बढा जिधर से वे लोग आ रहे थे। कुछ ही दूर आगे बढने और पहाडी से नीचे उतरने पर उन लोगो का सामना हो गया। यद्यपि रात का समय था और केवल चाँदनी ही का सहारा था, तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहिचान लिया। हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगो को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन चार मालूम पडते थे वास्तव मे छ. आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लडाई के सामान से दुरुस्त थे। ढाल तलवार के, अलावे सभो के कमर में खञ्जर और हाथ मे नेजा था। उन सभो में से एक ने आगे बढ कर नौजवान से कहा, "बडी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगो के सामने चले आए। कल से हम लोग आपकी खोज मे परेशान हो रहे है बल्कि सच तो यो है कि ईश्वर ही ने हम लोगो को यहाँ तक पहुचा दिया और यहाँ आपका सामना हो गया। क्षमा कीजिएगा, आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिए हम लोग आप के साथ बेअदबी नही करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं, जिसका नमक खाते हैं। इस बात को हम लोग खूब जानते है कि आप बिल्कुल बेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है, परन्तु ...

नौजवान०। ठीक है, ठीक है, मेरे प्यारे गुलाबसिंह ! मैं तुम्हे अभी तक वैसा ही समझता हू और प्यार करता हू क्योकि तुम वास्तव मे नेक हो और मुझसे मुहब्बत रखते हो। तुम बेशक मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो, अस्तु मै खुशी से तुम्हे आज्ञा देता हू कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो, परन्तु क्षत्रियो का धर्म निबाहने के लिए मै गिरफ्तार न होकर तुमसे लड़ाई अवश्य करूगा, इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न

औरत०। नि सन्देह ऐसा ही है, फिर आपने क्या विचार किया ? किसके राज्य मे जाने का इरादा है ?

मर्द०। मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है, वह राजा धर्मात्मा और न्यायी है तथा उनका राज्य भी बहुत दूर नही है, यहाँ से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर उनकी सरहद मे पहुँच जायगे।

औरत०। वाह वाह ! तो इससे बढ कर और क्या बात हो सकती है ! आप यहा क्यो अटके हुए है ! आगे बढ चलिए, जहाँ इतनी तकलीफ उठाई तहा थोडी और सही !

मर्द०। मैं भी इसी खयाल मे हू मगर अपने नौकरो का इन्तजार कर रहा हू क्योंकि उन्हें अपने से मिलने के लिए यही ठिकाना बताया हुआ है।

औरत०। जब राजा सुरेन्द्रसिंह को सरहद इतनी नजदीक है और रास्ता आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था मे यहाँ ठहर कर नौकरो का इन्तजार करना मेरी राय में तो ठीक नही है।

मर्द०। तुम्हारा कहना ठीक है और नौगढ़ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ का जगल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीला है, सम्भव है कि रास्ता भूल जाऊ और किसी दूसरी ही तरफ जा निकलू। यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरो से भरे हुए ऐसे घने जगल में घुमना उचित नही जान पडता। मगर देखो तो सही (गर्दन उठा कर और गौर से नीचे की तरफ देख कर) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे हैं ? मगर गिनती में कम मालूम होते है।

औरत० (गौर से देख कर) ये तो केवल तीन ही चार आदमी हैं शायद कोई और हो !

मर्द०। देखो वे लोग भी इसी पहाडी के ऊपर चले आ रहे हैं, अगर वे कोई और है तो उनका यहाँ आकर तुम्हें देख लेना अच्छा न होगा इस-

लिए मैं जरा आगे बढ कर देखता हू कि कौन हैं ।

इतना कह कर वह नौजवान उठ खडा हुआ और उसी तरफ बढा जिधर से वे लोग आ रहे थे । कुछ ही दूर आगे बढने और पहाडो से नीचे उतरने पर उन लोगो का सामना हो गया । यद्यपि रात का समय था और केवल चाँदनी ही का सहारा था, तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहिचान लिया । हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगों को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है ।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन चार मालूम पडते थे वास्तव मे छः आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लडाई के सामान से दुरुस्त थे । ढाल तलवार के अलावे सभो के कमर में खन्जर और हाथ मे नेजा था । उन सभों में से एक ने आगे बढ कर नौजवान से कहा, "बडी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगो के सामने चले आए । कल से हम लोग आपको खोज मे परेशान हो रहे हैं बल्कि सच तो यो है कि ईश्वर ही ने हम लोगो को यहाँ तक पहुचा दिया और यहाँ आपका सामना हो गया । क्षमा कीजिएगा, आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिए हम लोग आप के साथ बेअदबी नही करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं, जिसका नमक खाते हैं । इस बात को हम लोग खूब जानते हैं कि आप बिल्कुल बेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है,परन्तु ...

नौजवान० । ठीक है, ठीक है, मेरे प्यारे गुलाबसिंह ! मैं तुम्हें अभी तक वैसा ही समझता हू और प्यार करता हू क्योकि तुम वास्तव मे नेक हो और मुझसे मुहब्बत रखते हो । तुम बेशक मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो, अस्तु मैं खुशी से तुम्हें आज्ञा देता हू कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो, परन्तु क्षत्रियो का धर्म निबाहने के लिए मैं गिरफ्तार न होकर तुमसे लडाई अवश्य करूगा, इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न

करना चाहिए।

गुलाब०। ठीक है, वेशक ऐसा ही चाहिए, परन्तु (कुछ सोच कर) मेरा हाथ आप के ऊपर कदापि न उठेगा। मुझे अपने जालिम मालिक की तरफ से वदनामी उठाना मजूर है परन्तु आप ऐसे वहादुर और धर्मात्मा के आगे लज्जित होना स्वीकार नही है, हाँ मैं अपने साथियो को ऐसा करने के लिए मजवूर न करूंगा, ये लोग जो चाहें करें।

यह सुनते ही गुलावसिंह के साथियों में से एक आदमी वोल उठा, "नही नही, कदापि नही, हमलोग आपके विरुद्ध कोई काम नही कर सकते और आपकी ही आज्ञापालन अपना धर्म समझते हैं। सज्जनो और धर्मात्माओ की आज्ञा पालने का नतीजा कभी वुरा नही होता!"

इसके साथ ही गुलावसिंह के वाकी साथी भी वोल उठे, "वेशक ऐसा ही है, वेशक ऐसा ही है!"

गुलाव०। (प्रसन्नता से) ईश्वर की कृपा है कि मेरे साथी लोग भी मेरी इच्छानुसार चलने के लिए तैयार है। (नौजवान से) अव आप ही आज्ञा कीजिए कि हम लोग क्या करें? क्योंकि अव भी मैं अपने को आपका दास ही समझता हू।

नौजवान०। मेरे प्यारे गुलावसिंह, शावाश! इसमे कोई सन्देह नही कि तुम्हारे ऐसे नेक और वहादुर आदमी का साथ वडे भाग्य से होता है। मैं तुम्हें अपने अधीन पाकर वहुत ही प्रसन्न था और अव भी यही इच्छा रहती है कि ईश्वर तुम्हें मेरा साथी वनावे, मगर क्या करूँ लाचार हू, क्योंकि आज मेरा वह समय नही है। आज मुसीवत के फन्दे में फँस जाने से मैं इस योग्य नही रहा कि तुम्हारे ऐसे वहादुरो का साथ . .. . (लम्वी साँस लेकर) अस्तु ईश्वर की मर्जी, जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है, कदाचित् इसमें भी मेरी कुछ भलाई ही होगी। (कुछ सोच कर) मैं तुम्हे क्या वताऊँ कि क्या करो? तुम्हारे मालिक ने वेशक धोखा खाया कि मेरी गिरफ्तारी के लिए तुम्हें भेजा, इतने दिनों तक साथ

रहने पर भी उसने तुम्हें और मुझे नही पहिचाना। मुझे इस समय कुछ भी नही सूझता कि तुम्हें क्या नसीहत करू और किस तरह उस दुष्ट का नमक खाने से तुम्हें रोकूं।

गुलाब०। (कुछ सोच कर) खैर कोई चिन्ता नही, जो होगा देखा जायगा। इस समय मैं आपका साथ कदापि न छोड़ूंगा और इस मुसीबत में आपको अकेले भी न रहने दूगा। जो कुछ आप पर बीतेगी उसे मै भी सहूगा। (अपने साथियो से) भाईयो! अब तुम लोग जहां चाहे जाओ और जो मुनासिब समझो करो, मै तो अब इनके दुःख सुख का साथी बनता हू। यद्यपि ये (नौजवान) उम्र मे मुझसे बहुत छोटे हैं परन्तु मै इन्हें अपना पिता समझता हू और पिता ही की तरह इन्हें मानता हू, अस्तु जो कुछ पुत्र का धर्म है मै उसे निबाहूगा। मै इनको गिरफ्तार करने की आज्ञा पाकर बहुत प्रसन्न था और यही सोचे हुए था कि इस बहाने से इन्हें ढूंढ निकालूंगा और सामना होने पर इनकी सेवा स्वीकार करूगा।

गुलाबसिंह की बातें सुन कर उसके साथियो ने जवाब दिया, "ठीक है, जो कुछ उचित था आपने किया परन्तु आप हम लोगो का तिरस्कार क्यो कर रहे हैं? क्या हम लोग आपकी सेवा करने योग्य नही है? या हम लोगों को आप बेईमान समझते है?"

गुलाब०। नही नही, ऐसा कदापि नही है, मगर बात यह है कि जो कोई मुसीबत में पड़ा हो उसका साथ देने वाले को भी मुसीबत झेलनी पड़ती है, अस्तु मुझ पर तो जो कुछ बीतेगा उसे झेल लूगा, तुम लोगो को जान बूझ कर क्यो मुसीबत में डालू! इसी ख्याल से कहता हू कि जहा जी मे आवे जाओ और जो कुछ मुनासिब समझो करो।

गुलाबसिंह के साथी०। नही नही, ऐसा कदापि न होगा और हम लोग आपका साथ कभी न छोडेगे। आप आज्ञा दें कि अब हम लोग क्या करें।

गुलाब०। (कुछ सोच कर) अच्छा, अगर तुम लोग हमारा साथ देना ही चाहते हो तो जो कुछ हम कहते है उसे करो। यहां से इसी समय चले

आप लोगो की गिरफ्तारी का काम मेरे सुपुर्द किया तो मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ और ..

गुलाबसिंह अपनी बात पूरी न करने पाये थे कि लगभग चालीस पचास गज की दूरी पर से सीटी बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनो चौंक पड़े और उसी तरफ देखने लगे। बेचारी इन्दु को दुश्मन का ध्यान आ गया और वह डरी हुई आवाज से बोली, "यहा तक भाग आने पर भी हम लोगो का गुटका न गया, इसी से मै कहती थी कि जहा तक जल्द हो सके नौगढ की सरहद में हमे पहुच जाना चाहिये।"

गुलाब०। (इन्दु से) डरो मत, हम दोनो क्षत्रियो के रहते किसकी मजाल कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ पहुचा सके। इसके अतिरिक्त इस बात को भी समझ रक्खो कि आज दिन सिवाय उस बेईमान राजा के और कोई तुम्हारा दुश्मन नही है और उसकी तरफ से इस काम के लिए मै ही भेजा गया हू, ऐसी अवस्था में किसी वास्तविक दुश्मन का ध्यान लाना वृथा है, हा चोर डाकू मे से यदि कोई हो तो मै नही कह सकता।

इन्दु०। खैर पेडो की आड में तो हो जाइए।

गुलाब। हा इसके लिए कोई हर्ज नही।

इतने ही में पुन सीटी की आवाज आई, मगर अबकी दफे की आवाज कुछ अजीब ढग की थी। मालूम होता था कि कोई बधे हुए इशारे के साथ भिरनी की आवाज देकर सीटी बुला रहा है। इस आवाज को सुन कर गुलाबसिंह हस पडा और इन्दु तथा प्रभाकरसिंह की तरफ देख के बोला, "बस मालूम हो गया, डरने की कोई जरूरत नही, क्योंकि यह मेरे एक दोस्त की बजाई हुई सीटी है। मैं अभी जरूरी बातो से छुटी पा कर थोडी ही देर में आप लोगो से कहने वाला था कि यहा मेरे एक दोस्त का मकान है, जिनसे मिल कर आप बहुत प्रसन्न होगे और उनसे आपको सहायता भी पूरी पूरी मिल सकती है। मै अब इस सीटी का जवाब देता हू। बहुत ही अच्छा हुआ जो अकस्मात वे खुद यहा आ पहुँचे। मालूम होता है कि मेरा यहा

आना उन्हें मालूम हो गया।"

इतना कह कर गुलावसिंह ने भी कुछ अजीव ढग की सीटी बजाई अर्थात् उस सीटी का जवाव दिया।

प्रभा०। भला अपने इस अनूठे दोस्त का नाम तो वता दो?

गुलाव०। आज कल इन्होंने अपना नाम भूतनाथ रख छोड़ा है।

प्रभा०। (कुछ सोच कर) यह नाम तो कई दफे मेरे कानो मे पड़ चुका है और एक दफे ऐसा भी सुन चुका हू कि इस नाम का एक आदमी वड़ा ही भयानक है जिसके रहन सहन का किसी को कुछ पता नही लगता।

गुलाव०। ठीक है, आपने ऐसा ही सुना होगा, परन्तु वह केवल दुष्टो और पापियो के लिए भयानक है . ..

गुलावसिंह इससे ज्यादे कुछ कहने न पाया था कि सीटी वजाने वाला अर्थात् भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा। प्रभाकरसिंह को सलाम करने वाद भूतनाथ गुलावसिंह के गले मिला और इसके वाद चारो आदमी पत्थर की चट्टानो पर बैठ कर इस तरह वातचीत करने लगे—

गुलाव०। (भूतनाथ से) यहाँ यकायक आपका इस तरह आ पहुंचना वड़े आश्चर्य की वात है!!

भूतनाथ०। आश्चर्य काहे को है। यहाँ तो मेरा ठिकाना ही ठहरा, या यो कहिये कि यह दिन रात का मेरा रास्ता ही है।

गुलाव०। ठीक है, मगर फिर भी आपका घर यहाँ से आधे घण्टे की दूरी पर होगा ऐसी अवस्था मे क्या जरूरी है कि आप दिन रात इसी पहाड़ी पर दिखाई दें?

भूत०। (हस कर) हां सो तो सच है, मगर आप जो यहाँ आ पहुँचे तो फिर क्या किया जाय, आखिर मुलाकात करना भी तो जरूरी ठहरा!

गुलाव०। (हँसी के साथ) वस तो सीधे यही क्यो नही कहते कि मेरा यहाँ आना आपको मालूम हो गया।

भूत०। वेशक आपका आना मुझे मालूम हो गया वल्कि और भी कई

बातें मालूम हुई हैं जिनसे आप लोगों को होशियार कर देना जरूरी है। (प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर) अभी तक दुश्मनो से आपका पीछा नही छूटा, खाली गुलाबसिंह ही आपकी गिरफ्तारी के लिये नही भेजे गये बल्कि इनको भेजने के बाद आपके राजा साहब ने और भी बहुत से आदमी आप लोगो को पकडने के लिये भेजे जो इस समय इस पहाडी के इधर उधर आ गये है और आपके आदमियो को भी उन लोगो ने गिरफ्तार कर लिया है जिनका शायद आप इन्तजार करते होगे।

प्रभा०। (ताज्जुब में आकर) आपको जुबानी तो बहुत सी बातें मालूम हुई! मुझे इन सब की कुछ भी खबर न थी। आप तो इस तरह बयान कर रहे हैं जैसे कोई जादूगर आईने के अन्दर जमाने भर की हालत देख देख कर सभा मे बयान करता हो।

गुला०। यही तो इनमें एक अनूठी बात है जिससे बडे बडे नामी ऐयार दग रहा करते हैं। इनसे किसी भेद का छिपा रहना बहुत ही कठिन है। (भूतनाथ से) अच्छा तो मेरे प्यारे दोस्त! मैं प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को आपके सुपुर्द करता हू। जिसमे इनका कल्याण हो सो कीजिए। यह बात आपसे छिपी हुई नही है कि मै इन्हें कैसा मानता हू।

भूत०। मै सब जानता हू और इसीलिए यहा आया भी हू, अस्तु अब विशेष बातचीत करने का मौका नही, आप उठिये और मेरे पीछे पीछे आइए।

प्रभा०। (उठते हुए) मुझे अपने लिए कुछ भी फिक्र नहीं है, केवल बेचारी इन्दु के लिए मुझे नामर्दो की तरह भागने और अदने अदने आदमियो मे छिप कर चलने

भूत०। (बात काट कर) मैं खूब जानता हू, मगर क्या कीजिएगा, समय पर सब कुछ करना पडता है, आख रहते भी टटोलना पडता है।

सब कोई उठ कर भूतनाथ के पीछे पीछे रवाना हुए।

जो कुछ हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं इसमें कई घण्टे गुजर गये।

अब पिछले पहर की रात बीत रही है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, इन चारो के पैरो तले दबने वाले सूखे पत्तो की चरमराहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नही देती। भूतनाथ इन तीनो को साथ लिए हुए एक अनूठे और अनजान रास्ते से बात की बात में पहाडी के नीचे उतर आया और इसके बाद दक्षिण की तरफ जाने लगा। जगल ही जगल लगभग आधा कोस के जाने बाद ये लोग पुन. एक पहाड के नीचे पहुचे। इस जगह का जगल बहुत ही घना तथा रास्ता घूमघुमौवा और पथरीला था। भूतनाथ इस तरह घूमता और चक्कर देता हुआ पेचीली पगडण्डियो पर जाने लगा कि कोई अनजान आदमी उसकी नकल नही कर सकता था, अथवा यो समझना चाहिये कि भूतनाथ के मकान का रास्ता ही ऐसा पेचीला और भयानक था कि एक दो दफे का जानकार आदमी भी धोखे में आकर भटक सकता था, किसी अनजान का जाना तो बहुत ही कठिन बात है।

कुछ ऊपर चढने के बाद घूमता फिरता भूतनाथ एक ऐसी जगह पहुचा जहा पत्थरो के बडे बडे ढोको के अन्दर छिपी हुई एक गुफा थी। इन तीनो को लिए हुए भूतनाथ उस गुफा के अन्दर घुसा। आगे आगे भूतनाथ, उसके पीछे गुलाबसिंह, उसके बाद इन्दुमति और सबके पीछे प्रभाकरसिंह जाने लगे। कुछ दूर गुफा के अन्दर जाने बाद भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसकी रोशनी के सहारे अपने साथियो को ले जाने लगा। लगभग पचीस गज के जाने बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् एक रास्ता सीधी तरफ चला गया था, दूसरा बांई तरफ, और तीसरी सुरग दाहिनी तरफ चली गई थी, तथा चौथा रास्ता वह था जिधर से वे आये थे। यहा तक तो रास्ता खुलासा था मगर आगे का रास्ता बहुत ही बारीक और तग था जिसमें दो आदमी बराबर से मिल कर नही चल सकते थे।

यहां पर आकर भूतनाथ अटक गया और मोमबत्ती की रोशनी में आगे की तीनो सुरङ्गो को बता कर अपने साथियो से बोला, "हमारे मकान

में जाने वाले को इस दाहिनी तरफ वाली सुरंग मे घुसना चाहिए । सामने अथवा बाँई तरफ वाली सुरग में जाने वाला किसी तरह जीता नही बच सकता ।"

इतना कह कर भूतनाथ दाहिनी तरफ वाली सुरग में घुसा और कुछ दूर जाने बाद उसने मोमबत्ती बुझा दी ।

लगभग दो सौ कदम चले जाने के बाद यह सुरग खतम हुई और इसका दूसरा मुहाना नजर आया । सबके पहिले भूतनाथ सुरग से बाहर हुआ, उसके बाद गुलाबसिंह और उसके पीछे इन्दुमति बाहर हुई, मगर प्रभाकरसिंह न निकले । तीनो आदमी घूम कर उनका इन्तजार करने लगे कि शायद पीछे रह गए हो मगर कुछ देर तक इन्तजार करने पर भी वे नजर न आये । इन्दुमति का कलेजा उछलने लगा, उसकी दाहिनी भुजा फडक उठी, और उसकी आखो मे आसू डबडबा आये । भूतनाथ ने इन्दुमति और गुलाबसिंह को कहा, "तुम जरा इसी जगह दम लो मै सुरग में घुम कर प्रभाकरसिंह का पता लगाता हू ।" इतना कह कर भूतनाथ पुन उसी सुरग में घुस गया ।

दूसरा बयान

प्रभाकरसिंह पीछे पीछे चले आते थे, यकायक कैसे और कहां गायब हो गये ? क्या उस सुरग में कोई दुश्मन छिपा हुआ था जिसने उन्हें पकड लिया ? या उन्होने खुद हमें धोखा देकर हमारा साथ छोड दिया ? इत्यादि तरह तरह की बातें सोचती हुई इन्दु बहुत ही परेशान हुई, मगर इस आशा ने कि अभी अभी भूतनाथ उनका पता लगा के सुरग से लौटता ही होगा, उसे बहुत कुछ सम्हाला और वह एक दम सुरग की तरफ टकटकी लगाये खडी देखती रही, परन्तु थोडी ही देर में उसकी यह आशा भी जाती रही जब उसने भूतनाथ को अकेले ही लौटते देखा और दु ख के साथ भूतनाथ ने बयान किया कि 'उनसे मुलाकात नही हुई । मेरी समझ में नही आता कि क्या भेद है और उन्होने हमारा साथ क्यो छोडा ? क्योकि अगर किसी

छिपे हुए दुश्मन ने हमला किया होता तो कुछ मुह से आवाज तो आई होती या चिल्लाते तो सही !!

गुलाब० । नही भूतनाथ ऐसा तो नही हो सकता ! प्रभाकरसिंह पर हम भागने का इलजाम तो नही लगा सकते ।

भूत० । जी तो मेरा भी नही चाहता कि उनके विषय में मै ऐसा कहू परंतु घटना ऐसी विचित्र हो गई है कि मै किसी तरफ अपनी राय पक्की कर नही सकता । हाँ इन्दुमति कदाचित् इस विषय मे कुछ कह सकती हो !

इतना कह कर भूतनाथ ने इन्दु की तरफ देखा मगर इन्दु ने कुछ जवाब न दिया, सिर झुकाये जमीन को देखती रही, मानो इसने कुछ सुना ही नही । अबकी दफे गुलाबसिंह ने उसे सम्बोधित किया जिससे वह चौकी और एकदम फूट फूट कर रोने और कहने लगी, "बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी ! मालूम हो गया कि मेरी बदकिस्मती मेरा साथ न छोडेगी । मै व्यर्थ ही आशा में पड कर दु खी हुई और उन्हे भी दु ख दिया । मेरे ही लिए उन्हें इतना कष्ट भोगना पडा और मुझी अभागिन के कारण उन्हे जंगल की खाक छाननी पडी । हाय ! क्या अब मै पुन इस दुनिया में रह कर उनके दर्शन की आशा कर सकती हू ? क्यो न इसी समय अपने दु खान्त नाटक का अन्तिम पर्दा गिरा कर निश्चिन्त हो जाऊँ ?"

इत्यादि इसी ढंग की बातें करती हुई इन्दु प्रलापावस्था को लाँघ कर बेहोश हो गई और जमीन पर गिर पडी ।

गुलाबसिंह और भूतनाथ को उसके विषय में बडी चिन्ता हुई और वे लोग उसे होश में लाकर समझाने बुझाने तथा शान्त करने की चिन्ता करने लगे ।

भूतनाथ का यह स्थान कुछ विचित्र ढंग का था । इसमे भूतनाथ की कोई कारीगरी न थी, इसे प्रकृति ही ने कुछ अनूठा और सुदर बनाया हुआ था । इसके विषय में अगर भूतनाथ की कुछ कारीगरी थी तो केवल इतनी ही कि उसने इसे खोज निकाला था, जिसका रास्ता बहुत ही कठिन

श्रौर भयानक था। जिस जगह इन्दुमति भूतनाथ श्रौर गुलाबसिंह खडे हैं वहा से दिन के समय यदि श्राप श्राख उठा कर चारो तरफ देखिये तो श्रापको मालूम होगा कि लगभग चौदह या पद्रह विगहे के चौचक जमीन, चारो तरफ के ऊँचे ऊँचे श्रौर सरसब्ज पहाडो से सुन्दर श्रौर सोहावने सरोवर के जल की तरह घिरी हुई है। जिस तरह चारो तरफ के पहाडो पर खुशरग फूल पत्तो की वहुतायत दिखाई दे रही है उसी तरह यह जमीन भी नम घास की वदौलत सब्ज मखमली फर्श का नमूना वन रही है श्रौर जगह जगह पर पहाड से घिरे हुए छोटे छोटे चश्मे भी वह रहे हैं। यद्यपि श्राजकल पहाडो के लिये सरसब्जी का मौसिम नही ह मगर यहा पर कुछ ऐसी कुदरती तरावट है कि जिसके सवव से 'पतझड' के मौसिम का कुछ पता नही लगता, यो समझ सकते हैं कि वरसात के मौसिम मे श्राजकल से कही वढ चढ कर खूवी खूवसूरती श्रौर सरसब्जी नजर श्राती होगी।

इस स्थान मे किसी तरह की इमारत वनी हुई न थी मगर चारो तरफ के पहाडो में सुन्दर श्रौर सुहावनी गुफाश्रो श्रौर कन्दराश्रो की इतनी वहुता-यत थी कि हजारो श्रादमी वडी खुशी श्रौर श्राराम के साथ यहा गुजारा कर सकते थे। इन्ही गुफाश्रो में भूतनाथ तथा उसके तीस चालीस सगी साथियो का डेरा था श्रौर इन्ही गुफाश्रो मे उसके जरूरत की सव चीजें श्रौर हर्वे इत्यादि रहा करते थे, तथा उसके पास जो कुछ दौलत थी वह भी कही इन्ही जगहो मे होगी, जिसका ठीक ठीक पता उसके साथियो को भी न था। भूतनाथ का कथन है कि ऐसे ऐसे कई स्थान उसके कब्जे मे हैं श्रौर इस वात का कोई निश्चय नहीं है कि कव या कितने दिनो तक वह किस स्थान मे अपना डेरा रखता है या रक्खेगा।

सुवह की सुफेदी श्रच्छी तरह फैल चुकी थी जव भूतनाथ श्रौर गुलाव सिंह के उद्योग से इन्दुमति होश में श्राई। यद्यपि वह खुद इस खोह के वाहर होकर प्रभाकरसिंह की खोज मे जान तक देने के लिए तैयार थी श्रौर ऐसा करने के लिए वह जिद्द भी कर रही थी मगर भूतनाथ श्रौर गुलावसिंह ने

उसे वहुत समझा बुझा कर ऐसा करने से वाज रक्खा और वादा किया कि वहुत जल्द उनका पता लगा कर उनके दुश्मनो को नीचा दिखाएँगे।

ये सव बातें हो ही रही थी कि भूतनाथ के आदमी गुफाओ और कन्दराओ में से निकल कर वहाँ आ पहुँचे जिन्हें भूतनाथ ने अपनी ऐयारी भाषा मे कुछ समझा बुझा कर विदा किया, इसके वाद एक स्वच्छ और प्रशस्त गुफा मे जो उसके खास डेरे के बगल मे थी इन्दुमति का डेरा दिला कर और गुलावसिंह को उसके पास छोड कर वह भी उन दोनो से विदा हुआ और अपने एक शागिर्द को साथ लेकर उसी सुरग की राह, अपनी इस दिलचस्प पहाडी के वाहर हो गया।

जव भूतनाथ सुरंग के वाहर हुआ तो सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उसे जरूरी कामो अथवा नहाने धोने खाने पीने की कुछ भी फिक्र न थी, वह केवल प्रभाकरसिंह का पता लगाने की धुन मे था।

यह वह जमाना था जव चुनार की गद्दी पर महाराज शिवदत्त को वैठे दो वर्ष का समय वीत चुका था। उसकी ऐयाशी की चर्चा घर घर में फैल रही थी और वहुत से नालायक तथा लुच्चे शोहदे उसकी जात से फायदा उठा रहे थे। उधर जमानिया मे दारोगा साहव की वदौलत तरह तरह की साजिशें हो रही थी और उनकी कुमेटी का दौरदौरा खूव अच्छी तरह तरक्की कर रहा था* अस्तु इस समय खडे होकर सोचते हुए भूतनाथ का ध्यान एक दफे जमानिया की तरफ और फिर दूसरी दफे चुनारगढ की तरफ गया।

सुरंग से वाहर निकल कर एक घने पेड के नीचे भूतनाथ वैठ गया और उसने अपने शागिर्द से जिसका नाम भोलासिंह था कहा -

भूत०। भोलासिंह, मुझे इस वात का शक होता है कि किसी दुश्मन ने इस खोह का रास्ता देख लिया और मौका पाकर उसने प्रभाकरसिंह को पकड लिया है।

---

* इसका खुलासा हाल 'चन्द्रकान्ता सन्तति' मे लिखा जा चुका है।

आज भूतनाथ ने उसे यह भी बता दिया था कि जिस समय प्रभाकरसिंह हमारे साथ से गायब हुए हैं उस समय उनकी पोशाक फलाने ढग की थी तथा उनके पास अमुक अमुक हर्बे थे। इन सब कारणो से भोलासिंह को उनके पहिचानने में किसी तरह की दिक्कत न हुई और वह उन्हें ऐसी अवस्था में पडे हुए देखते ही चौंक पडा। वह उनके पास बैठ गया और गौर से देखने लगा कि क्या उन्हें किसी तरह की चोट आई है या कोई आदमी जान से मार कर छोड गया है। किसी तरह की चोट का पता तो न लगा मगर इतना मालूम हो गया कि मरे नही हैं बल्कि बेहोश पडे हैं।

भोलासिंह ने अपने ऐयारी के बटुए मे से लखलखा निकाला और सुँघाने लगा। थोडी ही देर मे प्रभाकरसिंह होश में आ गए और उन्होने अपने सामने एक देहाती ब्राह्मण को बैठे देखा।

प्रभा०। आप कौन हैं ? कृपा कर अपना परिचय दीजिए। मैं आपका बडा ही कृतज्ञ हू क्योकि आज नि सन्देह आपने मेरी जान बचाई।

भोला०। मैं एक गरीब देहाती ब्राह्मण हूँ, इस राह से जा रहा था कि यकायक आपको इस तरह पडे हुए देखा, फिर जो कुछ बन सका किया।

प्रभा०। (सिर हिला कर) नही कदापि नही, आप ब्राह्मण भले ही हो परन्तु देहाती और गरीब नही हो सकते, आप जरूर कोई ऐयार हैं।

भोला०। यह शक आपको कैसे हुआ ?

प्रभा०। यद्यपि मैं ऐयारी नही जानता परन्तु ऐसे मौके पर आपको पहिचान लेना कोई कठिन काम न था, क्योकि आपने बहुत उम्दा लखलखा सुघाकर मेरी बेहोशी दूर की है जिसकी खुशबू अभी तक मेरे दिमाग में गूज रही है। क्या कोई आदमी जो ऐयारी नही जानता हो ऐसा लखलखा बना सकता है ! आप ही बताइए ?

भोला०। आपका कहना ठीक है मगर मैं

प्रभा०। (बात काट कर) नही नही, इसमें कुछ सोचने और बात बनाने की जरूरत नही है, मैं आपसे मिल कर बडा प्रसन्न हुआ क्योकि मुझे

निश्चय है कि आप जरूर मेरे दोस्त भूतनाथ के ऐयार है जिनसे सिवाय भलाई के बुराई की आशा हो ही नही सकती।

भोला०। (कुछ सोच कर) बात तो बेशक ऐसी ही है, मैं जरूर भूतनाथ का ऐयार हू और वे आपका पता लगाने के लिए गए हैं मगर यह तो बताइए कि आप यकायक गायब क्यो हो गए और आपकी ऐसी दशा किसने की है?

प्रभा०। मै यह सब हाल तुमसे बयान करूंगा और यह भी बताऊंगा कि क्योकर मेरी जान बच गई, मगर इस समय नहीं क्योकि दुश्मनो के हाथ से तकलीफ उठाने के कारण मैं बहुत ही कमजोर हो रहा हू और अब मुझमें ज्यादा बात करने की भी ताकत नही है, अस्तु जिस तरह हो सके मुझे अपने डेरे पर ले चलो, वहा सब कुछ सुन लेना और उसी समय इन्दुमति तथा गुलाबसिंह को भी मेरा हाल मालूम हो जायगा। यद्यपि मुझमें चलने की ताकत नही है मगर तुम्हारे मोढे का सहारा लेकर धीरे धीरे वहा तक पहुच ही जाऊंगा।

भोला०। अच्छी बात है, मै तो आपको अपनी पीठ पर लाद कर भी ले जा सकता हू।

प्रभा०। ठीक है मगर इसकी कोई जरूरत नही है, अच्छा अब अपना नाम तो बता दो।

भोला०। मेरा नाम भोलासिंह है।

इतना कह के भोलासिंह उठ खडा हुआ और उसने हाथ का सहारा देकर प्रभाकरसिंह को भी उठाया। वह बहुत ही सुस्त और कमजोर मालूम हो रहे थे इसलिये भोलासिंह उन्हें टेकता और सहारा देता हुआ बडी कठिनता से सुरग के मुहाने पर ले आया। वहा पर प्रभाकरसिंह ने बैठ कर कुछ देर तक सुस्ताने की इच्छा प्रकट की अस्तु उन्हें बैठा कर भोलासिंह भी उनके पास बैठ गया। इस समय दिन पहर भर के लगभग रह गया होगा।

आह! यहीं पर भोलासिंह ने बेढब धोखा खाया। यह जो प्रभाकरसिंह

उसके साथ भूतनाथ की घाटी में जा रहे हैं वह वास्तव में प्रभाकरसिंह नहीं हैं बल्कि उनके दुश्मनों में से एक ऐयार है जिसका खुलासा हाल आगे के किसी बयान में मालूम होगा, वह उसे तथा भूतनाथ और उसके ऐयारों को धोखा दिया चाहता है और इन्दुमति पर भी कब्जा कर लेने की धुन में है। यद्यपि भोलासिंह भी ऐयार है और बुद्धिमान है मगर साथ ही इसके उसे भाग का बहुत शौक है। सुबह दोपहर और शाम तीनों वक्त छाने बिना उसका जी नहीं मानता। इतने पर भी बस नहीं, कभी कभी वह नशे की कमी समझ कर दो चार दम गाजे के भी लगा लिया करता है और यही सबब है कि वह कभी कभी बेढब धोखा खा जाता है। मगर यह ऐयार भी बडा ही मक्कार है जो उसके साथ जा रहा है, देखा चाहिए दोनों में क्योंकर निपटती है। भोलासिंह तो खुश है कि हमने प्रभाकरसिंह को खोज निकाला, और वह ऐयार सोचता है कि अब इन्दुमति पर कब्जा करना कौन बडी बात है।

कुछ देर के बाद दोनों आदमी उठ खडे हुए और भोलासिंह उस नकली प्रभाकरसिंह को साथ लिए हुए सुरग के अन्दर चला गया।

तीसरा बयान

बेचारी इन्दुमति बडे ही सकट में पड गई है। प्रभाकरसिंह का इस तरह यकायक गायब हो जाना उसके लिए बडा ही दुख दायी हुआ। इस समय उसके आगे दुनिया अन्धकार हो रही है। उसे कही भी किसी तरह का सहारा नही सूझता। उसकी समझ में कुछ भी नही आता कि अब उसका भविष्य कैसा होगा। उसे न तो तनोबदन की सुध है और न नहाने धोने की फिक्र। वह सिर झुकाए अपने प्यारे पति की चिन्ता में डूबी हुई है। गुलाबसिंह उसके पास बैठे हुए तरह तरह की बातों से उसे सन्तोष दिलाना चाहते हैं मगर किसी तरह भी उसके चित्त को शान्ति नही होती और वह अपने मन की दो चार बातें कह कर चुप हो जाती है। हा जब जब उसके कान में ये शब्द पड जाते हैं कि 'भूतनाथ का उद्योग कदापि

वृथा नहीं हो सकता, वह जरूर प्रभाकरसिंह को खोज निकालेंगे और यहाँ अपने साथ ले कर ही आवेंगे।' तब तब वह चौंक पड़ती है। आशा के फेर में पड़ कर उसका ध्यान सुरंग के मुहाने की तरफ जा पड़ता है और कुछ देर के लिये उधर ही की टकटकी बंध जाती है।

इस बीच में इन्दु ने कई दफे गुलाबसिंह से कहा, "तुम मुझे साथ लेकर इस सुरंग के बाहर निकलो, मैं खुद मर्दाना भेष बना कर उनका पता लगाऊँगी।" मगर गुलाबसिंह ने ऐसा करना स्वीकार न किया जिससे उसका चित्त और भी दुःखी हो गया और उसने रोते ही कलपते बची हुई रात और अगला दिन बिता दिया। अन्त में दिन बीत जाने पर सन्ध्या के समय जब सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे लाचार होकर गुलाबसिंह ने इन्दु से वादा किया कि 'अच्छा अगर कल तक भूतनाथ लौट कर न आ जायगे तो मैं तुम्हें साथ लेकर सुरंग के बाहर निकल चलूंगा और फिर जैसा तुम कहोगी वैसा ही करूंगा।'

गुलाबसिंह के इस वादे से इन्दु को कुछ थोड़ी सी ढाढ़स मिल गई और उसने साहस करके अपने को सम्हाला। इसके बाद गुलाबसिंह से बोली कि 'इस समय मैं स्नान इत्यादि तो कुछ भी न करूंगी हां यदि तुम आज्ञा दो तो मैं थोड़ी देर के लिए नीचे उतर कर मैदान में टहलूं और कुछ दिल बहलाऊं।" गुलाबसिंह ने उसकी इस बात को भी गनीमत समझा और घूमने फिरने की इजाजत दे दी।

इन्दुमति का घूमने फिरने के लिए गुलाबसिंह से आज्ञा ले लेना केवल इसी अभिप्राय से न था कि वह अपना दिल बहलावे बल्कि उसका असल मतलब यह था कि वह अकेले में बैठ कर या घूम फिर कर इस विषय पर विचार करे कि अब उसे क्या करना चाहिये क्योंकि वह गुलाबसिंह की समझाने बुझाने वाली बातों से दुःखी हो गई थी। उनका हरदम पास बैठे रह कर दिलासा देना या ढाढ़स बंधाना उसे बहुत बुरा मालूम हुआ और इस बहाने से उसने अपना पीछा छुड़ाया।

उदास और पति की जुदाई से व्याकुल इन्दुमति गुलावसिंह के पास से उठी और धीरे धीरे चल कर नीचे वाले सरसब्ज मैदान में पहुंच कर टहलने लगी। उधर गुलावसिंह भी दिन भर का भूखा प्यासा जरूरी कामो से निपटने और कुछ खाने पीने की फिक्र मे लगा।

धीरे धीरे घूमती फिरती इन्दुमति उस सुरग के मुहाने के पास आ पहुंची जो यहा आने का रास्ता था और पहाडी के साथ एक पत्थर की साफ चट्टान पर बैठ कर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसका मुह सुरग की तरफ था और इस आशा से वह वरावर उसी तरफ देख रही थी कि प्रभाकरसिंह को लिए हुए भूतनाथ अब आता ही होगा। उसी समय नकली प्रभाकरसिंह को लिए हुए भोलासिंह वहा आ पहुंचा और सुरग के वाहर निकलते ही इदु की निगाह उन पर पडी तथा उन दोनो ने भी इन्दु को देखा।

इस समय भोलासिंह अपनी असली सूरत में था और उसे भूतनाथ के साथ जाते हुए इन्दु ने देखा भी था इसलिए वह जानती थी कि वह भूतनाथ का ऐयार है अस्तु निगाह पडते ही उसे विश्वास हो गया कि भूतनाथ ने मेरे पति को भोलासिंह के साथ यहा भेज दिया है और पीछे पीछे वह (भूतनाथ) खुद भी आता होगा।

नकली प्रभाकरसिंह और भोलासिंह सुरग से निकल कर पाच कदम आगे न वढे होगे कि प्रभाकरसिंह को देखते ही इन्दुमति पागलो की तरह दौडती हुई उनके पहुंची और उनके पैरो पर गिर पडी।

हाय! वेचारी इन्दु को क्या खवर थी कि यह वास्तव में मेरा पति नही है वल्कि कोई मक्कार उनकी सूरत वना मुझ धोखा देने के लिए यहा आया है। तिस पर भोलासिंह के साथ रहने से उसे इस वात पर शक करने का मौका भी न मिला। वह उसे अपना पति ही समझ कर उसके पैरो पर गिर पडी और वियोग के दु ख को दूर करती हुई प्रसन्नता ने उसे गदगद कर दिया। कण्ठ रुद्ध हो जाने के कारण वह कुछ वोल न सकी, केवल गरम

गरम आँसू गिराती रही। भोलासिंह भी चुपचाप खड़ा आश्चर्य के साथ उसकी इस अवस्था को देखता रहा।

नकली प्रभाकरसिंह ने इन्दुमति से कुछ न कह कर भोलासिंह से कहा, "भाई भोलासिंह, अब तो मैं बिल्कुल ही थक गया हूं। मेरी कमजोरी अब मुझे एक कदम भी आगे नही चलने देती। इन्दु से मिलने का उत्साह मुझे यहाँ तक साहस देकर ले आया यही गनीमत है नहीं दुश्मनो के दिए हुए जहर की बदौलत मैं बिल्कुल ही कमजोर हो गया हूं। इत्तिफाक की बात है कि इन्दु मुझे इसी जगह मिल गई। अब मैं कुछ देर तक सुस्ताए बिना एक कदम भी आगे नही चल सकता अस्तु तुम जाओ गुलाबसिंह को भी खुशखबरी देकर इसी जगह बुला लाओ तब तक मैं भी अच्छी तरह आराम कर लूं।"

"बहुत अच्छा !!" कह कर भोलासिंह वहाँ से चला गया। यहा से गुलाबसिंह का डेरा सैकडो कदम की दूरी पर था। तमाम मैदान पार करने के बाद पहाडो पर चढ कर वह गुफा थी जिसमें गुलाबसिंह का डेरा था, अस्तु वहा तक जाने और आने में घडी भर से भी ज्यादा देर लग सकती थी तथापि भोलासिंह दौडा दौडा जाकर गुलाबसिंह से मिला और उन्हें प्रभाकरसिंह के आने की खुशखबरी सुनाई। उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकरसिंह से मिलने के लिए भोलासिंह के साथ चल पडे।

जिस समय गुलाबसिंह को साथ लिए हुए भोलासिंह सुरंग के मुहाने पर पहुचा तो वहा सन्नाटा छाया हुआ था। न तो प्रभाकरसिंह दिखाई पड़े और न इन्दुमति ही नजर आई। ऐसी अवस्था देख भोलासिंह सन्नाटे में आ गया और अब उसे मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया। वह घबडा कर चारो तरफ देखने के बाद यह कहता हुआ जमीन पर बैठ गया—"हाय, मैंने बुरा धोखा खाया। प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ इन्दुमति को भी हाथ से खो बैठा!"

हाथ मे रोशनी थी नखरे के साथ हाथ मे मोमवत्ती गिरा दी जिससे अधकार हो गया। उसने यही जाहिर किया कि यह वात धोखे मे उससे हो गई। इसके वाद उस औरत ने इनका हाथ भी छोड दिया। प्रभाकरसिंह अटक कर कुछ सोचने लगे और वोले—"जो हुआ सो हुआ अब रोशनी करो तो मै तुम्हारे साथ आगे वढूगा नही तो पीछे की तरफ मुड जाऊंगा।" मगर उनकी इस वात का किसी ने भी जवाव न दिया। आश्चर्य के साथ प्रभाकर-सिंह ने पुन पुकारा मगर फिर जवाव न मिला, मानो वहाँ कोई था ही नही।

आश्चर्य और चिंता के शिकार प्रभाकरसिंह कुछ देर तक खडे सोचने के वाद अफसोस करते हुए पीछे की तरफ लौटे मगर अपने ठिकाने न पहुँच सके। आठ ही दस कदम पीछे हटे थे कि दीवार से टकरा कर खडे हो गए और सोचने लगे, "हैं, यह क्या मामला है! अभी अभी तो हम लोग इधर से आ रहे हैं, फिर यह दीवार कैसी? रास्ता क्योकर वद हो गया! क्या अव इस तरफ का रास्ता वद ही हो गया! क्या अव हम वहा न पहुँच सकेंगे जहा इन्दुमति को लिए हुए भूतनाथ गया है?" इत्यादि।

वास्तव मे पीछे फिरने का रास्ता वन्द हो गया था मगर अन्धेरे मे इस वात का पता नही लग सकता था कि यह कोई दीवार वीच में आ पडी है या किसी तरह के तख्ने या दरवाजे ने वगल से निकल कर रास्ता वन्द कर दिया है अथवा क्या है! जो हो प्रभाकरसिंह को निश्चय हो गया कि अव पीछे की तरफ लौटना असम्भव है अस्तु यही अच्छा होगा कि आगे की तरफ वढे, शायद कही उजाले की सूरत दिखाई दे तव जान वचे। आह! मैं इन औरतो को ऐसा नही समझना था और इस वात का स्वप्न मे भी गुमान नही होता था कि ये मेरे साथ दगा करेंगी।

लाचार प्रभाकरसिंह अन्धेरे मे अपने दोनो हाथो को फैलाकर टटोलते हुए आगे की तरफ वढे मगर वहुत धीरे धीरे जाने लगे जिसमें किसी तरह का धोखा न हो। रास्ता पेचीला और ऊचा नीचा था तथा आगे की तरफ से तग भी होता जाता था। अढाई तीन सौ कदम जाने के वाद रास्ता इतना

तग हो गया कि एक आदमी से ज्यादा के चलने की जगह न थी। कुछ आगे बढने पर रास्ता खतम हुआ और एक बन्द दर्वाजे पर हाथ पडा। धक्का देने से वह दर्वाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह ने चौखट के अन्दर पैर रक्खा। दो ही कदम जाने बाद वह दर्वाजा पुन बन्द हो गया और साथ ही इसके आस्मान की सुफेदी पर भी प्रभाकरसिंह की निगाह पडी जो उनके सामने की तरफ बढती हुई मालूम पडती थी। लगभग पचीस तीस कदम जाने बाद प्रभाकरसिंह खोह के बाहर निकले और तब उन्होंने अपने को एक सरसब्ज पहाड की ऊँचाई पर किसी गुफा के बाहर खडे पाया।

इस समय सवेरा हो चुका था और पूरब तरफ पहाड की चोटी के पीछे सूरज की लालिमा दिखाई दे रही थी। प्रभाकरसिंह ने अपने को एक ऐसे स्थान मे पाया जिसे एक सुन्दर और सोहावनी घाटी कह सकते है। यह घाटी त्रिकोण अर्थात् तीन तरफ से पहाड के अन्दर दबी हुई थी और जमीन के बीचोबीच मे एक सुन्दर बंगला बना हुआ था जो इस जगह से जहाँ प्रभाकरसिंह खडे थे लगभग चौथाई कोस की दूरी पर पहाड के नीचे की तरफ था। प्रभाकरसिंह वहाँ पहुँचने के लिए रास्ता तलाश करने लगे मगर सुभीते से उतर जाने के लायक कोई पगडण्डी नजर न आई, तथापि प्रभाकरसिंह हतोत्साह न हुए और किसी न किसी तरह से उद्योग करके नीचे की तरफ उतरने ही लगे। वह सोच रहे थे कि देखें हमारा दिन कैसा कटता है, किस ग्रहदशा के फेर में पडते हैं, किसका सामना पडता है, और खाने पीने के लिए क्या चीज मिलती है तथा यहाँ से निकलने का रास्ता ही क्योंकर मिलता है। उस बँगले तक पहुँचने मे प्रभाकरसिंह को दो घण्टे से ज्यादा देर लगी। पहाड की चोटियो पर धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी मगर बँगले के पास अभी धूप का नाम निशान नही था।

बँगले के दर्वाजे पर दो जवान लडके पहरा दे रहे थे जिन्होंने प्रभाकरसिंह को रोका और पूछा, "तुम यहाँ क्योंकर आए ?"

इसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने क्रोध में आकर कहा, "जिस तरह हम

आए है वह जरूर तुम्हें मालूम होगा और जरूर वे तीनो कम्बख्त औरतें भी इसी बगले के भीतर होगी जिन्होने मुझे धोखा देकर गुमराह किया है। तुम जाओ उन्हें इत्तिला दो कि प्रभाकरसिंह आ पहुँचे।"

उन दोनो पहरेवालो ने प्रभाकरसिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया। प्रभाकरसिंह गुस्से मे आकर कुछ कहा ही चाहते थे कि उनकी निगाह एक मौलसिरी के पेड के ऊपरी हिस्से पर जा पडी जो इस बँगले के पूरब और दक्षिण के कोने पर बडी खूबसूरती के साथ खडा था। इस बँगले के चारो कोनो पर चार मौलसिरी के बडे बडे दरख्त थे जो इस समय खूब ही हरे भरे थे और उनके फूलो से वहाँ की जमीन ढक रही थी तथा उनकी खुशबू से प्रभाकरसिंह का दिमाग मुअत्तर हो रहा था।

जिस मौलसरी के पेड के ऊपर प्रभाकरसिंह की निगाह पडी उसके ऊपरी हिस्से मे रेशमी डोर के साथ एक हिंडोला लटक रहा था जो झुकी हुई डालियो की आड में छिपा हुआ था मगर जब हवा के झपेटो से उसकी डालियाँ हिलती और इधर उधर हटती थी तो उस हिंडोले पर एक सुन्दर औरत बैठी हुई दिखाई देती थी और इसी पर प्रभाकरसिंह की निगाह पडी थी। गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को इन्दुमति का गुमान हुआ और वे दौड कर उस पेड के नीचे जा खडे हुए।

प्रभाकरसिंह ने सर उठा कर पुन उस औरत को देखा—इस आशा से कि यह इन्दुमति है या नही इस बात का निश्चय कर लें, मगर प्रभाकरसिंह का ख्याल गलत निकला क्योकि वह वास्तव में इन्दुमति न थी, हाँ इन्दुमति से उसकी सूरत रुपये मे बारह आना जरूर मिलती जुलती थी, यहाँ तक कि यदि यह औरत केवल अपने दोनो होठ और अपनी ठुड्ढी हाथ से ढाँक कर प्रभाकरसिंह की तरफ देखती होती तो दोपहर की चमचमाती हुई रोशनी मे और दस हाथ की दूरी मे भी वे इसे न पहिचान सकते और यही कहते कि यह जरूर मेरी इन्दुमति है।

इस समय वह औरत भी प्रभाकरसिंह की तरफ देख रही थी। जब वे

उस पेड के नीचे आए तब उसने हाथ के इशारे से उन्हें भाग जाने को कहा जिसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, "तुम इस बात का गुमान भी न करो कि तुम्हारा हाल जाने बिना मै यहा से चला जाऊगा।"

औरत०। (अपने माथे पर हाथ रख कर) बात तो यह है कि आप अब यहा से जा नही सकते और न आपको निकल जाने का रास्ता ही मिल सकता है।

प्रभाकर०। तुम्हारे इस कहने से तो निश्चय होता है कि तुम्हारी जुबानी मुझे यहा का सच्चा सच्चा हाल मालूम हो जायगा और मै अपने दुश्मनो से बदला ले सकूगा।

औरत०। नही, क्योकि एक तो मुझे यहा का पूरा पूरा हाल मालूम नही, दूसरे अगर कुछ मालूम भी है तो उसके कहने का मौका मिलना कठिन है, क्योकि अगर कुछ कहने की कोशिश करूगी तो मेरी ही तरह आप भी कैद कर लिए जायगे।

प्रभा०। तो क्या तुम कैदी हो ?

औरत०। (आचल मे आसू पोछ कर) जी हा !!

प्रभा०। तुम्हे यहा कौन ले आया ?

औरत०। मेरी बदकिस्मती !

प्रभा०। तुम्हारा क्या नाम है ?

औरत०। तारा !

प्रभा०। (ताज्जुब मे) तुम्हारे बाप का क्या नाम है ?

औरत०। (रो कर) वही जो आपकी इन्दुमति के बाप का नाम है !! अफसोस ! आपने मुझे अभी तक नही पहिचाना !!

इतना कह के वह और भी फुन कर रोने लगी जिसने प्रभाकरसिंह का दिल बेचैन हो गया और उन्होने पहिचान लिया कि यह बेशक उनकी साली है। वह चाहते थे कि पेड पर चढ कर उसे नीचे उतारें और अच्छी तरह बात करें मगर इसी बीच में कई आदमियो ने उन्हें आकर घेर लिया।

बगले के दर्वाजे पर पहरा देने वाले दोनो नौजवान लडको ने प्रभाकरसिंह को जब उस औरत से बातचीत करते देखा तब तेजी के साथ वहा से चले गए और थोडी ही देर में कई आदमियों ने आकर उनको घेर लिया।

पांचवां बयान

सन्ध्या का समय था जब नकली प्रभाकरसिंह इन्दुमति को बहका कर और धोखा देकर भूतनाथ की विचित्र घाटी से उसो सुरग की राह ले भागा जिधर से वे लोग गए थे। उस समय इन्दुमति की वैसी ही सूरत थी जैसी कि हम पहिले बयान में लिख आए हैं, अथात् मर्दानी सूरत में तीर कमान और ढाल तलवार लगाए हुए थी। संभव था कि नकली प्रभाकरसिंह को उसके पहिचानने में धोखा होता परन्तु नही, उसका इन्दुमति से कुछ ऐसा सम्बन्ध था कि उसने उसके पहिचानने में जरा भी धोखा नही खाया बल्कि इन्दुमति को हर तरह से धोखे में डाल दिया। इन्दुमति ने भी प्रभाकरसिंह को वैसे ही ढग और पौशाक में पाया जैसा छोडा था परन्तु यदि वह विह्वल, दु खित और घबडाई हुई न होती तो उसके लिए नकली प्रभाकरसिंह का पहिचान लेना कुछ कठिन न था।

सुरग के बाहर होने के बाद आस्मान की तरफ देख कर इन्दुमति को इस बात का खयाल हुआ कि रात हुआ ही चाहती है। वह सोचने लगी कि इस भयानक जगल से क्योंकर पार होंगे और रात भर कहा पर आराम से बिता सकेंगे, साथ ही उसे यकायक इस तरह पर गुलाबसिंह को छोडना और भूतनाथ की घाटी से निकल भागना भी ताज्जुब में डाल रहा था। पूछने पर भी प्रभाकरसिंह ने उसको ठीक ठीक सबब नही बताया था, हा, बताने का वादा किया था, मगर इससे उसकी बेचैनी दूर नही हुई थी। उसका जी तरह तरह के खुटकों में पडा हुआ था और यह जानने के लिए वह बेचैन हो रही थी कि गुलाबसिंह ने उनका क्या नुकसान किया था जो उसको भी छोड दिया गया।

सुरङ्ग के मुहाने से थोडी दूर आगे जाने बाद इन्दुमति ने प्रभाकरसिंह से कहा, "आपकी चाल इतनी तेज है कि मैं आपका साथ नही दे सकती।"

नकली प्रभाकर०। (धीमी चाल करके) अच्छा लो मै धीरे धीरे चलता हूं मगर जहां तक जल्द हो सके यहा से निकल ही चलना चाहिए।

इन्दुमति०। आखिर इसका सबब क्या है, कुछ बताओ भी तो सही?

नकली प्रभाकर०। अभी नही, थोडी देर के बाद इसका सबब बताऊंगा।

इंदुमति०। यही कहते कहते तो यहा तक आ पहुचे। अच्छा यही बताओ कि हम लोगो को कहा जाना होगा और कितना बडा सफर करना पड़ेगा?

नकली प्रभाकर०। कुछ नही थोड़ी ही दूर और चलना है इसके बाद सवारी तैयार मिलेगी जिस पर चढ कर हम लोग निकल जायेंगे।

सवारी का नाम सुन इन्दुमति चौंकी और उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। कई सायत सोचने के बाद उसने पुन नकली प्रभाकरसिंह से पूछा, "ऐसे मुसीबत के जमाने मे यकायक आपको सवारी कैसे मिल गई?"

नकली प्रभाकर०। इसका जवाब भी आगे चल कर देंगे।

प्रभाकरसिंह की इस बात ने इन्दुमति को और भी तरद्दुद में डाल दिया। वह चलते चलते रुक कर खडी हो गई और इस बीच में नकली प्रभाकरसिंह जो आगे जा रहे थे कई कदम आगे निकल गए।

हम नहीं कह सकते कि अब यकायक इन्दुमति के जी मे क्या आया कि वह प्रभाकरसिंह के साथ जाते जाते एकदम रुक ही नहीं गई बल्कि जब प्रभाकरसिंह अपनी तेजी और जल्दबाजी में पीछे की सुध न करके इन्दुमति से कुछ आगे बढ गए तो दाहिनी तरफ हटकर वह एक गुन्जान पेड पर चढ गई और छिप कर इन्तजार करने लगी कि देखें अब जमाना क्या दिखाता है।

नकली प्रभाकरसिंह लगभग दो सौ कदम से भी ज्यादे आगे बढ गया

तब उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे इन्दुमति नही है। वह घबडा कर पीछे की तरफ लौटा और "इन्दुमति, इन्दुमति" कह कर कुछ ऊँचे स्वर से पुकारने लगा।

इन्दुमति पेड पर चढ कर छिपी हुई उसकी आवाज सुन रही थी मगर उसे खूब याद था कि उसके प्यारे पति ने आवश्यकता पडने पर भी कभी उसे इन्दुमति कह कर नही पुकारा। यह एक ऐसी बात थी जो केवल उन दोनो पति पत्नि ही से सम्बन्ध रखती थी, कोई तीसरा आदमी इसके जानने का अधिकारी न था।

नकली प्रभाकरसिंह इन्दुमति को पुकारता हुआ उससे भी ज्यादे पीछे हट गया जहाँ इन्दु छिपी हुई थी और इस बीच मे उसने तीन दफे जफील (सीटी) भी बुलाई, साथ ही इसके यह भी उसके मुँह से निकल पडा, "कम्बख्त ठिकाने पहुच कर गायब हो गई!" यह बात इदुमति ने भी सुन ली।

जफील की आवाज से यहा कई आदमी और भी आ पहुँचे तथा नकली प्रभाकरसिंह के साथी बन गये जिन्हे देख इन्दुमति को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने यहाँ आकर सोचा था वही ठीक निकला, वास्तव मे उसने पूरा धोखा खाया, और अब वह बेतरह दुश्मनो के काबू मे पडी हुई है।

इन्दुमति को खोजने वाले अब कई आदमी हो गये और वे इधर उधर फैल कर पेडो की आड तथा झुरमुट मे उसे खोजने लगे।

तिथि के अनुसार रात को पहिली कालिमा (अन्धेरी) बीत चुकी थी और चन्द्रदेव उदय होकर धीरे धीरे ऊचे उठने लगे थे जिससे इन्दु घबडा गई और मन मे सोचने लगी कि 'यह तो बडा अन्धेर हुआ चाहता है। एक छिपे हुए इन्दु को यह अपना सा किया चाहता है! अब मै क्या करूँ?'

प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ जमाने ने भी उसे बहुत कुछ सिखला दिया था। तलवार चलाना और तीर का निशाना लगाना वह बखूबी जानती थी, बल्कि तीरन्दाजी में उसे एक तरह का घमड था और इस समय उसके पास यह सामान मौजूद भी था जैसा कि हम ऊपर इशारा

कर चुके है कि 'इस समय उसकी पोशाक और सूरत वैसी ही थी जैसी कि हम पहिले बयान मे दिखा चुके हैं।'

जब कई दुश्मनो ने इन्दुमति को घेर लिया और चांदनी भी फैल कर वंहा की हर एक चीजो को दिखाने लगी तब उसे विश्वास हो गया कि अब वह किसी तरह छिपी रह नही सकती, लोग जरूर उसे देख लेंगे और गिरफ्तार कर लेगे। अतएव उसने कमान पर तीर चढाया और संभल कर बैठ गई, सोच लिया कि जब तक तरकश मे एक भी तीर मौजूद रहेगा किसी को अपने पास फटकने न दूगी।

इसी बीच मे मौका पाकर उसने नकली प्रभाकरसिंह को अपने तीर का निशाना बनाया। इन्दु के हाथ से निकला हुआ तीर नकली प्रभाकरसिंह के पैर मे लगा और वह "हाय" करके बैठ गया। उसके साथी उसके चारो तरफ जमा हो गए और बोले, "बेशक वह इसी जगह कही है और यह तीर उसी ने मारा है। अब उसे हम जरूर पकड़ लेगे। तीर पूरब तरफ से आया है।"

एक और तीर आया और वह एक आदमी की पीठ को छेदकर छाती की तरफ से पार निकल आया।

अब तो उन लोगो में खलबली पड़ गई और खोजने की हिम्मत जाती रही बल्कि जान बचाने की फिक्र पड़ गई, मगर इस खयाल से कि तीर 'पूरब' तरफ से आया है और मारने वाला भी उसी तरफ किसी पेड़ पर छिपा हुआ होगा, दोनो जख्मियो को छोड़ कर बाकी के लोग इन्दु की तरफ झपटे और चांदनी की मदद पाकर बहुत जल्द उस पेड़ को घेर लिया जिस पर इन्दु छिपी हुई थी।

अब इन्दु ने अपने को जाहिर कर दिया और जरा ऊंची आवाज में उसने दुश्मनो से कहा, "हां हां बेशक मैं इसी पेड़ पर हू, मगर याद रक्खो कि तुम लोगो को अपने पास आने न दूंगी बल्कि देखते ही देखते इस दुनिया से उठा दूगी।"

इतना कह कर उसने उस पेड़ के नीचे के और भी एक आदमी को तीर

से घायल किया। इसी समय ऊपर की तरफ से आवाज आई, "शावाश इदु शावाश! इन लोगो की बातचीत से मैं पहिचान गया कि तू इदुमति है!"

यह बोलने वाला भी उसी पेड पर था जिस पर इन्दु थी मगर उससे ऊपर की एक ऊची डाल पर बैठा हुआ था जिसकी आवाज सुन कर इन्दुमति घवडा गई और सोचने लगी कि यह कोई उसका दुश्मन तो नही है। उसने पूछा, "तू कौन है और यहा कब से बैठा हुआ है?"

जवाब०। मै तुमसे थोडी देर पहिले यहा आया हू बल्कि यो कहना चाहिए कि दूर से तुम लोगो को आते देख कर इस पेड पर चढ कर बैठा था। मैं तुम्हारा पक्षपाती हू और मेरा नाम भूतनाथ है। तुम तीर कमान मुझको दो, मैं अभी तुम्हारे दुश्मनो को जहन्नुम मे पहुचा देता हू।

इन्दु०। बस बस बस, मैं ऐसी बेवकूफ नही हू कि इस समय तुम्हारी बातो पर विश्वास कर लू और अपना तीर कमान जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकती हू तुम्हारे हवाले करके अपने को तुम्हारी दया पर छोड दू। यद्यपि मै औरत हू और मेरी कमान कडी नही है तथा मेरे फेके तीर दूर तक नही जाते, तथापि मेरा निशाना नही चूक सकता और मै नजदीक के दुश्मनो को वच कर नही जाने दे सकती। खैर तुम जो कोई भी होवो समझ रक्खो कि इस समय मै तुम्हारी बातो पर विश्वास न करूगी और तुम्हे कदापि नीचे न उतरने दूगी, जरा भी हिलोगे तो मै तीर मार कर तुम्हे दूसरी दुनिया मे पहुंचा दूगी।

इतने ही मे नीचे कोलाहल वढा और इन्दुमति ने तीर मार कर और एक आदमी को गिरा दिया। फिर ऊपर से आवाज आई—"शावाश इन्दु शावाश! तू तुझे मुझे नीचे उतरने दे, फिर देख मै तरे दुश्मनो से कैसा वदला लेता हू!!"

इन्दु०। कदापि नही, मै अपने दुश्मनो से आप समझ लूगी।

आवाज०। और जब तुम्हारे तीर खतम हो जायगे तो तुम क्या करोगी?

इन्दुमति० । मेरे तीरो की गिनती दुश्मनो की गिनती से वहुत ज्यादा है, तुम इसकी चिन्ता न करो और चुपचाप बैठे रहो ।

आवाज० । नही इन्दु नही, तुम्हें मालूम नही है कि तुम्हारे दुश्मन यहा वहुत ज्यादा है, थोडी देर में वे इकट्ठे हो जायगे और तब तुम्हारे तीरो की गिनती कुछ काम न करेगी ।

इन्दु० । ऐसी अवस्था में तुम्ही क्या कर सकते हो जो एक औरत का मुकावला करके नीचे नही उतर सकते ! खवरदार ? व्यर्थ की वकवाद करके मेरा समय नष्ट न करो !!

फिर नीचे कोलाहल वढा और इन्दुमति के तीर ने पुन एक आदमी का काम तमाम किया । इन्दु के ऊपर की तरफ वैठा हुआ आदमी नीचे उतरने लगा और वोला, "खवरदार इदु, मुझ पर तीर न चलाइयो और सच जानियो कि मैं भूतनाथ हू और अव नीचे उतरे विना नही रह सकता !!"

इदु० । मैं जरूर तीर मारूंगी और भूतनाथ के नाम का मुलाहजा न करूंगी ।

इतना कहकर इन्दु ने उसकी तरफ तीर सीधा किया मगर घवडा कर दिल मे सोचने लगी कि कही वह भूतनाथ ही न हो । उसी समय किसी हर्वे की चमक उसकी आंखो में पडी और उसकी तेज अक्ल ने तुरत समझ लिया कि यह वरछी है जिससे कुछ आगे वढ कर वह जरूर मुझ पर हमला करेगा, अस्तु दिल कडा करके इन्दु ने उस पर तीर चला ही दिया जो कि उसके मोढे मे लगा, मगर इस चोट को सह कर और कुछ नीचे उतर कर उसने इन्दु पर वरछी का वार किया, साथ ही इन्दु का दूसरा तीर पहुंचा जो कि न मालूम कहां लगा कि वह लुढक कर जमीन पर आ रहा और वेहोश हो गया । परन्तु उसका वर्छी का वार भी खाली नही गया । इन्दु के जंघे मे कुछ चोट आई, खून का तरारा वह चला और दर्द से वह वेचैन हो गई । कुशल हुआ कि वह वखूवी इन्दु के पास नही पहुचा था अन्दाज मे कुछ दूर ही था इसलिए वरछी की चोट भी पूरी न वैठी, अगर कुछ और नजदीक

आ गया होता तो इन्दु भी पेड पर न ठहर सकती जरूर नीचे गिर पडती।

इन्दु जनाना थी मगर उसका दिल मर्दाना था। यद्यपि इस समय वह दुश्मनो से घिरी हुई थी और बचने की आशा बहुत कम थी तथापि उसने अपने दिल को खूब सम्भाला और दुश्मनो को अपने पास फटकने न दिया। पेड पर से जिस आदमी ने इन्दु को जख्मी किया था इन्दु के हाथ से जख्मी होकर उसके गिरने के साथ ही नीचे वालो मे खलबली पड गई। सभो ने गौर के साथ उसे देखना और पहिचानना चाहा। एक ने कहा, "यह तो भूतनाथ है!" दूसरे ने कहा, "फिर इन्दु ने इसे क्यो मारा?"

इत्यादि बातें होने लगी जो इन्दु के दिल मे तरह तरह का खुटका पैदा करने वाली थी मगर उसने उसकी कुछ भी परवाह न की और दुश्मनों पर तीर का वार करने लगी। ग्यारह दुश्मनो मे से सात को उसने जख्मी किया जिसमे उसके बारह तीर खर्च हुए मगर पाँच दुश्मनो ने बडी चालाकी से अपने को बचाया और सर पर ढाल रख के इन्दु को पकडने के लिए पेड पर चढने लगे। इन्दु ने पुन तीर मारना आरम्भ किया मगर इसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योकि उसके चलाए हुए तीर सब ढाल पर टक्कर खा के बेकार हो जाते थे।

अब इन्दु का कलेजा धडकने लगा। वह जख्मी हो चुकी थी और उसका तरकस भी खाली हो चला था, पेड पर चढने वाले बडे ही कट्टर और लडाके आदमी थे अतएव उन्होने इन्दु के तीरो की कुछ भी परवाह न की और उसके पास पहुच कर उसे गिरफ्तार करने पर ही तुल गए, ऐसी हालत देख इन्दु ने भी अपने को उनके हाथ में फँसाने की बनिस्बत जान द देना अच्छा समझा। वह लुढक कर पेड पर से नीचे गिर पडी और सख्त चोट खाकर बेहोश हो गई।

छठवां बयान

जब वह होश मे आई और उसने आँखें खोली तो अपने को एक सुन्दर मसहरी पर पडे पाया और सब सामान कई लौंडियो को खिदमत के लिए हाजिर

देख कर ताज्जुब करने लगी।

आँख खुलने पर इन्दु ने एक ऐसी औरत को भी अपने सामने इज्जत के साथ बैठे देखा जिसे सब हकीमिनजी के नाम से सम्बोधन करती थी और जिसके विषय में जाना गया कि वह इन्दुमति का इलाज कर रही है।

नि सन्देह इन्दुमति को गहरी चोट लगी थी और उसे करवट बदलना भी बहुत कठिन हो रहा था। उसे इस बात का बडा ही दु ख था कि वह जीती बच गई और दुश्मनो के हाथ में फँस गई, परन्तु इस समय जितनी औरतें वहाँ मौजूद थी, सभी खूबसूरत, कमसिन, खुशदिल, हँसमुख और हमदर्द मालूम होती थी। सभी को इस बात की फिक्र थी कि इन्दुमति शीघ्र अच्छी हो जाय और उसे किसी तरह की तकलीफ न रहे। सभी प्यार के साथ उसकी खिदमत करती थी, दिल बहलाने की बातें करती थी, और कई उसके पास बैठी सर पर हाथ फेरती हुई प्रेम से पूछती कि 'कहो बहिन मिजाज कैसा है? अब तुम किसी बात की चिन्ता न करो यह घर तुम्हारे दुश्मनो का नही है बल्कि दोस्तो का है जो कि बहुत जल्द तुम्हें मालूम हो जायगा और यह भी मालूम हो जायगा कि दुश्मनो के हाथो से तुम किस तरह छुडा ली गई। जरा तुम्हारी तबीयत अच्छी हो जाय तो मैं सब राम-कहानी कह सुनाऊँगी, तुम किसी तरह की चिन्ता न करो।' इत्यादि।

उन बातो से मालूम होता था कि ये सब की सब लौंडी ही न थी बल्कि अच्छे खानदान की लडकियाँ थी और दो एक तो ऐसी थीं जो बराबरी का (बल्कि उससे भी बढ कर होने का) दावा रखती थी।

यह सब कुछ था परन्तु इन्दुमति को इस बात का ठीक पता नहीं लगता था कि वह वास्तव में दुश्मनो की मेहमान है या दोस्तो की। यद्यपि उसकी हर तरह से खिदमत होती थी, उसकी खातिरदारी की जाती थी, उसे भरोसा दिलाया जाता था और जिसमे वह खुश हो वह करने के लिये सब तैयार रहती थी, यह सब कुछ था मगर फिर भी उसके दिल को भरोसा नही होता था।

इसी तरह समय तबीयत सम्भलती गई। उसे होश में आये आज तीसरा दिन है, दर्द में भी बहुत कमी है और वह दस बीस कदम टहल भी सकती है। आज ही उसने कुछ थोडा बहुत भोजन भी किया है और इस फिक्र में तकिए का सहारा लगाए बैठी है कि आज किसी न किसी तरह इस बात का निश्चय जरूर करूंगी कि वास्तव में मै किसके कब्जे में हू।

उसकी खातिर करने वालियो में दो औरतें ऐसी थी जिन पर इन्दु को भरोसा हो गया था और जिन्हे इन्दु सब से बढ कर उच्च कुल की नेक और होनहार समझती थी। एक का नाम कला और दूसरी का नाम विमला था। सब से ज्यादे ये ही दोनो इन्दु के साथ रहा करती थी।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है। चिन्तानिमग्न इन्दु अपनी चारपाई पर लेटी हुई तरह तरह की बातें सोच रही थी। उसी के पास दो चारपाइयां और बिछी हुई थी जो कला और बिमला के सोने के लिए थी। कला अपनी चारपाई पर नही बल्कि इन्दु के पास उसकी चारपाई का ढासना लगाये बैठी हुई थी मगर विमला अभी तक यहां आई न थी। कई सायत तक सन्नाटा रहने बाद इन्दु ने बातचीत शुरू की।

इन्दु०। कला, कुछ समझ मे नही आता कि तू मुझसे यहां का भेद क्यों छिपाती है और साफ साफ क्यो नही कहती कि यह किसका मकान है।

कला०। बहिन, मै जो तुमसे कह चुकी कि 'यह तुम्हारे दुश्मन का मकान नही है बल्कि तुम्हारे दोस्त का है' तो फिर क्यो तरद्दुद करती हो?

इन्दु०। तो क्या मैं अपने दोस्त का नाम नही सुन सकती? आखिर नाम छिपाने का सबब ही क्या है?

कला०। छिपाने का सबब केवल इतना ही है कि यहा का हाल सुन कर जितना तुम्हें आनन्द होगा उतना ही बल्कि उससे ज्यादे दुःख होगा और हकीमिनजी का हुक्म है कि अभी तुम्हें कोई ऐसी बात न कही जाय जिससे रञ्ज हो।

इन्दु०। यह कोई वात नही है, अगर है तो हकीमिनजी का केवल नखरा है और तुम लोगों का वहाना।

कला०। अगर तुम ऐसा ही समझती हो तो लो आज मैं वह सव हाल कह दूंगी मगर शर्त यह है कि सिवाय विमला के और किसी को भी मालूम न हो कि मैंने तुमसे कुछ कहा था।

इन्दु०। नही नही, मै कसम खाकर कहती हू कि अपनी जुवान से किसी से भी कुछ न कहूगी।

कला०। अच्छा तो कुछ और रात वीत जाने दो और विमला को भी आ जाने दो।

इतने ही मे विमला ने भी चौकठ के अन्दर पैर रक्खा।

इन्दु०। लो विमला भी आ गई!

कला०। अच्छा हुआ मगर जरा सन्नाटा हो जाने दो।

विमला०। (कला के पास वैठ कर) क्या वात है?

कला०। (धीरे से) ये यहा का हाल जानने के लिए वेताव हो रही हैं।

विमला०। इनका वेताव होना उचित ही है मगर (इन्दु की तरफ देख के) आप दुरुस्त हो जाती तव इसे पूछती तो अच्छा था, नही तो......

इन्दु०। यही हठ तो और भी उत्कण्ठित करता है।

विमला०। सुनने से आपको जितनी खुशी होगी, उसमे ज्यादे रंज होगा।

इन्दु०। वला से, जो होगा देखा जायगा! मगर (उदासी मे) तुमसे तो मुझे ऐसी आशा नही थी कि.. ....

विमला०। (इन्दु का हाथ प्रेम से दवा कर) वहिन! मै तुमसे कोई वात नही छिपाऊंगी, कहूगी और जरूर कहूगी।

इन्दु०। तो फिर कहो।

विमला०। अच्छा सुनो मगर किसी के सामने इस हाल को कभी दोहराना मत।

इन्दु०। नही कदापि नही।

विमला०। अच्छा खैर यह बताओ कि तुम्हें अपना मायका (बाप का घर) छोडे कितने दिन हुए ?

इन्दु०। (कुछ सोच के) लगभग एक वर्ष और सात महीने के हुए होगे। शादी भई और मायका छूटा। तब से आज तक दु ख ही दु ख उठाती रही। मैं आपनी मा और दो मौसेरी बहिनो को फूट फूट कर रोती हुई छोड कर पति के साथ रवाना हुई थी, वह दिन कभी भूलने वाला नही।

इतना सुनते ही कला और विमला की आखों में आसू डबडबा आये।

विमला०। (आसू पोछ कर) मुझे भी वह दिन नही भूलने का।

इन्दु०। (आश्चर्य से) बहिन तुम्हे वह दिन कैसे याद है, तुम वहा कहा थी ?

विमला०। मैं थी और जरूर थी, बल्कि हम दोनो बहिनें (कला की तरफ इशारा करके) वहा थी।

इन्दु०। सो कैसे, कुछ कहो भी तो।

विमला०। बस इतना ही तो असल भेद है, सब बातें इसी से सम्बन्ध रखती है। (धीरे से) तुम्हारी वे दोनों मौसेरी बहिनें हम दोनो कला और विमला के नाम से आज साल भर से यहा निवास करती हैं। यद्यपि देखने में हर तरह से सुख भोग रही हैं मगर वास्तव में हमारे दु ख का कोई पारावार नही।

इन्दु०। (बडे ही आश्चर्य से) यह तो तुम एक ऐसी बात कहती हो कि जिसका स्वप्न में भी गुमान नही हो सकता। यद्यपि तुम दोनो की उम्र वही होगी, चालढाल बातचीत सब उसी ढ ग की है, मगर सूरत शक्ल में जमीन आस्मान का फर्क है। ओह! नही, यह कैसे हो सकता है। मुझे कैसे विश्वास हो सकता है ?

विमला०। (मुस्कुरा कर) हम दोनो की सूरत शक्ल में भी किसी तरह का फर्क नही पडा है। मैं सहज ही में विश्वास दिला दूंगी कि जो कुछ कहती हू वह बात बात सच है। अच्छा ठहरो, मैं तुम्हें अभी बता देती हू।

इतना कह कर विमला उठी और उसने इस कमरे के कुल दर्वाजे बन्द कर दिए।

इन्दु जब से यहाँ आई है तब से इसी कमरे में है, उसे इसके बाहर का हाल कुछ भी मालूम नही है, वह नही जानती कि इस कमरे के बाहर कोठडी है या दालान, बारहदरी है या सायवान, पहाड है या बियाबान। होश मे आने के बाद उसमें अभी बाहर निकलने की ताकत ही नही आई हाँ, इसके भीतर की तरफ दो कोठडी एक पायखाना और एक नहाने का घर है उन्हें इन्दु जरूर जानती है क्योंकि इन कोठडियो से उसे वास्ता पड चुका है।

विमला इन्दु के पास से उठ कर दर्वाजा बन्द करने के बाद उमी नहाने वाली कोठडी में चली गई और थोडी ही देर मे लौट आकर मुस्कुराती हुई इन्दु के पास गई और बोली, "लो अब तुम मुझे गौर से देखो और पहिचानो कि मैं कौन हू ?"

यद्यपि इन्दु बीमार कमजोर और हतोत्साह थी तथापि विमला की नवीन सूरत देखते ही चौंकी और उठ कर उसके गले से लिपट गई।

विमला०। बस समझ लो कि इसी तरह कला भी सूरत बदले हुए है। हम दोनो बहिनें एक साथ एक ही अनुष्ठान साधन के लिए सूरत बदल कर गहदशा के दिन काट रही हैं। जब तक कम्बख्त भूतनाथ मे बदला न ले लेंगी जब तक ......

इन्दु०। (विमला को छोड कर) अहा ! मुझे कब आशा थी कि इस तरह अपनी बहिन जमना और सरस्वती को देखूंगी, मगर भूतनाथ. ......

कला०। (विमला से) बस बहिन ! अब बातें पीछे करना पहिले अपनी सूरत बदलो और उस झिल्ली* को चढा कर विमला बन जाओ, दर्वाजे खोल दो और आराम से बातें करो।

---

* इस झिल्ली को वैसा ही समझना चाहिए जैसा चन्द्रकान्ता चौथे हिस्से के आखीर मे चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा ने उतार कर दिखाई थी।

विमला० । (कुछ सोच कर) इस विषय में मैं कुछ नही कह सकती क्योकि अभी तक मैंने तुम्हारी जुबानी तुम्हारा कुछ भी हाल नही सुना। मैं नही जानती कि तुम क्योकर घर से निकली, तुम पर क्या आफतें आई, और गुलाबसिंह ने तुम्हारे साथ क्या क्या सलूक किया। तथापि गुलाबसिंह पर शक करने की इच्छा नही होती क्योकि वह बडा नेक और ईमानदार आदमी है तथा हमारे घर के कई एहसान भी उसके ऊपर है यदि वह माने। यो तो आदमी का ईमान बिगडते कुछ देर नही लगती क्योकि आदमी का शैतान हर दम आदमी के साथ रहता है।

इन्दु० । ठीक है, अच्छा मैं भी अपना हाल कह सुनाऊगी मगर पहिले यह सुन लूँ कि मैं क्योकर यहा आई और क्योकर तुमने मुझे दुश्मनो के हाथ से बचाया।

विमला० । हा हा, मैं कहती हूँ सुनो। अच्छा यह बताओ कि तुम उन दुश्मनो को जानती हो जिनके हाथ मे फसी थी ?

इन्दु० । नही बिल्कुल नही।

विमला० । वे महाराज शिवदत्त के आदमी थे।

इन्दु० । ओफ ओह, जिसके खौफ से हम लोग भागे हुए थे। मगर अभी अभी तुम कह चुकी हो कि मैंने तुम्हें भूतनाथ के हाथ से बचाया है।

विमला० । हा बेशक वैसा भी कह सकते है क्योकि भूतनाथ तो हम लोगो का सबसे बडा दुश्मन ठहरा मगर इधर तुम शिवदत्त ही के आदमियो के हाथ मे फसी थी। इत्तिफाक से हम लोग भी उसी समय वहा जा पहुचे और लड भिड कर उन लोगो के हाथ से तुम्हे छुडा लाए, बस यही तो मुख्तसर हाल है।

इन्दु० । (आश्चर्य मे) तुममे इतनी ताकत कहा से आ गई कि उन लोगो से लड कर मुझे छुडा लाई ?

विमला० । (मुस्कुराती हुई) हा इस समय मुझमें इतनी ताकत है। मेरे पास दो ऐयार हैं तथा बीस पचीस सिपाई भी रखती हू।

इन्दु० । तो ये सब तुम्हारे वाप या समुर के नौकर होगे ? जरूरत पडने पर तुम्हें उनसे इजाजत लेनी पडती होगी ?

बिमला० । (एक लम्बी सांस लेकर) नही वहिन ! ऐसा नही है । हम दोनो अपने घर और ससुराल से मञ्जिलों दूर पड़े हुए हैं । हम लोगो की किसी को कुछ खबर ही नही वल्कि यो कहना कुछ अनुचित न होगा कि अपने नातेदारो के खयाल से हम दोनों वहिनें मर चुकी है और किसी को खोजने या पता लगाने की भी जरूरत नही ।

इन्दु० । (आश्चर्य से) तुम्हारी वातें तो वडी ही विचित्र हो रही है ! अच्छा तो तुम यहाँ किसके भरोसे पर वैठी हो और तुम्हारा मददगार कौन है ?

विमला० । यह वहुत ही गुप्त वात हं, तुम भी किसी से इसका जिक्र न करना । मै यहाँ इन्द्रदेव के भरोसे पर हू । वही मेरे मददगार हं और यह उन्ही का स्थान है । वही मेरे वाप हैं, वही मेरे ससुर है, और इस समय वही मेरे पूज्य इष्टदेव हैं ।

इन्दु० । कौन इन्द्रदेव ?

विमला० । वही तिलिस्मी इन्द्रदेव ! मेरे ससुर के सच्चे मित्र !!

इन्दु० । (सिर हिला कर) आश्चर्य ! आश्चर्य !! और तुम्हारे ससुर को इस वात की खबर नही है ।

विमला० । हाँ बिल्कुल नही हं ।

इन्दु० । यह कैसी वात है ?

विमला० । ऐसी ही वात है । मैं जो कह चुकी कि उन लोगो के खयाल मे हम दोनो इस दुनिया मे नही हैं ।

इन्दु० । आखिर उन्हे इस वात का विश्वास कैसे हुआ कि जमना और सरस्वती मर गई ?

विमला० । सो मै नही जानती क्योकि यह कारवाई इन्द्रदेवजी की है । मैं सरयू मासी (इन्द्रदेव की स्त्री) के यहाँ न्योते में आई थी उसी

जगह उन्होंने (इन्द्रदेव ने) मुझे गुप्त भाव से बताया कि भूतनाथ ने मेरे पति के साथ कैसा सलूक किया। मालूम होते ही मेरे तनोवदन में आग सी लग गई और मैंने उसी समय उनके सामने प्रतिज्ञा की कि 'भूतनाथ से इसका बदला जरूर लूगी।' (एक लम्बी साँस लेकर) गुस्से में प्रतिज्ञा तो कर गई मगर जब विचारा तो कहा मैं और कहा भूतनाथ! पहाड और राई का मुकाबला कैसा? ऐसा खयाल आते ही मैं इन्द्रदेव के पैरो पर गिर पडी और बोली कि 'मेरी इस प्रतिज्ञा की लाज आपको है बिना आपकी मदद के मेरी प्रतिज्ञा पूरी नही हो सकती और वैसी अवस्था में मुझे आपके सामने ही प्राण देना पडेगा' इत्यादि।

इन्द्रदेव को भी इस अनुचित घटना का बडा दु ख था परन्तु मेरी उस अवस्था ने उन्हें और भी दु खित कर दिया तथा मेरी प्रार्थना पर उन्होंने ध्यान ही नही दिया बल्कि मेरी प्रतिज्ञा पूरी करना उन्होने आवश्यक और धर्म समझ लिया। बस फिर क्या था! मेरे मन की भई, जैसा कि मैं चाहती थी उससे बढ कर उन्होंने मुझे मदद दी और सच तो यह है कि उनसे बढ कर इस दुनिया मे मुझे कोई मदद दे ही नही सकता। खैर मैं खुलासा हाल फिर कभी सुनाऊँगी, मुख्तसर यह है कि उन्होने हर प्रकार की मदद करने का बन्दोबस्त करके हम दोनो को समझाया कि अब किस तरह की जिन्दगी हम दोनो को अख्तियार करनी चाहिए।

सब से पहिले इन्द्रदेवजी ने यही बताया कि 'प्रगट मे तुम दोनो बहिनो को इस दुनिया से उठ जाना चाहिए अर्थात् तुम्हारे रिश्तेदारो के साथ ही साथ और सभो को भी यह मालूम हो जाना चाहिए कि जमना और सरस्वती मर गई।' यह बात मुझे पसन्द आई। आखिर इन्द्रदेवजी ने हम दोनो के सूरत बदल कर रहने और अपना काम करने का बन्दोबस्त करके न मालूम हमारे रिश्तेदारो को कैसे क्या समझा दिया और क्योकर विश्वास दिला दिया कि अब कोई हमारी तरफ से निश्चिन्त हो गए। उनकी इच्छानुसार बहुत ही गुप्त भाव से हम दोनों यहाँ कला और विमला के नाम मे

रहती है। जो लोग हमारे साथ है वे सब इन्द्रदेवजी के आदमी हैं मगर उनको भी यह नही मालूम है कि हम दोनो वास्तव में जमना और सरस्वती है।

इन्दु०। (आश्चर्य से) क्या तुम्हारे घर मे जितने आदमी हैं उनमे से किसी को भी तुम्हारा सच्चा हाल मालूम नही है ?

विमला०। किसी को भी नही।

इन्दु०। तो फिर मेरे बारे में तुमने लोगो को क्या समझाया है ?

विमला०। मैंने यह किसी को भी नही कहा कि तुम मेरी रिश्तेदार हो, केवल यही कहा है कि तुम्हे भूतनाथ तथा शिवदत्त के हाथ से बचाना हमारा धर्म है अस्तु अब उचित यही है कि हमारी तरह तुम भी अपनी सूरत बदल कर यहा रहो और अपने दुश्मनो से बदला लो, हम लोगो का बाकी हालचाल तुम्हे आप ही धीरे धीरे मालूम हो जायगा।

इन्दु०। ठीक है, और जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूंगी, मगर (सिर झुका कर) मेरे पति का मुझसे...... .

विमला०। (बात काट कर) नही नही, उनके बारे में तुम कुछ भी चिन्ता मत करो, आज मै उनको तुम्हें जरूर दिखा दूंगी और फिर ऐसा बन्दोबस्त करूंगी कि तुम दोनो एक साथ . . .

इन्दु०। (प्रसन्न होकर) इससे बढ कर मेरे लिए और कोई दूसरी बात नही हो सकती, मगर यह तो बताओ कि इस समय वे कहाँ है ?

विमला०। (मुस्कुराती हुई) इस समय वे वे मेरे ही घर मे है और मेरे कब्जे मे है।

इन्दु०। (घबडा कर) यह कैसी बात ? अगर यहाँ है तो मुझे दिखाओ।

विमला०। मैं दिखाऊंगी, मगर जरा रुकावट के साथ।

इन्दु०। सो क्यो ?

विमला०। (कुछ सोच कर) अच्छा चलो पहिले मै तुम्हें उनके दर्शन करा दूं फिर सलाह विचार करके जैसा होगा देखा जायगा। मगर इस सूरत मे मै तुम्हें उनके सामने न ले जाऊंगी।

इन्दु० । सो क्यो ?

विमला० । तुम अपनी सूरत वदलो और इस बात का वादा करो कि जब मैं उनके सामने तुम्हें ले जाऊ तो चुपचाप देख लेने के सिवाय उनके सामने एक शब्द भी मुह से न निकालोगी ।

इन्दु० । आखिर इसका सवव क्या है ।

विमला० । सवव पीछे वताऊगी ।

इन्दु० । अच्छा तो फिर जो कुछ तुम कहती हो मुझे मजूर है ।

"अच्छा तो मैं भी वन्दोवस्व करती हू ।" यह कह कर विमला उठी और कुछ देर के लिए कमरे के वाहर चली गई । जव लौटी तो उसके हाथ में एक छोटी सी सन्दूकडी थी । उसी मे से सामान निकाल कर उसने इन्दुमति की सूरत वदली और वैसी ही एक झिल्ली उसके चेहरे पर भी चढाई जैसी आप पहिरे हुए थी । जव हर तरह से सूरत दुरुस्त हो गई तव हाथ का सहारा देकर उसने इन्दु को उठाया और कमरे के वाहर ले गई ।

कमरे के वाहर एक दालान था जिसके एक वगल में तो ऊपर की मजिल में चढ जाने के लिए सीढियाँ थी तथा उसी के वगल में नीचे उतर जाने का रास्ता था और दालान के दूसरी तरफ वगल में एक सुरङ्ग का मुहाना था मगर उसमें मजवूत दरवाजा लगा हुआ था । इन्दु को उसी सुरङ्ग में विमला के साथ जाना पडा ।

सुरग वहुत छोटी थी, तीस पैंतिस कदम जाने के वाद उसका दूसरा मुहाना मिल गया जहा से सुवह की सुफेदी निकल आने के कारण मैदान की सूरत दिखाई दे रही थी। जव इन्दुमति वहा हद पर पहुची तव उसको आंखो के सामने वही सुन्दर घाटी या मैदान तथा वगला था जिसका हाल हम इसके चौथे वयान में लिख आए हैं, या यो कहिए कि जहाँ पर एक पेड के साथ लटकते हुए हिडोले पर प्रभाकरसिंह ने तारा को वैठे देखा था ।

वही त्रिकोण घाटी और वही सुन्दर वगला जिसके चारो कोनो पर

मोलसिरी (मौलश्री) के पडे थे इन्दुमति की आँखों के सामने था जिन्हें वह बडे गौर से देख रही थी बल्कि यो कहना चाहिए कि वहां की सुन्दरता और कुदरती गुलबूटो ने इन्दु को निगाह पडने के साथ ही लुभा लिया और इसके साथ ही प्रभाकरसिंह की याद ने आँसू बन कर निगाह के आगे पर्दा डाल दिया।

आखें साफ करके वह हर एक चीज को गौर से देखने लगी। इसी बीच एक चट्टान पर बैठे हुए प्रभाकरसिंह पर उसकी निगाह पड़ी जिनके चारो तरफ कुदरती सुन्दर पोधे और खुशरंग फूलो के पेड बहुतायत से थे जो उदास आदमी के दिल को भी अपनी तरफ खीच लेते थे और जिन पर सूर्य भगवान की ताजी ताजी किरणें पड रही थी।

आह! प्रभाकरसिंह को देख कर इन्दुमति की कैसी अवस्था हो गई यह लिखना हमारी सामर्थ्य के बाहर है। वह कुछ देर तक एक टक उनकी तरफ देखती रही। न तो वहां से नीचे की तरफ उतरने का कोई रास्ता था और न वह यही जानती थी कि वहां तक क्योकर पहुँच सकेगी, अस्तु वह बेचैन होकर घूमी और यह कहती हुई बिमला के गले से लिपट गई कि 'बहिन, तुम तो बेशक तिलिस्म की रानी हो गई हो!!'

विमला०। बहिन! घबडाओ मत, जरा गौर से देखो तो......

इन्दु०। (विमला को छोड कर) तो क्या जो कुछ मैं देख रही हू केवल भ्रम है?

विमला०। नही ऐसा नही है?

इन्दु०। तो फिर यह स्थान किसका है?

विमला०। इस समय तो मेरा ही है।

इन्दु०। तो क्या ये भी तुम्हारे ही मेहमान हैं?

विमला०। बेशक।

इन्दु०। कब से?

विमला०। कई दिनो से, या यो कहो कि जब से तुम आई हो उससे भी पहिले......

इन्दु। (आश्चर्य दुःख और क्लेश से) तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यों नहीं बल्कि हाल तक नहीं कहा ऐसा क्यों ?

विमला०। इसके कहने का मौका ही कब मिला ! आज ही तो इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकू । इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं। जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नहीं चाहते, जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नहीं, जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकोगी सकती हो और करोगी उस तरह वे नहीं करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है, फिर तुम ही सोचो कि मैं क्योंकर

इन्दु०। (जोर देकर) नहीं बहिन ! ऐसी भला क्या बात है। उन्हें सच्चे मामले की खबर न होगी ।

विमला०। सब कुछ खबर है। इसी वास्ते मैं उन्हें यहाँ लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहिले ही दिन जब तुम लोग सुरंग में घुसे थे छुड़ाने का उद्योग किया था परन्तु खेद है कि वे (प्रभाकरसिंह) तो मेरे कब्जे में आ गए और तुम आगे निकल गई जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पड़ा।

इन्दु०। (आश्चर्य से) सो कैसी बात ? क्या तुम्हीं ने उन्हें मुझसे जुदा किया था ?

विमला०। हां ऐसा ही है। (हाथ का इशारा करके) बस इस घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है, रास्ता भी करीब करीब मिलता जुलता है। भूतनाथ की घाटी मे आने के लिए जो रास्ता या सुरंग है उसी में से एक रास्ता हमारे यहां भी आने के लिए है, इसके अतिरिक्त यहाँ आने के लिए एक रास्ता और भी है जिससे प्रायः हम लोग आया जाया करते हैं। जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरंग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी ।

इन्दु०। फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया !

इसके जवाब में विमला ने खुलासा हाल जिस तरह प्रभाकरसिंह को सुरग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे मे ले आई थी बयान किया जो कि हम चौथे बयान में लिख चुके हैं।

अब हमारे पाठक समझ गए होंगे कि भूतनाथ के पीछे पीछे सुरग के अन्दर चलने वाले प्रभाकरसिंह को जिन्होंने धोखा देकर गायब किया वे विमला और कला यही दोनो बहिनें थी और यह काम उन्होंने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा ही इन्दुमति का विश्वास है।

खुलासा हाल सुन कर इन्दुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली—

इन्दु०। अच्छा यह बताओ कि मेरे आने की उन्हे खबर भी है या नही?

विमला०। कुछ कुछ खबर है। तुम्हारे लिए वे बहुत ही बेचैन हैं, कलपते हैं, रोते हैं, मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नहीं छोड़ते।

इन्दु०। तुमने अपने को उन पर प्रकट कर दिया ?

विमला०। हाँ, भेद छिपा रखने की कसम खिला कर मैंने उन्हें बतला दिया कि हम दोनो बहिनें जमना और सरस्वती हैं जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस बात पर उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि भूतनाथ मेरे पति का घातक है। गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह पर उन्हें पूरा विश्वास है।

इन्दु०। अच्छा तुम मुझे उनके सामने ले चलो देखें वे क्योंकर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नही देते।

विमला०। मुझे इसमे कोई उज्र नहीं है मगर तुम हर एक बात को अच्छी तरह सोच विचार लो।

इन्दु०। (जोर देकर) कोई परवाह नहीं, तुम वहा चलो, (कुछ सोच के) मगर मैं अपनी सूरत मे उनके सामने जाऊँगी।

विमला०। जैसी तुम्हारी मर्जी। चलो पीछे की तरफ लौटो, एक सुरग के रास्ते पहिले (उँगली का इशारा करके) उस बीच वाले बगले में पहुँचना होगा तब उनके पास जा सकोगी।

इन्दु। (आश्चर्य दुःख और क्लेश से) तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यो नही बल्कि हाल तक नही कहा ऐसा क्यों ?

विमला०। इसके कहने का मौका ही कब मिला ! आज ही तो इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकू। इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं। जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नही चाहते, जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नही, जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकोगी सकती हो और करोगी उस तरह वे नही करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है, फिर तुम ही सोचो कि मैं क्योंकर

इन्दु०। (जोर देकर) नही बहिन ! ऐसी भला क्या बात है। उन्हें सच्चे मामले की खबर न होगी !

विमला०। सब कुछ खबर है। इसी वास्ते मैं उन्हें यहाँ लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहिले ही दिन जब तुम लोग सुरग में घुसे थे छुडाने का उद्योग किया था परन्तु खेद है कि वे (प्रभाकरसिंह) तो मेरे कब्जे में आ गए और तुम आगे निकल गई जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पडा।

इन्दु०। (आश्चर्य से) सो कैसी बात ? क्या तुम्ही ने उन्हें मुझसे जुदा किया था ?

विमला०। हा ऐसा ही है। (हाथ का इशारा करके) बस इस घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है, रास्ता भी करीब करीब मिलता जुलता है। भूतनाथ की घाटी में आने के लिए जो रास्ता या सुरग है उसी में से एक रास्ता हमारे यहा भी आने के लिए है, इसके अतिरिक्त यहाँ आने के लिए एक रास्ता और भी है जिससे प्राय हम लोग आया जाया करते हैं। जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी।

इन्दु०। फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया !

इनके जवाब में विमला ने खुलासा हाल जिस तरह प्रभाकरसिंह को सुरंग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे में ले आई थी बयान किया जो कि हम चौथे बयान में लिख चुके हैं।

अब हमारे पाठक समझ गए होंगे कि भूतनाथ के पीछे पीछे सुरंग के अन्दर चलने वाले प्रभाकरसिंह को जिन्होंने धोखा देकर गायब किया वे विमला और कला यही दोनो बहिनें थी और यह काम उन्होने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा ही इन्दुमति का विश्वास है।

खुलासा हाल सुन कर इन्दुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली—

इन्दु०। अच्छा यह बताओ कि मेरे आने की उन्हे खबर भी है या नही?

विमला०। कुछ कुछ खबर है। तुम्हारे लिए वे बहुत ही बेचैन हैं, कलपते हैं, रोते हैं, मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नही छोड़ते।

इन्दु०। तुमने अपने को उन पर प्रकट कर दिया?

विमला०। हाँ, भेद छिपा रखने की कसम खिला कर मैंने उन्हें बतला दिया कि हम दोनो बहिनें जमना और सरस्वती हैं जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस बात पर उन्हे विश्वास नही हुआ कि भूतनाथ मेरे पति का घातक है। गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह पर उन्हें पूरा विश्वास है।

इन्दु०। अच्छा तुम मुझे उनके सामने ले चलो देखें वे क्योंकर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नहीं देते।

विमला०। मुझे इसमें कोई उज्र नही है मगर तुम हर एक बात को अच्छी तरह सोच विचार लो।

इन्दु०। (जोर देकर) कोई परवाह नहीं, तुम वहा चलो, (कुछ सोच के) मगर मैं अपनी सूरत मे उनके सामने जाऊँगी।

विमला०। जैसी तुम्हारी मर्जी। चलो पीछे की तरफ लौटो, एक सुरंग के रास्ते पहिले (उंगली का इशारा करके) उस बीच वाले बंगले में पहुँचना होगा तब उनके पास जा सकोगी।

सातवां बयान

प्रभाकरसिंह को इस घाटी में आए यद्यपि आज लगभग एक सप्ताह के हो गया मगर दिली तकलीफ के सिवाय और किसी बात की उन्हें तकलीफ नही हुई। नहाने धोने खाने पीने सोने पहिरने इत्यादि सभी तरह का आराम था परन्तु इन्दु के लिए वे बहुत ही बेचैन और दुखी हो रहे थे। जिस समय वे इस घाटी में आये थे उस समय बल्कि उसके दो तीन घण्टे बाद तक ये बडे ही फेर और तरद्दुद में पडे रहे क्योंकि कला और विमला ने उनके साथ बडी दिल्लगी की थी, मगर इसके बाद उनको घबराहट कम हो गई जब कला और विमला ने उन्हें बता दिया कि ये दोनो वास्तव में जमना और सरस्वती हैं।

पेड के साथ लटकते हुए हिंडोले पर बैठने वाली औरत ने उन्हें थोडी देर के लिए बडे ही धोखे में डाला। जब उन्होंने पेड पर चढने का इरादा किया तो वहां पहरा देने वाले दोनो नौजवान लडको ने गडबड मचा दिया। ये दौडते हुए चले गए और कई आदमियो को बुला लाए जिन्होंने प्रभाकरसिंह को घेर लिया मगर किसी तरह की तकलीफ नही दी और न कोई कडी बात ही कही।

दोनो नौजवान लडकों के हल्ला मचाने पर जितने आदमी वहा इकट्ठे हो गए थे वे सब कद में छोटे बल्कि उन्ही दोनो नौजवान सिपाहियो के बराबर थे जिन्हे देख प्रभाकरसिंह ताज्जुब करने लगे और विचारने लगे कि क्या ये लोग वास्तव मे मर्द है!

पहिले तो क्रोध के मारे प्रभाकरसिंह की आखें लाल हो गई मगर जब कुछ सोचने विचारने पर उन्हें मालूम हो गया कि ये सब मर्द नही औरतें हैं तब उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ और उन सभो की इच्छानुसार वे उस बगले के अन्दर चले गए जिसमें छोटे बडे सब मिला कर ग्यारह कमरे थे।

बीच वाले बडे कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ था। वहा पहुचने के साथ ही बिमला पर उनकी निगाह पडी और वे पहिचान गए कि मुझे भुलावा देकर वहा लाने वालियो में से यह भी एक औरत है जो बडी ढिठाई के साथ इस अनूठे ढंग पर इस्तकबाल कर रही है।

प्रभाकरसिंह ने बिमला से कहा, "मालूम होता है कि यह मकान आप ही का है।"

बिमला०। जी हां समझ लीजिए कि आप ही का है।

प्रभाकर०। अच्छा तो मै पूछता हू कि तुमने मेरे साथ ऐसा खोटा वर्ताव क्यो किया ?

बिमला०। मैने आपके साथ कोई बुरा वर्ताव नही किया बल्कि सच तो यो है कि आपको एक भयानक खोटे बेईमान और झूठे ऐयार के पजे से बचाने का उद्योग किया जो कि सिवाय बुराई के कभी कोई भलाई का काम आपके साथ नही कर सकता था। अफसोस, आपको तो हम उसके फन्दे से निकाल लाए मगर बेचारी इन्दु फँसी रह गई जिसे बचाने के लिये हम लोग तन मन धन सभी अर्पण कर देंगे।

प्रभाकर०। इसमे कोई सन्देह नही कि इन्दु के लिये मुझे बहुत बडी चिन्ता है और मै यह नही चाहता कि वह किसी अवस्था में भी मुझसे अलग हो, मगर मै इस बात का कभी विश्वास नही कर सकता कि भूतनाथ हम लोगो के साथ खोटा वर्ताव करेगा। मैं गुलाबसिंह की बात पर दृढ विश्वास रखता हू जिसने उसकी बडी तारीफ मुझसे की थी।

बिमला०। नही ऐसा नही है, वह. ...

प्रभा०। (बात काट कर) तुम्हारी बात मान लेना सहज नही है जिसने खुद मेरे साथ बुराई की! (क्रोध की मुद्रा से) बेशक तुमने मेरे साथ दुश्मनी की कि इन्दु को मुझसे जुदा करके एक आफत में डाल दिया! क्या जाने इस समय उस पर क्या बीत रही होगी!! हा, कहा है वह जिसे मैं अपनी साली समझता था और जिसकी बात मान कर मैने यह कष्ट

विमला० । नही नहीं, उन्होंने झूठ नही लिखा, उन्हे यही मालूम है कि जमना सरस्वती दोनो मर गई, मगर वास्तव में हम दोनो जीती हैं।

प्रभाकर० । यह तो तुम और भी आश्चर्य की बात सुनाती हो !!

विमला० । आपके लिए बेशक आश्चर्य की बात है। इसी से तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा करा ली कि मेरे भेद आप छिपाए रहें, जिनमें से एक यह भी बात है कि हमारा जीते रहना किसी को मालूम न होने पाये।

इतना कह कर विमला ने ताली बजाई। उसी समय तेजी के साथ सरस्वती (कला) एक दर्वाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई और प्रभाकरसिंह के पैरो पर गिर पडी। प्रभाकरसिंह ने प्रेम से उसे उठाया और कहा, "आह ! मैं इस समय तुम दोनो को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि सुरग मे तुम दोनों को देखना विश्वास के योग्य न था। अब यह मालूम होना चाहिए कि तुम लोग यहा क्यो, किसके भरोसे पर, और किस नीयत से रहती हो, तथा बाहर मौलसिरी (मालश्री) के पेड पर मैंने किसे देखा था ? नही नही, वह इस सरस्वती के सिवाय कोई और न थी, मैं पहिचान गया, इसी की सूरत विशेष इन्दु से मिलती है !"

विमला० । बेशक वह सरस्वती ही थी, क्षण भर के लिए इसने आपके साथ दिल्लगी की थी।

कला० । (मुस्कुराती हुई) मगर जो कुछ मैं किया चाहती थी वह न कर सकी।

प्रभाकर० । वह क्या ?

कला० । बस अब उसका कहना ठीक नही।

प्रभाकर० । अच्छा यह बताओ कि तुम लोग यहा छिप कर क्यों रहती थी ?

विमला० । इसीलिए कि कम्बख्त भूतनाथ से बदला लेकर कलेजा कुछ ठढा करें। आपको नहीं मालूम कि वह मेरे पति का घातक है। उसने अपने हाथ से उन्हें मार कर हम दोनो बहिनो को विधवा बना दिया !!

प्रभाकर० । (आश्चर्य से) यह तुम क्या कह रही हो ?

विमला० । बेशक ऐसा ही है, आपने उस कमीने को पहिचाना नही ! वह वास्तव में गदाधरसिंह है, सूरत बदले हुए चारो तरफ घूम रहा है । आज कल वह अपनी नौकरी पर अर्थात मेरे ससुर के यहा नही रहता ।

प्रभाकर० । यह तो मुझे भी मालूम है कि आज कल गदाधरसिंह लापता हो रहा है और किसी को उसका ठीक हाल मालूम नही है, मगर यह बात मेरे दिल में नही बैठती कि भूतनाथ वास्तव मे वही गदाधरसिंह है।

विमला० । मै जो कहती हूं, बेशक ऐसा ही है ।

प्रभाकर० । (सिर हिला कर) शायद हो । (कुछ सोच कर) खैर पहिले मै इन्दु को उसके यहा से हटाऊंगा और तब साफ साफ उससे पूछूंगा कि बताओ तुम गदाधरसिंह हो या नही ?" मगर फिर भी इसका सबूत मिलना कठिन होगा कि दयाराम को उसी ने मारा है ।

विमला० । नही नही, आप ऐसा कदापि न करें, नही तो हमारा सब उद्योग मिट्टी में मिल जायगा !

प्रभाकर० । नहीं मैं जरूर पूछूंगा और यदि तुम्हारा करना ठीक निकला तो मै स्वयम उससे लड़ूंगा ।

विमला० । (उदासी से) ओह ! तब तो आप और भी अंधेर करेंगे !!

प्रभाकर० । नही, इस विषय मे मै तुमसे राय न लूंगा ।

विमला० । तब आप अपनी प्रतिज्ञा भग करेंगे ।

प्रभाकर० । ऐसा भी न होने पावेगा (कुछ सोच कर) खैर यह तो पीछे देखा जायगा, पहिले इन्दु की फिक्र करनी चाहिए । यद्यपि गुलाबसिंह उसके साथ है और अभी यकायक उसे किसी तरह की तकलीफ नही हो सकती ।

विमला० । मैं उसके लिए बन्दोबस्त कर चुकी हू आप बेफिक्र रहें ।

प्रभाकर० । भला मैं बेफिक्र क्योंकर रह सकता हू ? मुझे यहा से जाने दो, भूतनाथ के घर जाकर सहज ही में यदि तुम चाहती हो तो उसे

यहा तुम्हारे पास ले आऊंगा ।

विमला० । जी नही, ऐसा करने से मेरा भेद खुल जायगा । वह बडा ही काइया है, वात ही वात में आपसे पता लगा लेगा कि उसकी घाटी के साथ एक और स्थान है जहा कोई रहता है । अभी उसे यह मालूम नही ।

प्रभाकर० । नही नही, मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खुलने न दूगा ।

विमला० । अस्तु इस समय तो आप रहने दीजिए, पहिले जरूरी कामो से निपटिए, स्नान ध्यान पूजा पाठ कीजिए, भोजन इत्यादि मे छुट्टी पाइए, फिर जैसी राय होगी देखा जायगा । मै कुछ इन्दु वहिन की दुश्मन तो हू नही जो उसे तकलीफ होने दूगी वल्कि आप से ज्यादे मुझे खुटका लगा हुआ है । अगर वह यहा न आई तो मैंने किया ही क्या ।

प्रभाकर० । खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, थोडी देर के लिये ज्यादे जोर देने की भी अभी जरूरत नही है ।

विमला० । अच्छा तो अव आप कुछ देर के लिए हम दोनो को छुट्टी दीजिए, मै आपके लिए खाने पीने का इन्तजाम करूं, तव तक आप इस (उँगली का इशारा करके) कोठरी में जाइए और फिर वँगले के वाहर जाकर मैदान और कुदरती वाग में जहा चाहिए घूमिये फिरिये, मैं वहुत जल्द हाजिर होऊंगी । मगर आप इस वात का खूब ख्याल रखियेगा कि अव हम दोनो को जमना और सरस्वती के नाम से सम्वोधन न कीजियेगा और न हम दोनो घडी घडी जमना और सरस्वती की सूरत में आपको दिखाई देंगी हम दोनो का नाम विमला और कला वस यही ठीक है ।

इसके वाद और भी कुछ समझा वुझा कर कला को साथ लिए हुए विमला कमरे के वाहर चली गई ।

प्रभाकरसिंह भी उठ खडे हुए और कुछ सोचते हुए उस कमरे टहलने लगे । वे सोचने लगे—क्या जमना का कहना सच है ? क्या भूतनाथ वास्तव में गदाधरसिंह ही है ? फिर मैंने उसे पहिचाना क्यो नही ? सम्भव है कि रात का समय होने के कारण मुझे धोखा हुआ हो या उसी ने कुछ

सूरत वदली हुई हो। मेरा ध्यान भी तो इस तरफ नही था कि गौर से उसे देखता और पहिचानने की कोशिश करता, लेकिन अगर वह वास्तव में गदाधरसिंह है तो नि सन्देह खोटा है और कोई भारी घात करने के लिए उसने यह ढग पकडा है। ऐयार भी तो पहले दर्जे का है वह, जो न कर सके थोडा है, मगर ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसने दयाराम को मारा हो। अच्छा उसने रणधीरसिहजी का घर क्यो छोड दिया जिनका ऐयार था और जो बडी खातिर से उसे रखते थे? सम्भव है कि दयाराम के मारे जाने पर उसने उदास होकर अपना काम छोड दिया हो, या यह भी हो सकता है कि दयाराम के दुश्मन और खूनी का पता लगाने ही के लिए उसने अपना रहन सहन और रग ढग बदल दिया हो। अगर ऐसा है तो रणधीरसिहजी इस बात को जानते होगे। गुलाबसिंह ने वह भेद मुझ पर क्यो नही खोला? हो सकता है कि उन्हे यह सब हाल मालूम न हो या वे धोखे मे आ गए हो, परन्तु नही गदाधरसिंह तो ऐसा आदमी नही था। अस्तु जो हो, बिना विचारे और अच्छी तरह तहकीकात किए किसी पक्ष को मजबूती के साथ पकड लेना उचित नही है। इसके अलावे यह भी तो मालूम करना चाहिए कि जमना और सरस्वती इस तरह स्वतंत्र क्यों हो रही है और इन्होंने अपने को मुर्दा क्यो मशहूर कर दिया तथा यह अनूठा स्थान इन्हें कैसे मिल गया और यहाँ किसका सहारा पाकर ये दोनो रहती हैं। भूतनाथ से दुश्मनी रखना और बदला लेने का व्रत धारण करना कुछ हसी खेल नही है और इस तरह रहने में रुपये पैसे की भी कम जरूरत नही है। आखिर यह है क्या मामला! यह तो हमने पूछा ही नही कि यह स्थान किसका है और तुम लोग आज कल किसकी होकर रहती हो। खैर अब पूछ लेंगे। कोई न कोई भारी आदमी इनका साथी जरूर है, उसे भी भूतनाथ से दुश्मनी है। क्या इन दोनो पर व्यभिचार का दोष भी लगाया जा सकता है? कैसे कहें 'हा' या 'नही', ऐसे खोटे दिन की तो ये दोनो थी नही। अगर ये सती और साध्वी है तो इनका मददगार भी कोई इन्ही का रिश्तेदार जरूर होगा,

मगर वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होगा जिसका यह अनूठा स्थान है। हा यह भी तो है कि यदि ये दोनो व्यभिचारिणी होती तो मुझे यहाँ न लाती और इन्दु को भी लाने की चेष्टा न करती . मगर अभी यह भी क्योंकर कह सकते हैं कि इन्दु को यहाँ लाने की चेष्टा कर रही हैं। अच्छा जो होगा देखा जायगा, चलो पहिले मैदान में घूम आवें तब फिर उन दोनो के आने पर बातचीत से सब मामले की थाह लेंगे।"

प्रभाकरसिंह दरवाजा खोल कर उस कोठडी में घुस गए जिसकी तरफ विमला ने इशारा किया था। उसके अन्दर नहाने तथा सन्ध्या पूजा करने का पूरा पूरा सामान करीने से रक्खा हुआ था, बल्कि एक छोटी सी आलमारी में कुछ जरूरी कपडे और भोजन करने के अच्छे अच्छे पदार्थ भी मौजूद थे। प्रभाकरसिंह ने अपनी ढाल तलवार एक खूटी से लटका दी और तीर कमान भी एक चौकी पर रख कर कपडे का कुछ बोझा हलका किया और जल से भरा हुआ लोटा उठा कर कोठडी के बाहर निकले। कई कदम आगे गए होंगे कि कुछ सोच कर लौटे और उसी कोठडी में जा कर अपनी तलवार खूँटी पर से उतार लाये और बंगले के बाहर निकले।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था और धूप में गर्मी ज्यादे आ चुकी थी मगर उस सुन्दर घाटी में जिसमें पहाडी से सटा हुआ एक छोटा सा चश्मा भी बह रहा था जगली गुल बूटे और सुन्दर पेडो की बहुतायत होने के कारण हवा बुरी नहीं मालूम होती थी। प्रभाकरसिंह पूरब तरफ मैदान की हद्द तक चले गए और नहर लाघ कर पहाडी के कुछ ऊपर चढ गए जहा पेडो का एक बहुत अच्छा छोटा सा झुरमुट था। जब कुछ देर बाद वहा से लौटे तो नहाने धोने और सन्ध्या पूजा के लिए इन्हें वह चश्मा ही प्यारा मालूम हुआ अस्तु वे उसके किनारे एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गए।

घण्टे डेढ घण्टे के अन्दर ही प्रभाकरसिंह सब जरूरी कामो से निश्चिन्त हो गए तथा अपने कपडे भी धोकर सुखा लिए। इसके बाद उस बंगले में पहुचे और इस आशा में थे कि जमना और सरस्वती यहा आ गई होंगी मगर

एक लौंडी के सिवाय वहाँ और किसी को भी न देखा जिसकी जुबानी मालूम हुआ कि 'उनके आने में अभी घण्टे भर की देर है, तब तक आप कुछ जल खा लीजिए जिसका सामान उस नहाने वाली कोठडी में मौजूद है।'

"अच्छा" कह कर प्रभाकरसिंह ने उस लौडी को तो विदा कर दिया और आप एक किनारे फर्श पर तकिए का सहारा लेकर लेट गए और कुछ चिन्ता करने लगे।

घण्टा भर क्या कई घण्टे बीत गए पर जमना और सरस्वती न आई और प्रभाकरसिंह तरह तरह की चिन्ता मे डूबे रहे, यहाँ तक कि उन्होंने कुछ जलपान भी न किया। जब थोड़ा सा दिन बाकी रह गया तब वे घबडा कर बगले के बाहर निकले और मैदान मे घूमने लगे। अभी इन्हें घूमते हुए कुछ ज्यादे देर नही हुई थी कि एक लौंडी बगले के अन्दर से निकली और दौड़ती हुई प्रभाकरसिंह के पास आई तथा एक चीठी उनके हाथ मे देकर जवाब का इन्तजार लिए बिना ही वापस चली गई।

प्रभाकरसिंह ने चीठी खोल कर पढ़ी, यह लिखा हुआ था —

"श्रीमान् जीजाजी!

मैं एक बडे ही तरद्दुद मे पड गई। मुझे मालूम हुआ है कि इन्दु बहिन बुरी आफत में पडा चाहती है, अस्तु मैं उन्ही की फिक्र मे जाती हू। लौट कर आपसे सब समाचार कहूगी। आशा है कि तब तक आप सब के साथ यहाँ रहेंगे।

विमला।"

इस चीठी ने प्रभाकरसिंह को बडे ही तरद्दुद में डाल दिया और तरह तरह की चिन्ता करते हुए वह उस मैदान में टहलने लगे। उन्हे कुछ भी सुध न रही कि किस तरफ जा रहे हैं और किधर जाना चाहिए। उत्तर तरफ का मैदान समाप्त करके वे पहाड़ी के नीचे पहुचे और कई सायत तक रुके रहने के बाद एक पगडंडी देख ऊपर की तरफ चलने लगे।

लगभग तीस या चालीस कदम के ऊपर गये होंगे कि एक छोटा सा काठ

का दर्वाजा नजर आया जिस पर साधारण जजीर चढी हुई थी।

वे इस दरवाजे को देख कर चौंके और चारो तरफ निगाह दौडा कर सोचने लगे, " है! यह दरवाजा कैसा? मै तो विना इरादा किए ही यकायक यहा आ पहुचा। मालूम होता है कि यह कोई सुरग है! मगर इसके मुँह पर किसी तरह की हिफाजत क्यो नही है? यह दरवाजा तो एक लात भी नही सह सकता? शायद इसके अन्दर किसी त'ह की रुकावट हो जैसी कि उस सुरग के अन्दर थी जिसकी राह से मै यहाँ आया था? खैर इसके अन्दर चल के देखना तो चाहिए कि क्या है! कदाचित् इस कैदखाने के वाहर ही निकल जाऊँ। वेशक यह स्थान सुन्दर और सुहावना होने पर भी मेरे लिए कैदखाना ही है। यदि इस राह से मैं वाहर निकल गया तो वडा ही अच्छा होगा, मै उस इन्दु को जरूर वचा लूगा जिसे इस आफत के जमाने मे भी मैने अपने से अलग नही किया था। अच्छा जो हो, मैं इस सुरग के अन्दर जरूर चलूँगा मगर इस तरह निहत्थे जाना तो उचित नही! पहिले वगले के अन्दर चल कर अपनी पूरी पोशाक पहिरना और अपने हरवे लगा लेना चाहिये, न मालूम इसके अन्दर चल कर कैसा मौका पडे! न भी मौका पडे तो क्या? कदाचित् इस घाटी के वाहर ही हो जाय, तो अपने हरवे क्यो छोड जाय?"

इस तरह सोच विचार कर प्रभाकरसिंह वहा से लौटे और तेजी के साथ वगले के अन्दर चले गए। वात की वात मे अपनी पूरी पोशाक पहिर कर और हर्वे लगा कर वे वाहर निकले और मैदान तय करके फिर उसी सुरग के मुहाने पर पहुचे।

दरवाजा खोलने में किसी तरह की कठिनाई न थी अतएव वे सहज ही में दरवाजा खोल उस सुरग के अन्दर चले गए। सुरग वहुत चौडी और ऊँची न थी, केवल एक आदमी खुले ढग से उसमें चल सकता था। अगर सामने से कोई दूसरा आदमी आता हुआ मिल जाय तो वडी मुश्किल से दोनों एक दूसरे को निकाल कर अपनी अपनी राह ले सकते थे। हा लम्वाई में

यह सुरंग बहुत छोटी न थी वल्कि चार साढे चार सौ कदम लम्बी थी। सुरग मे पूरा अन्धकार था और साथ ही इसके वह भयानक भी मालूम होती थी मगर प्रभाकरसिंह ने इसकी कोई परवाह न की और हाथ फैलाए आगे की तरफ वढे चले गए। जैसे जैसे आगे जाते थे सुरग तग होती जाती थी।

जव प्रभाकरसिंह सुरग खतम कर चुके तो आगे रास्ता वन्द पाया लकडी या लोहे का कोई दर्वाजा नही लगा हुआ था जिसे वन्द कहा जाय वल्कि अनगढ पत्थरो ही से वह रास्ता वन्द था। प्रभाकरसिंह ने वहुत अच्छी तरह टटोलने और गौर करने पर यही निश्चय किया कि वस अव आगे जाने का रास्ता नही है, मालूम होता है कि सुरग वनाने वालो ने इसी जगह तक वना कर काम छोड दिया है और यह सुरंग अधूरी रह गई है।

इस विचार पर भी प्रभाकरसिंह का दिल न जमा। उन्होने सोचा जरूर इसमे कोई वात है और यह सुरंग व्यर्थ नही वनाई गई होगी। उन्होंने फिर अच्छी तरह आगे की तरफ टटोलना शुरू किया। मालूम होता था कि आगे छोटे वडे कई अनगढ पत्थरो का ढेर लगा हुआ है। इस वीच में दो तीन पत्थर कुछ हिलते हुए भी मालूम पडे जिन्हे प्रभाकरसिंह ने वलपूर्वक उखाडना चाहा। एक पत्थर तो सहज ही में उखड आया और जव उन्होने उसे उठा कर अलग रखा तो छोटे छोटे दो छेद मालूम पडे जिनमें से उस पार की चीजें दिखाई दे रही थी और यह भी मालूम होता था कि अभी कुछ दिन वाकी है। अव उन्हे और भी विश्वास हो गया कि अगर इस तरह और दो तीन पत्थर अपने ठिकाने से हटा दिए जाय तो जरूर रास्ता निकल आवेगा अस्तु उन्होने फिर जोर करना शुरू किया।

तीन पत्थर और भी अपने ठिकाने से हटाए गए और अब छोटे छोटे कई सूराख दिखाई देने लगे मगर इस वात का निश्चय नहीं हुआ कि कोई दरवाजा भी निकल आवेगा।

उन सूराखों से प्रभाकरसिंह ने गौर से दूसरी तरफ देखना शुरू किया। एक बहुत ही सुन्दर घाटी नजर पडी और कई आदमी भी इधर उधर

चलते फिरते नजर आए ।

यह वही घाटी थी जिसमें भूतनाथ रहता था, जहां जाते हुए यकायक प्रभाकरसिंह गायब हो गए थे, और जहां इस समय गुलाबसिंह और इन्दुमति मौजूद हैं । प्रभाकरसिंह ने उस घाटी को देखा नहीं था इसलिए बड़े गौर से उसकी सुन्दरता को देखने लगे । उन्हें इस बात की क्या खबर थी कि यह भूतनाथ का स्थान है और इस समय इसी में इन्दुमति विराज रही है तथा इस समय उनके देखते ही देखते वह एक भारी आफत में फंसा चाहती है।

प्रभाकरसिंह बराबर उद्योग कर रहे थे कि कदाचित् पत्थरों के हिलाने हटाने से कोई दर्वाजा निकल आवे और साथ ही इसके घड़ी घड़ी उन सूराखों की राह से उस पार की तरफ देख भी लेते थे। इसी बीच में उनकी निगाह यकायक इन्दुमति पर पड़ी जो पहाड़ की ऊंचाई पर से धीरे धीरे नीचे की तरफ उतर रही थी । बस फिर क्या था । उनका हाथ पत्थरों को हटाने के काम में रुक गया और वे बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगे, साथ ही इसके उन्हें इस बात का भी विश्वास हो गया कि यही भूतनाथ का वह स्थान है जहां हम इन्दुमति के साथ आने वाले थे ।

थोड़ी ही देर में इन्दु भी नीचे उतर आई और धीरे धीरे उस कुदरती बगीचे में टहलती हुई उस तरफ बढ़ी जिधर प्रभाकरसिंह थे और अन्त में एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो प्रभाकरसिंह से लगभग पचास साठ कदम की दूरी पर होगी ।

अब प्रभाकरसिंह उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन हुए मगर क्या कर सकते थे लाचार थे, तथापि उन्होंने उसे पुकारना शुरू किया । अभी दो ही आवाज दी थी कि उनकी निगाह और भी दो आदमियों पर पड़ी जो इन्दु से थोड़ी ही दूर पर एक मुहाने या सुरंग के अन्दर से निकले थे और इन्दु की तरफ बढ़ रहे थे । उन्हें देखते ही इन्दु भी घबड़ा कर उनकी तरफ लपकी और पास पहुंच कर एक आदमी के पैरों पर गिर पड़ी जो शक्ल सूरत में बिल्कुल ही प्रभाकरसिंह से मिलता था या यों कहिए कि वह सचमुच का

एक दूसरा प्रभाकरसिंह था* ।

प्रभाकरसिंह के कलेजे में एक बिजली सी चमक गई, अपनी ही सूरत बने हुए एक ऐयार का वहा पहुंचना और इन्दु का उसके पैरों पर गिर पडना उनके लिए कैसा दुखदाई हुआ इसे पाठक स्वयं विचार सकते हैं। केवल इतना हो नही इनके देखते हो देखते नकली प्रभाकरसिंह ने अपने साथी को विदा कर दिया और इसके बाद वह इन्दुमति को कुछ समझा कर अपने साथ ले भागा।

प्रभाकरसिंह चुटीले साप की तरह पेंच खा कर रह गए, कर ही क्या सकते थे? क्योंकि वहा तक इनका पहुचना बिल्कुल ही असम्भव था।

उन्होंने पत्थरो को हटा कर रास्ता निकालने का फिर एक दफे उद्योग किया और जब कुछ नतीजा न निकला तो पेचोताब खाते हुए वहा से लौट पडे। जब सुरंग के बाहर हुए तो देखा कि सूर्य भगवान अस्त हो चुके है और अन्धकार चारो तरफ से घिरा आ रहा है, अस्तु तरह तरह की बातें सोचते और विचारते हुए प्रभाकरसिंह बंगले की तरफ लौटे और जब वहां पहुँचे तो देखा कि हर एक स्थान में मौके मौके से रोशनी हो रही है।

प्रभाकरसिंह उसी कमरे मे पहुँचे जिसमें विमला से मुलाकात हुई थी और फर्श पर तकिए के सहारे बैठ कर चिन्ता करने लगे। वे सोचने लगे—

"वह कौन आदमी होगा जिसने आज इन्दु का इस तरह धोखे मे डाला? इन्दु की बुद्धि पर भी कैसा परदा पड़ गया कि उसने उसे बिल्कुल नही पहिचाना! पर वह पहिचानती ही क्योंकर? एक तो वह स्वयम् घबडाई हुई थी दूसरे सन्ध्या होने के कारण कुछ अन्धकार सा भी हो रहा था, तीसरे वह ठीक ठीक मेरी सूरत बन कर वहा पहुँचा भी था, मुझमे और उसमें कुछ भी फर्क नहीं था, कम्बख्त पोशाक भी इसी ढंग की पहिने हुए था, न मालूम इसका पता उसे कैसे लगा! नहीं, यह कोई आश्चर्य की बात

---

* देखिए तीसरा बयान, भोलासिंह और नकली प्रभाकरसिंह का इन्दु को धोखा देना।

नही है क्योंकि इस समय भी मेरी पोशाक वैसी ही है जैसी हमेशा रहती थी, इससे मालूम होता है कि वह आदमी मेरे लिए कोई नया नहीं हो सकता। अस्तु जो हो मगर इस समय इन्दु मेरे हाथ से निकल गई ! न मालूम अब उस बेचारी पर क्या आफत आवेगी ! हाय यह सब खराबी विमला की बदौलत हुई, न वह मुझे बहका के यहा लाती और न यह नौबत पहुचती। हा यह भी सम्भव है कि यह कार्रवाई विमला ही ने की हो क्योंकि अभी कई घन्टे बीते हैं कि उसने मुझे लिखा भी था कि 'इन्दु किसी आफत में फँसा चाहती है, उसकी मदद की जाती है।' शायद उसका मतलब इसी आफत से हो ? क्या यह भी हो सकता है कि विमला ही ने यह ढग रच हो और उसी ने किसी आदमी को मेरी सूरत बना कर इन्दु को निकाल लाने के लिए भेजा हो ? नही अगर ऐसा होता तो वह यह न लिखती कि 'इन्दु बहिन बुरी आफत मे पडा चाहती हैं।' हा यह हो सकता है कि इस होने वाली घटना का पहिले ही से उसे पता लगा हो और इसी दुष्ट के कब्जे से इन्दु को छुडाने के लिए वह गई हो। जो हो, कौन कह सकता है कि इन्दु किस मुसीबत में गिरफ्तार हो गई ? अफसोस इस बात का है कि मेरी आखो के सामने यह सब कुछ हो गया और मैं कुछ न कर सका।"

इसी तरह की बातें प्रभाकरसिंह को सोचते कई घण्टे बीत गए मगर इस बीच में कोई शान्ति दिलाने वाला वहा न पहुचा। कई नौजवान लडके जो बगले के बाहर पहरे पर दिखाई दिए थे इस समय उनका भी पता न था। दिन भर उन्होंने कुछ भोजन नही किया था मगर भोजन करने की उन्हें कोई चिन्ता भी न थी, वे केवल इन्दुमति की अवस्था और अपनी बेबसी पर विचार कर रहे थे, हाँ कभी कभी इस बात पर भी उनका ध्यान जाता कि देखो अभी तक किसी ने भी मेरी सुध न ली और न खाने पीने के लिए ही किसी ने पूछा !!

चिन्ता करते करते उनकी आख लग गई और नीद मे भी वे इन्दुमति के विषय में तरह तरह के भयानक स्वप्न देखते रहे। आधी रात जा चुकी

थी जब एक लौंडी ने आकर उन्हें जगाया।

प्रभाकर०। (लौंडी से) क्या है?

लौंडी०। मैं आपके लिए भोजन की सामग्री लाई हू।

प्रभाकर०। कहा है?

लौंडी०। (ऊँगली का इशारा करके) उस कमरे मे।

प्रभाकर०। मै भोजन न करूँगा, जो कुछ लाई हो उठा ले जाओ।

लौंडी०। मै ही नही कला जी भी आई हैं जो कि उसी कमरे में बैठी आपका इन्तजार कर रही हैं।

कला का नाम सुनते ही प्रभाकरसिंह उठ बैठे और उस कमरे मे गए जिसकी तरफ लौंडी ने इशारा किया था। यह वही कमरा था जिसको दिन के समय प्रभाकरसिंह देख चुके थे और जिसमें नहाने धोने का सामान तथा जलपान के लिए भी कुछ रक्खा हुआ था।

कमरे के अन्दर पैर रखते ही कला पर उनकी निगाह पडी जो कि एक कम्बल पर बैठे हुई थी प्रभाकरसिंह को देखते ही वह उठ खडी हुई और उसने बडे आग्रह से उन्हे उस कम्बल पर बैठाया जिसके आगे भोजन की सामगी रक्खी हुई थी। बैठने के साथ ही प्रभाकरसिंह ने कहा—

प्रभा०। कला, आज तुम लोगो की बदौलत मुझे बडा ही दुःख हुआ।

कला०। (बैठ कर) सो क्या?

प्रभा०। (चिढे हुए ढग से) मेरी आखो के सामने से इन्दु हर ली गई और मै कुछ न कर सका!!

कला०। ठीक है, आपने किसी सुरंग से यह हाल देखा होगा।

प्रभाकर०। सो तुमने कैसे जाना?

कला०। यहा दो सुरगे ऐसी हैं जिनके अन्दर से भूतनाथ की घाटी बखूबी दिखाई देती है जिनमें से एक के अन्दर के सूराख पत्थर के ढोको से मामूली ढग से बन्द किए हुए हैं और दूसरी के सूराख खुले हुए हैं जिनकी राह से हम लोग बराबर भूतनाथ के घर का रग ढंग देखा करती हैं।

प्रभाकर० । ठीक है इत्तिफाक से मैं उसी सुरंग के अन्दर पहुँच गया था जिसमें देखने के सूराख पत्थर के ढोकों से बन्द किये हुए थे ।

कला० । जी हाँ मगर हम लोगों को आपसे पहिले इस बात की खबर लग चुकी थी ।

प्रभाकर० । तब तुम लोगों ने क्या किया ?

कला० । यही किया कि इन्दु बहिन को उस आफत से छुडा लिया ।

प्रभाकर० । (प्रसन्नता से) तो इन्दु कहाँ है ?

कला० । एक सुरक्षित और स्वतंत्र स्थान में है । अब आप भोजन करते जाइए और बातें किए जाइए, नही तो मैं कुछ न कहूंगी, क्योंकि आप दिन भर के भूखे है बल्कि ताज्जुब नही कि दो दिन ही के भूखे हों । यहाँ जो कुछ खाने पीने का सामान पडा हुआ था उसके देखने से मालूम हुआ कि आपने दिन को भी कुछ नहीं खाया था ।

मजबूर होकर प्रभाकरसिंह ने भोजन करना आरम्भ किया और साथ ही साथ बातचीत भी करने लगे ।

प्रभाकर० । अच्छा तो मैं इन्दु को देखा चाहता हू ।

कला० । जी नही, अभी देखने का उद्योग न कीजिए । कल जैसा होगा देखा जायगा क्योंकि इस समय उसकी तबीयत खराब है, वह दुश्मनों के हाथ से चोट खा चुकी है, यद्यपि उसने बडे साहस का काम किया और अपने तीरों से कई दुश्मनों को मार गिराया ।

इस खबर ने भी प्रभाकरसिंह को तरद्दुद में डाल दिया । वे इन्दु को देखा चाहते थे और कला समझाती जाती थी कि अभी ऐसी करना अनुचित होगा और वैद्य की भी यही राय है ।

बडी मुश्किल से कला ने प्रभाकरसिंह को भोजन कराया और कल पुन मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई ।

प्रभाकरसिंह को इस बात का पता न लगा कि वह किस राह से आई थी और किस राह से चली गई ।

क्या हम कह सकते हैं कि प्रभाकरसिंह इन्दु की तरफ से वेफिक्र हो गए ? नहीं कदापि नही ! उन्हे कुछ ढाढस हो जाने पर भी कला की बातो पर पूरा विश्वास न हुआ । उनका दिल इस बात को कबूल नही करता था कि यदि कला और विमला दूर से या किसी छिपे ढंग से इन्दु को दिखला देती तो कोई हर्ज होता । वात तो यह है कि कला या विमला का इस तरह गुप्त रीति से आना जाना और रास्ते का पता न देना भी उन्हें बुरा मालूम होता था और उन लोगो पर विश्वास नही जमने देता था हाँ इस समय इतना जरूर हुआ कि उनकी विचार-प्रणाली का पक्ष कुछ बदल गया और वे पुरानी चिन्ता के साथ ही साथ किसी और चिन्ता में भी निमग्न होने लगे ।

कई घण्टे तक कुछ सोचने विचारने के वाद वे उठ खड़े हुए और दालानों कमरो तथा कोठड़ियो मे घूमने फिरने और टोह लगाने के साथ ही साथ दीवारो आलो और आलमारियो पर भी निगाहें डालने लगे । पिछला रात का समय, इनके सिवाय कोई दूसरा आदमी वंगले के अन्दर न होने के कारण सन्नाटा छाया हुआ था, मगर जहाँ तक देखने में आता था कमरो और कोठडियो में रोशनी जरूर हो रही थी ।

कमरो और कोठडियो मे छोटी वड़ी कई आलमारिया देखने मे आई जिनमे से कइयो मे तो ताला लगा हुआ था, कई विना ताले की थी और कई में किवाड के पल्ले भी न थे ।

इन्ही कोठडियो मे एक कोठडी ऐसी भी थी जिसमे अंधकार था अर्थात् चिराग नही जलता था अतएव प्रभाकरसिंह ने चाहा कि इस कोठड़ी को भी अच्छी तरह देख लें । उसके पास वाली कोठडी मे एक फर्शी शमादान जल रहा था जिसे उन्होंने उठा लिया मगर जब उस कोठडी के दरवाजे के पास पहुचे तो अन्दर से कुछ खटके की आवाज आई । वे ठमक गए और उस तरफ ध्यान देकर सुनने लगे । आदमी के पैरो की चाप सी मालूम हुई जिससे गुमान हुआ कि कोई आदमी इसके अन्दर जरूर है, मगर फिर कुछ मालूम न हुआ और प्रभाकरसिंह शमादान लिए हुए उस कोठडी के अन्दर चले गए ।

और कोठडियो को तरह,यह भी साफ और सुथरी थी तथा जमीन पर एक मामूली फर्श बिछा हुआ था। हा, छोटी छोटी आलमारियां इसमें बहुत ज्यादे थी जिनमें से एक खुली हुई थी और उसका ताला ताली समेत उसकी कुण्डी के साथ अडा हुआ था। वह सिर्फ एक ही ताली न थी बल्कि तालियो का एक गुच्छा ही था।

ये शमादान लिए हुए उस आलमारी के पास चले गए और उसका पल्ला अच्छी तरह खोल दिया। इसमे तीन लो बने हुए थे जिनमें से एक में हाथ की लिखी हुई कई किताबें थी, दूसरे में कागज पत्र के छोटे बडे कई मुट्ठे थे, और तीसरे मे लोहे की कई बडी बडी तालियां थी और सब के साथ एक एक पुर्जा बधा हुआ था। उन्होने एक ताली उठाई और उसके साथ का पुर्जा खोल कर पढा और फिर ज्यो का त्यो उसी तरह ठीक करके रख दिया, इसके बाद दूसरी ताली का पुर्जा पढा और उसी तरह रख देने के बाद फिर क्रमश सभी तालियो के साथ वाले पुर्जे पढ डाले और अन्त में एक ताली पुर्जे सहित उठा कर अपने जेब में रख ली।

तालियो की जाच करने के बाद उन कागजो के मुट्ठो पर हाथ डाला और घण्टे भर तक अच्छी तरह देखने जाचने के बाद उसमें से भी तीन मुट्ठे लेकर अपने पास रख लिए और फिर किताबो की जाच शुरू की। इसमें उनका समय बहुत ज्यादे लगा मगर इसमें स कोई किताब उन्होने ली नही।

उस आलमारी की तरफ से निश्चिन्त होने के बाद फिर उन्होने किसी और आलमारी को जाचने या खोलने का इरादा नही किया। वे वहा से लौटे और शमादान जहां से उठाया था वहा रख कर अपने उसी कमरे में चले आये जहा आराम कर चुके थे। वहा भी वे ज्यादे देर तक नही ठहरे सिर्फ अपने कपडों और हर्बो की दुरुस्ती करके बँगले के बाहर निकले। आसमान की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि रात बहुत कम बाकी है और आसमान पर पूरब तरफ सुफेदी फैला ही चाहती है।

"कुछ देर तक और ठहर जाना मुनासिब है।" यह सोच कर के इधर

उधर घूमने और टहलने लगे। जब रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी तब दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ रवाना हुए। जब मैदान खतम कर चुके और पहाडी के नीचे पहुचे तो उन्हें एक हलकी सी पगडण्डी दिखाई पडी जो कि बहुत ध्यान देने से पगडण्डी मालूम होती थी, हाँ इतना कह सकते हैं कि उस राह से पहाडी के ऊपर कुछ दूर तक चढने में सुभीता हो सकता था अस्तु प्रभाकरसिंह पहाडी के ऊपर चढने लगे। लगभग पचास कदम चढ जाने के बाद उन्हें एक छोटी सी गुफा दिखाई दी जिसके अन्दर वे वेधडक चले गए और फिर कई दिनो तक वहाँ से लौट कर बाहर न आए।

आठवां बयान

आज प्रभाकरसिंह उस छोटी सी गुफा के बाहर आए हैं और साधारण रीति पर वे प्रसन्न मालूम होते हैं। हम यह नही कह सकते कि वे इतने दिनो तक निराहार या भूखे रह गए हो क्योंकि उनके चेहरे से किसी तरह को कमजोरी नहीं मालूम होती। जिस समय वे गुफा के बाहर निकले सूर्य भगवान उदय हो चुके थे। उन्होने बंगले के अन्दर जाना कदाचित् उचित न जाना या इसकी कोई आवश्यकता न समझी हो अस्तु वे उस सुन्दर घाटी में प्रसन्नता के साथ चारो तरफ टहलने लगे। नही नही, हम यह भी नही कह सकते कि वे वास्तव मे प्रसन्न थे क्योंकि बीच मे उनके चेहरे पर गहरी उदासी छा जाती थी और वे एक लम्बी सांस लेकर रह जाते थे। सम्भव है कि यह उदासी इन्दुमति की जुदाई से सम्बन्ध रखती हो और वह प्रसन्नता किसी ऐसे लाभ के कारण हो जिसे उन्होने उस गुफा के अन्दर पाया हो। तो क्या उन्हें उस गुफा के अन्दर कोई चीज मिली थी या उस गुफा की राह से वे इस घाटी के बाहर हो गए थे अथवा उन्हे किसी तिलिस्म का दर्वाजा मिल गया जिसमें उन्होने कई दिन विता दिए ? जो हो, बात कोई अनूठी जरूर है और घटना कोई आश्चर्यजनक अवश्य है।

बहुत देर तक इधर उधर घूमने के बाद वे एक पत्थर की सुन्दर चट्टान

पर बैठ गए और साथ ही किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो गए। इसी समय इन्हें इन्दुमति ने पहाड़ी के ऊपर से देखा था मगर इस बात की प्रभाकरसिंह को कुछ खबर न थी।

बहुत देर तक चट्टान पर बैठे बैठे कुछ सोचने विचारने के बाद उन्होंने सर उठाया और इस नीयत से बँगले की तरफ देखा कि चलें उसके अन्दर चल कर किसी और विषय की टोह लगावें। उसी समय बँगले के अन्दर से आती हुई तीन औरतों पर उनकी निगाह पड़ी जिनमें से एक इन्दुमति दूसरी विमला और तीसरी कला थी।

इन्दुमति को देखते ही वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए, उधर इन्दुमति भी इन्हें देखते ही दीवानी सी हो कर दौड़ी और प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी।

प्रभाकर०। (इन्दु को उठा कर) अहा इन्दे! इस समय तुझे देख कर मैं कितना प्रसन्न हुआ यह कहने के लिए मेरे पास केवल एक ही जुबान है अस्तु मैं कुछ कह नहीं सकता।

इन्दु०। नाथ, मुझे आपने धोखे में डाला! (मुस्कुराती हुई) मुझे तो इस बात का गुमान भी न था कि आप मेरे साथ चलते हुए रास्ते में किसी चुलबुली औरत को देख कर अपने आपे से बाहर हो जायेंगे और मेरा साथ छोड़ कर उसके साथ दौड़ पड़ेंगे! क्या इस विपत्ति के समय में मुझे अपने साथ लाकर ऐसा ही बर्ताव करना आपको उचित था? क्या आपकी उन प्रतिज्ञाओं का यही नमूना था।

प्रभा०। (हंसते हुए) वाह, तुम अपनी बहिन को और अपने ही मुह से चुलबुली बनाओ! क्या मैं किसी चुड़ैल के पीछे दौड़ा था? तुम्हारी बहिन इन विमला ही ने तो मुझे रोका और कहा कि जरूरी बात कहनी है। मैंने समझा कि यह अपनी है जरूर ही कुछ भलाई की बातें कहेंगी, अस्तु इनके फेर में पड़ गया और तुम्हें खो बैठा। तुम्हारे साथ गुलाबसिंह मौजूद ही थे और इधर विमला से मैं कुछ सुना चाहता था। ऐसी अवस्था में यह

कब आशा हो सकती थी कि साधारण मामले पर इतना बड़ा पहाड़ टूट पड़ेगा ! सच तो यह है कि तुम्हारी बहिन ने मुझे धोखा दिया जिसका मुझे बहुत रंज है और मैं इसके लिए इनसे बहुत बुरा बदला लेता मगर आज इन्होंने तुमसे मुझे मिला दिया इसीलिए मैं इनका कसूर माफ करता हूं मगर इस बात की शिकायत जरूर करूंगा कि मुझे यहां फंसा इन्होंने भूखों मार डाला, खाने तक को न पूछा । आओ आओ बैठ जाओ, सब कोई बैठ कर बातें करें ।

विमला० । वाह ! बहुत अच्छी कही, आपने तो मानो अनशनव्रत ग्रहण किया था ! साफ साफ क्यों नहीं कहते कि किसी फिक्र और तरद्दुद के कारण खाना पीना कुछ अच्छा ही नहीं लगता था ।

कला० । (मुस्कुराती हुई) रात रात भर जाग के कोने कोने की तलाशी लिया करते थे कि शायद कहीं छेद सूराख और आले आलमारी में से इन्दुमति निकल आवे ।

प्रभा० । (चौंक कर, कला से) सो क्या ।

विमला० । बस इतना ही तो ! खैर इन बातों को जाने दीजिए यह बताइए कि आप मुझसे सन्तुष्ट हुए कि नहीं ? या आपको इस बात का निश्चय हुआ या नहीं कि हम लोगों ने जो कुछ किया वह नेकनीयती के साथ था ?

प्रभा० । चाहे यह बात ठीक हो, चाहे तुम हर तरह से निर्दोष हो, चाहे तुम दोनों बहिनों पर किसी तरह के ऐब का धब्बा लगाना कठिन अथवा असम्भव ही क्यों न हो, परन्तु मैं इतना तो जरूर कहूंगा कि तुम्हारी यह कार्रवाई बदनीयती के साथ नहीं तो बेवकूफी के साथ जरूर हुई । सम्भव था कि जिस दुश्मन पर फतह पा के तुम इन्दुमति को छुड़ा लाईं वह और जबर्दस्त होता या तुम पर फतह पा जाता तो फिर इन्दुमति पर कैसी मुसीबत गुजरती ! मेरी समझ में नहीं आता कि इस अनुचित और टेढ़ी बात ने तुम्हें या हमें क्या फायदा पहुंचा, हां इन्दुमति जख्मी हुई यह मुनाफा जरूर हुआ । जिस तरह तुमने मुझे बहकाया था उस तरह वहां यही समझा दिया होता कि

इन्दुमति को साथ लेकर वहा से हट जाना मुनासिब है, तो .

विमला० । (वात काट कर) नही नहीं यदि मैं ऐसा करती तो आप मुझ पर कदापि विश्वास न करते और भुतनाथ तथा गुलावसिंह का साथ न छोडते, साथ ही इसके यह भी असम्भव था कि वहा पर मैं सविस्तार अपना हाल कह कर आपको समझाती, भूतनाथ के ऐवों को दिखाती अथवा उचित अनुचित पर वहस करती, वल्कि

इन्दु० । (वात काट कर, प्रभाकरसिंह से) खैर इन सब वातो से क्या फायदा, जो कुछ हुआ सो हुआ अव आगे के लिए सोचना चाहिए कि हम लोगो का कर्त्तव्य क्या है और क्या करना होगा । मैं इतना जरूर कहूगी कि हमारी ये दोनो जमाने के हाथो से सताई हुई वहिनें इस योग्य नही हैं कि इन पर वदनीयती का धव्वा लगाया जाय। हा यदि कुछ भूल समझी जाय तो वह वडे वडे वुद्धिमान लोगो से भी हो जाया करती है । साथ ही इसके यह भी मानना पडेगा कि ग्रहदशा के फेर में पडे हुए कई आदमी एक साथ मिल कर मुसीवत के दिन काटना चाहें तो सहज मे काट सकते हैं वनिस्वत इसके कि वे सव अलग अलग होकर कोई कार्रवाई करें, आप यह सुन ही चुके हैं कि ये दोनो (कला और विमला) किस तरह जमाने अथवा भूतनाथ के हाथो से सताई जा चुकी है अस्तु हम लोगों का एक साथ रहना लाभदायक होगा ।

प्रभा०।(इन्दु से) तुम्हारा कहना कुछ कुछ जरूर ठीक है । मैं इस वात को पसन्द कर सकता हू कि तुम यहा कुछ दिनों तक अपनी वहिनो के साथ रहो जव तक कि मैं अपने दुश्मनों पर फतह पाकर स्वतत्र और निश्चिन्त न हो जाऊ । मुझे इस वात की जरूर खुशी है कि तुम्हारे लिए एक अच्छा ठिकाना निकल आया है मगर मैं हाथ पैर तुडा कर यहा नहीं रह सकता ।

इन्दु० । मगर आपको इन दोनों की मदद जरूर करनी चाहिये ।

प्रभा० । इसके लिए मैं दिलोजान से तैयार हू, मगर अभी मैं भूतनाथ के साथ दुश्मनी न करूंगा जव तक कि अच्छी तरह जाच न कर लू और

अपने दोस्त गुलावसिंह से राय न मिला लूं।

विमला०। (कुछ घबराहट के साथ) तो क्या आप हमलोगो के बारे में गुलावसिंह से कुछ जिक्र करेंगे।

प्रभा०। बेशक।

विमला०। तब तो आप चोपट ही करेंगे क्योंकि गुलावसिंह भूतनाथ का दोस्त है और उससे हमारा हाल जरूर कह देगा। ऐसी अवस्था में मेरे मनसूबों पर बिल्कुल ही पाला पड जायगा बल्कि ताज्जुब नही कि सहज ही में इस दुनिया से ..(लम्बी सांस लेकर) ओफ! यदि मैं आपसे भलाई की आशा न करू तो दुनिया मे किससे कर सकती हू? वह कौन सा दरख्त है जिसके साये तले मै बैठ सकती हू और वह कौन सा मकान है जिसमे स्वतंत्र रूप से रह कर जिन्दगी बिता सकती हूं। एक इन्द्रदेव जिन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रक्खा है, और दूसरे आप जिनसे मैं भलाई की उम्मीद कर सकती हू। यदि आप ही मेरी प्रतिज्ञा भग करने के कारण हो जावेंगे तो हमारी रक्षा करने वाला और हमारे सतीत्व का बचाने वाला, हमारे धर्म का प्रतिपालन करने वाला और हमारी कुम्हलाई हुई शुभ मनोरथ लता में जीवन संचार करने वाला और कौन होगा? मैं कसम खाकर कह सकती हू कि भूतनाथ कदापि आपके साथ भलाई न करेगा चाहे गुलावसिंह आपका दिली दोस्त हो और चाहे भूतनाथ गुलावसिंह को इष्टदेव के तुल्य मानता हो, साथ ही इसके मैं डंके की चोट पर कह सकती हू कि यदि आप मुझे धर्मपथ से विचलित हुई पावें, यदि आपको मेरे निर्मल आंचल में किसी तरह का धब्बा दिखाई दे, और यदि जाच करने पर मैं झूठी साबित होऊं तो आपको अख्तियार है और होगा कि मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक करें जो किसी अनपढ उजड्ड और अधर्मी दुश्मन के किए भी न हो सके। बेशक आप मुझे.. ......

इतना कहते कहते विमला का गला भर आया और उसकी आंखों से आंसू की धार वह चली।

प्रभा० । (बात काट कर दिलासे के ढंग से) बस बस विमला बस, मुझे विश्वास हो गया कि तू सच्ची है और दिल का गुबार निकालने के लिए तेरी प्रतिज्ञा सराहने के योग्य है। मैं शपथपूर्वक कहता हूं कि तेरे भेदों को तुझसे ज्यादा छिपाऊंगा और तेरी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी पर प्रगट न करूंगा चाहे वह मेरा कैसा ही प्यारा क्यों न हो, साथ ही इसके मैं विश्वास दिलाता हूं कि तू मुझसे स्वप्न में भी बुराई की आशा न रखियो, मगर हां मैं भूतनाथ की जांच जरूर करूंगा कि वह कितने पानी में है।

विमला० । (खुशी से प्रभाकरसिंह को प्रणाम करके) बस मैं इतना ही सुना चाहती थी, आपकी इतनी प्रतिज्ञा मेरे लिए बहुत है। आप शौक से भूतनाथ की बल्कि साथ ही इसके मेरी भी जांच कीजिए मैं इसके लिए कदापि न रोकूंगी, मगर मैं खूब जानती हूं कि भूतनाथ परले सिरे का बेईमान दगाबाज और खुदगर्ज ऐयार है और ऐयारी के नाम में धब्बा लगाने वाला है। मैं आपको एक चीज दूंगी जो समय पड़ने पर आपको बचावेगी, वह चीज मुझे इन्द्रदेव ने दी है और वह आप ऐसे बहादुर के पास रहने योग्य है। यदि आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो तो मैं इन्द्रदेव से भी आपकी मुलाकात कराऊंगी।

प्रभाकर० । मैं बड़ी खुशी से इन्द्रदेव से मिलने के लिए तैयार हूं, उनसे मिल कर मुझे कितनी खुशी होगी मैं बयान नहीं कर सकता। वे निःसन्देह महात्मा हैं और मुझे उनसे मिलने की सख्त जरूरत है! मैं यह भी जानता हूं कि वह मुझ पर कृपादृष्टि रखते हैं और ऐसे समय में मेरी भी पूरी सहायता कर सकते हैं।

विमला० निःसन्देह ऐसा ही है। आप इस घाटी में तीन दिन के लिए मेरी मेहमानी कबूल करें, इन तीन दिनों में मैं कई अद्भुत चीजें आपको दिखाऊंगी और इन्द्रदेवजी से भी मुलाकात कराऊंगी क्योंकि कल वे यहां जरूर आवेंगे।

कला० । (मुस्कुराती हुई दिल्लगी के साथ) मगर ऐसा न कीजिएगा

कि उस रात की तरह ये तीन दिन भी आप इस स्थान की तलाशी मे ही बिता दें और हर रोज सुबह को एक नई घाटी से बाहर निकला करें।

प्रभा०। मैं पहिले ही आवाज देने पर समझ गया था कि तुमने उस रात की कार्रवाई देख ली है, इसे दोहराने की कोई जरूरत न थी। अगर खुशी से तुम अपना घर न दिखाओगी तो मैं बेशक इसी तरह जबर्दस्ती देखने का उद्योग करूंगा।

कला०। जबर्दस्ती से कि चोरी से।

इतना कह कर कला खिलखिला कर हंस पड़ी और तब कुछ देर तक इन सभी में इधर उधर की बातें होती रही, इसके बाद धूप ज्यादा निकल आने के कारण सब कोई उठ कर बंगले के अन्दर चले गए और वहा भी कई घण्टे तक हंसी दिल्लगी तथा ताने और उलाहने की बातें होती रही। इस बीच में इन्दु ने अपनी दर्दनाक कहानी कह सुनाई और प्रभाकरसिंह ने भी अपनी बेबसी में जो कुछ देखा सुना था उससे बयान किया।

दो पहर से ज्यादे दिन चढ चुका था जब विमला सभो को लिए हुए अपने महल में आई। इतनी देर तक खुशी मे किसी को भी नहाने धोने अथवा खाने पीने की सुध न रही।

नौवां बयान

तीन दिन नही बल्कि पाच दिन तक मेहमानी का आनन्द लूट कर आज प्रभाकरसिंह उस अद्भुत खोह के बाहर निकले है। इन पांच दिनो के अंदर उन्होने क्या क्या देखा सुना, किस किस स्थान की सैर की, किस किस से मिले जुले, सो हम यहां पर कुछ भी न कहेंगे, सिवाय इसके कि वे इन्दुमति को विमला और कला के पास छोड आए हैं और इस काम से बहुत प्रसन्न भी हैं। साथ ही इसके यह भी कह देना उचित जान पड़ता है कि अब उनके विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी है। प्रभाकरसिंह सिर झुकाये कुछ

सोचते हुए पहाड के किनारे भूतनाथ की घाटी की तरफ धीरे धीरे चले जा रहे हैं। वे जानते हैं कि भूतनाथ की घाटी का दर्वाजा अब दूर नही है तथा उन्हें यह भी गुमान है कि भूतनाथ या गुलाबसिह ताज्जुब नही कि मिल जाय। इसलिए वे धीरे धीरे कदम उठाते हैं, इधर उधर चौकन्ने होकर देखते हैं और कभी कभी पत्थर की किसी सुदर चट्टान पर बैठ जाते हैं।

प्रभाकरसिह का सोचना बहुत ठीक निकला। वे एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर कुछ सोच रहे थे कि भूतनाथ ने उन्हें देख लिया और तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया, मगर इन्हें सुस्त और उदास देख कर उसे ताज्जुब और दु ख हुआ क्योकि जिस तपाक के साथ वह प्रभाकरसिह से मिला चाहता था उस तपाक के साथ प्रभाकरसिह उससे नही मिले, न तो उसका इस्तकबाल किया और न उसे आवभगत के साथ लिया। हा इतना जरूर किया कि भूतनाथ को देख कर उठ खडे हुए और एक लम्बी सास लेकर बोले, "बस भूतनाथ! तुमसे मुलाकात हो गई, अब केवल गुलाबसिह से मिलने की अभिलाषा है! इसके बाद फिर कोई भी मुझे प्रभाकरसिह को सूरत में नही देख सकेगा!!"

भूत०। (आश्चर्य से) क्यो क्यो, सो क्यों?

प्रभाकर०। तुम जानते हो कि इस दुनिया में मेरा कोई भी नही है। एक इन्दुमति थी सो वह भी ऐसे ठिकाने पहुच गई जहा कोई भी जाकर उससे मिल नही सकता।

भूत०। नही नही प्रभाकरसिह! ये शब्द बहादुरो के मुंह से निकलने योग्य नहीं हैं। क्या इन्दुमति का कुछ हाल आपको मालूम हुआ?

प्रभा०। कुछ क्या बल्कि बहुत।

भूत०। किस रीति से?

प्रभा०। आश्चर्यजनक रीति से।

भूत०। किसकी जुबानी?

प्रभा० । एक निर्जीव मूरत की जुवानी ।

भूत० । अब इस पहेली से तो काम नही चलता, खुलासा कहिए नही तो ......

प्रभा० । अच्छा वैठो और सुनो ।

दोनो वैठ गए और तब भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से पूछा :—

भूत० । अच्छा अब कहिए कि क्या हुआ और किसकी जुवानी आपको इन्दुमति का हाल मालूम हुआ ?

प्रभा० । मैं कह चुका हू कि एक निर्जीव मूरत की जुवानी मुझे वहुत कुछ हाल मालूम हुआ जिसे सुन कर तुम ताज्जुव करोगे । सुनो और आश्चर्य करो कि तुम्हारे पड़ोस मे कैसा एक विचित्र स्थान है । (रुक कर) नही नही, यह मेरी भूल है कि मैं ऐसा कहता हू, नि सन्देह उस विचित्र स्थान का हाल सवसे ज्यादे तुम्ही को मालूम होगा, मैं तो नया मुसाफिर हूँ ।

भूतनाथ० । आखिर किस स्थान के विषय में आप कह रहे हैं ? कुछ समझाइए भी तो ।

प्रभा० । (हाथ का इशारा करके) वस इसी तरफ थोडी ही दूर पर एक शिवालय है जिसके अ दर शिवजी की नही वल्कि किसी तपस्वी ऋषि की मूर्ति है जो कि पूरे आदमी के कद की ... .

भूत०। हा हा ठीक है, इस तरफ के जगली लोग अगस्त मुनि की मूर्ति कहते हैं, खूव लम्वी लम्वी जटा है और मूर्ति के आगे एक छोटा सा कुण्ड है जिसमे हरदम जल भरा रहता है, न मालूम वह जल कहा से आता है कि चाहे जितना भी खर्च करो कम होता ही नही । वह स्थान 'अगस्ता-श्रम' के नाम से पुकारा जाता है ।

प्रभा० । वस वस वस, वही स्थान है ।

भूत० । फिर उससे क्या मतलव ?

प्रभा० । उसी मूर्ति की जुवानी मुझे कई वातें मालुम हुई हैं, तुम्हें तो मालूम ही होगा कि उसमें वात करने की शक्ति है ।

भूत०। (दिल्लगी के तौर पर हस कर) बहुत खासे ! यह आपसे किसने कह दिया है कि भूतनाथ ऐसा पगला हो गया है कि जो कुछ उसे कहोगे वह विश्वास कर लेगा।

प्रभा०। तो क्या मैं गप्प उडा रहा हू ?

भूत०। अगर गप्प नहीं तो दिल्लगी ही सही !

प्रभा०। नही कदापि नही, मुझे आश्चर्य होता है कि तुम यहा के रहने वाले हो कर उस मूर्ति का गुण नही जानते और यदि मैं कुछ कहता भी हू तो दिल्लगी उडाते हो ! अस्तु जाने दो अब मैं इस विषय में कुछ भी नही कहूगा हां यदि तुम चाहोगे तो साबित कर दूगा कि वह मूर्ति बोलती है और त्रिकालदर्शी है ! अच्छा जाओ गुलाबसिंह को जल्द भेजो कि मैं उससे मिल कर विदा होऊ ।

भूत०। तो आप मेरे स्थान पर ही क्यो नही चलते ? उस जगह आपको बहुत आराम मिलेगा, गुलाबसिंह से मुलाकात भी होगी और साथ ही इसके मेरा भ्रम भी दूर हो जायगा।

प्रभा०। नही, अब मैं वहा न जाऊंगा। मैं उसी शिवालय में चल कर बैठता हू, तुम गुलाबसिंह को उसी जगह भेज दो मैं मिल लूगा, बस अब इस विषय में जिद न करो।

भूत०। प्रभाकरसिंहजी ! मैं खूब जानता हू कि आप क्षत्री हैं और सच्चे बहादुर हैं, आपकी वीरता मौरूसी है, खानदानी है, नि सन्देह आपके बडे लोग जैसे वीर पुरुष होते आए हैं वैसे ही आप भी हैं, मगर आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ ऐयारी ढग की बातें करके धोखे में डाला चाहते हैं... अच्छा अच्छा, मेरी बातो से यदि आपकी भृकुटी चढती है तो जाने दीजिए मैं कुछ न कहूंगा, जाता हू और गुलाबसिंह को बुलाए लाता हू।

इतना कह कर भूतनाथ ने जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कर उसके तीन शागिर्द बात की बात मे यहां आ पहुँचे। भूतनाथ उन्हें इशारे में कुछ समझा कर विदा हुआ और अपनी घाटी की तरफ चला गया ? प्रभाकर-

सिंह को मालूम हो गया कि भूतनाथ इन तीनों ऐयारों को मेरी निगरानी के लिए छोड गया है।

कुछ सोच विचार कर प्रभाकरसिंह उठ खडे हुए और धीरे धीरे ईशानकोण की तरफ जाने लगे। एक घडी तक बराबर चले जाने के बाद वह उस शिवालय के पास पहुचे जिसका जिक्र अभी थोडी देर हुई भूतनाथ से कर चुके थे और जिसका नाम भूतनाथ ने अगस्तमुनि का आश्रम बतलाया था।

यह स्थान बहुत ही सुन्दर और सुहावना था और पहाड की तराई में कुछ ऊचे की तरफ चढ कर बना हुआ था। इस जगह दूर दूर तक बेल के पेड बहुतायत के साथ लगे हुए थे और बेलपत्र की छाया से यह जगह बहुत ठण्डी जान पडती थी। मन्दिर यद्यपि बहुत बडा न था मगर एक खूबसूरत छोटी सी चारदीवारी से घिरा हुआ था। आगे की तरफ एक मामूली सभामण्डप और बीच में मूर्ति के आगे एक छोटा सा कुण्ड बना हुआ था जिसमें पानी हर दम भरा रहता था। वह कुण्ड यद्यपि बहुत छोटा अर्थात् डेढ हाथ चौडा तथा लम्बा और उसी अन्दाज का गहरा था मगर उसके साफ और निर्मल जल से सैकडो आदमियों का काम चल सकता था। किसी पहाडी सोते का मुह उसके अन्दर जरूर था जिसमें से जल बराबर आता और बह कर ऊपर की तरफ से निकल जाता था। इस कुण्ड के विषय में लोग तरह तरह की गप्पें उडाया करते थे जिसके लिखने की यहा कोई आवश्यकता नही।

प्रभाकरसिंह आकर इस मन्दिर के सभामण्डप में बैठ गए और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का इन्तजार करने लगे। उन्होने देखा कि भूतनाथ के शागिर्द ऐयारों ने उनका पीछा नही छोडा है बल्कि इधर उधर चलते फिरते दिखाई दे रहे हैं।

सन्ध्या हुआ ही चाहती थी जब गुलाबसिंह को लिए हुए भूतनाथ वहां आ पहुंचा जहा प्रभाकरसिंह बैठे उन दोनो का इन्तजार कर रहे थे।

प्रभाकरसिंह को देख कर गुलाबसिंह ने बहुत प्रसन्नता प्रगट की और दो चार मामूली वातचीत के बाद कहा —

"भूतनाथ की जुबानी आपका हाल सुन कर मुझे वडा ही आश्चर्य हुआ। आपने भूतनाथ को यह समझाने की कोशिश की थी कि यह अगस्त मुनि को मूर्ति वोलती है और इसकी जुबानी आपको इन्दुमति का वहुत कुछ हाल मालूम हुआ है।"

प्रभाकर०। नि सन्देह ! मेरा यह कहना केवल आश्चर्य वढाने के लिए नही है वल्कि इस विषय पर विश्वास दिलाने के लिए है, अव तुम लोग आ ही गए हो तो अपने कानों से सुन लेना कि मूर्ति क्या कहती है। मुझे यह वात अकस्मात मालूम हुई। मैं नही जानता था कि इस मूर्ति में ऐसे गुण भरे हुए हैं, मगर अफसोस इस वात का है कि यह मूर्ति रोज नहीं वोलती और न हर वक्त किसी के सवाल का जवाव देती है। इसके वोलने का खास खास दिन मुकर्रर है जिसका ठीक ठीक हाल मुझे मालूम नही है मगर इतना मै जान गया हू कि वातचीत करते समय यह मूर्ति अन्त में खुद वता देती है कि अव आगे किस दिन और किस समय वोलेगी। इसकी जुवानी सुन कर मैं कहता हू कि आज ग्यारह घडी रात जाने के वाद यह मूर्ति पुन वोलेगी और इसके वाद पुन रविवार के दिन वातचीत करेगी। आह ! ईश्वर की लीला का किसी को भी अन्त नही मिलता, मेरी अक्ल हैरान है और कुछ भी समझ मे नही आता कि क्या मामला है !

गुलाव०। नि सन्देह यह आश्चर्य की वात है ! खैर अव जो कुछ होगा हम लोग देख ही सुन लेंगे परन्तु यह तो वताइए कि आप इस मूर्ति को जुवानी क्या क्या सुन चुके हैं ?

प्रभाकर०। सो मैं अभी कुछ भी नहीं कहूंगा, थोडी ही देर की तो वात है सब्र करो, समय आया ही चाहता है, जो कुछ पूछना हो खुद इस मूर्ति से पूछ लेना। तव तक मैं जरूरी कामो से निपट कर सध्योपासन में

लगता हूं अगर उचित समझिए तो आप लोग भी निपट लीजिए।

भूत०। मैं आपके लिए खाने पीने की सामग्री भी लेता आया हूं।

दसवां बयान

रात लगभग ग्यारह घड़ी के जा चुकी है। भूतनाथ गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह उत्कण्ठा के साथ उस (अगस्तमुनि की) मूर्ति की तरफ देख रहे हैं। एक आले पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मंदिर के अन्दर की सभी चीजें दिखाई दे रही हैं। भूतनाथ और गुलाबसिंह का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है।

यकायक कुछ गाने की आवाज आई, ऐसा मालूम हुआ मानो मूर्ति गा रही है, सब कोई बड़े गौर से सुनने लगे :—

* विहाग *

सबहि दिन नाहि बराबर जात।

कबहूं काला बला पुनि कबहूं कबहूं करि पछितात।

कबहूं राजा रंक पुनि कबहूं, ससि उडगन दिखलात॥

पै करनी अपनी सब चाखैं, फल बोये को खात।

गनरथ करम छिपै नहि कबहूं, अत सबै खुल जात॥

सबहि दिन नाहि बराबर जात।

इसके बाद मूर्ति इस तरह बोलने लगी :—

"आहा! आज मैं अपने सामने किस किस को बैठा देख रहा हूं? महात्मा प्रभाकरसिंह! धर्मात्मा गुलाबसिंह! मैं तभी धर्मात्मा कैसे कहूं, क्या सम्भव है कि भविष्य में भी वह धर्मात्मा बना रहेगा?

"खैर जो कुछ होगा देखा जायगा। हां, यह तीसरा आदमी मेरे सामने कौन है! वही गदाधरसिंह जिसने एक दम से अपनी काया पलट कर दी और एक सुन्दर नाम को छोड़ के भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध होना पसन्द किया! आह, दुनिया मे किसी को किसी पर विश्वास और भरोसा न करना

चाहिए और न किसी की मित्रता पर किसी को घमण्ड करना चाहिए। क्या दयाराम को स्वप्न में भी इस बात का गुमान रहा होगा कि मैं अपने दोस्त गदाधरसिंह के हाथ से मारा जाऊँगा, दोस्त ही नहीं बल्कि गुलाम और ऐयार गदाधरसिंह !!"

मूर्ति की यह बात सुन कर भूतनाथ का कलेजा दहल उठा और गुलाबसिंह तथा प्रभाकरसिंह आश्चर्य के साथ भूतनाथ का मुंह देखने लगे। मूर्ति ने फिर इस तरह कहना शुरू किया —

"अफसोस ! अपनी चूक का प्रायश्चित करना उचित था न कि ढंग बदल कर पुन पाप मे लिप्त होना। भूतनाथ, क्या तुम समझते हो कि इस दुष्कर्म का अच्छा फल पाओगे ? क्या तुम समझते हो कि गुप्त रह कर पृथ्वी का आनन्द लूटोगे ? क्या तुम समझते हो कि बेईमान दारोगा से मिल कर स्वर्ग की सम्पत्ति लूटोगे और मायारानी की बदौलत कोई अनमोल पदार्थ बन जाओगे ? नही नही कदापि नही, गदाधरसिंह ! तुम्हारी किस्मत में दु ख भोगना बदा है अस्तु भोगो, जो जी में आवे करो, मगर ऐ गुलाबसिंह, तुम ऐसे दुष्ट का साथ क्यो दिया चाहते हो जो बिना कमन्द लगाए आस्मान पर चढ जाने का हौसला करता है, खुद गिरेगा और तुम्हें भी गिरावेगा और ऐ प्रभाकरसिंह ? तुम अब अपनी आँखों के आँसू पोछ डालो, इन्दुमति को बिल्कुल भूल जाओ, अपने कातर हृदय को ढाढस देकर वीरता का स्मरण करो और दुनिया मे कुछ नाम पैदा करो। यदि तुम धर्म पथ पर दृढता के साथ चलोगे तो मै बराबर तुम्हारी सहायता करता रहूंगा। मैं तुम्हें सलाह देता हू कि तुम अवश्य उस पथ का अवलम्बन करो जो मैं तुमसे उस दिन कह चुका हू । खबरदार, अपने भेद के मालिक आप बने रहो और किसी दूसरे को उसमें हिस्सेदार मत बनाओ। क्या तुम्हें मुझको और कुछ पूछना है ?"

इतना कह कर मूर्ति चुप हो गई और प्रभाकरसिंह ने उससे यह सवाल किया —

प्रभा० । मुझे यह पूछना है कि मैं किसी को अपना साथी बनाऊँ कि न बनाऊँ ?

मूर्ति० । बनाओ और अवश्य बनाओ । पहिली बरसात के दिन एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात होगी, उसे तुम अपना साथी बनाओगे तो शुभ होगा । अच्छा और कुछ पूछोगे ?

भूत० । अब मैं कुछ पूछूँगा ।

मूर्ति० । पूछो क्या पूछते हो ?

भूत० । पहिले यह बताओ कि अब तुम किस दिन और किस समय बोलोगे ?

मूर्ति० । यदि तुम्हारी नीयत खराब न हुई और तुमने कोई उत्पात न मचाया तो इसी अमावस वाले दिन सोलह घडी रात बीत जाने के बाद हम पुनः बोलेंगे ।

गुलाब० । हमें भी कुछ पूछना है ।

मूर्ति० । तुम्हारी बातों का जवाब आज नहीं मिल सकता, हां यदि तुम चाहो तो आज के अट्ठारहवें दिन इसी समय यहां आ सकते हो परन्तु अकेले ।

गुलाब० । अच्छा तो अब यह बताइए कि हम भूतनाथ के मेहमान बन रहें या . .

मूर्ति० । नहीं अगर अपनी भलाई चाहते हो तो दो पहर के अन्दर भूतनाथ का साथ छोड दो और प्रभाकरसिंह की आज्ञानुसार काम करो । बस अब कुछ मत पूछो ।

इस के बाद मूर्ति ने बोलना बन्द कर दिया । भूतनाथ और प्रभाकरसिंह ने कई तरह के सवाल किए मगर मूर्ति ने कुछ जवाब न दिया अस्तु तीनो आदमी मन्दिर के बाहर निकले और सभा मण्डप में बैठ कर यों बातचीत करने लगे :—

गुलाब० । क्यों भूतनाथ ! यह तो हमें एक नई बात मालूम हुई । मैं

स्वप्न मे भी नही जान सकता था कि दयारामजी को तुमने मारा होगा। अफसोस !!

भूतनाथ०। गुलावसिह, आश्चर्य की वात है कि तुम इतने बडे होशियार होकर भी इस पत्थर की मूर्ति की वातो में फँस गए और जो कुछ उसने कहा उसे सच समझने लगे। इतना तक नही विचारा कि यह असम्भव वात वास्तव मे क्या है ? नि सन्देह यह घोखे की टट्टी है और इसमें कोई अनूठा रहस्य है वल्कि यो कहना चाहिए कि यह कोई तिलिस्म है और इसका परिचालक (इस समय जो कोई भी हो) जरूर हमारा दुश्मन है।

गुलाव०। नही नही भूतनाथ, अब तुम हमे घोखे मे डालने की कोशिश मत करो और न अव हम लोग तुम्हारी वातो पर विश्वास ही कर सकते है। ऐसी आश्चर्यमयी अनूठी घटना का प्रभाव कैसा हम लोगों के ऊपर पडा उसे हमी लोग जान सकते है।

भूतनाथ०। खैर, तुम जानो, जो जी मे आये करो और जहाँ चाहो चले जाओ, मै तुम्हे अपने पास रहने के लिए जोर नही देता, मगर तुम दोस्त हो अस्तु निश्चिन्त रहो, मै तुम्हे किसी तरह की तकलीफ न दूँगा।

इसके वाद इन तीनो मे किसी तरह की वातचीत न हुई, गुलावसिह और प्रभाकरसिह पूरव की तरफ रवाना हुए और भूतनाथ ने पश्चिम की तरफ का रास्ता लिया।

ग्यारहवां वयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन उसी अगस्ताश्रम के पास आधी रात के समय हम एक आदमी को टहलते हुए देखते है। हम नही कह सकते कि यह कौन तथा किस रग ढग का आदमी है, हाँ इसके कद की ऊँचाई से साफ मालूम होता है कि यह औरत नही है वल्कि मर्द है मगर यह नही मालूम पडता कि अपनी स्याह पोशाक के अन्दर वह किस ठाठ से है अर्थात् यह आदमी जिसने स्याह लवादे से अपने को अच्छी तरह छिपा रक्खा है सिपाहियो और वहादुरो की तरह

के हर्बे हथियारो से सजा हुआ है या चोरो की तरह सन्धियो वगैरह से और हत्थियो वगैरह से। जो हो, हमें इसके व्योरे से इस समय कोई मतलव नही, हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि यह यद्यपि टहल टहल कर अपना समय विता रहा है मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने को हर तरह से छिपाए रखने की भी कोशिश कर रहा है। दिन का मुकाविला करने वाली चाँदनी यद्यपि अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर उस अन्धकार को दूर करने की शक्ति उसमें नहीं है जो इस समय पेड़ों की झुरमुट के अन्दर पैदा हो रहा है और जिससे उस टहलने वाले व्यक्ति को अच्छी सहायता मिल रही है। अगस्ताश्रम की तरफ घडी घडी अटक कर देखने और आहट लेने से यह भी मालूम होता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रहा है।

इसे टहलते हुए घण्टा भर से ज्यादे हो गया और तव इसने दो आदमियो को आते और अगस्ताश्रम की तरफ जाते देखा। ये दोनो कद के छोटे तथा ढाल तलवार तथा तीर कमान से सुसज्जित थे मगर इनकी पोशाक के वारे में हम इस समय किसी तरह की निन्दा या प्रशंसा नहीं कर सकते।

मालूम होता है कि वह टहलने वाला स्याहपोश इन्हीं दोनों आदमियो का इन्तजार कर रहा था क्योंकि जैसे ही वे दोनो अगस्ताश्रम की चारदीवारी के अन्दर घुसे वैसे ही इसने उनका पोछा किया। उनके कुछ ही देर वाद यह स्याहपोश भी चारदीवारी के अन्दर जा पहुंचा मगर वहाँ उन दोनो पर निगाह न पडी। पहिले इसने मन्दिर के चारो तरफ की परिक्रमा की और उन दोनो को ढूँढा, और जव पता न लगा तव मन्दिर के अन्दर पैर रक्खा मगर वहाँ भी कोई न था।

हम पहिले कह आए है कि यह मन्दिर वहुत छोटा और साधारण था अतएव इसके अन्दर किसी के खोजने में विलम्व करना वेशक पागलपन समझा जा सकता है मगर उस स्याहपोश ने इसका कुछ भी विचार न किया और खूव अच्छी तरह खोज डाला यहा तक कि उस छोटे से कुण्ड में भी तलवार डाल कर जाच लिया जिसमें हर दम पानी भरा रहता था।

हराम ऐयार बेइज्जती के साथ अपनी जिन्दगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिन्दगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नही कर सकते। हम खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए तुम भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ चाहते हो।

भूत०। (गुस्से से पेच खाकर) मालूम होता है कि तुम दोनो की शामत आई है जिससे मेरी बातो का साफ साफ जवाब न देकर जली कटी बातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से सम्बोधन करते हो। मैं नही जानता कि गदाधरसिंह किस चिडिया का नाम है, पर सम्भव है कि यह कोई भेद की बात हो, इसलिए मै गदाधरसिंह के बारे में कुछ नहीं पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हू कि तुम दोनो आदमी अपना परिचय दो नही तो

एक०। नही तो क्या ? तुम हमारा कर ही क्या सकते हो ? पहिले तुम अपनी जान बचाने का तो बन्दोबस्त कर लो ! हम लोग तुम्हारी झूठी बातो से धोखा नहीं खा सकते, बस चले जाओ और अपना काम करो, हम लोगों का पीछा करके तुम कोई अच्छा नतीजा नही निकाल सकते।

भूतनाथ खिलखिला कर हस पडा और उसने फिर पूछा —

भूत०। मैं समझता हू तुम दोनो मर्द नही बल्कि औरत हो। खैर इसमे भी कोई मतलब नही । मैं वह आदमी नही हूं जो किसी तरह पर मुलाहिजा कर जाऊ, इस तलवार को देख लो और जल्द बताओ कि तुम कौन हो।

इतना कह कर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली,मगर उन दोनो का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुन कडक कर भूतनाथ से कहा—"चल दूर हो मेरे सामने से। तेरी इस निर्लज्ज तलवार से हम लोग डर नही सकते ! समझ ले कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा !"

इसके जवाब में भूतनाथ ने हाथ बढा कर एक की कलाई पकड ली, मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने भूतनाथ पर छुरी का वार किया जिसके लिए शायद वह पहिले ही से तैयार था। वह छुरी यद्यपि बहुत बडी न थी मगर भूतनाथ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका। छुरी भूतनाथ के बगल में चार अंगुल धँस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पडा—"ओफ! यह जहरीली छुरी......।"

बारहवां बयान

दिन पहर भर से ज्यादे चढ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारो तरफ निगाहें दौडाने लगा। उसने अपने को एक ऐसे कैदखाने में पाया जिसमें से उसकी हिम्मत और जवांमर्दी उसे बाहर नही कर सकती थी। यद्यपि यह कैदखाना बहुत छोटा और अन्धकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और सगीन थी तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जगला लगा हुआ था जिसमे आने के लिए छोटा सा दर्वाजा भी था जो इस समय बहुत बडे ताले से बन्द था।

इस कैदखाने के अन्दर बैठा बैठा भूतनाथ अपने सामने का दृश्य बहुत अच्छी तरह देख सकता था। थोडी देर इधर उधर निगाह दौडाने के बाद वह उठ खडा हुआ और जंगले के पास आकर बडे गौर से देखने लगा। उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर बयान कर आये है, जो कला और विमला के कब्जे मे है, अथवा जहां की सैर अभी अभी प्रभाकरसिंह कर आये हैं। बीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ बडे गौर के साथ देख रहा था क्योंकि वह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था, पहाड की ऊंचाई पर बना हुआ था जहाँ से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ साफ दिखाई दे रहा था। उसकी चालाक और चचल निगाहें

हराम ऐयार वेइज्जती के साथ अपनी जिन्दगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिन्दगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नही कर सकते। हम खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए तुम भूतनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ चाहते हो।

भूत०। (गुस्से से पेच खाकर) मालूम होता है कि तुम दोनो की शामत आई है जिससे मेरी वातो का साफ साफ जवाब न देकर जली कटी वातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से सम्बोधन करते हो। मैं नहीं जानता कि गदाधरसिंह किस चिड़िया का नाम है, पर सम्भव है कि यह कोई भेद की वात हो, इसलिए मै गदाधरसिंह के बारे मे कुछ नही पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हू कि तुम दोनो आदमी अपना परिचय दो नही तो

एक०। नही तो क्या ? तुम हमारा कर ही क्या सकते हो ? पहिले तुम अपनी जान बचाने का तो वन्दोवस्त कर लो! हम लोग तुम्हारी झूठी वातो से धोखा नही खा सकते, वस चले जाओ और अपना काम करो, हम लोगो का पीछा करके तुम कोई अच्छा नतीजा नहीं निकाल सकते।

भूतनाथ खिलखिला कर हस पडा और उसने फिर पूछा —

भूत०। मै समझता हू तुम दोनो मर्द नही वल्कि औरत हो। खैर इसमे भी कोई मतलव नही। मैं वह आदमी नही हू जो किसी तरह पर मुलाहिजा कर जाऊं, इस तलवार को देख लो और जल्द वताओ कि तुम कौन हो।

इतना कह कर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली,मगर उन दोनो का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुन कडक कर भूतनाथ से कहा—"चल दूर हो मेरे सामने से। तेरी इस निर्लज्ज तलवार से हम लोग डर नही सकते! समझ ले कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा।"

इसके जवाब में भूतनाथ ने हाथ बढा कर एक की कलाई पकड ली, मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने भूतनाथ पर छुरी का वार किया जिसके लिए शायद वह पहिले ही से तैयार था। वह छुरी यद्यपि बहुत बडी न थी मगर भूतनाथ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका। छुरी भूतनाथ के बगल में चार अंगुल धँस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पडा—"ओफ! यह जहरीली छुरी.....।"

बारहवां बयान

दिन पहर भर से ज्यादे चढ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारो तरफ निगाहें दौडाने लगा। उसने अपने को एक ऐसे कैदखाने मे पाया जिसमे से उसको हिम्मत और जवाँमर्दी उसे बाहर नही कर सकती थी। यद्यपि यह कैदखाना बहुत छोटा और अन्धकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और संगीन थी तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था जिसमें आने के लिए छोटा सा दर्वाजा भी था जो इस समय बहुत बडे ताले से बन्द था।

इस कैदखाने के अन्दर बैठा बैठा भूतनाथ अपने सामने का दृश्य बहुत अच्छी तरह देख सकता था। थोडी देर इधर उधर निगाह दौडाने के बाद वह उठ खडा हुआ और जंगले के पास आकर बडे गौर से देखने लगा। उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर बयान कर आये है, जो कला और बिमला के कब्जे में है, अथवा जहाँ की सैर अभी अभी प्रभाकरसिंह कर आये है। बीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ बड़े गौर के साथ देख रहा था क्योकि वह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था, पहाड की ऊंचाई पर बना हुआ था जहाँ से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ साफ दिखाई दे रहा था। उसकी चालाक और चचल निगाहें

इस बात की जाँच कर रही थी कि वह किस जगह पर कैद है और उसको कैद करने वाला कौन है।

इस घाटी में न कभी वह आया था न इसे कभी देखा था और न इसका हाल ही कुछ जानता था, अतएव उसे किसी तरह का गुमान भी न हुआ कि यह उसके पड़ोस की घाटी है अथवा इसके पास ही उसका निजी स्थान है जहाँ वह रहता है।

थोड़ी देर तक बड़े गौर से इधर उधर देखने के बाद भूतनाथ हताश होकर बैठ गया और तरह तरह की बातें सोचने लगा। उसे इस बात का बहुत ही दु ख था कि उसके हरबे छीन लिए गए थे और उसका ऐयारी का बटुआ भी उसके पास न था मगर उसके उस जख्म मे कोई विशेष तकलीफ न थी जिसकी बदौलत वह बेहोश होकर कैदखाने की हवा खा रहा था।

दोपहर की टनटनाती धूप भूतनाथ की आँखों के सामने चमक रही थी। भूख की तो कोई बात नही मगर प्यास के मारे उसका गला चटका जाता था। वह सोच रहा था कि मुझे दाना पानी देने के लिए भी कोई आवेगा या मैं भूखा ही पिंजरे में बन्द रहूंगा क्योंकि अभी तक किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी थी।

थोड़ी देर और बीत जाने के बाद एक औरत वहाँ आई जिसके पास भूतनाथ के लिए खाने पीने का सामान था। उसने वह सामान बड़ी होशियारी से जंगले के अन्दर एक खास रास्ते से जो इसी काम के वास्ते बना हुआ था रख दिया और कहा, "लो गदाधरसिंह! तुम्हारे लिए खाने पीने का सामान आ गया है, इसे खाओ और मौत का इन्तजार करो।"

भूत०। (पानी का लोटा उठा कर) हाँ ठीक है, बस मेरे लिए यही काफी है, मै सिर्फ पानी ही पीकर मौत का इन्तजार करूँगा क्योंकि जब तक मै जंगल मैदान और स्नान ध्यान इत्यादि कर्म न कर लूं भोजन नही कर सकता।

औरत०। खैर तुम्हारी खुशी, मेरा जो कुछ काम था उसे मैं पूरा कर

चुकी मगर मैं अपनी तरफ से यह पूछती हू कि तुम कै दिन तक इस तरह से गुजारा कर सकोगे ? (कुछ सोच कर) नही, मेरा यह सवाल करना ही वृथा है क्योंकि मै खूब जानती हूं कि दो तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारा फैसला हो जायगा और तुम इस दुनिया से उठा दिये जाओगे।

भूत०। अगर ऐसा ही है तो यह दो तीन दिन का विलम्ब भी क्यो ?

औरत०। इसलिये कि तुम्हारी सजा का ढंग निश्चय कर लिया जाय।

भूत०। ढंग कैसा ? मै नही समझा !

औरत०। मतलब यह कि तुम एक दम से नहीं मार डाले जाओगे वल्कि तरह तरह की तकलीफ देकर तुम्हारी जान लो जायगी, अस्तु यह निश्चय किया जा रहा है किस तरह की तकलीफ तुम्हारे लिए उचित है।

भूत०। ये वातें कौन तजवीज कर रहा है ?

औरत०। हमारे मालिक लोग।

भूत०। मालूम होता है कि तुम्हारे मालिक लोग मर्द नही हैं हीजड़े है या औरत। ऐसे विचार मर्दों के नही होते !

औरत०। वेशक ऐसा ही है, हमारे मालिक औरत हैं।

भूत०। (आश्चर्य से) औरत हैं !!

औरत०। हाँ औरत।

भूत०। मगर मैंने किसी औरत के साथ कभी दुश्मनी नही की वल्कि कोई मर्द भी ऐसा न मिलेगा जो मुझे अपना दुश्मन वतावे और कहे कि गदाधरसिंह ने मुझे वर्वाद कर दिया।

औरत०। जो हो, इस विषय में मै नहीं कह सकती आखिर कोई वात ही होगी तो !!

भूत०। क्या तुम वता सकती हो कि तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है अथवा वह कौन है ? तुम यकीन रक्खो कि इसके वदले मे मै तुम्हें इतनी दौलत दूंगा कि कभी तुमने आँख से न देखी होगी।

औरत०। मैं ऐसा नहीं कर सकती कि तुम्हें इस कैद से छुड़ा दूं

और तब तुम मुझे बेअन्दाज दौलत देकर मालामाल कर दो इसके अतिरिक्त इस कैदखाने की ताली खुद मालकिन के कब्जे में है।

भूत०। नही नही, मैं यह नही कहता कि तुम मुझे इस कैदखाने से बाहर कर दो।

औरत०। अगर ऐसा नही है तो तुम मुझे किस काम के लिए और कहाँ से दौलत दे सकते हो।

भूत०। मेरे मकान में जो कुछ दौलत है उसका तो कोई ठिकाना ही नही; मगर मेरे पास भी हर दम बटुए में दो चार लाख रुपये की जमा मौजूद रहती है। तुम कह सकती हो कि इस समय तो तुम्हारे पास तुम्हारा बटुआ भी नही है

औरत०। हा हा मैं यही कहने वाली थी, बल्कि यह भी समझ रखना चाहिए कि इस समय वह बटुआ जिसके कब्जे में होगा उसने वह रकम भी जरूर ही निकाल ली होगी।

भूत०। (कुछ बनावटी हसी के साथ) नही नही, इस बात का तो तुम गुमान भी न करो कि वह रकम निकली गई होगी, क्योंकि उसमें कोई जवाहिरात की डिबिया नही है या कोई ऐसी चीज नही है जिसे कोई देखते ही दौलत समझ ले, बल्कि उस बटुए में कोई ऐसी चीज है जिसे मेरे सिवाय कोई बता नही सकता कि यह दौलत है और जो किसी अनजान की निगाह मे बिल्कुल रद्दी चीज है, बल्कि यो समझो कि जहा दौलत रक्खी हुई है वहा की ताली उस बटुए में है जिसको कलई मेरे सिवाय कोई खोल ही नही सकता और न मेरे बताए बिना कोई पा ही सकता है। वह दौलत जो लगभग चार पाच लाख रुपये के होगी मैं सिर्फ इतने ही काम के बदले में दे दिया चाहता हू कि बटुआ मुझे ला दिया जाय और बतना दिया जाय कि यह स्थान किसका है और मै किसका कैदी हू। मैं समझता हू कि मै जरूर मार ही डाला जाऊँगा, अस्तु ऐसी अवस्था में अगर वह दौलत किसी नेक रहमदिल और

गरीब के काम आ जाय तो इससे बढ़ कर खुशी की बात और क्या हो सकती है।

अहा, दुनिया मे रुपया भी एक अजीब चीज है। इसकी आंच को सह जाना कोई हंसी खेल नहीं है। इसे देख कर जिसके मुंह मे पानी न भर आवे समझ लो कि वह पूरा महात्मा है, पूरा तपस्वी है और सचमुच का देवता है, इस कम्बख्त की बदौलत बड़े बड़े घर सत्यानाश हो जाते है, भाई भाई मे बिगाड़ हो जाता है, दोस्तो की दोस्ती मे बट्टा लग जाता है जोरू और खसम का रिश्ता कच्चे धागे से भी ज्यादे कमजोर होकर टूट जाता है, और ईमानदारी की साफ और सुफेद चादर में ऐसा धब्बा लग जाता है जो किसी तरह छुडाए नही छूटता। इसे देख कर जो धोखे मे न पडा, इसे देख कर जिसका ईमान न टला, और इसे जिसने हाथ पैर का मैल समझा, बेशक कहना पड़ेगा कि उस पर ईश्वर की कृपा है और वही मुक्ति का वास्तविक पात्र है।

इसकी आंच के सामने एक लौंडी का दिल भला कब तब कड़ा रह सकता है? यद्यपि उस औरत ने अपने चेहरे के उतार चढाव को बहुत सम्हाला फिर भी भूतनाथ जान ही गया कि यह लालच के फन्दे में फस गई।

भूत०। सच तो यो है कि उस दौलत को मैं बहुत ही सस्ते दाम में बल्कि मुफ्त मोल मे बेच रहा हूं, अब भी अगर तुम न खरीदो तो मैं जोर देकर कहूंगा कि तुमसे बढ कर बदनसीब इस दुनिया मे दूसरा कोई नही है। क्या वह दौलत कम है? क्या उसे पाकर फिर भी किसी की नौकरी की जरूरत रह सकती है? क्या उसकी बदौलत सुख का सामान इकट्ठा होने मे किसी तरह की त्रुटि हो सकती है? बिल्कुल नही। फिर सोच विचार करना क्यो और बिलम्ब कैसा? केवल हमारा ऐयारी का बटुआ ला देना और यह बता देना कि मैं किसकी कैदी हूं और इस स्थान का मालिक कौन है, सिर्फ इतने ही के बदले में अभी अभी यह रकम तुम्हें मिल सकती है सो भी ऐसी कि उसे कोई छीन भी न सकेगा।

औरत० । तुम यकीन जानो कि मैं एक अमीर की लौंडी हू मेरी मालकिन बेअन्दाज दौलत लुटाने वाली है, और उसकी बदौलत मुझे किसी बात की पर्वाह नही है

भूत० । (बात काट कर) मगर लौंडीपन का तौक गले मे जरूर पडा हुआ है, स्वतत्र नही लापर्वाह और बेफिक्र नही !

औरत० । हा, यह सच है मगर उनकी नौकरी मुझे गढाती नही और न मुझसे बहिनापे का सा बर्ताव करती है, मगर फिर भी अगर तुम खुशी से दोगे तो मै उस दौलत को जरूर ले लूगी लेकिन सिर्फ ऐसी अवस्था में जब कि मुझ पर नमकहरामी का धब्बा न लग सके ।

ग्रन्थकर्ता० । सत्यवचन ! नमकहराम !! भला ऐसी भी कोई बात है !!

भूत० । नही नही , तुम पर नमकहरामी का धब्बा नही लग सकेगा और तुम्हारी मालकिन का भी कुछ नुकसान नही होगा क्योकि मैं इस कैद-खाने से छूट कर भाग नही जाना चाहता, केवल इतना ही जानना चाहता हू कि मै किसका कैदी हू और अपना बटुआ केवल इतने ही के लिए मागता हू कि उस खजाने की ताली निकाल कर तुम्हे दे दू और बता दू कि वह खजाना कहा है ।

औरत० । अच्छा पहिले मै बटुआ लाकर तुम्हें दे दू तब पीछे बता दूगी कि तुम किसके कैदी हो, सब्र करो और दिन बीत जाने दो, देखो वह दूसरी लौंडी आती है, अब मैं विदा होती हू ।

इतना कह कर वह लौंडी भूतनाथ के दिल में खुशी और उम्मीद का पौवा जमा कर चली गई ।

भूतनाथ बडा ही कट्टर और दु ख सुख बर्दाश्त करने वाला ऐयार था । कठिन से कठिन समय आ पडने पर भी उसकी हिम्मत टूटती न थी और वह अपनी कार्रवाई से बाज नही आता था ।

खाने पीने का सामान जो कुछ उसके सामने आ गया था उसमें से पानी के सिवाय बाकी सब कुछ ज्यो का त्यो पडा रह गया । भूतनाथ को सिर्फ

इस बात का इन्तजार था कि दिन बीते, अन्धेरा हो और वह लौंडी आवे। इस बीच में बारी से आठ दस लौंडिया उसके पास आईं, उन्होंने तरह तरह की बातें की और खाने के लिए समझाया बल्कि यहाँ तक कहा कि तुम्हारे मैदान जाने और नहाने का भी सामान किया जा सकता है मगर भूतनाथ ने कुछ भी न माना बल्कि उनकी बातो का जवाब तक न दिया और वे सब को सब निराश होकर लौटती गई।

दिन बीत गया सन्ध्या हुई और अन्धकार ने अपना दखल जमाना शुरू किया दो घन्टे रात जाते जाते तक निशादेवी का शून्यमय राज्य हो गया। उस कैदखाने के पास जिसमें भूतनाथ बन्द था। पेडो की बहुतायत होने के कारण इतना अन्धकार था कि किसी का आना जाना दूर से मालूम नही हो सकता था।

भूतनाथ जगले के सीखचा पकडे हुए खडा था कुछ सोच रहा था कि वही लौंडी जिसके ऊपर भूतनाथ का मोहनी मत्र चल चुका था और जो लालच के सुनहरे जाल में फँस चुकी थी हाथ में भूतनाथ का ऐयारी का बटुआ लिए आ पहुची और जगले के सूराख* से हाथ बढा कर धीरे से बोली, "लो गदाधरसिंह, यह तुम्हारा बटुआ हाजिर है। इसके लिए मुझे बहुत तकलीफ उठानी पडी।।"

भूत०। बेशक बेशक, अब हमारा और तुम्हारा दोनो का काम चल गया। (सम्भल कर, क्योंकि उसके मुँह से हमारा काम निकल गया, यह शब्द भी खुशी के मारे निकल आये थे जो कि वह निकालना नही चाहता था) मेरा काम तो सिर्फ इतना ही कि मुझे अपने कैद करने वाले का पता लग जायगा मगर तुम अब हर तरह से प्रसन्न और स्वतत्र हो जाओगी।

इतना कह कर भूतनाथ ने बटुआ उसके हाथ से ले लिया और कहा, "क्या इसमें मेरा सब सामान ज्यो का त्यो पडा हुआ है?"

लौंडी०। बेशक।

* जिसे खोल कर खाने पीने की चीजें अन्दर रक्खी जाती थी।

भूत० । तब मैं रोशनी [illegible] निकालूँ ?

लौंडी० । नही नही, रोशनी करने का मौका नही है, जो कुछ तुम्हे करना है अन्धेरे ही में करो और जो कुछ निकालना है उसे टटोल कर निकालो, मैं तुम्हें फिर भी विश्वास दिलाती हू कि तुम्हारी सब चीजें इसमे ज्यों की त्यो रक्खी हैं ।

भूत० । खैर कोई चिन्ता नही, मैं सब काम अन्धेरे ही में कर सकूँगा, अगर मेरी चीजें ज्यो की त्यों रखी हैं और इधर उधर नही की गई तो मुझे रोशनी की कुछ भी जरुरत नही है । अच्छा अब वह असल काम हो जाना चाहिए अर्थात् मुझे मालूम हो जाना चाहिए कि मैं किसका कैदी हू ।

लौंडी० । हा मैं बताती हू (कुछ सोच कर) मगर मै फिर सोचती हू कि यह काम मेरे लिए बिलकुल ही समुचित होगा, मालिक का नाम तुम्हे बता देना । सन्देह मालिक के साथ दुश्मनी करना है ।

भूत० । यह सोचना तुम्हारी बुद्धिमानी नही है बल्कि बेवकूफी है, हाँ यदि मैं स्वतन्त्र होता और मैदान में तुमसे मुलाकात हुई होती तो तुम्हारा यह सोचना कुछ उचित भी हो सकता था । तुम देख रही हो कि मैं किस अवस्था में हू और मेरी तकदीर में क्या लिखा हुआ है । फिर, मैं इस समय कर ही क्या सकता हू ? सोचो तो

लौंडी० । हाँ एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक ही है, अच्छा मैं बताए देती हूं कि तुम्हारा दुश्मन कौन है और तुम्हें किसने कैद किया ।

भूत० । हा बस मैं इतना ही सुना चाहता हू ।

लौंडी० । तुम्हें उसी ने कैद किया है जिसके पति को तुमने बेइमानी और नमकहरामी करके बडी निर्दयता के साथ बेकसूर मारा है । दयाराम को मार कर तुम इस दुनिया में सुखी नही हो सके और न भविष्य में तुम्हारे सुखी होने की आशा है ।

भूत० । (चौंक कर ताज्जुब के साथ) हैं !! क्या दयाराम की दोनो

स्त्रिया जीती है ? और उनको इस बात का विश्वास है कि दयाराम को मैंने ही मार डाला है ?

लौंडी०। हां, वे दोनों जीती हैं, और उन्हें इस बात का विश्वास है।

भूत०। मगर वह बात सच नही है, अपने प्यारे मित्र दयाराम को मैंने नही मारा बल्कि किसी दूसरे ही ने मारा है।

लौडी०। खैर इन बातो से तो मुझे कोई सम्बन्ध नहीं। मैं तो लौंडी ठहरी, जो कुछ सुनती हू वही जानता हूं !!

भूत०। अच्छा अच्छा, मुझे इन बातो से कुछ फायदा भी नही है, बस विश्वास इसी बात का हो जाना चाहिए कि तुम सच कहती हो और वास्तव मे दयाराम की दोनो स्त्रिया जीती हैं। मुझे खूब याद है कि उनके मर जाने की खबर बडी सचाई के साथ उडी थी और उनके क्रिया कर्म मे बहुत ज्यादा रुपया खर्च किया गया था जिसे मैं निज के तौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हूं। इस बारे में तुम मुझे क्योकर धोखा दे सकती हो !!

लौंडी०। तुम जो चाहो समझो और कहो, मैं तुमसे बहस करने के लिए नहीं आई हू और न इन सब रहस्यों को जानती ही हू, बात जो सच है वही कह दी है।

भूत०। मगर मुझे विश्वास नही आता।

लौंडी०। विश्वास नही आता तो जाने दो।

भूत०। ऐसी अवस्था में मै इनाम भी नही दे सकता।

लौंडी०। मुझे इसकी भी कोई परवाह नही है।

भूत०। अच्छा तो जाओ अपना काम देखो।

लौंडी०। बटुआ मुझे वापस कर दो, जहा से मैं लाई हूं वहा रख आऊं और बदनामी से बचूं।

भूतनाथ उस लौंडी से बातें भी करता जाता था और अपने बटुए में से जिसे लौंडी ने ला दिया था अन्धेरे मे टटोल टटोल कर कुछ निकालता भी जाता था जिसकी खबर उस लौंडी को कुछ भी न थी और न अन्धकार के कारण वह कुछ देख ही सकती थी। अस्तु लौंडी की बात का

भूतनाथ ने पुन यों जवाव दिया —

भूत० । वदनामी से तो तुम किसी तरह नही बच सकती हो । अगर मै यह वटुआ तुम्हें वापस न दू तो तुम क्या करोगी ?

लौंडी० । मै खूब चिल्लाऊगी कि किसी लौंडी ने यह वटुआ ला कर भूतनाथ को दे दिया है ।

भूत० । लेकिन लोगो के इकट्ठा हो जाने पर मै यही कह दूगा कि इसी लौंडी ने ला दिया है ।

लौंडी० । अगर इस वात का किसी को विश्वास न होगा ।

भूत० । (हस कर) मालूम होता है कि तुम विश्वासपात्र समझी जाती हो । खैर तुम नही तो कोई दूसरी तुम्हारी साथिन पकडी जायगी ।

लौंडी० । जो होगा देखा जायगा ।

भूत० । मगर नही मैं ऐसा वेईमान नही हू , लो यह वटुआ देता हूं जहा से तुम लाई हो रख आओ । क्या कहू , मुझे तुम्हारी वातो पर विश्वास ही नही होता नही तो मै वह खजाना जरूर तुम्हें दे देता ।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह वटुआ लौंडी की तरफ वढाया । उसने जिस तरह दिया था उसी तरह ले लिया और यह कहती हुई वहा से चली गई, "वुरे लोगो से वातचीत करना भो वुरा ही है, इस काम के लिए मुझे जिन्दगी भर पछताना पडेगा ।"

जब वह लौंडी कुछ दूर चली गई भूतनाथ ने धीरे से यह जवाव दिया जिसे वह खुद ही सुन सकता था—"तुम्हारे लिए चाहे जो हो मगर मेरा काम निकल ही गया । अव मै इस पेंचीले मामले की गुत्थी अच्छी तरह सुलझा लूगा ।"

भूतनाथ ने वात करते करते उस वटुए मे से जो कई चीजें निकाल ली थी उनमें शीशिया भी थी जिसमे किसी तरह का अर्क था । एक शीशी का अर्क किसी ढग से भूतनाथ ने कैदखाने के कई सीखचों की जड में लगाया और इसके कुछ देर वाद दूसरी शीशी का अर्क भी उसी जगह पर

लगाया जिससे उतनी जगह का लोहा गल कर मोमबत्ती की तरह हो गया और भूतनाथ ने उसे बडी आसानी से हटा कर अपने निकलने लायक रास्ता बना लिया। बात की बात में भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया और मैदान की हवा खाने लगा।

भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया सही मगर उसके लिए इस घाटी से बाहर हो जाना बडा ही कठिन था। एक तो अन्धेरी रात दूसरे पहाड की ढालवी और अनगढ ढोको वाली पथरीली जमीन, तिस पर पगडण्डी और रास्ते का कुछ पता नही। मगर खैर जो होगा देखा जायगा, भूतनाथ को इन बातो की कुछ परवाह न थी।

अब हम थोडा सा हाल उस लौंडी का बयान करेंगे जो भूतनाथ के हाथ से बटुआ वापस लेकर चली गई थी।

उसे अपने किये पर बडा ही पछतावा था, उसे इस बात का बडा ही दु ख था कि उसने भूतनाथ से अपने मालिको का नाम बता दिया जो अपने को बहुत ही छिपा कर इस घाटी मे रहती थीं अब वह इस बात को खूब समझने लगी कि अगर भूतनाथ किसी तरह छूट कर निकल गया तो मेरे इस कर्म का बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा और भेद खुल जाने के कारण मेरे मालिको को सख्त तकलीफ उठानी पडेगी। वह यही सोचती हुई जा रही थी कि मैने बहुत ही बुरा किया जो लालच में पड कर अपने बेकसूर मालिको के साथ ऐसी बेईमानी का बर्ताव किया। अब क्या किया जाय और मैं अपने इस पाप का क्या प्रायश्चित करूँ ?

साथ ही इसके उसने यह भी सोचा कि भूतनाथ का यह बटुआ कुछ हलका मालूम पडता है। इसमें अब वह वजन नही है जो पहिले था जब मै लाई थी। मालूम होता है भूतनाथ ने अन्धेरे मे टटोल कर अपने मतलब की चीज निकाल ली। अपने हाथ की रक्खी हुई चीज निकालने के लिये बुद्धिमान आदमी को रोशनी की जरूरत नहीं पडती। भूतनाथ ने बडी चालाकी की, अपना काम कर लिया और मुझे बेवकूफ बना कर बिदा

किया ! मैं ही ऐसी कम्बख्त थी जो उसके फन्दे में आ गई, अब मुझे जरूर अपने इस पाप का प्रायश्चित्त करना पडेगा !!"

इसी तरह की बात सोचती वह लौंडी वहां से चली गई ।

तेरहवां बयान

रात आधी से ज्यादे बीत जाने पर भी कला विमला और इन्दुमति की आंखो में नीद नही है । न मालूम किस गम्भीर विषय पर ये तीनो विचार कर रही हैं । सम्भव है कि भूतनाथ के विषय ही में कुछ विचार कर रही हो । अस्तु जो कुछ हो इनकी बातचीत सुनने से मालूम हो जायगा ।

इन्दु० । (विमला की तरफ देख कर) बहिन ! जब इस बात का निश्चय हो गया कि तुम्हारे पति को गदाधरसिंह (भूतनाथ) ने मार डाला है तब उसके लिये बहुत बडे जाल फैलाने और सोच विचार करने की जरूरत ही क्या है ? जब वह कम्बख्त तुम्हारे कब्जे में आ गया है तो उसे मार कर सहज ही में बखेडा तै करो ।

विमला० । (ऊँची सांस लेकर) हाय ! बहिन तुम क्या कहती हो ? इस कमीने को यो ही सहज में मार डालने से क्या मेरे दिल की आग बुझ जायगी ? क्या कहा जायगा कि मैंने उसे मार कर अपना बदला ले लिया ? किसी को मार डालना और बात है और बदला लेना और बात है । इसने मेरे दिल को जो कुछ सदमा पहुँचाया है उससे सौ गुना ज्यादे दु ख इसे हो तब मै समझूँ कि मैंने कुछ बदला लिया ।

इन्दु० । बहिन ! तुम खुद कह चुकी हो कि यह बहुत बुरी बला है अस्तु यदि यह तुम्हारे कब्जे से निकल गया या तुम्हारे असल भेद की इसे खबर हो तो बहुत बुरा हो जायगा ।

विमला० । बल्कि अनर्थ हो जायगा ! तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, मगर उसे हमारा भेद कुछ भी नही मालूम हो सकता और न वह यहा से निकल कर भाग ही जा सकता है ।

इन्दु० । ईश्वर करे ऐसा ही हो, मगर

कला० । कल इन्द्रदेवजी यहाँ आयेंगे, उनसे राय करके कोई न कोई कार्रवाई बहुत जल्द की जायगी ।

विमला० । मैं सोच रही हू कि तब तक उसकी (पडोस वाली) घाटी पर कब्जा कर लिया जाय, उसका सदर दर्वाजा जिधर से वे लोग आते जाते हैं बन्द कर दिया जाय, उसके आदमी सब मार डाले जायं और उसका माल असबाब सब लूट लिया जाय, और इन बातो की खबर भूत-नाथ को भी दे दी जाय ।

इन्दु० । बहुत अच्छी बात है ।

विमला० । और इतना काम मैं सहज ही में कर भी सकूंगी ।

इन्दु० । सो कैसे ?

विमला० । तुम देखती रहो सब काम तुम्हारे सामने ही तो होगा ।

कला० । हा कल ही इस काम को करके छुट्टी पा लेना चाहिए जिसमें इन्द्रदेवजी आवें तो उनके दिल को भी कुछ ढाढस पहुचे ।

विमला० । कल नही आज बल्कि इसी समय उस घाटी का रास्ता बन्द कर दिया जाय जिसमे लोग भाग कर बाहर न चले जायं ।

इन्दु० । अगर ऐसा हो जाय तो बहुत ही अच्छी बात है, मगर दूसरे के घर मे तुम इस तरह की कार्रवाई

विमला० । (मुस्कुरा कर) नही बहिन, तुम व्यर्थ इतना सोच कर रही हो । बात है कि जिस तरह यह स्थान और घाटी जिसमे हम लोग रहती है इन्द्रदेवजी के अधिकार में है, उसी तरह वह घाटी भी जिसमें भूतनाथ रहता है इस घाटी का एक हिस्सा होने के कारण इन्द्रदेवजी के अधिकार मे है । यह दोनों घाटी एक ही हैं, या यो कहो कि एक ही मकान का यह जनाना हिस्सा और वह मर्दाना हिस्सा है और इसलिए इन दोनो जगहो का पूरा पूरा भेद इन्द्रदेवजी को मालूम है और उन्होंने जो कुछ मुझे बताया है मैं जानती हू । इस बात की खबर भूतनाथ को कुछ भी नही

है। यह घाटी जिसमें रहती हू हमेशा बन्द रहती थी मगर उस घाटी का दर्वाजा बराबर न जाने क्यों खुला ही रहता था, शायद इसका सबब यह हो कि उस घाटी में कोई जोखम की चीज नही है और न कोई अच्छी इमारत ही है, अस्तु भूतनाथ यह भी नही जानता कि उस घाटी का दर्वाजा कहा है तथा क्योकर खुलता और बन्द होता है या इस स्थान का कोई मालिक भी है या नही। भूतनाथ को घूमते फिरते इत्तिफाक से या और किसी वजह से वह घाटी मिल गई और उसने उसे अपना बना लिया और जब यह खबर इन्द्रदेवजी को और मुझको मालूम हुई तब उन्होने मेरी इच्छानुसार यह स्थान मुझे देकर यहाँ के बहुत से भेद मुझे बता दिए। बस अब मैं समझती हू कि तुम्हें मेरी बातो का तत्व मालूम हो गया होगा।

इन्दु०। हाँ अब मैं समझ गई, ऐसी अवस्था में तुम जो चाहो सो कर सकती हो।

विमला०। अच्छा तो मैं जाती हूँ और जो कुछ सोचा है उस काम को ठीक करती हूँ।

इतना कह कर विमला उठ खडी हुई और इन्दुमति तथा कला को उस जगह बैठे रहने की ताकीद कर घर के बाहर निकलने लगी, मगर इन्दु ने साथ जाने के लिए जिद्द की और बहुत कुछ समझाने पर भी न मानी, लाचार विमला इन्दु को साथ ले गई और कला को उसी जगह छोड गई।

भूतनाथ का साथ छोड कर प्रभाकरसिंह के इस घाटी में आने का हाल हमारे पाठक भूले न होगे। उन्हे याद न होगा कि भूतनाथ की घाटी के अन्दर जाने वाली सुरग के बीच मे एक चौमुहाना था जहा पहुँच कर प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ और इन्दुमति का साथ छोडा था और कला तथा विमला के साथ दूसरी राह पर चल पडे थे। आज ईन्दुमति को साथ लिए हुए विमला पुन उसी जगह जाती है।

उस सुरग के अन्दर वाले चौमुहाने मे एक रास्ता तो भूतनाथ की घाटी

में आने के लिये था, दूसरा रास्ता सुरग के बाहर निकल जाने के लिये था, और तीसरा तथा चौथा रास्ता (या सुरग) कला और विमला को घाटी में आने के लिए था। एक रास्ता तो ठीक उस घाटी में आता था जिधर से प्रभाकरसिंह आए थे और दूसरा रास्ता विमला के महल में जाता था।

विमला के घर आने वाले दोनो रास्ते एक रग ढग के बने हुए थे और इनके अन्दर के तिलस्मी दर्वाजे भी एक ही तरह के तथा गिनती में एक बराबर थे, अस्तु एक सुरंग का हाल पढ कर पाठक समझ जायंगे कि दूसरी तरफ वाली सुरग की अवस्था भी वैसी ही है जो विमला के घर को जाती है।

उस सुरग के चौमुहाने पर पहुँच कर जब विमला को घाटी में आने वाली सुरग की तरफ बढिये तो कई कदम जाने बाद एक (कम ऊंची) दहलीज मिलेगी जिसके अन्दर पैर रख कर ज्यो ज्यो आगे बढिये त्यो त्यो वह दहलीज ऊँची होती जायगी, यहाँ तक कि बीस पचीस कदम आगे जाते जाते वह दहलीज ऊची होकर सुरग की छत के साथ मिल जायगी और फिर पीछे को तरफ लौटने के लिए रास्ता न रहेगा। उसके पास ही दाहिनी तरफ दीवार के अन्दर एक पेंच है जिसे कायदे के साथ घुमाने पर वह दर्वाजा खुल सकता है। अगर वह पेंच न घुमाया जाय और दहलीज के अन्दर कोई न हो, और जाने वाला आगे निकल गया हो, तो खुदबखुद भी वह रास्ता बारह घण्टे के बाद खुल जायगा और वह दहलीज धीरे धीरे नीची होकर करीब करीब जमीन के बराबर अर्थात् ज्यो की त्यो हो जायगी।

रास्ता कैसा पेचीला और तग है इसका हाल हम चौथे बयान में लिख आए हैं पुन लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। लगभग तीन सौ कदम आगे जाने बाद एक और बन्द दर्वाजा मिलेगा जो किसी पेंच के सहारे पर खुलता और बन्द होता है। पेंच घुमा कर खोल देने पर भी उसके दोनो पल्ले अलग नहीं होते, भिड़के रहते हैं। हाथ का धक्का दीजिये तो खुल

जायगे और कुछ देर बाद आपसे आप बन्द भी हो जायगे मगर पुन दूसरो वार केवल धक्का देने से वह दर्वाजा न खुलेगा असल पेंच घुमाने की जरूरत पडेगी। दोनो दरवाजो के दोनो तरफ एक ही ढग के तिलिस्मी पेंच दर्वाजा खोलने और बन्द करने के लिए बने हुए थे और इसका हाल भूतनाथ को कुछ भी मालूम न था। इसके अतिरिक्त उस सुरग का सदर दर्वाजा भी (जिसके अन्दर घुसने के बाद चौमुहानी मिलती थी) बन्द हो सकता था और यह बात विमला के आधीन थी। केवल इतना ही नही, उस चौमुहाने से भूतनाथ की घाटी की तरफ जाने वाले सुरग मे भी एक दर्वाजा (इन दोनो सुरगो की तरफ) था और उसका हाल भी यद्यपि भूतनाथ को तो मालूम न था मगर विमला उसे भी बन्द कर सकती थी।

इन्दु को साथ लिए हुए विमला उसी सुरग में घुसी और उस सुरग के भेद इन्दु को समझाती तथा दर्वाजा खोलती और बन्द करती हुई उसी चौमुहाने पर पहुँची जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है और जहा प्रभाकरसिह ने इन्दु का साथ छोडा था। वहा पहुँच कर कुछ देर के लिए विमला अटकी और आहट लेने लगी कि भूतनाथ की घाटी में आने वाला कोई आदमी तो इस समय इस सुरंग में मौजूद नही है। जब सन्नाटा मालूम हुआ और किसी आदमी के वहाँ होने का गुमान न रहा तब वह भूतनाथ वाली घाटी की तरफ जो रास्ता गया था उस सुरग मे घुसी और दस बारह कदम जाने बाद दीवार के अन्दर बने हुए किसी कल पुरजे को घुमा कर उस सुरग का रास्ता उसने बन्द कर दिया। लोहे का एक मोटा तख्ता दीवार के अन्दर से निकाला और रास्ता बन्द करता हुआ दूसरी दीवार के अन्दर कुछ घुस कर अटक गया।

इसके बाद विमला सुरग के सदर दर्वाजे पर दर्वाजा बन्द करने के लिए पहुची ही थी कि सुरग के अन्दर घुसते हुए भूतनाथ के शागिर्द भोलासिह पर निगाह पडी और उसने भी इन दोनों औरतो को देख लिया। वह इन्दु को अच्छी तरह देख चुका था अस्तु निगाह पडते ही पहिचान गया

और आश्चर्य के साथ देखता हुआ बोला—"आह ! मेरी रानी तुम यहाँ कहाँ ? तुम्हारे लिए तो हमारे गुरुजी बहुत परेशान हैं !!"

इस जगह बखूबी उजाला था इसलिए इन्दु ने भोलासिंह को और भोलासिंह ने इन्दु को बखूबी पहिचान लिया। इन्दु पर क्या क्या मुसीबतें गुजरी और प्रभाकरसिंह कहाँ गए इन बातों की खबर भोलासिंह को कुछ भी न थी, इसीलिए वह इस समय इन्दु को देख कर खुश हुआ और ताज्जुब करने लगा। इन्दु ने धीरे से विमला को समझाया कि यह भूतनाथ का शागिर्द है।

इन्दु उसे पहिचानती थी सही मगर नाम कदाचित् नहीं जानती थी। वह उसकी बात का जवाब दिया ही चाहती थी कि विमला ने उंगली दबा कर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ आगे बढ़ कर कहा, "तुम्हारे गुरुजी ने इन्हें मौत के पंजे से छुड़ाया और इनकी बदौलत उसी आफत से मेरी भी जान बची है।"

भोला०। गुरुजी कहाँ हैं।

विमला०। हमारे साथ आओ और उनसे मुलाकात करके सुनो कि उन्होंने इस बीच में कैसे कैसे अनूठे काम किए हैं।

भोला०। चलो चलो, मैं बहुत जल्द उनसे मिला चाहता हूं।

विमला ने इन्दु को अपने आगे किया और भोलासिंह को पीछे आने का इशारा करके अपनी घाटी की तरफ रवाना हुई।

विमला इस सुरंग का सदर दर्वाजा बन्द न कर सकी, खैर इसकी उसे ज्यादे परवाह भी न थी। चौमुहाने से जो भूतनाथ की घाटी की तरफ रास्ता गया था उसी को बन्द कर उसने सन्तोष लाभ कर लिया। विमला के पीछे पीछे चल कर भोलासिंह उस चौमुहाने तक पहुँचा मगर जब विमला अपनी घाटी की तरफ अर्थात् सामने वाले सुरंग में रवाना हुई तब भोलासिंह रुका और बोला, "इस तरफ तो हमारे गुरुजी कभी जाते न थे और उन्होंने दूसरों को भी इधर जाने को मना कर दिया था ! आज वे इधर-

कैसे गए !"

विमला० । हा पहिले उनका शायद यही खयाल था मगर आज तो इसी मकान में वैठे हुए हैं ।

भोला० । क्या इसके अन्दर कोई मकान है ?

विमला० । हा वहुत सुन्दर मकान है ।

भोला० । कितनी दूर पर ?

विमला० । वहुत थोडी दूर पर, तुम आओ तो सही ।

ये दोनो औरतें बेचारी भला मेरे साथ क्या दगा करेंगी !" यह सोच भोलासिंह आगे वढा और इनके साथ सुरग के अन्दर घुस गया ।

जो हाल प्रभाकरसिंह का इस सुरग में हुआ था वही हाल इस समय भोलासिंह का हुआ अर्थात् पीछे की तरफ लौटने का रास्ता बन्द हो गया और विमला तथा इन्दु के आगे वढ़ जाने तथा चुप हो जाने के कारण वह जोर जोर से पुकारने और टटोल टटोल कर आगे की तरफ वढने लगा ।

प्रभाकरसिंह को इसके आगे का दर्वाजा खुला हुआ मिला था मगर भोलासिंह को आगे का दर्वाजा खुला हुआ न मिला, उसे दोनो दर्वाजों के अन्दर वन्द करके विमला और इन्दु अपने डेरे की तरफ निकल गईं ।

॥ पहिला हिस्सा समाप्त ॥

२५ वा संस्करण] १९६९ ई० [११०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी ।

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

दूसरा भाग

पहिला बयान

रात बहुत कम बाकी थी जब विमला और इन्दुमति लौट कर घर में आईं जहाँ कला को अकेली छोड गई थी। यहाँ आते ही विमला ने देखा कि उसकी प्यारी लौंडी चन्दो जमीन पर पडी हुई मौत का इन्तजार कर रही है, उसका दम टूटा ही चाहता है, आँखें बन्द हैं, और अधखुले मुंह से रुक रुक कर सांस आती जाती है, बीच बीच में हिचकी भी आ जाती है। कला झारी में गंगाजल लिये उसके मुंह में शायद टपका चुकी या टपकाया चाहती है।

यह अवस्था देख कर विमला घबडा गई और ताज्जुब करने लगी कि उसकी इस थोडी ही गैरहाजिरी में यह क्या हो गया और चन्दो यकायक किस बीमारी में फंस गई जो इस समय उसकी जिन्दगी का चिराग इस तरह टिमटिमा रहा है बल्कि बुझा चाहता है। विमला ने घबरा कर कला से पूछा, "यह क्या मामला है और कम्बख्त को हो क्या गया है!"

कला०। मुझे इस बात का बड़ा ही दु:ख है कि चन्दो अब इस असार संसार को छोडा ही चाहती है, अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस कम्बख्त ने जहर खा लिया है और जब रग रग में जहर भीन गया है तब यहां आकर सब हाल कहा है। मैंने जहर उतर जाने के लिये दवा

इसे खिलाई है मगर कुछ फायदा होने का रंग नही है क्योंकि देर बहुत हो गई, कुछ और दवा पहुचती तो अच्छा था।

विमला०। राम राम, मगर यह इस कम्बख्त को सूझी क्या ? और इसने कौन सा पाप किया है जिसके लिये ऐसा प्रायश्चित करना पडा !

कला०। बहिन पाप तो इसने नि सन्देह बहुत भारी किया है जिसका प्रायश्चित इसके सिवा और कुछ यह कर ही नही सकती थी, परन्तु मुझे इसके मरने का दु ख अवश्य है। जो काम इसने किया है उसके करने की आशा इससे कदापि नही हो सकती थी और जब इससे ऐसा काम हो गया तो किसी और लौंडी पर अब हम लोग इतना विश्वास भी नही कर सकती। हा, लालच में पड कर इस चुडैल ने हम दोनों बहिनों का असल हाल गदाधरसिंह को बतला दिया और कह दिया कि तुमसे बदला लेने के लिये यह सब खेल रचे गए हैं, और साथ ही इसके भूतनाथ का बटुआ भी यहा से ले जाकर उसे दे दिया। परन्तु इतना करने पर भी जब भूतनाथ ने इस सूखा ही टरका दिया तब इसे ज्ञान उत्पन्न हुआ और ग्लानि में आकर जहर खा लिया। जब जहर अच्छी तरह तमाम बदन में भीन गया तब यह हम दोनो से मिलने और अपना पाप कहने के लिये यहां आयी थी, इसे यहां आये बहुत देर नही हुई।

विमला०। (हाथ से अपना माथा ठोक कर) हाय हाय, इस कम्बख्त ने तो बहुत ही बुरा किया ! क्या जाने यह इससे और भी कुछ ज्यादे कर गुजरी हो। जिस भेद को छिपाने के लिये तरह तरह की तरकीबें की गई थी उस भेद का आज इसने सहज ही में सत्यानाश कर दिया। हाय, अब भूतनाथ भी जरूर हमारे कब्जे से निकल गया होगा। जब उसे ऐयारी का बटुआ मिल गया तब वह उस कैदखाने के भी बाहर हो गया हो तो आश्चर्य नही। वह बडा ही धूर्त और मक्कार है जिसके फेर में पड कर चन्दो ने हम लोगों को बर्बाद कर दिया और खुद भी दीन दुनिया दोनों में से कहीं के लायक न रही !!

कला०। बेशक ऐसा ही है, यद्यपि इस बात की आशा नही हो सकती कि भूतनाथ इस घाटी के बाहर हो जायगा तथापि उसका कैदखाने से बाहर

निकल जाना ही कम कबाहट की बात नही है, और इससे भी ज्यादे बुरी बात यह हुई कि हमारा भेद उसे मालूम होगया। हाय ऐसी रात में किसकी हिम्मत पड सकती है कि अकेले वहा जाकर भूतनाथ का हाल मालूम करे? अगर वह छूट गया होगा तो जरूर उसी जगह कही छिपा होगा, ताज्जुब नही कि सूरज निकलते निकलते तक वह कोई आफत.... .

विमला०। मेरा भी यही खयाल है! (चन्दो के पास जाकर) हाय शैतान की बच्ची, तूने यह क्या किया! हाय, अगर तू जीती रहती तो तुझसे पूछती कि 'दुष्टे, तूने इतना ही किया कि कुछ और?'

चन्दो यद्यपि मौत के पजे में फसी हुई थी और उसकी जान बहुत जल्द निकलने वाली थी मगर वह कला और विमला की बातें सुन रही थी, यद्यपि उनमे जवाब देने की ताकत न थी। उसने विमला की आखिरी बात सुन कर आखें खोल दी, विमला की तरफ देखा और इस प्रकार मुंह खोला मानो कुछ कहने के लिये बेचैन हो रही है, बहुत उद्योग कर रही है, मगर उसमें इतनी शक्ति न रही, उसकी आखें पुन. बन्द हो गई और अब वह पूरी तरह से बेहोश हो गयी। देखते देखते दस पाच हिचकियां लेकर उसने विमला और कला के सामने दम तोड़ दिया।

अब कला और विमला को यह फिक्र पैदा हुई कि पहिले इसे ठिकाने पहुँचाया जाय या चल कर भूतनाथ की खबर ली जाय, मगर इन्दुमति की राय हुई कि इन दोनो कामो के पहिले बगले की हिफाजत की जाय (जो इस घाटी के बीच में था और जहां प्रभाकरसिंह पहिले पहिल पहुँचे थे) क्योंकि उसमें बहुत सी जरूरी चीजें रक्खी हुई है और साथ ही उसकी जांच करने से बहुत से भेद भी मालूम हो सकते हैं।

इन्दु की इस राय को विमला और कला ने बहुत पसन्द किया था और तीनों औरतें हर्बो और जरूरी चीजो से अपने को सजा कर गुप्त राह से बगले की तरफ रवाना हुई।

इस बंगले का हाल हम पहिले खुलासा तौर पर लिख चुके है, इस के

दर्वाजे ऐसे न थे कि बन्द कर देने पर कोई जबर्दस्ती या सहज ही में खोल सके तथा और बातों में भी वह एक छोटा मोटा तिलिस्म या कारीगरी का खजाना ही समझा जाता था। यद्यपि यह बंगला ऐसी हिफाजत की जगह में था जहां बदमाशों का गुजर नहीं हो सकता था तथापि उसकी हिफाजत के लिए कई लौंडियां मुकर्रर थीं जो मर्दानी सूरत में पहरेदारी के कायदे से उसके चारों तरफ बराबर घूमा करती थीं।

कला बिमला और इन्दु ने वहां पहुंच कर उस बंगले के दर्वाजे बन्द करने शुरू कर दिये। पहिले बाहर से भीतर आने का रास्ता रोका, इसके बाद कई जरूरी चीजें उनमें से निकालने के बाद आलमारियों में ताले लगाये और तब भीतर के कमरे सब बन्द कर दिये। इतना कर वे एक छोटे गुप्त रास्ते को बन्द करती हुई बाहर निकली ही थीं कि एक पहरेदार लौंडी के जोर से चिल्लाने की आवाज आई।

तीनों औरतें कदम बढ़ाती हुई बंगले के सदर दर्वाजे पर पहुंचीं जहां नाम मात्र के लिए पहरा रहा करता था या जिधर से पहरेदार लौंडी के चिल्लाने की आवाज आई थी। वह लौंडी मर्दाने भेष में थी और घबराई हुई मालूम पड़ती थी। बिमला ने पूछा—"क्या मामला है, तू क्यों चिल्लाई?"

लौंडी०। मेरी रानी, देखो उस पहाड़ी की तरफ जिधर कैदखाना है और जहां भूतनाथ कैद है, कई जगह आग की धूनी जल रही है। मालूम होता है मानों बहुत से आदमियों ने आकर उस पहाड़ी पर दखल जमा लिया है। अगर ये आग की धूनियां आपकी तरफ से नहीं सुलगाई गई हैं तो जरूर किसी आने वाली आफत की निशानी हैं, और मुझे विश्वास है कि आपने इसके लिये कोई हुक्म नहीं दिया होगा।

बिमला०। (ताज्जुब के साथ उस पहाड़ी की तरफ देख कर) बेशक यह नई बात है, मैंने ऐसा करने के लिये किसी को हुक्म नहीं दिया, मगर घबड़ाने की कोई बात नहीं है, जहां तक मैं समझती हूं यह भूतनाथ की कार्रवाई है क्योंकि चन्दो की मदद से भूतनाथ कैद से छूट गया, और हम

लोग उसी के लिये बन्दोबस्त कर रही हैं।

लौंडी०। (ताज्जुब के साथ) हैं, भूतनाथ कैदखाने से छूट गया, और चन्दो बीबी की मदद से !!

विमला०। हां ऐसी ही बात है, किसी दूसरे वक्त इसका खुलासा हाल तुम्हें मालूम होगा, इस समय मैं उसी पहाड़ी पर जाती हूं और भूतनाथ को गिरफ्तार करती हूं।

कला०। मगर बहिन, मैं इस राय के विरुद्ध हूं!

विमला०। क्यों ?

कला०। देखो, सोचो तो सही कि इस तरह कई जगहों पर आग सुलगाने या बालने से भूतनाथ का क्या मतलब है!

विमला०। (कुछ सोच कर) जहाँ तक मैं समझती हूं इस कार्रवाई से भूतनाथ का यही मतलब होगा कि हमलोगों को धोखा देकर उस तरफ बुलावे और किसी जगह पर आड़ में छिपे रह कर हमारे ऊपर वार करे।

कला०। बेशक, क्योंकि आग के पास पहुच कर हमलोग उसे ढूंढ़ न सकेंगे। दस्तूर की बात है कि जो कोई सुलगती हुई आग के पास रहता है वह सामने की तरफ की किसी चीज को नहीं देख सकता। वहां तो कई जगह पर आग सुलग रही है, उसके बीच में जाकर हमलोग किसी तरफ भी निगाह करके दुश्मन को नहीं देख सकेंगे।

विमला०। ठीक है मगर हमलोगों पर इस समय उसका कोई हरबा काम नहीं कर सकता।

कला०। तथापि हर तरह से बच के काम करना चाहिए, विशेष कर के इसलिये कि इन्दु बहिन हमारे साथ है, यद्यपि ये यहाँ के सब भेदों को जान गई हैं और हम लोगों का साथ हर तरह से दे सकती हैं।

इन्दु०। मेरे लिए कोई तरद्दुद न करो, मैं तुम लोगों के साथ बखूबी चल सकती हू मगर मैं यह पूछती हूं कि ऐसा करने की जरूरत क्या है और इस काम में जल्दी किये बिना हर्ज ही क्या होता है ? सम्भव है कि भूत-

नाथ ने वहां ऐयारी का कोई जाल फैलाया हो और इस रात के समय कुछ वह कर भी सके। थोडी सी तो रात रह गई है, अच्छा होता अगर यह बिता दी जाती। प्रात काल हमलोग देखेंगे कि भूतनाथ कहां जाता और क्या करता है। यद्यपि वह स्वतन्त्र हो गया है मगर इस घाटी के बाहर नही जा सकता और हमारे मकान तथा बगले में भी उसकी गुजर नहीं हो सकती।

कला०। मैं भी इस राय को पसन्द करती हू, चलो बगले के ऊपर छत पर चल कर बैठें।

विमला०। अच्छा चलो।

इन्दु०। (चलते हुए) मगर ताज्जुब है कि इतनी जल्दी भूतनाथ को आग सुलगाने के लिए इतना सामान कैसे मिल गया !

कला०। बहिन यह कोई ताज्जुब की बात नही है। हमलोगों की जरूरत के लिए जगल की लकडिया बहुत बटोरी गई थी जिनके बहुत बडे बडे दो तीन ढेर वहा कैदखाने के पास ही में लगे हुए थे। मालूम होता है कि उन्ही लकडियों से भूतनाथ ने काम लिया है।

इन्दु०। हां तब तो उसे बहुत सुबीता मिल गया होगा, मगर क्या तुम खयाल कर सकती हो कि भूतनाथ की यह कार्रवाई किसी और मतलब से भी हुई है ?

विमला०। मैं नही कह सकती, सम्भव है कि उसका और ही कोई मतलब हो, खैर देखा जायगा।

इसी तरह की बातें करती तथा दर्वाजों को खोलती और बन्द करती हुई तीनों बहिनें बंगले की छत पर चढ गई और एक अच्छे ठिकाने बैठ कर उस तरफ देखने और सुबह का इन्तजार करने लगी।

उस समय कला और विमला से बहुत बडी भूल हो गई, क्योकि वे तीनों बहिनें इस अद्भुत बगले की हिफाजत के लिए जब आई तो उन्होने रोशनी का कोई खास बन्दोबस्त नहीं किया, बंगले का इन्तजाम करने के बाद वे तीनों बहिनें जब पहरे वाली लौंडी के चिल्लाने की आवाज सुन कर

सदर दर्वाजे पर गईं तब उनके पास किसी तरह की रोशनी मौजूद न थी और न इस काम के लिए रोशनी की जरूरत ही थी, परन्तु जब तक वे पहरा देने वाली लौंडी से बातचीत करती और पहाडी के ऊपर वाली रोशनी की तरफ देखती रही तब तक एक आदमी जो अपने को स्याह कपडे से छिपाये हुए था आड देता हुआ सदर दर्वाजे के पास पहुँचा और न मालूम किस ढग से उस बगले के अन्दर दाखिल हो गया क्योंकि वे तीनो बहिनें और पहरा देने वाली लौंडी पहाड़ी की रोशनी को ताज्जुब के साथ देखती हुई सदर दर्वाजे से कुछ आगे की तरफ बढ गई थी और उन्हें इस बात का कुछ खयाल न था कि दुश्मन बगल में आ पहुँचा और अपना काम किया चाहता है। खैर वे तीनों बगले के अन्दर घुसीं तो दर्वाजा बन्द करती हुई छत पर चढ गईं, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है।

वे तीनो बहिनें उन कई जगह बलती हुई आग की रोशनियों को गौर से देख रही थी जो अब धीरे धीरे ठन्डी हो रही थी।

कला०। अब आग थोडी ही देर में बिल्कुल ठण्डी हो जायगी।

विमला०। हाँ और इससे मालूम होता है कि भूतनाथ कही आगे की तरफ बढ़ गया।

"आगे की तरफ नही बढ गया बल्कि इस तरफ चला आया और विश्वास दिलाया चाहता है कि वह आपका दुश्मन नही बल्कि दोस्त है।"

यह आवाज छत के ऊपर आने वाले दर्वाजे की तरफ से आई थी जो उन तीनों बहिनो के पास ही था।

इस आवाज ने उन तीनों को चौंका दिया, वे उठ खड़ी हुईं और उस दर्वाजे की तरफ देखने लगी। अब यहाँ पर वैसा अन्धकार न था जैसा नीचे खास करके पेडों की छाह के सबब से था। चन्द्रदेव उदय हो चुके थे और उनकी चादनी पल पल में बराबर बढती चली जा रही थी, अस्तु उन तीनों बहिनों ने साफ देख लिया कि दर्वाजे के अन्दर एक पैर बाहर और दूसरा भीतर किये कोई आदमी स्याह लबादा ओढ़े खडा है।

विमला० । (उस आदमी से) तुम कौन हो ?

आदमी० । गदाधरसिंह ।

विमला० । (निडर रह कर) तुमने बड़ी चालाकी से अपने को कैद से छुड़ा लिया ।

गदाधर० । बात तो ऐसी ही है ।

विमला० । मगर तुम भाग कर इस घाटी के बाहर नही जा सकते ।

गदाधर०।शायद ऐसा ही हो, मगर मुझे भागने की जरूरत ही क्या है ?

विमला० । क्यो, अपनी जान बचाने के लिये तुम जरूर भागना चाहते होगे ?

गदाधर० । नही , मुझे अपनी जान का यहां कोई खौफ नहीं है क्योंकि तुम्हारी एक नमकहराम लौंडी ने मुझे बता दिया है कि तुम मेरे प्यारे दोस्त दयाराम की स्त्री हो..

विमला० । (बात काट कर) जिस प्यारे दोस्त को तुमने अपने हाथ से हलाल किया !!

गदा० । नही नही कदापि नहीं। जिसने यह बात तुमसे कही है वह बिल्कुल झूठा है और उसने तुम लोगो को धोखे में डाल दिया है, यह समझाने और विश्वास दिलाने के लिए मैं यहाँ अटक गया हू और भागना पसन्द नहीं करता । मुझे विश्वास था कि तुम दोनो बहिनों का देहान्त हो चुका है जैसा कि दुनिया में प्रसिद्ध किया गया है, मगर अब तुम दोनों का हाल जान कर भी क्या मैं भागने की इच्छा करूंगा ? नही , क्योंकि तुम दोनो को अब भी मैं उसी निगाह से देखता हू जैसे अपने प्यारे दोस्त की जिन्दगी में देखता था और यही सबब है कि मुझे तुम दोनो से किसी तरह का डर नही लगता ।

विमला० । मगर नही, तुम्हें हम लोगों से डरना चाहिये, हम लोग तुम्हारे हितेच्छु कभी नही हो सकते, क्योंकि हम लोगों ने जो कुछ सुना वह कदापि झूठ नहीं हो सकता ।

गदाधर० । (दर्वाजे से बाहर निकल कर और विमला के पास आ

कर) मैं विश्वास दिला दूंगा कि मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया है।

विमला० । (कई कदम पीछे हट कर और नफरत के साथ) बस दूर रह मुझसे दुष्ट ! मैं तेरी सूरत नही देखा चाहती !!

गदाधर० । (अपने ऊपर से स्याह कपड़ा हटा कर) नही तुम मेरी सूरत देखो पहिचानो और सुनो कि मैं क्या कहता हूं ।

विमला० । सिवाय बात बनाने के तू और क्या कहेगा ? तू अपने माथे से कलंक का टीका किसी तरह नही धो सकता और न वह बात झूठी हो सकती है जो मैं सुन चुकी हूं । दलीपशाह और शम्भू अभी तक दुनियां में मौजूद हैं और मैं भी खास तौर पर इस बात को जानती हूं ।

गदाधर० । मगर सच बात यह है कि लोगों ने तुम्हें धोखा दिया और असल भेद को छिपा रक्खा । खैर तुम अगर मुझ पर विश्वास नही करती तो मुझे ज्यादे खुशामद करने की जरूरत नही, अब मैं सिर्फ दो चार बातें पूछ कर चला जाऊंगा । एक तो यह कि तुम मुझे गिरफ्तार करके यहा लाई थी मगर मै अपनी चालाकी से छूट गया, अब बताओ मेरे साथ क्या सलूक करोगी ?

विमला० । अपने दिल का बुखार निकालने के लिये जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा करूंगी, इसे तुम खुद सोच सकते हो ।

गदाधर० । पर मै तो अब स्वतन्त्र हू, अगर चाहू तो तुम तीनो को इसी जगह खतम करके रख दूं । मगर नही मैं नमक का खयाल करता हूं, ऐसा कदापि न करूंगा, हा तुमसे बचने के लिये उद्योग जरूर करूंगा ।

विमला० । कदाचित ऐसा ही हो ।

इतना कह विमला ने कला की तरफ देखा ।

गदाधरसिंह विमला से बातें कर रहा था मगर उसे इस बात की खबर न थी कि कला क्या कर रही है अथवा क्या किया चाहती है ।

कला ने अपने बगल में से एक छोटा सा बांस का बना हुआ तमचा निकाला और गदाधरसिंह (भूतनाथ) की तरफ उसका मुंह करके चलाया ।

इस अद्भुत तमचे में बेहोशी की बारूद भरी जाती थी और इसका तेज तथा जल्द बेहोश कर देने वाला धूआ छूटने के साथ ही तेजी से कई बिगहे तक फैल कर लोगो को बेहोश कर देता था। यहां पर फैलने के लिए विशेष जगह तो थी नही इसलिये उस धूए के गुब्बार ने गदाधरसिंह को चारो तरफ से घेर कर एक तरह का अन्धकार कर दिया।

"गदाधरसिंह धूए के असर से बेहोश हो ही जायगा।" यह सोच कर विमला कला और इन्दुमति तीनो बहिनें भाग कर नीचे उतर जाने के लिये उठी और नाक दबाये हुए सीढ़ी की तरफ बढ गई।

गदाधरसिंह बेशक इस धूए के असर से बेहोश हो जाता मगर उसने पहिले ही से अपने बचाव का बन्दोबस्त कर लिया था अर्थात् ऐसी दवा खा ली थी कि कई घण्टे तक उस पर बेहोशी का असर नही हो सकता था तथापि उस धूए ने एक दफे उसका सर घुमा दिया।

वे तीनों बहिनें वहां से भागी तो सही मगर अफसोस, विमला और इन्दु तो नीचे उतर गई परन्तु कला को फुर्ती से गदाधरसिंह ने पकड कर कब्जे में कर लिया और यह हाल विमला को नीचे उतर कर और कई कमरों में घूम फिर कर छिप जाने के बाद मालूम हुआ जब चित्त स्थिर हो जाने पर उसने कला को अपने साथ न देखा।

दूसरा बयान

दिन पहर भर से कुछ ज्यादे चढ़ चुका है। यद्यपि अभी दोपहर होने में बहुत देर है तो भी धूप की गर्मी इस तरह बढ रही है कि अभी से पहाड के पत्थर गर्म हो रहे हैं और उन पर पैर रखने की इच्छा नही होती दोपहर दिन चढ जाने के बाद यदि ये पत्थर आग के अंगारों का मुकाबला करने लग जाय तो आश्चर्य ही क्या है।

पहाड के ऊपरी हिस्से पर एक छोटा सा मैदान है जिसका फैलाव लगभग डेढ या दो बिगहे का होगा। इसके ऊपर की तरफ सिर उठा कर

देखने से मालूम होता है कि कुछ और चढ जाने से पहाड खतम हो जायगा और फिर सरपट मैदान दिखाई देगा पर वास्तव में ऐसा नही है।

इस छोटे से मैदान में पत्थर के कई छोटे बडे ढोके मौजूद हैं जो मैदान की मामूली सफाई में बाधा डालते है और पत्थर के बडे चट्टान भी बहुतायत से दिखाई दे रहे हैं जिनकी वजह से वह जमीन कुछ सुन्दर मालूम होती है मगर इस वक्त धूप की गर्मी के समय सभी बातें बुरी और भयानक जान पड रही हैं।

इस मैदान में केवल ढाल (पलास) के कई पेड दिखाई दे रहे हैं सो भी एक साथ नही, जिनसे किसी तरह का आराम मिलने की आशा हो सके। इन्ही पेडो में से एक के साथ हम बेचारी कला को कमन्द के सहारे बधे हुए और उसके सामने गदाधरसिंह अर्थात् भूतनाथ को खडे देख रहे हैं, अब सुनिए कि इन दोनो में क्या बातें हो रही हैं।

गदाधर०। रात के समय जब मैंने तुझे गिरफ्तार किया तब यही समझे हुए था कि कला और बिमला में से किसी एक को पकड पाया हू मगर अब मैं देखता हू कि तू कोई और ही औरत है। *

कला०। तो क्या उस समय तुमने वहाँ पर कला और बिमला को अच्छी तरह देखा या पहिचाना था ?

गदा०। नहीं पहिचाना तो नहीं था मगर बातें जरूर की थीं और वे बातें भी ऐसे ढग की थी जिनसे उनका कला और बिमला ही होना साबित होता था।

कला०। यह तुम्हारा भ्रम था, इस घाटी में कला और बिमला नहीं रहतीं।

गदा०। (हँस कर) बहुत खासे ! अब थोडी देर में कह दोगी कि

---

* पाठकों को याद होगा कि कला और बिमला हर वक्त अपनी असली सूरत को एक झिल्ली से छिपाए रहती थीं। इस समय भी कला के चेहरे पर वही झिल्ली है।

है कि तुमने मुझे कुछ बताया है।

कला०। यह बात छिपी नही रह सकती, यह घाटी तिलिस्मी है और यहां के हर एक पेड़ पत्तों और पत्थरों के ढोकों को भी कान हैं, मेरी बहिन ने इस बात का कुछ खयाल नहीं किया और इसी लिये आखिरकार जान से मारी गई।

गदा०। (आश्चर्य से) क्या तुम्हारी बहिन मारी गई ?

कला०। हां क्योंकि मालकिन को तुम्हारी और उसकी बातो का किसी तरह पता लग गया।

गदा०। रात का समय था, सम्भव है किसी ने छिप कर सुन लिया हो, इसके अतिरिक्त और किसी तिलिस्मी बात का मैं कायल नही। इस समय दिन है, चारो तरफ आखें फैला के देखो, किसी की सूरत दिखाई नहीं देती, अस्तु मेरी तुम्हारी बातें कोई सुन नही सकता, तुम बेखौफ हो कर यहां का हाल इस समय मुझे बता सकती हो।

कला०। नही, कदापि नही।

गदा०। (कमर से खञ्जर निकाल कर और दिखा कर) नहीं तो फिर इसी से तुम्हारी खबर ली जायगी!

कला०। जो हो, बताने के बाद भी तो मैं किसी तरह बच नही सकती, फिर ऐसी अवस्था में क्यों अपने मालिक को नुकसान पहुंचाऊ ? चाहे तिलिस्मी बातों का तुम्हें विश्वास न हो पर मैं समझती हूं कि मेरे और तुम्हारे बीच जो जो बातें हो रही हैं वह सब मेरी मालकिन सुन रही होगी

गदा०। (खिलखिला कर हँस कर) ठीक है, तुम्हारी बातें ..

कला०। बेशक ऐसा ही है, मगर मैं इस घाटी के बाहर होती तो इस बात का खयाल न होता और यहां के भेद शायद बता देती।

गदा०। (मुस्कुराते हुए) यही सही, तुम मुझे इस घाटी के बाहर ले चलो और यहा के भेद बता दो तो मैं तुम्हें . --

कला०। नही नही, किसी तरह का वादा करने की कोई जरूरत

नहीं है क्योंकि उस पर मुझे विश्वास न होगा, हा यदि मुझे दलीपशाह के पास पहुंचा दो तो मैं यहा का पूरा पूरा भेद तुम्हें बता सकती हूं बल्कि हर तरह से तुम्हारी मदद भी कर सकती हूं।

गदा०। (चौंक कर)दलीपशाह! दलीपशाह से और तुमसे क्या वास्ता?

कला०। वे मेरे रिश्तेदार हैं और यहां से भाग कर मैं उनके यहा अपनी जान बचा सकती हू।

गदा०। अगर ऐसा ही है तो तुम स्वयं उसके पास क्यो नही चली जाती।

कला०। पहिले तो मुझे यहां से भागने की कोई जरूरत ही नहीं, भागने का ख्याल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहां के भेद बताऊंगी, दूसरे यह कि आज कल न जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड दिया है और किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं।

गदा०। अगर किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे है तो भला मुझे क्योंकर उनका पता लगेगा?

कला०। तुम्हें उनका पता जरूर मालूम होगा क्योंकि तुम उनके साढ़ू और दोस्त भी हो।

गदा०। यह बात तुम्हें क्योंकर मालूम हुई?

कला०। भला मैं दलीपशाह के नाते की होकर यह नहीं जानूंगी कि तुम उनके कौन हो?

गदा०। (आश्चर्य के साथ कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी बात सच है तो तुम मेरी भी कुछ नातेदार होवोगी।

कला०। जरूर ऐसा ही है, मगर यहा मैं इस बारे में भी कुछ न कहूंगी, दलीपशाह के मकान पर चलने ही से तुम्हें सब हाल मालूम हो जायगा तथा और भी कई बातें ऐसी मालूम होंगी जिन्हें जान कर तुम खुश हो जाओगे। इन्हीं बातों का खयाल करके और तुम्हें अपना नजदीकी नातेदार समझ के मैं चाहती हूं कि तुम्हें इस घाटी के बाहर कर दूं और खुद भी भाग जाऊं नहीं तो यहा रह कर तुम्हारी जान किसी तरह नहीं बच

सकती और बिना मेरी मदद के तुम घाटी के बाहर भी नही जा सकते ।

गदा० । (सोच कर) अगर ऐसा ही है तो तुम मेरी नातेदार होकर यहा क्यों रहती हो ?

कला० । यहा पर मैं इन सब बातो का कुछ भो जवाब न दूगी ।

कला की बातें सुन कर गदाधरसिंह सोच और तरद्दुद में पड गया। वह यहां का भेद जानने के लिए अवश्य ही कला को तकलीफ देता या गुस्से मे आकर शायद मार ही डालता मगर कला की बातो ने उसे उलझन में डाल दिया और वह सोच में पड गया कि अब क्या करना चाहिए । वह जानता था बल्कि उसे विश्वास था कि बिना किसी की मदद के वह इस घाटी के बाहर नही निकल सकता और यहां फसे रहना भी उसके लिये अच्छा नही चाहे वह किसी तरह की ऐयारी करकें कितना ही उपद्रव क्यों न मचा ले, अतएव बाहर निकल जाना वह बहुत पसन्द करता था और समझता था कि इत्तिफाक ही ने इस समय उसे एक मदद दिला दी है और अब इससे काम न लेना निरी बेवकूफी है मगर कला की बातो ने उसे चक्कर में डाल दिया था । यद्यपि वह दलीपशाह* का पता जानता था मगर कई कारणो से उसके पास या सामने जाना अथवा कला को ले जाना पसन्द नही करता था, इधर कला से उसकी इच्छानुसार बात करने को भी उसे सख्त जरूरत थी क्योंकि उसे इस बात का शक हो रहा था कि अगर कला से दलीपशाह के पास ले जाने का वादा न करूगा तो शायद यह मुझे इस खोह के बाहर भी न ले जायगी । वह कला को धोखा देने और कोरा वादा करने के लिये तैयार था मगर वह चाहता था कि कला मुझसे वादा पूरा करने के लिये कसम न खिलावे, क्योंकि असली सूरत में कसम खाकर मुह फेर लेने की आदत अभी तक उसमें नहीं पडी थी और वह अपने को बहादुर समझता था ।

गदाधरसिंह के दिल में ये बातें भी पैदा हो रही थी कि इस घाटी के

---

* यह नाम चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है ।

मालिक का पता लगाना चाहिये और यहाँ के भेदो को जानना चाहिये, परन्तु उसने सोचा कि यहा अकेला और बिना किसी मददगार के रह कर मैं कुछ भी न कर सकूंगा। यहाँ के रहने वाले बिल्कुल ही सीधे साधे नही मालूम होते और यद्यपि अभी तक यहाँ किसी मर्द की सूरत दिखाई न दी परन्तु औरतें भी यहाँ की ऐयारा ही जान पडती हैं। क्या यह औरत भी मुझसे ऐयारी के ढग पर बातें कर रही है? सम्भव है कि ऐसा ही हो और मुझे इस घाटी के बाहर ले जाने के बहाने से यह किसी खोह या कन्दरा में फंसा कर पुनः कैद करा दे। अभी तक तो मैंने इस बात की भी जाँच नहीं की कि इसकी सूरत असली है या बनावटी। खैर मैं अभी अभी इस बात की भी जाँच कर लूंगा और इसके बाद जब इस घाटी के बाहर निकल जाने के लिये इसके साथ किसी खोह या सुरग के अन्दर घुसूंगा तो पूरा होशियार रहूगा कि यह मुझसे दगा न करें, न इसे अपने आगे आगे चलने दूंगा और न पीछे रहने दूंगा बल्कि इसका हाथ पकडे रहूगा या कमर में कमन्द बांध कर थामे रहूंगा। इस खोह के बाहर निकल जाने पर मैं सब कुछ कर सकूंगा क्योंकि तब यहाँ का रास्ता भी देखने में आ जायगा, तब अपने दो एक शागिर्दों को मदद के लिये साथ लेकर पुनः यहा आऊंगा और यहा रहने वालो से समझूंगा जिन्होने मुझे गिरफ्तार किया था।

इत्यादि तरह तरह की बातें गदाधरसिंह बहुत देर तक सोचता रहा और इसके बाद कला से बोला, "अच्छा मैं तुम्हे दलीपशाह के पास ले चलूंगा मगर पहिले तुम पानी से अपना मुंह धोकर मुझे विश्वास दिला दो कि तुम्हारी सूरत बदली हुई नहीं है या तुम ऐयार नहीं हो और मुझे कोई धोखा नहीं दिया चाहतीं।"

कला०। हाँ हाँ मैं अपना चेहरा धोने के लिये तैयार हूं, पानी दो।

गदा०। (अपने बटुए में से पानी की एक छोटी सी बोतल निकाल कर और कला की ओर बढ़ा कर) लो यह पानी तैयार है।

कला ने गदाधरसिंह के हाथ से पानी लेकर अपना चेहरा धो डाला।

उसके चेहरे पर किसी तरह का रंग तो चढ़ा हुआ था ही नहीं जो धोने से दूर हो जाता बल्कि एक प्रकार की झिल्ली चढी हुई थी जिस पर पानी का कुछ भी असर नहीं हो सकता था, अस्तु गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि इसकी सूरत बदली हुई नहीं है। उसने (भूतनाथ ने) इसके हाथ पैर खोल दिये और घाटी के बाहर चलने के लिये कहा।

गदा०। क्या तुम इस दिन के समय मुझे यहाँ से बाहर ले जा सकती हो?

कला०। हां ले जा सकती हूँ।

गदा०। मगर तुम्हारे संगी साथी किसी जगह से छिपे हुए देख सकते हैं।

कला०। अव्वल तो शायद ऐसा न होगा, दूसरे अगर कोई दूर से देखता भी होगा तो जब तक वह मेरे पास पहुचेगा तब तक मैं तुम्हें लिए इस घाटी के बाहर हो जाऊंगी, फिर मुझे बचा लेना तुम्हारा काम है।

गदा०। (जोश के साथ) ओह, घाटी के बाहर हो जाने पर फिर तुम्हारा कोई क्या बिगाड सकता है।

कला०। तो बस फिर जल्दी करो, मगर हा एक बात तो रह ही गई!

गदा०। वह क्या ?

कला०। तुमने मुझसे इस बात की प्रतिज्ञा नहीं की कि दलीपशाह से मुलाकात करा दोगे।

गदा०। मैं तो पहिले ही वादा कर चुका हूं कि तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूंगा।

कला०। वादा और बात है प्रतिज्ञा और बात है, मैं इस बारे में तुमसे कसम खिला के प्रतिज्ञा करा लेना चाहती हू। तुम क्षत्री हो अस्तु खंजर जिसे दुर्गा समझते हो हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करो कि वादा पूरा करोगे।

गदा०। (कुछ देर तक सोचने के बाद खंजर हाथ में लेकर) अच्छा लो मैं कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हू कि तुम्हें दलीपशाह के घर पहुंचा दूंगा।

कला०। हां, बस मेरी दिलजमयी हो गई।

इतना कह कर कला उठ खडी हुई और गदाधरसिंह को साथ लिये हुए पहाडी के नीचे उतरने लगी ।

पाठको को समझ रखना चाहिये कि इस सुन्दर घाटी से वाहर निकल जाने के लिये केवल एक ही रास्ता नही है वल्कि कई रास्ते हैं जिन्हें मौके मौके से समयानुसार ये लोग अर्थात् कला और विमला काम में लाया करती हैं और इनका हाल किसी मौके पर आगे चल कर मालूम होगा । इस समय हम केवल उसी रास्ते का हाल दिखाते हैं जिससे गदाधरसिंह को साथ लिये हुए कला वाहर जाने वाली है ।

कला पहाडी के कोने की तरफ दवती हुई नीचे उतरने लगी । धूप वहुत तेज हो चुकी थी और गरमी से उसे सख्त तकलीफ हो रही थी तथापि वह गौर से कुछ सोचती हुई पहाड़ी के नीचे उतरने लगी । जव करीव जमीन के पास पहुँच गई तो एक ऐसा स्यान मिला जहाँ जंगली झाडिया वहुतायत से थी और वहाँ पत्यर का एक छोटा वुर्ज भी था जिस पर चढने के लिए उसके अन्दर की तरफ छोटी छोटी तीस या पैंतीस सीढिया वनी हुई थी । उस वुर्ज के ऊपर लोहे की चौरुखी झण्डी लगी हुई थी अर्थात् लोहे के वनावटी वाँस पर लोहे के ही पत्तरो की वनो चौरुखी झण्डी इस ढग की वनी हुई थी कि वह घुमाने से घूम सकती थी । एक झण्डो का रँग सुफेद, दूसरी का स्याह, तीसरी का लाल और चौथी झण्डी का पीला था । इस समय पीले रंग वाली झण्डी का रुख वंगले की तरफ घूमा हुआ था । वहा पर खडी होकर कला ने गदाधरसिंह से कहा, "वस इसी जगह वाहर निकल जाने के लिये एक सुरंग है और यह वुर्ज उसकी ताली है अर्थात् दर्वाजा खोलने के लिये पहिले मुझे इस वुर्ज के ऊपर जाना होगा अस्तु तुम इसी जगह खड़े रहो, मैं क्षण भर के लिए ऊपर जाती हूं ।"

गदा० । (कुछ सोच कर) तो मुझे भी अपने साथ लेती चलो, मैं देखूंगा कि वहाँ तुम क्या करती हो ।

कला० । (मुस्कुरा कर) तो तुम इस रास्ते का भेद जानना चाहते हो !

गदा० । हाँ बेशक, और इसी लिये तो मैंने तुमसे दलीपशाह के पास पहुँचा देने का वादा किया है।

कला० । अच्छा चलो।

गदाधरसिंह कला के साथ उस बुर्ज के अन्दर घुस गया। उसने देखा कि कला ने ऊपर चढ़ कर उस झण्डी के बाँस को जो बुर्ज के बीचोबीच से छत फोड़ कर अन्दर निकला हुआ था घुमा दिया, बस इसके अतिरिक्त उसने और कुछ भी नहीं किया और बुर्ज के नीचे उतर आई। बाहर निकलने पर गदाधरसिंह ने देखा कि जिस रुख पर पीले रंग की झण्डी थी अब उस रुख पर लाल रंग की झंडी है, मगर इस काम से और इस सुरंग के दर्वाजे से क्या सम्बन्ध हो सकता है सो उसकी समझ में न आया। कुछ गौर करने पर यकायक ख्याल आया कि ये झण्डियां यहाँ रहने वालों के लिए इशारे का काम करती हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है? वह सोचने लगा कि निःसन्देह यह औरत बड़ी चालाक और धूर्त है, पहिले भी इसी ने मुझ पर वार किया था, बेहोशी की दवा से भरा हुआ तमञ्चा इसी ने तो मुझ पर चलाया था और इस समय भी इसी से मुझे पाला पड़ा है, देखना चाहिये यह क्या रंग लाती है। इस समय भी अगर यह मेरे साथ दगा करेगी तो मैं इसे दुरुस्त ही करके छोड़ूँगा, इत्यादि।

गदाधरसिंह को सोच और विचार में पड़े हुए देख कर कला भी समझ गई कि यह मेरे ही विषय में चिन्ता कर रहा है और इसे इस झण्डी के घुमाने पर शक हो गया है अस्तु उसने शीघ्रता की मुद्रा दिखाते हुए गदाधरसिंह से कहा, "बस आओ और जल्दी से खोह के अन्दर घुसो क्योंकि पहला दर्वाजा खुल गया है।"

बुर्ज के नीचे उतर आने के बाद गदाधरसिंह को साथ लिये हुए कला वहाँ से पश्चिम तरफ ढालवीं जमीन पर चलने लगी और लगभग तीस या चालीस कदम चलने के बाद एक ऐसी जगह पहुंची जहाँ चार पांच पेड़ पारिजात के लगे हुए थे और उनके बीच में जंगली लताओं से छिपा हुआ

एक छोटा दर्वाजा था। कला ने गदाधरसिंह की तरफ देख के कहा, "यही उस खोह का दर्वाजा है जिस राह से हम लोगो का आना जाना होता है, अब मैं इसके अन्दर घुसती हू, तुम मेरे पीछे चले जाओ।"

गदा०। जहा तक मेरा ख्याल है मैं कह सकता हू कि इस खोह के अन्दर जरूर अन्धकार होगा। कही ऐसा न हो कि तुम आगे चल कर गायब हो जाओ और मैं अन्धेरे में तुम्हें टटोलता पुकारता और पत्थरों से ठोकरें खाता हुआ परेशानी में फँस जाऊँ, क्योंकि नित्य आने जाने के कारण यह रास्ता तुम्हारे लिये खेल हो रहा है। इसके अतिरिक्त यह रास्ता एकदम सीधा कभी न होगा, जरूर रास्ते में गिरह पडी होगी, या यो कहा जाय कि इसके बीच में दो एक तिलिस्मी दर्वाजे जरूर लगे होंगे।

कला०। नही नही, तुम बेखौफ मेरे पीछे चले आओ, यह रास्ता बहुत साफ है।

गदा०। नही मैं ऐसा बेवकूफ नही हूँ, बेहतर होगा कि तुम अपनी कमर में मुझे कमन्द बांधने दो, मैं उसे पकडे हुए तुम्हारे पीछे पीछे चला चलूंगा।

कला०। अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो मुझे मंजूर है।

आखिर ऐसा ही हुआ, गदाधरसिंह ने कला की कमर में कमन्द बांधी और उसे आगे चलने के लिये कहा और उस कमन्द का दूसरा सिरा पकड़े हुए पीछे पीछे आप रवाना हुआ। गदाधरसिंह को इस बात का बहुत ख्याल था कि सुरग की राह से आने जाने का रास्ता किसी तरह मालूम कर ले, मगर कला किसी दूसरी ही फिक्र में थी, वह यह नही चाहती थी कि इसी सुरंग के अन्दर भूतनाथ अर्थात् गदाधरसिंह को फंसा कर मार डाले, इस समय उसे इस सुरंग से निकाल देना ही वह पसन्द करती थी, अस्तु वह धीरे धीरे सुरंग के अन्दर रवाना हुई।

पन्द्रह या बीस कदम आगे जाने के बाद सुरंग में एकदम अन्धकार मिला इसलिये गदाधरसिंह को टटोल टटोल कर चलने की जरूरत पड़ी मगर कला तेजी के साथ कदम बढ़ाये चली जा रही थी और एक तौर पर

गदाधरसिंह को खैंचे लिये जाती थी।

कला०। अब तुम जल्दी जल्दी चलते क्यों नहीं? रास्ता बहुत चलना है और तुम्हारी सताई हुई प्यास के मारे बेचैन हो रही हूँ, इस खोह के बाहर निकल कर तब पानी पीऊगी, और तुम्हारा यह हाल है कि चींटी की तरह कदम बढ़ाते हो, मेरे पीछे पीछे आने में भी तुम्हारी यह दशा है, तुम कैसे ऐयार हो?

गदा०।मालूम होता है कि मुझे आज तुमसे भी कुछ सीखना पड़ेगा, मेरी ऐयारी में जो कुछ कसर थी उसे अब कदाचित् तुम लोगही पूरा करोगी।

कला०। वास्तव में ऐसी ही बात है, देखो यहा एक दर्वाजा आया है, जरा सम्हल कर चौखट लाघना नहीं ठोकर खाओगे।

उसी समय किसी तरह के खटके की आवाज आई और मालूम हुआ कि दर्वाजा खुल गया। गदाधरसिंह बहुत होशियारी से इस नीयत से हाथ बढ़ा कर टटोलता हुआ आगे बढ़ा कि दर्वाजे का पता लगावे और मालूम करे कि वह कैसा है या किस तरह से खुलता है मगर चौखट लाघ जाने पर भी जब इस बात का कुछ पता न लगा तब उसने चिढ़ कर कला से कहा, "क्या खाली चौकठ ही थी या यहाँ तुमने कोई दर्वाजा खोला है?"

कला०। इस बात के जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं, मैंने तुमसे यह वादा नहीं किया है कि यहाँ के सब भेद बता दूंगी।

गदा०। मैं यहाँ के भेद जानना नहीं चाहता मगर इस सुरग का हाल तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा।

कला०। इस भरोसे मत रहना, मैं वादे के मुताबिक तुम्हें इस जगह के बाहर कर दूगी और तुम प्रतिज्ञानुसार मुझे दलीपशाह के पास पहुचा देना।

गदा०। क्या तुम नहीं जानती कि अभी तक तुम मेरे कब्जे में हो और मैं जितना चाहे तुम्हें सता सकता हू?

कला०। तुम्हारे ऐसे बेवकूफ ऐयार के मुंह से ऐसी बात निकले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है! अजी तुम यही गनीमत समझो कि इस घाटी

के अन्दर हम लोगो ने तुम्हें किसी तरह का दुःख नही दिया क्योंकि हम लोग तुम्हारे साथ कोई और ही सलूक किया चाहती हैं और किसी दूसरे ढंग पर बदला लेने का इरादा है। यह तुम्हारी भूल है कि तुम मुझे अपने कब्जे में समझते हो, अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप चले आओ।"

कला की ऐसी बातें सुन कर गदाधरसिंह झल्ला उठा और उसने क्रोध के साथ कमन्द खैंची। उसे आशा थी कि कला इसके साथ खिचती हुई चली आवेगी मगर ऐसा न हुआ और खाली कमन्द खिच कर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई, क्योकि रास्ता चलते चलते कला ने वह कमन्द खोल डाली थी, इसलिए कि उसके हाथ खुले थे। गदाधरसिंह ने इस ख्याल से उसके हाथ नही बांधे थे और कला ने भी ऐसा ही बहाना किया था कि सुरंग के अन्दर कई कठिन दर्वाजे खोलने पड़ेंगे।

जिस समय खाली कमन्द खिच कर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई उसका कलेजा दहल उठा और वह वास्तव में बेवकूफ सा बन कर चुपचाप खड़ा रह गया मगर साथ ही कला की आवाज आई—"कोई चिन्ता मत करो, चुपचाप कदम बढ़ाते चले आओ और समझ लो कि यहां भी तुम्हें बहुत कुछ सोचना पड़ेगा।"

एक खटके की आवाज और आहट से उसी समय यह भी मालूम हो गया कि जिस चौखट को लांघ कर वह आया था उसमें किसी तरह का दर्वाजा था जो उसके इधर आ जाने के बाद आपसे आप बन्द हो गया। पीछे की तरफ हट कर और हाथ बढ़ा कर देखा तो अपना खयाल सच पाया और विश्वास हो गया कि अब उसका पीछे की तरफ लौट जाना भी असम्भव हो गया।

वहा की अवस्था और कला की बातों से गदाधरसिंह का गुस्सा बराबर बढ़ता ही गया और इस बात की उसे बहुत ही शर्म आई कि एक साधारण औरत ने उसे उल्लू बना दिया। मगर वह कर ही क्या सकता था, उस अनजान सुरंग और अन्धकार में उसका क्या बस चल सकता था? परन्तु इतने पर भी उसने मजबूर होकर कला के पीछे पीछे टटोलते हुए जाना पसन्द नहीं किया।

कई सायत तक चुपचाप खड़े रह कर कुछ सोचने के बाद उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और तब आखें फाड फाड कर चारो तरफ देखने लगा। उसने देखा कि यह सुरग बहुत चौडी और कुदरती ढग पर बनी हुई है तथा ऊँचाई भी किसी तरह कम नही है, तीन आदमी एक साथ खडे होकर उसमें बखूबी चल सकते हैं, मगर यहा पर इस बात का पता नही लगता कि यह सुरग कितनी लम्बी है क्योंकि आगे की तरफ बिलकुल अधकार मालूम होता था। पीछे की तरफ देखा तो दर्वाजा बद पाया जिसमें किसी तरह की कुण्डो खटके या ताले का निशान नही मालूम होता था।

गदाधरसिंह हाथ में बत्ती लिये हुए आगे की तरफ कदम बढ़ाये रवाना हुआ। लगभग डेढ़ सौ कदम जाने के बाद उसे पुन दूसरी चौखट लाँघने की जरूरत पडी। उसके पार हो जाने के बाद यह दर्वाजा भी आप से आप बन्द हो गया। उसने अपनी आखो से देखा कि लोहे का बहुत बड़ा तख्ता एक तरफ से निकल कर रास्ता बन्द करता हुआ दूसरी तरफ जाकर हाथ भर तक दीवार के अन्दर घुस गया, क्योंकि वह पीछे फिर कर देखता हुआ आगे बढा था। वह पुन आगे की तरफ बढ़ा मगर अब क्रमश सुरग तग और नीची मिलने लगी। उस कला का कहीं पता न लगा जिसे गिरफ्तार करने के लिए वह दात पीस रहा था।

कई सौ कदम चले जाने के बाद पिछले दो दर्वाजों की तरह उसे और भी तीन दर्वाजे लाँघने पडे और तब वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहा दो तरफ को रास्ता फूट गया था। वहा पर वह अटक गया और सोचने लगा कि किस तरफ जाय। कुछ ही सायत बाद एक तरफ से आवाज आयी, "अगर सुरग के बाहर निकल जाने की इच्छा हो तो दाहिनी तरफ चला जा और अगर यहाँ के रहने वालों की ऐयारी का इम्तिहान लेना हो और किसी को गिरफ्तार करने की प्रबल अभिलाषा हो तो बाईं तरफ का रास्ता पकड़!"

गदाधरसिंह चौकन्ना हो कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पडी। आवाज पर गौर

करने से विश्वास हो गया कि यह उसी औरत (कला) की आवाज है जिसकी बदौलत वह यहाँ तक आया। आवाज किस तरफ से आयी, आवाज देने वाला कहाँ है और वहाँ तक पहुचने की क्या तरकीब हो सकती है इत्यादि बातों पर गौर करने के लिए भी गदाधरसिंह वहाँ न अटका और गुस्से के मारे पेचो-ताव खाता हुआ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में रवाना हुआ। थोडी देर तक तेजी के साथ चल कर वह सुरंग के बाहर निकल आया और ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ बहुत से सुन्दर और सुहावने बेल तथा पारिजात के पेड़ लगे हुए थे और हरी हरी लताओ से सुरंग का मुंह ढका हुआ था।

जहाँ पर गदाधरसिंह खड़ा था उसके दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर सुन्दर झरना था जो पहाड़ की ऊंचाई से गिरता हुआ तेजी के साथ बह रहा था। यद्यपि इस समय उसके जल की चौडाई चार या पाँच हाथ से ज्यादे न थी मगर दोनो तरफ के करारों पर ध्यान देने से विश्वास होता था कि मौसिम पर जरूर यह चश्मा छोटी मोटी नदी का रूप धारण कर लेता होगा।

गदाधरसिंह ने देखा कि उस चश्मे का जल मोती की तरह साफ और निथरा हुआ बह रहा है और उसके उस पार वही औरत (कला) जिसने उसे धोखा दिया था हाथ में तीर कमान लिये खडी उसकी तरफ देख रही है। यह अकेली नही है बल्कि और भी चार औरतें उसी की तरह हाथ में तीर कमान लिये उसके पीछे हिफाजत के खयाल से खडी हैं।

गदाधरसिंह क्रोध में भरा हुआ लाल आँखो से उस औरत (कला) को तरफ देखने लगा और कुछ बोला ही चाहता था कि सामने से और भी दो आदमी आते हुए दिखाई दिये जिन्हें नजदीक आने पर भी उसने नही पहिचाना मगर उसे खयाल हुआ कि इन दोनो ने ऐयारी के ढग पर अपनी सूरत बदली हुई हैं।

ये दोनो आदमी गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह थे जिनकी सूरत इस समय वास्तव में बदली हुई थी। प्रभाकरसिंह ने निगाह पडते ही कला को पहिचान लिया, क्योंकि ये उसी बदली हुई सूरत में कला और बिमला को

देख चुके थे, हाँ कला ने प्रभाकरसिंह को नही पहिचाना जो इस समय भी सुन्दर सिपाहियाना ठाठ में सजे हुए थे।

कला को इस जगह ऐसी अवस्था में देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ और ये उससे कुछ पूछा ही चाहते थे कि उनकी निगाह गदाधरसिंह पर जा पडी जो चश्मे के उस पार एक पत्थर की चट्टान पर खडा इन लोगो की तरफ देख रहा था।

प्रभाकरसिंह ने इस ढग पर अपनी सूरत बदली हुई थी कि उन्हे यकायक पहिचानना बडा कठिन था मगर एक बंधे हुए इशारे से उन्होने कला पर अपने को प्रगट कर दिया और यह बतला दिया कि जो आदमी मेरे साथ है यह मेरा सच्चा खैरखाह गुलाबसिंह है।

गुलाबसिंह का हाल कला को मालूम था क्योकि वह उसकी तारीफ इन्दुमति से सुन चुकी थी और जानती थी कि ये प्रभाकरसिंह के विश्वासपात्र हैं इसलिए इनसे कोई बात छिपाने की जरूरत नही है अस्तु पूछने पर उसने अपने साथ वाली औरतों को अलग करके सब हाल अपना और भूतनाथ का साफसाफ बयान कर दिया जिसे सुनते ही प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह हस पडे।

प्रभाकर०। वास्तव में तुम बेतरह इसके हाथ फस गई थी मगर खूब ही चालाकी से अपने को बचाया!

गुलाब०। (प्रभाकरसिंह की तरफ देख के) यद्यपि गदाधरसिंह इनका कसूरवार है और आजकल उसने अजीब तरह का ढग पकड रक्खा है तथापि मैं कह सकता हू कि गदाधरसिंह ने इन्हें पहिचाना नही, अगर पहिचान लेता तो कदापि इनके साथ बेअदबी का बर्ताव न करता।

कला०। (गुलाबसिंह से) आप जो चाहे कहें क्योंकि वह आपका दोस्त है मगर हम लोगो को उस पर कुछ भी विश्वास नही है। (प्रभाकरसिंह से) मालूम होता है कि हमलोगों का हाल आपने इनसे कह दिया है?

प्रभाकर०। हाँ बेशक ऐसा ही है, मगर तुम लोगों को इन पर विश्वास करना चाहिए क्योंकि ये मेरे सच्चे सहायक हितैषी और दोस्त है।

तुम लोगों को भी इनसे बडी मदद मिलेगी।

कला०। ठीक है और मैं जरूर इन पर विश्वास करूंगी क्योंकि इनका पूरा पूरा हाल वहिन इन्दुमति से सुन चुकी हूं, यद्यपि ये गदाधरसिंह के दोस्त हैं और हम लोग उसके साथ दुश्मनी का वर्ताव कर रहे है।

गुलाब०।(कला से) यद्यपि गदाधरसिंह मेरा दोस्त है मगर (प्रभाकरसिंह की तरफ बता कर) इनके मुकाबले में मैं उस दोस्ती की कुछ भी कदर नही करता। इनके लिए मै उसी को नही बल्कि दुनिया के हर एक पदार्थ को जिमे मैं प्यार करता हूं छोड देने के लिये तैयार हू। अच्छा जाने दो इस समय पर इन बातो की जरूरत नही, पहिले उस (गदाधरसिंह) से बातें कर के उसे विदा कर लो फिर हम लोगों से बातें होती रहेंगी। हां यह तो बताओ कि जब तुमने इसे गिरफ्तार ही कर लिया था तो फिर मार क्यों नही डाला?

कला०। हम लोग इसे मार डालना पसन्द नही करती बल्कि यह चाहती हैं कि जहां तक हो सके इसकी मिट्टी पलीद करें और इसे किसी लायक न छोडें। यह किसी के सामने मुंह दिखाने के लायक न रहे बल्कि आदमी की सूरत देख कर भागता फिरे, और इसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लगे कि किसी के छुडाये न छूट सके और यह घबडा कर पछताता हुआ जंगल जंगल छिपता फिरे।

गुलाब०। बेशक यह बहुत बडी सजा है, अच्छा तुम उससे बातें करो।

गदाधरसिंह दूर खडा हुआ इन लोगो की तरफ बराबर देख रहा था मगर इन लोगों की बातें उसे कुछ भी सुनाई नहीं देती थी और न वह हावभाव ही से कुछ समझ सकता था, हां इतना जानता था कि अब वह कला का कुछ भी नही बिगाड़ सकता।

कला०। (कुछ आगे बढ़ कर ऊंची आवाज में गदाधरसिंह से) अब तो तुम इस घाटी के बाहर निकल आए, मैंने जो कुछ वादा किया था सो पूरा हो गया, अब तुम मुझे दलीपशाह के पास ले चल कर अपना वादा पूरा करो।

गदा०। (कला की तरफ बढ़ कर) बेशक तुम्हारी ऐयारी मुझ पर चल-

गई और मैं बेवकूफ बन गया। मैं यह भी खूब समझता हू कि दलीपशाह से मुलाकात करने की तुम्हें कोई जरूरत न थी, वह केवल बहाना था और न अब तुम मेरे साथ दलीपशाह के पास जा ही सकती हो। अस्तु कोई चिन्ता नही, तुम मेरे हाथ से निकल गईं और मैं तुम्हारे पजे से छूट गया। अच्छा अब मैं जाता हू मगर कहे जाता हूं कि तुम लोग व्यर्थ ही मुझसे दुश्मनी करती हो। दयारामजी के विषय में जो कुछ तुम लोगों ने सुना है या जो कुछ तुम लोगों का खयाल है वह बिल्कुल झूठ है, वह मेरे सच्चे प्रेमी थे और मैं अभी तक उनके लिए रो रहा हू। यदि जमना और सरस्वती वास्तव में जीती हैं और तुम लोग उनके साथ रहती हो तो जाकर कह देना कि गदाधरसिह तुम लोगो के साथ दुश्मनी कदापि न करेगा, यद्यपि तुम्हारा हाल जानने के लिए वह तुम्हारे आदमियों को दु ख दे और सतावे तो हो सकता है मगर यह तुम दोनों को कदापि दु ख न देगा। तुम यदि इच्छा हो तो गदाधरसिह को सता लो, उसे तुम्हारे लिए जान दे देने में भी कुछ उज्र न होगा।

इतना कह कर भूतनाथ वहा से पलट पडा और देखते देखते नजरों से गायब हो गया।

गुलाबसिह को बाहर ही छोड कर प्रभाकरसिह कला के साथ घाटी के अन्दर चले गये और गुलाबसिह से कह गये कि तुम इसी जगह ठहर कर मेरा इन्तजार करो, मैं इन्दुमति तथा विमला से मिल कर आता हू तो चुनार की तरफ चलू गा क्योंकि जब तक शिवदत्त से बदला न ले लूंगा तब तक मेरा मन स्थिर न होगा।

सध्या हो चुकी थी जब प्रभाकरसिह लौट कर गुलाबसिह के पास आए और दोनो आदमी धीरे धीरे बातचीत करते हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए।

इन दोनो को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि भूतनाथ इनका पीछा किये चला आ रहा है और चाहता है कि इन दोनों को किसी तरह पहिचान ले। इन दोनो के खयाल से भूतनाथ उसी समय कला के सामने

ही चला गया था मगर वास्तव में वह थोड़ी दूर जाकर छिप रहा था और अब मौका पाकर इन दोनो के पीछे पीछे छिपता हुआ रवाना हुआ।

तीसरा बयान

क्या भूतनाथ को कोई अपना दोस्त कह सकता था ? क्या भूतनाथ के दिल में किसी की मुहब्बत कायम रह सकती थी ? क्या भूतनाथ किसी के एहसान का पाबन्द रह सकता था ? क्या भूतनाथ पर किसी का दबाव पड़ सकता था ? क्या भूतनाथ पर कोई भरोसा रख सकता था ? इसका जवाब देना बहुत कठिन है। जो गुलाबसिंह भूतनाथ को अपना दोस्त कहता था आज वही गुलाबसिंह भूतनाथ पर भरोसा नहीं करता और इसी तरह भूतनाथ भी उसे अपना दोस्त नहीं समझता। जिस प्रभाकरसिंह की मदद के लिए भूतनाथ कमर बांध कर तैयार हुआ था आज उसी प्रभाकरसिंह पर ऐयारी का वार करके इन्दुमति को सताने के लिए वह तैयार हो रहा है।

सूरत बदले हुए प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह को यद्यपि भूतनाथ ने पहिचाना न था मगर उसे किसी तरह का शक जरूर हो गया था और यही जांच करने के लिए उसने इन दोनो का पीछा किया था।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी थी। गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह आपस में बातें करते हुए चुनारगढ की तरफ जा रहे थे। वे दोनो इस विचार में थे कि कोई गांव या बस्ती आ जाय तो वहां थोड़ी देर के लिए आराम करें। कुछ दूर और जाने के बाद वे दोनो ऐसी जगह पहुँचे जहां जंगली पेड़ बहुत ही कम होने के कारण वह जमीन मैदान का नमूना बन रही थी और पगडण्डी रास्ते से कुछ हट कर दाहिनी तरफ एक सुन्दर कूआं भी था जिसे देख कर इन दोनो की इच्छा हुई कि इसी कूएं पर बैठ कर कुछ देर आराम कर लें तब आगे बढें।

कूएं के पास जाकर देखा कि एक आदमी गमछा बिछाये उसकी जगत पर आराम कर रहा है और डोरी तथा लोटा उसके सिरहाने की तरफ पड़ा हुआ है।

गुलावसिंह ने प्रभाकरसिंह की तरफ देख कर कहा, "कुछ देर के लिये यहा आराम कीजिये, पानी पीजिये, और हाथ मुह धो ठण्ढे होकर सफर की हरारत मिटाइये !" इसके जवाब प्रभाकरसिंह ने कहा, "पानी पीने के लिये हम लोगों के पास लोटा डोरी तो है नही, हा आगे किसी ठिकाने पर चलें तो सभी कुछ हो सकता है, वल्कि वहा खाने पीने का भी सुबीता होगा !"

इन दोनों की वातें सुन कर वह मुसाफिर जो कूए की जगत पर लेटा हुआ था उठ बैठा और वोला, "हा हा आप क्षत्री जान पडते हैं और मैं भी गौड ब्राह्मण हू, अभी अभी यह लोटा मांज कर मैंने रखा है आप पानी खीच लीजिये।"

"अति उत्तम" कह कर गुलावसिंह ने लोटा डोरी उठा ली और प्रभाकरसिंह उसी जगत पर बैठ गये।

गुलावसिंह ने कूए से जल निकाला और दोनो दोस्तों ने हाथ मुह धोया। इसके वाद पुन जल निकाल कर दोनो ने थोडा थोडा पीया फिर लोटा मांज मुसाफिर के सिरहाने उसी जगह रख दिया।

गुलावसिंह यद्यपि होशियार आदमी थे मगर इस जगह एक मामूली वात में भूल कर गये। उन्हें उचित था कि अपने हाथ से लोटा मांज कर तव जल पान करते या मुह हाथ धोते, मगर ऐसा न करने से दोनों ही को तकलीफ उठानी पडी।

वह आदमी जो कूए पर पहिले ही से आराम कर रहा था वास्तव में भूतनाथ था। वह इन दोनों की आहट लेता हुआ इनसे कुछ ही दूर आगे आगे सफर कर रहा था वल्कि यों कहना चाहिये कि कभी आगे कभी पीछे कभी पास कभी दूर जव जैसा मौका पाता उसी तरह उन दोनों के साथ सफर कर रहा था और इस समय पहिले ही से यहाँ आकर इन लोगों को धोखा देने के लिये अटका हुआ था।

प्रभाकर०। (गुलावसिंह से) यह कूआ है तो अच्छे मौके पर मगर

इसका पानी अच्छा नही है।

गुलाब० । हा पानी में कुछ बदबू मालूम पडती है, मगर यह बात पहिले न थी, मैं कई दफे इस कूएं का पानी पी चुका हूं, यहाँ चार पाँच कोस के घेरे में यही एक कूआ है।

इसके बाद दोनो आदमी कुछ देर तक मामूली बातचीत करते रहे क्योंकि अनजान मुसाफिर पास होने के ख्याल से मतलब को या भेद की कोई बात नही करसकते थे। इसके बाद वे दोनो चादर बिछा कर लेट गये और बात की बात में बेखबर होकर खर्राटे लेने लगे। उस समय भूतनाथ अपनी जगह से उठा और दोनो के पास आकर गौर से देखने लगा कि अभी ये लोग बेहोश हुए हैं या नही।

भूतनाथ ने अपने लोटे के अन्दर बेहोशी की दवा लगा दी थी जिसका कुछ हिस्सा पानी में मिलजुल कर इनके पेट में उतर गया था और इसी दवा की महक इन दोनो की नाक में गई थी जिसका असल मतलब न समझ कर इन्होने पानी की शिकायत की थी।

जब भूतनाथ ने देखा कि वे दोनो अच्छी तरह बेहोश हो गये तब अपने बटुए में से सामान निकाल कर उसने रोशनी की, इसके बाद कूएं में से पानी निकाला और रुमाल तर करके इन दोनो का चेहरा साफ किया, उस समय अच्छी तरह देखने मे भूतनाथ का शक जाता रहा और उसने पहिचान लिया कि ये दोनो गुलाबसिंह और प्रभाकरसिंह है।

गुलाबसिंह ऐयार नही था मगर अकल का तेज और होशियार आदमी था तथा ऐयारो के साथ दोस्ती रहने के कारण कुछ कुछ ऐयारी का काम भी कर सकता था और इसी सबब से उसने अपनी और प्रभाकरसिंह की सूरत मामूली ढंग पर बदल ली थी।

भूतनाथ ने इन दोनो को अच्छी तरह पहिचान लेने के बाद गुलाबसिंह को तुरत पुनः उसी तरह की दवा दी और प्रभाकरसिंह को पीठ पर लाद कर अपने घर का रास्ता लिया।

तेजी के साथ चल कर दो ही घण्टे में वह अपनी घाटी के मुहाने पर जा पहुँचा जहाँ रहता था तथा जो कला और बिमला की घाटी के साथ सटी हुई थी। यहाँ उसके शागिर्द लोग उसका इन्तजार कर रहे होंगे यह सोच भूतनाथ तेजी से कदम बढाता हुआ उस सुरंग के अन्दर घुसा।

सुरंग के अन्दर घुसने के बाद वह उसी चौमुहानी पर पहुंचा जिसका जिक्र ऊपर कई दफे आ चुका है। इसके बाद वह अपनी घाटी की तरफ घूमा और उस सुरंग में घुसा मगर दो ही चार कदम आगे जाने के बादा दरवाजा बन्द देख उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, उसका दिमाग हिल गया और हिम्मती होने पर भी वह एक दफे काँप उठा।

प्रभाकरसिंह की गठरी उसने जमीन पर रख दी और बटुए में से सामान निकाल रोशनी करने के बाद अच्छी तरह गौर करके देखने लगा कि रास्त क्योंकर बन्द हो गया, मगर उसकी समझ में कुछ भी न आया। उसने सिर्फ इतना देखा कि लोहे का एक बहुत बड़ा तख्ता सामने अड़ा हुआ है जिसके कारण यह बिल्कुल नहीं जान पड़ता कि उसका घर किस तरफ है। उसने दर्वाजा खोलने की बहुत कोशिश की और बड़ी देर तक हैरान रहा मगर सब बेकार हुआ। यह सोच कर उसकी आँखों में आसू भर आये कि हाय उसके कई शागिर्द जो इस घाटी के अन्दर हैं सब बेचारे भूख के मारे तड़प कर मर जायगे, क्योंकि इस रास्ते के सिवाय बाहर निकलने के लिये उन्हें कोई दूसरा रास्ता न मिलेगा।

प्रभाकरसिंह की गठरी लिए हुए भूतनाथ घबड़ाया हुआ सुरंग के बाहर निकल आया और एक घने पेड़ के नीचे बैठ कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये? इस समय यहाँ मेरा कोई शागिर्द या नौकर भी नहीं मिल सकता जिससे किसी तरह का काम निकाला जाय। जिस खयाल से प्रभाकर-सिंह को ले आया था वह काम भी न हुआ। हाय, मेरे आदमी एकाएक जहन्नुम में मिल गये और मैं उनकी कुछ भी मदद न कर सका! मालूम होता है कि यहां का कोई सच्चा जानकार आ पहुंचा जिसने इस घाटी पर कब्जा कर

लिया। क्या दयाराम की दोनों स्त्रियां तो यहा नही आ पहुंची जो पड़ोस में रहती हैं ? अगर ऐसा हो भी तो यह कोई आश्चर्य की बात नही है, क्योंकि बगल वाली घाटी जिसमें वे दोनो रहती हैं कोई तिलिस्म मालूम पड़ती है और यह घाटी उससे कुछ सम्बन्ध रखती हो तो आश्चर्य ही क्या है। मैं नही चाहता था कि उन दोनो को सताऊं या किसी तरह की तकलीफ दूं, मगर दोस्तो और शागिर्दो को छुडाने के लिए अब मुझे सभी कुछ करना पडेगा।

चौथा बयान

गुलाबसिंह को जब आंख खुली तो रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी में पूरब तरफ लालिमा दिखाई देने लग गई थी। वह घबड़ा कर उठ बैठा और इधर उधर देखने लगा। जब प्रभाकरसिंह को वहां न पाया तब बोल उठा, "बेशक मैं धोखा खा गया। वह मुसाफिर न था बल्कि कोई ऐयार था जिसने लोटे में किसी तरह की दवा लगा दी होगी। क्या मैं कह सकता हूं कि प्रभाकरसिंह को वही उठा ले गया होगा ?"

इतना कह वह जगत के नीचे उतरा और घूम घूम कर प्रभाकरसिंह की तलाश करने लगा। जब वे न मिले तो तरह तरह की बातें मन में सोचता हुआ आगे की तरफ बढ़ा—

"बेशक वह कोई ऐयार था जो प्रभाकरसिंह को उठा कर ले गया। ताज्जुब नहीं कि वह भूतनाथ हो। यद्यपि मुझे उससे ऐसी आशा न थी परन्तु आज कल वह जमना और सरस्वती के ख्याल से प्रभाकरसिंह को भी अपना दुश्मन समझने लग गया है। यह भी किसी को क्या उम्मीद थी कि जमना और सरस्वती जीती होंगी। खैर मुझे इस समय प्रभाकरसिंह के लिए कुछ बन्दोबस्त करना चाहिये, बेहतर होगा यदि मैं स्वयम् भूतनाथ के पास चला जाऊं और उससे प्रभाकरसिंह को मांग लूं, मगर नहीं यद्यपि वह मेरा दोस्त है परन्तु इस समय वह इस दोस्ती पर कुछ भी ध्यान न देगा मगर उसे ऐसा ही ख्याल होता तो प्रभाकरसिंह को ले जाता ही क्यों ? मुझे

भी इस समय उससे किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिये, क्योंकि अब हम लोग दयाराम के खयाल से जमना और सरस्वती के पक्षपाती हो गये हैं, अस्तु अब उसके लिये कोई दूसरा ही बन्दोबस्त करना चाहिए। अगर उस खोह का रास्ता मुझे मालूम होता तो मैं जमना और सरस्वती को भी इस बात की खबर देता। खैर, अब मुझे दलीपशाह के पास चलना चाहिए और उससे मदद मांगनी चाहिये, क्योंकि मैं अकेला भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकता। दलीपशाह जरूर मेरी मदद करेगा, उस पर मेरा जोर भी है और उसने मेरे साथ अपनी मुहब्बत भी दिखाई है, मगर पहिले अपने आदमियों को समझा देना चाहिये जो अभी तक हम लोगों का इन्तजार कर रहे होंगे!!"

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ गुलाबसिंह आगे की तरफ बढ़ा चला जाता था। लगभग एक या डेढ़ कोस गया होगा कि सामने से दो सिपाही ढाल तलवार लगाए दो घोड़ों की बागडोर थामे आते हुए दिखाई पड़े। जब वे गुलाबसिंह के पास पहुंचे तो सलाम करके खड़े हो गये और गुलाबसिंह भी रुक गया।

गुलाब०। तुम लोग कहां जा रहे हो?

एक०। आप ही की खोज में जा रहे हैं, क्योंकि रात भर इन्तजार करके हम लोग

गुलाब०। (बात काट कर) बेशक तुम लोग तरद्दुद में पड़ गए होंगे, मगर क्या करें लाचारी है, अच्छा यह कहो कि बाकी आदमी कहां हैं?

एक०। अभी तक सब उसी जगह अटके हुए हैं।

गुलाब०। अच्छा एक काम करो, तुम घोड़ा यहीं छोड़ दो और लौट जाओ, हमारे आदमियों को इत्तिला दो कि हमारे घर पर चले जायं, पुराने घर पर नहीं, आजकल जहां हम रहते हैं उस घर पर चले जायं, और जब तक हम या प्रभाकरसिंह वहां न आवें तब तक कहीं न जायं। मैं इस घोड़े पर सवार होकर किसी काम के लिए जाता हूं। (दूसरे सिपाही की तरफ देख कर) तुम इस दूसरे घोड़े पर सवार हो लो और मेरे साथ साथ चलो।

इतना कह कर गुलाबसिंह घोड़े पर सवार हो गया। "जो हुक्म" कह कर एक सिपाही तो पीछे की तरफ लौट गया और दूसरा घोड़े पर सवार होकर गुलाबसिंह के साथ रवाना हुआ।

पांचवां बयान

ऊपर लिखी वारदात को गुजरे आज कई दिन हो चुके है इस बीच मे कहां और क्या क्या नई बातें पैदा हुईं उनका हाल तो पीछे मालूम होगा, इस समय हम पाठकों को कला और विमला की उसी सुन्दर घाटी में ले चलते है जिसकी सैर वे पहिले भी कई दफे कर चुके हैं।

उस घाटी के बीचोबीच में जो सुन्दर बंगला है उसी में चलिए और देखिए कि क्या हो रहा है।

रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है, बंगले के अन्दर एक कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा हुआ है और उस पर कुछ आदमी बैठे आपुस मे बातें कर रहे हैं। एक तो इन्द्रदेव हैं, दूसरी कला, तीसरी विमला और चौथी इन्दुमति है, जिसका नाम आज कल 'चन्दा' रक्खा गया है। सैर सुनिये कि इनमें क्या क्या बातें हो रही हैं।

विमला०। (इन्द्रदेव से) आपका कहना बहुत ठीक है, मैं भी भूतनाथ से इस तरह पर बदला लेना पसन्द करती हू, तभी तो उसे यहां से निकल जाने का मौका दिया नही तो यहां पर उसको मार डालना कोई कठिन काम न था।

इन्द्र०। ठीक है, किसी दुश्मन को मार डालने से मेरी तबीयत तो प्रसन्न नही होती। मैं समझता हू कि मरने वाले को कई सायत तक की मामूली तकलीफ तो होती है मगर मरने के बाद उसे कुछ भी ज्ञान नही रहता कि उसने किसके साथ कैसा सलूक किया था और उसने किस तरह पर उससे बदला लिया। प्राण का सम्बन्ध शरीर से नहीं छूटता, उसे कोई न कोई शरीर अवश्य ही धारण करना पड़ता है। एक शरीर को छोड़ा तो दूसरा धारण करना पड़ा। यह उसकी इच्छानुसार नही होता बल्कि सर्व-

शक्तिमान जगदीश्वर के रचे हुए मायामय जगत का यह एक अकाट्य नियम ही है और इसी नियम के अनुसार ईश्वर भले बुरे कर्मों का बदला मनुष्य को देता है। एक देह को छोड कर जब जीव दूसरी देह में प्रवेश करता है तब अपने भले बुरे कर्मों का फल दूसरे देह में भोगता है, मगर इसका उसे कुछ भी परिज्ञान नही होता और उस सुख दुःख का कारण न समझ कर वह सहज ही में उस कर्म फल को अथवा सुख दुःख को भोग लेता है या भोगा करता है। वह इस बात को नहीं समझ सकता कि पूर्वजन्म में मैंने यह पाप किया था जिसका बदला इस तरह पर मिल रहा है, बल्कि उसे वह एक मामूली बात समझता है और दुःख को दूर करने का उद्योग किया करता है, यही कारण है कि वह पुनः पापकर्म में प्रवृत्त हो जाता है। अगर मनुष्य जानता कि यह दुःख उसके किस पाप कर्म का फल है तो कदाचित् वह पुनः उस पाप कर्म में प्रवृत्त होने का साहस न करता परन्तु उस महामाया की माया कुछ कही नही जाती और समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है। कदाचित् उस दयामय के दयाभाव ही का यह कारण हो। इसी से मैं कहता हूं कि दुश्मन को मार डालने से कोई फल नहीं होता उसके पाप कर्म का बदला ईश्वर तो उसे देवेहीगा परन्तु 'मैं भी तो कुछ बदला दे दूं' यही मेरी इच्छा रहती है चाहे किसी मत के पक्षपाती लोग इसे भी ईश्वर की इच्छा ही कहें परन्तु मेरे चित्त को जो सन्तोष होता है वह विशेषता इसमें अधिक अवश्य है।

बिमला०। निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्रदेव०। दुश्मन बहुत दिनों तक जीता रह कर पाप का प्रायश्चित भोगता रहे सो अच्छा, जितने ही ज्यादे दिनों तक वह पश्चात्ताप करे उतना ही अच्छा, उसके शरीर को जितना ही कष्ट भोगना पडे उतना ही उत्तम, वह अपने सचाई के साथ बदला देने वाले को प्रसन्न और हंसता हुआ देख कर जितना ही कुढ़े जितना ही शर्मिन्दा हो और जितना ही दुःख पा सके उतना ही शुभ समझना चाहिये। इसी विचार से मैं कहता हूं कि भूतनाथ

को मारो मत, बल्कि उसे जहाँ तक बने सताओ और दुःख दो, भला वह समझे तो सही कि मेरे किस कर्म का यह क्या फल मिल रहा है ?

मगर एक बात और विचारने के योग्य है, वह यह कि इस तरह पर दुश्मन से बदला लेना कुछ सहज काम नहीं है। इसके लिये बड़े ही उद्योग, बड़े ही साहस, और बड़े ही धैर्य की जरूरत है और इसके लिये अपने चित्त के भाव को बहुत ही छिपाना पड़ता है, सो ये बातें मनुष्य से जल्दी निबह्ती नहीं, इसी से कई विद्वानों का मत है कि 'दुश्मन को जहाँ तक हो सके जल्द मिटा देना चाहिये, नहीं तो किसी विचार से तरह दे देने पर कहीं ऐसा न हो कि मौक़ा पा कर वह बलवान हो जाये और तुम्हीं को अपने कब्जे में कर ले।' यह सच है परन्तु यदि ईश्वर सहायक हो और मनुष्य धैर्य के साथ निर्वाह कर सके तो इस बदले से वह पहिले ही बदला अच्छा है जिसे मैं ऊपर बयान कर चुका हूं।

भूतनाथ के साथ इस तरह का बर्ताव करने से एक फ़ायदा यह भी हो सकता है कि सच्चे और झूठे मामले की जांच भी हो जायगी। कदाचित् उसने तुम्हारे पति को धोखे में ही मारा हो, जान बूझ कर न मारा हो जैसा कि उसका कथन है। भूतनाथ ऐसा बुद्धिमान और धुरन्धर ऐयार यदि अपने कर्मों का प्रायश्चित पाकर सुधर जाय और अच्छी राह लगे तो अच्छी ही बात है क्योंकि ऐसे बहादुर लोग दुनिया में कम पैदा होते हैं।

इन्द्रदेव की आखिरी बात कला और विमला को पसन्द न आई मगर उन्होंने उनकी खातिर से यह जरूर कह दिया कि—'आपका कहना ठीक है।'

कला०। खैर अब तो भूतनाथ को मालूम हो ही गया है कि जमना और सरस्वती जीती हैं, देखें हम लोगों के लिए क्या उद्योग करता है।

इन्द्रदेव०। कोई चिन्ता नहीं, मालूम हो गया तो होने दो, तुम होशियारी के साथ इस घाटी के अन्दर पड़ी रहो, किसी को यहां का रास्ता मत बताओ और जब कभी इस घाटी के बाहर आओ तो उन अद्भुत हर्बों को जरूर अपने साथ रक्खो जो मैंने तुम लोगों को दिये हैं।

विमला० । जो आज्ञा ।

कला० । यहाँ का रास्ता अभी तक तो सिवाय प्रभाकरसिंह के और किसी नए आदमी को मालूम नहीं हुआ, मगर इधर प्रभाकरसिंहजी की जुबानी यह जाना गया है कि हम लोगों का कुछ हाल उन्होंने अपने दोस्त गुलाबसिंह को जरूर कह दिया है, मगर यहाँ का रास्ता या इस घाटी का असल भेद उनको भी नहीं बताया है ।

इन्द्र० । (कुछ सोच कर) प्रभाकरसिंह बुद्धिमान आदमी हैं, उन्होंने जो कुछ किया होगा उचित किया होगा, उनके विषय में तुम लोग चिन्ता मत करो ! इसके अतिरिक्त गुलाबसिंह पर मैं भी विश्वास करता हूं । वह निःसन्देह उनका सच्चा हितैषी है और साथ ही इसके साहसी और बहादुर भी है । यदि गुलाबसिंह को वे इस घाटी के अन्दर ले भी आवें तो कोई चिन्ता की बात नहीं है । (मुस्कुरा कर) और बेटी तुमने तो प्रभाकरसिंह को यहाँ का राज्य ही दे दिया, यहाँ के तिलिस्म की ताली ही दे दी है ।

विमला० । सो आपकी आज्ञा से, मैंने अपनी तरफ से कुछ भी नहीं किया, परन्तु फिर भी आपकी मदद पाये बिना वे कुछ कर न सकेंगे । हाँ एक बात कहना तो मैं भूल ही गई ।

इन्द्रदेव० । वह क्या ?

विमला० । भूतनाथ की घाटी का रास्ता मैंने बन्द कर दिया है, अब भूतनाथ अपने स्थान पर नहीं पहुंच सकता और उसके साथी और दोस्त लोग उसी के अन्दर पड़े पड़े सड़ा करेंगे ।

यह कह कर विमला ने अपनी बेईमान लौंडी चन्दो की मौत और भूतनाथ की घाटी का दर्वाजा बन्द कर देने तक का हाल पूरा पूरा इन्द्रदेव से बयान किया ।

इन्द्र० । (कुछ सोच कर) मगर यह काम तो तुमने अच्छा नहीं किया । तुम लोगों को मैंने इस घाटी में इसलिए स्थान दिया था कि अपने दुश्मन भूतनाथ का हाल चाल बराबर जाना करोगी, वह इस घाटी के पड़ोस में

रहता है और यहा से उस घाटी का हाल बखूबी जाना जा सकता है, उसी सुबीते को देख कर मैने तुम लोगो को यहा छोड़ा था, सो सुबीता तुमने अपने से बिगाड़ दिया। यद्यपि भूतनाथ के कई संगी साथी इससे परेशान होकर मर जायेंगे मगर इससे भूतनाथ का कुछ नही बिगडेगा। वह इस स्थान को छोड कर दूसरी जगह चला जायगा, फिर तुम्हें उसके काम काज की कुछ भी खबर नही मिला करेगी। तुम ही सोचो कि यदि वह तुम्हारे किसी दोस्त या साथी को गिरफ्तार करता तो जरूर इसी घाटी में ले आता और तुम्हें उसकी खबर लग जाती, तब तुम उसको छुड़ाने का उद्योग करती, मगर अब क्या होगा ? अब तो अगर वह तुम्हारे किसी साथी को पकडेगा भी तो दूसरी जगह ले जायगा और ऐसी अवस्था में तुम्हें कुछ भी पता न लगेगा।

बिमला०। (सिर झुका कर) बेशक यह बात तो है।

कला०। नि:सन्देह भूल हो गई।

इन्दु०। गहरी भूल हो गई। आखिर हम लोग औरत की जात इतनी समझ कहा ? अब इस भूल का सुधार क्योंकर हो ?

इन्द्र०। अब इसका सुधार होना जरा कठिन है, भूतनाथ जरूर चौकन्ना हो गया होगा और अब वह अपने लिए कोई दूसरा स्थान मुकर्रर करेगा। (कुछ विचार कर) मगर खैर एक दफे मैं इसके लिए उद्योग जरूर करूँगा, कदाचित् काम निकल जाय।

कला०। क्या उद्योग कीजिएगा ?

इन्द्र०। सो अभी से कैसे कहूं? वहा जाने पर और मौका देखने पर भी कुछ बन जाय। यदि भूतनाथ इस घाटी में बना रहेगा तो बहुत काम निकलेगा।

विमला०। तो क्या आप अकेले भूतनाथ की तरफ या उस घाटी में जायगे?

इन्द्रदेव०। हां जा सकता हूं क्योंकि वे लोग मेरा कुछ भी नही बिगाड़ सकते और न मुझे भूतनाथ की कुछ परवाह ही है, मगर मेरा इरादा है कि इस काम के लिए दलीपशाह को भी अपने साथ लेता जाऊँ।

इतना कह कर इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उस कमरे में चले गये जो यहाँ नहाने धोने के लिए मुकर्रर था।

छठवां बयान

दिन तीन पहर से ज्यादे चढ़ चुका है। इस समय हम भूतनाथ को एक घने जगल में अपने तीन साथियो के साथ पेड के नीचे बैठे हुए देखते हैं। यह जगल उस घाटी से बहुत दूर न था जिसमें भूतनाथ रहता था और जिसका रास्ता खिमला ने बन्द कर दिया था।

भूत०। (अपने साथियो से) मुझे इस बात का बडा ही दुःख है कि मेरे साथी लोग इस घाटी में कैदियो की तरह बन्द होकर दुःख भोग रहे हैं। यद्यपि वहां पानी की कमी नहीं है और खाने के लिए भी इतना सामान है कि वे लोग महीनों तक निर्वाह कर सकें, मगर फिर भी कब तक। आखिर जब यह सामान चुक जायगा तो फिर वे लोग क्या करेंगे ?

एक०। ठीक है मगर साथ ह इसके यह खयाल भी तो होता है कि शायद हमारे दोस्तों को भी तकलीफ दी गई हो !

भूत०। हो सकता है लेकिन इस विचार पर मैं विशेष भरोसा नहीं करता, क्योंकि दर्वाजा बन्द कर देना सिर्फ एक जानकार आदमी का काम है मगर हमारे साथियों से लड कर बीस या पचीस आदमी भी पार नहीं पा सकते।

दूसरा०। है तो ऐसी ही बात, इसी से आशा होती है कि अभी तक वे सब जीते होंगे, अस्तु जिस तरह हो सके उन्हें बचाना चाहिए।

भूत०। मैं इसी फिक्र में पडा हू और सोच रहा हूं कि उनको बचाने के लिए क्या इन्तजाम किया जाय।

एक०। पहिले तो उसका पता लगाना चाहिये जिसने दर्वाजा बन्द कर दिया है।

भूत०। हां और इस विषय में मुझे उन्हीं औरतो पर शक होता है जो इस पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं, जहां मैं कैद होकर गया था, और जहां सुनने में आया कि जमना और सरस्वती अभी तक जीती जागती हैं और मुझसे

दयाराम का बदला लेने के लिए उद्योग कर रही हैं। वास्तव में वह घाटी भी बड़ी विचित्र है। निःसन्देह वह तिलिस्म है और अगर मेरा खयाल ठीक है तो वहां की रहने वालियां अड़ोस पड़ोस की भी घाटियों का हाल जानती होंगी, बल्कि मेरी इस घाटी से सम्बन्ध रखती हों तो ताज्जुब नहीं!

तीसरा०। आपका यह विचार बहुत ठीक है। अगर वास्तव में जमना और सरस्वती जीती हैं और उसी घाटी में रहती हैं तो निःसन्देह यह काम उन्हीं का है और उन्हीं लोगों में से किसी को गिरफ्तार करने से हमारा काम निकल सकता है।

भूत०। बेशक, और मैं उन लोगों में से किसी न किसी को जरूर गिरफ्तार करूंगा।

एक०। आप जब गिरफ्तार होकर वहां गये तो वहां की अवस्था देख कर और उन लोगों की बातें सुन कर जमना और सरस्वती के विषय में आपने क्या विश्वास किया?

भूत०। मुझे विश्वास होता है कि जरूर वे दोनों जीती हैं।

दूसरा०। तो यह घाटी उन लोगों को किसने रहने के लिये दी और उन लोगों का मददगार कौन है?

भूत०। यही तो एक बिचारने की बात है। मेरे खयाल से अगर इन्द्रदेव उन दोनों के पक्षपाती बने हों तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि दयारामजी मेरे हाथ से मारे गये इस बात को दुनिया में मेरे सिवाय सिर्फ दो ही आदमी और जानते हैं, एक तो दलीपशाह दूसरा शम्भू। शम्भू तो इन्द्रदेव का शागिर्द ही ठहरा और दलीपशाह इन्द्रदेव का दिली दोस्त। यद्यपि दलीपशाह मेरा नातेदार है और उसने इस बात को छिपा रखने के लिये मुझसे कसम भी खाई है मगर अब मालूम होता है कि उसने अपनी कसम तोड़ दी और इस भेद को खोल दिया। इस बात का सब से बड़ा सबूत एक यह है कि जब मैं कैद होकर उस घाटी में गया था तो एक औरत ने जोर देकर मुझसे बयान किया था कि तुमने दयाराम को मारा है और इसके सबूत में

पेश करने के लिये दलीपशाह और शम्भू अभी तक जीते हैं। अस्तु मेरा यह विचार पक्का है कि निःसन्देह, शम्भू और दलीपशाह ने भेद खोल दिया और सब के पहिले उन्होंने जरूर अपने दोस्त इन्द्रदेव से वह हाल बयान किया होगा। ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही इन दोनों के पक्षपाती बने हों।

एक०। तो इन्द्रदेव को क्या आपसे कुछ दुश्मनी है?

भूत०। नहीं, इस बात का तो मुझे गुमान भी नहीं होता।

एक०। और यदि इन्द्रदेव चाहें, तो क्या आपको कुछ सता नहीं सकते? या आपको गिरफ्तार करके सजा नहीं दे सकते?

भूत०। बेशक, इन्द्रदेव जो कुछ चाहें कर सकते हैं, उनकी ताकत का कोई अन्दाजा नहीं कर सकता, वे एक बहुत बड़े तिलिस्म के राजा समझे जाते हैं, मुझसे वे बहुत ज्यादे जबर्दस्त हैं और ऐयारी में भी मैं उन्हें अपने से बढ़ कर मानता हूं। यद्यपि एक विषय में मैं अपने को उनका कसूरवार मानता हूं मगर फिर भी कह सकता हूं कि वे मेरे दोस्त हैं।

दूसरा०। तो आप ऐसे दोस्त पर इस तरह का शक क्यों करते हैं?

भूत०। दिल ही तो है, खयाल ही तो है। जब आदमी किसी मुसीबत में गिरफ्तार होता है तो उसके सोच विचार और शक का कोई हिसाब नहीं रहता। मैं इस समय मुसीबत की जिन्दगी बिता रहा हूं। मुझसे दो तीन काम बहुत बुरे हो गये हैं जिनमें से एक दयाराम वाली वारदात है। इसमें मुझे बहुत ही बड़ा धोखा हुआ। मैंने कुछ जान बूझ कर अपने दोस्त को नहीं मारा, मगर खैर वह जो कुछ होना था हो गया, अब क्या मैं अपने को दुश्मन के हाथ सहज ही में सौंप दूंगा? यद्यपि इन्द्रदेव को मैं अद्भुत व्यक्ति मानता हूं मगर मैं अपने को भी कुछ समझता हूं, मुझे अपनी ऐयारी पर घमण्ड है, इसलिये मैं इन्द्रदेव से नहीं डरता और तुम लोगों से कह देता हूं कि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है तो बना हुआ मगर मैं उसे मारे बिना कभी न छोड़ूंगा, उस कम्बख्त से अपना बदला जरूर लूंगा। केवल उसी को नहीं मारूंगा बल्कि उसके खानदान में किसी को जीता न रहने दूंगा।

मैं इस बात को जरा भी न सोचूंगा कि वह मेरा नातेदार है, क्योंकि खुद उसी ने इस बात पर ध्यान नही दिया और मेरी बर्बादी के पीछे लग गया। मुझे यह भी खबर लगी है कि दलीपशाह ने जमानिया के दारोगा से भी दोस्ती पैदा कर ली है और उसकी तरफ से भी मुझे सताने के लिये तैयार है।

एक०। ऐसी अवस्था में जरूर दलीपशाह का नाम निशान मिटा देना चाहिये क्योंकि जब तक वह जीता रहेगा आप बेफिक्र नही हो सकते, साथ ही इसके शम्भू को भी मार डालना चाहिये। उन दोनो के मारे जान पर आप इन्द्रदेव को अच्छी तरह समझा लेंगे और विश्वास दिला देंगे कि आपके हाथो से दयाराम नही मारे गये और अगर दलीपशाह और शम्भू ने उनसे ऐसा कहा है तो वह बात बिल्कुल ही झूठ है।

भूतनाथ०। ठीक है, मैं जरूर ही ऐसा करूंगा, लेकिन इतने पर भी काम न चलेगा और यह बात मशहूर ही होती दिखाई देगी तो लाचार होकर मुझे और भी अनर्थ करना पडेगा; नाता और रिश्ता भूल जाना पड़ेगा, दोस्ती और मुरौवत को तिलाजुली दे देनी पडेगी; और जिन जिन को यह बात मालूम हो गई है उन सभी को इस दुनिया से उठा देना पडेगा।

एक०। जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को भी ?

भूत०। बेशक, बल्कि गुलाबसिंह को भी!

दूसरा०। यह बडे कलेजे का काम होगा!

भूत०। मुझसे बढ कर कठिन और बडा कलेजा किसका होगा जिसने लडके लडकी और स्त्री को भी त्याग दिया है, मगर अफसोस, इस समय मैं पाप पर पाप करने के लिए मजबूर हो रहा हूं!

एक०। खैर यह बताइये कि सबसे पहले कौन काम किया जायगा और इस समय आप हम लोगो को क्या हुक्म देते हैं!

भूत०। सबसे पहिले मैं अपने दोस्तों को छुडाऊंगा और इसके लिए उस नडोस की घाटी में रहने वाली औरतो मे से किसी को गिरफ्तार करना चाहिये। खैर अब बताता हूं कि तुम लोगों को क्या करना चाहिए। (चौक

कर) देखो तो वह साधू कौन है । ऐसा गुमान होता है कि इसे मैंने कभी देखा है । यह तो हमारे उसी खोह की तरफ जा रहा है । पहिले इसी की सुध लेनी चाहिये फिर बताएंगे कि तुम लोगो को क्या करना चाहिये ।

यह साधू जिस पर भूतनाथ की निगाह पडी बहुत ही बुड्ढा और तपस्वी जान पडता था । इसके सर और दाढ़ी के बाल बहुत ही घने और लंबे थे । लम्बा कद, वृद्ध होने पर भी गठीला बदन और चेहरा रोआबदार मालूम होता था । कमर में क्या पहिरे हुए था इसका पता नही लगता था क्योकि इसके बदन में बहुत लम्बा गेरुए रग का ढीला कुरता था जो घुटने से एक बित्ता नीचे तक पहुच रहा था, मगर साथ ही इसके यह जान पडता था कि उसने अपने तमाम बदन में हलको विभूत लगाई हुई है । इसके अतिरिक्त इसके पास और किसी तरह का सामान दिखाई न देता था अर्थात् कोई माला या सुमिरनी तक इसके पास न थी ।

भूतनाथ अपने साथियों को इसी जगह रहने का हुक्म देकर धीरे धीरे उस साधू के पीछे रवाना हुआ मगर उस लापरवाह साधू को इस बात का कुछ भी खयाल न था कि उसके पीछे कोई आ रहा है ।

थोडी ही देर में वह साधू उस खोह के मुहाने पर जा पहुँचा जिसमें भूतनाथ रहता था । जब वह खोह के अन्दर घुसने लगा तब भूतनाथ भी लपक कर उसके पास पहुंचा ।

साधू० । (भूतनाथ को देख कर) तुम कौन हो ?

भूत० । जी मेरा नाम गदाधरसिंह ऐयार है ।

साधू० । ठीक है, मैं तुम्हारा नाम सुन चुका हूं, बहुत अच्छा हुआ कि तुमसे मुलाकात हो गई, मालूम होता है कि तुम्हीं ने इस घाटी में दखल जमा रक्खा है और जो लोग इसके अन्दर है वे सब तुम्हारे ही सगी साथी हैं ?

भूत० । जी हां, बात तो ऐसी ही है ।

साधू० । मैं इसी फिक्र में पडा हुआ था और सोच रहा था कि इस घाटी में किसने अपना दखल जमा लिया है । शायद तुम्हें यह बात मालूम नहीं

है, खैर अब समझ लो कि मैं इस घाटी में पचास वर्ष से रहता हूं और यहां का हाल जितना मैं जानता हू किसी दूसरे को मालूम नहीं है। इधर कई वर्ष हुए हैं कि मै इस घाटी को छोड कर तीर्थयात्रा के लिए चला गया था। मेरा विचार था कि फिर लौट कर यहां न आऊं और इसी लिए इसका दर्वाजा खुला छोड़ गया था पर ईश्वर की प्रेरणा से मैं घूमता फिरता फिर यहां चला आया और जब इस घाटी के अन्दर गया तो देखा कि इसमें किसी दूसरे की अमलदारी हो रही है, अस्तु मैं इसका दर्वाजा बन्द करता हुआ बाहर निकल आया और फिक्र में पडा कि इसके मालिक का पता लगाना चाहिये, क्योंकि इसके अन्दर जितने आदमी दिखाई पडे उनमें से कोई भी ऐसा नजर न आया जिसे मैं यहा का मालिक समझूं, इसी लिए मैं इसके अन्दर किसी से मिला नही और न किसी ने मुझे देखा। खैर यह जान कर मुझे प्रसन्नता हुई कि तुम यहां रहते हो। मैं बहुत ही प्रसन्न होता यदि तुम्हारी गृहस्थी या तुम्हारे बालबच्चे भी यहां दिखाई देते। मगर खैर जो कुछ है वही गनीमत है। मैं तुम्हें मुहब्बत की निगाह से देखता हूं क्योंकि तुमसे मुझे एक गहरा सम्बन्ध है ?

भूत०। (आश्चर्य से) वह कौन सा सम्बन्ध है ?

साधू०। सो कहने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि भूलता हूं जो तुमसे सम्बन्ध रखने की बात कहता हूं। जो साधू है और जिसने दुनिया ही से सम्बन्ध छोड दिया उसे फिर किसी से सम्बन्ध रखने की जरूरत ही क्या है, मगर खैर फिर कभी जब तुमसे मिलूंगा तब बताऊंगा कि मैं कौन हूं, उस समय तुम मुझे मुहब्बत की निगाह से देखोगे और समझ जाओगे कि मैं तुम पर क्यों कृपा करता हूं....अस्तु जाने दो...अच्छा तो तुम खुशी से इस घाटी में रहो, मैं इसका दर्वाजा खोल देता हूं बल्कि यह भी बताए देता हूं किस तरह यह दर्वाजा खुलता और बन्द होता है।

भूत०। (प्रसन्नता से) ईश्वर ही ने मुझे आपसे मिलाया ! मै बड़े ही तरद्दुद मे पड़ा हुआ था। अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर इस समय कैद हो रहे हैं। मै समझ रहा था

कि मेरा कोई दुश्मन यहां का रहने वाला है और इस घाटी का हाल अच्छी तरह जानता है और उसी ने मेरे साथ ऐसा वर्ताव किया है, मगर अब मेरा तरद्दुद जाता रहा और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि इसके मालिक आप हैं, मगर आप मुझे बेतरह खुटके में डाल रहे हैं जो अपना पूरा परिचय नही देते, मैं क्योंकर समझूं कि आप मेरे बडे और सरपरस्त हैं ?

साधू० । (मुस्कुरा कर) खैर तुम अपना सरपरस्त या मददगार न भी समझोगे तो इसमे मेरी या तुम्हारी किसी की भी हानि नही है, परन्तु फिर भी मैं वादा करता हू कि बहुत जल्द एक दफे पुन तुमसे मिलूंगा और तब अपना ठीक ठीक परिचय तुमको दूंगा, इस समय तुम मेरी फिक्र न करो और अपने दुश्मनो से वेफिक्र होकर इस घाटी में रहो। यहा थोडी सी दौलत भी है जिसका पता तुम्हें मालूम न होगा, चलो वह भी मैं तुम्हें दे देता हू , जो कि तुम्हारे काम आवेगी क्योंकि अब मुझे दौलत की कुछ जरूरत नही रही और यदि आवश्यकता पडे भी तो मुझे किसी तरह की कमी नहीं है।

भूत० । (प्रसन्न होकर) केवल धन्यवाद देकर मैं आपसे उऋण नही हो सकता, आप मुझ पर बडी ही कृपा कर रहे हैं !

साधू० । इसे कृपा नहीं कहते, यह केवल प्रेम के कारण है, अस्तु अब तुम विलम्ब न करो और शीघ्रता से चलो, जो कुछ मुझे करना है उसे जल्द निपटा करके बदरिकाश्रम की यात्रा करूंगा।

भूतनाथ के दिल में इस समय तरह तरह के विचार उठ रहे थे। वह न मालूम किन किन बातो को सोच रहा था मगर प्रगट में यही जान पडता था कि वह बडी होशियारी के साथ सचेत बना हुआ खुशी खुशी साधू के साथ सुरंग के अन्दर जा रहा है । जब उस चौमुहानी पर पहुँचा जिसका जिक्र कई दफे हो चुका है तो भूतनाथ ने साधू से पूछा।—

भूत० । ये बाकी के दोनो रास्ते किधर को गये है और उधर क्या है ?

साधू० । इस घाटी के साथही और भी दो घाटियां है और उन्ही में जाने के लिए ये दोनों रास्ते है, मगर उन्हें मैंने बहुत अच्छी तरह से बन्द कर दिया

है क्योंकि उन घाटियों में रहने वालों के आने जाने के लिए और भी कई रास्ते मौजूद हैं, अब इन रास्तों से कोई आ जा नहीं सकता तुम इस तरफ से बिल्कुल बेफिक्र रहो, मगर इस राह से उस तरफ जाने का उद्योग कभी न करना।

भूत०। जी नहीं, मैं तो उस तरफ जाने का ख्याल कभी करता ही नहीं, परन्तु आज कल उस तरफ वाली घाटी में बहुत से आदमी आकर बस गये हैं और वे सब मेरे साथ दुश्मनी करते हैं बस इसीलिए जरा खयाल होता है।

साधू०। (लापरवाही के साथ) खैर मगर उस घाटी में कोई रहता भी होगा तो यहां अर्थात् इस घाटी में आकर तुम्हारे साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं कर सकता। यों तो दुनिया में सभी जगह दोस्त और दुश्मन रहा करते हैं, उनका बन्दोबस्त दूसरे ढंग पर कर सकते हो।

भूत०। जैसी मर्जी आपकी।

साधू०। हां, बेहतर यही है कि तुम बेफिक्री के साथ यहां रह कर अपने दुश्मनों का प्रबन्ध करो और मेरा इन्तजार करो, मैं बहुत जल्द इसी घाटी में आकर तुमसे मिलूंगा। उसी समय मैं तुमको कुछ और भी लाभदायक वस्तुएं दूंगा और कुछ उपदेश भी करूंगा।

इतना कह कर साधू आगे की तरफ बढ़े और बहुत जल्द उस दर्वाजे के पास जा पहुंचे जिसे विमला ने बन्द कर दिया था। जिस तरह से विमला ने उस दर्वाजे को बन्द किया था उसी तरह साधू ने उसे खोला और खोलने तथा बन्द करने का ढंग भी भूतनाथ को बता दिया।

अब भूतनाथ सहज ही में साधू के साथ घाटी के अन्दर आ पहुंचा और अपने साथियों से मिल कर बहुत प्रसन्न हुआ। बातचीत करने पर मालूम हुआ कि उसके साथी लोगों ने कई दफे इस घाटी के बाहर निकलने का उद्योग किया था मगर रास्ता बन्द होने के कारण बाहर न जा सके और इस वजह से वे लोग बहुत घबरा रहे थे।

भूतनाथ ने अपने सब साथियों से बाबाजी की मेहरबानी का हाल बयान किया और उन सभों को महात्मा के पैरों पर गिराया।

भूतनाथ यद्यपि जानता था कि साधू महाशय मुझ पर बड़ी कृपा कर

रहे हैं और उन्हें मुझसे किसी तरह का फायदा भी नजर नहीं आता, तथापि वह अभी तक उन पर अच्छी तरह भरोसा करने का साहस नहीं रखता था। यह बात चाहे ऐयारी नियम के अनुसार कहिये चाहे भूतनाथ की प्रकृति के कारण समझिये हां इतना जरूर था कि बाबाजी की मेहरबानियों से भूतनाथ दबा जाता था और सोचता था कि 'यदि इन्होंने कोई खजाना मुझे दे दिया जैसा कि कह चुके हैं, तो मुझे मजबूर होकर इन पर भरोसा करना पड़ेगा और समझना कि पड़ेगा ये वास्तव में मुझसे स्नेह रखते हैं और मेरे कोई अपने ही हैं।

साधू महाशय की आज्ञानुसार भूतनाथ ने उन्हें वे सब गुफायें दिखाईं जिनमें वह अपने साथियों के साथ रहता था और बताया कि इस ढंग पर इस स्थान को हम लोग बरतते हैं, इसके बाद साधू महाशय उसे अपने साथ लिये पूरब तरफ की चट्टान पर चले गये जिधर छोटी बड़ी कई गुफाएं थीं।

साधू०। देखो भूतनाथ, मैं जब यहां रहता था तो इसी तरफ की गुफाओं में गुजारा करता था और इस पड़ोस वाली घाटी में जिसे तुम अपने दुश्मनों का स्थान बता रहे हो, इन्द्रदेव रहता था जिसे तुम पहिचानते होओगे।

भूत०। जी हां, मैं खूब जानता हूं।

साधू०। उन दिनों इन्द्रदेव का दिमाग बहुत ही बढ़ा चढ़ा था और वह मुझसे दुश्मनी रखता था, क्योंकि जिस तरह वह एक तिलिस्म का दारोगा है उसी तरह मैं भी एक तिलिस्म का दारोगा हूं, अस्तु वह चाहता था कि मेरे कब्जे में जो तिलिस्म है उसका भेद जान ले और उस पर कब्जा कर ले, मगर वह कुछ भी न कर सका और कई साल तक यहां रहने पर भी वह न जान सका कि फलाना ब्रह्मचारी इस पड़ोस वाली घाटी में रहता है। इस समय मैं तुमसे ज्यादे न कहूंगा और न ज्यादे देर तक रहने की मुझे फुरसत ही है, तुम्हें बड़ा ही ताज्जुब होगा जब मैं अपना परिचय तुम्हें दूंगा और उस समय तुम भी मुझसे उतनी ही मुहब्बत करोगे जितना इस समय मैं तुमसे करता हूं।

भूत० । ठीक है, मै परिचय देने के लिये इस समय जिद् भी नही कर सकता, क्योकि आप बड़े हैं आपकी आज्ञानुसार मुझे चलना ही चाहिये, अच्छा यह तो बताइए कि वह तिलिस्म जिसके आप दारोगा है अभी तक आपके कब्जे मे है या नही ।

साधू० । हा अभी तक वह तिलिस्म मेरे ही कब्जे में है ।

भूत० । वह किस स्थान में है ?

साधू० । इसी घाटी में वह तिलिस्म है,मै अबकी दफे जब यहां आकर तुमसे मिलूंगा तो उसका कुछ हाल कहूगा और अगर तुम इस घाटी में कब्जा बनाए रहोगे और तुम्हारी चाल चलन अच्छी देखूंगा तो एक दिन तुमको उस तिलिस्म का दारोगा भी बना दूगा क्योकि अब मैं बहुत बुड्ढा हो गया हूँ और तिलिस्म के नियमानुसार अपने बाद के लिये किसी न किसी को दारोगा बना देना बहुत जरूरी है ।

साधू महाशय की इस आखिरी बात को सुन कर भूतनाथ बहुत ही प्रसन्न हुआ । वह जानता था कि तिलिस्म का दारोगा बनना कोई मामूली बात नही है, उसके कब्जे मे बेअन्दाज दौलत रहती है और उसकी ताकत तिलिस्मी सामान की बदौलत मनुष्य की ताकत से कही बढ़ चढ कर रहती है । उसी समय भूतनाथ का खयाल एक दफे इन्द्रदेव की तरफ गया और उसने मन में कहा कि देखो तिलिस्मी दारोगा होने के कारण ही इन्द्रदेव कैसे चैन और आराम के साथ रहता है, दुश्मनो का उसे जरा भी डर नही है और वास्तव में उसके दुश्मन उसका कुछ भी बिगाड़ नही सकते । मगर अफसोस भूतनाथ ने इस बात पर कुछ भी ध्यान नही दिया कि इन्द्रदेव कैसा नेक ईमानदार और साधू आदमी है तथा उसमें सहनशीलता और क्षमा शक्ति कितनी भरी हुई है, तिस पर भी वह दुश्मनो के हाथ फंसा सताया गया ।

भूत०।(बहुत नरमी के साथ) तो आप पुनः कब तक लौट कर यहा आवेंगे ?

साधू० । इस विषय में जो कुछ मेरा विचार है उसे प्रगट करना अभी मैं उचित नहीं समझता ।

भूत० । जैसी मर्जी आपकी, आजकल मेरी आर्थिक दशा बहुत ही खराब हो रही है, रुपये पैसे की तरफ से मैं बहुत ही तंग हो रहा हूं ।

साधू० । तो इस समय जो खजाना मैं तुम्हें दे रहा हूं वह तुम्हारे लिए कम नहीं है, यदि तुम उसे उचित ढंग पर खर्च करोगे तो वर्षों तक अमीर बने रहोगे और राज्यसुख भोगोगे, आओ मेरे पीछे पीछे चले आओ ।

इतना कह कर साधू एक गुफा की तरफ बढ़ा और भूतनाथ खुशी खुशी उसके पीछे रवाना हुआ ।

खोह के अन्दर बहुत अन्धकार था मगर भूतनाथ बेधड़क साधू के पीछे पीछे दूर तक चला गया । जब लगभग दो तीन सौ कदम चला गया तो साधू ने कहा, "लड़के देख मैं इस खोह के अन्दर अन्दाज से चला आकर सब काम कर सकता हू मगर तुझे इस काम में तकलीफ होगी क्योंकि तेरे लिये यह पहिला मौका है,इसलिए मैं उचित समझता हूं कि तू अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी कर ले और अच्छी तरह से सब कुछ देख ले, फिर दूसरी दफे तेरे ऐसे होशियार आदमी को रोशनी की जरूरत न पड़ेगी ।"

भूतनाथ ने ऐसा ही किया, अर्थात् रोशनी करके अच्छी तरह से देखता हुआ साधू के पीछे पीछे जाने लगा और ऐसा कहने और करने से साधू पर उसका विश्वास भी ज्यादे हो गया ।

करीब करीब पांच सौ कदम के चले जाने बाद रास्ता बन्द हो गया और साधू महाशय ने खड़े होकर भूतनाथ से कहा, "बस आगे जाने का रास्ता नहीं है, देख वह बगल वाले आले में कैसा अच्छा नाग बना हुआ है जिसे देख कर डर मालूम होता है । यह वास्तव में लोहे का है । इसको पकड़ कर जब तू अपनी तरफ खैंचेगा तो यहां का दर्वाजा खुल जायगा, मगर इस बात से होशियार रहियो कि इसके सिर अथवा फन के ऊपर कभी हाथ न लगने पावे नहीं तो धोखा खायगा ।"

भूत०।जो आज्ञा,पहिले आप ही इसे खैंचें जिसमें मैं अच्छी तरह समझ लू

साधू० । (जोर से हंस कर) अभी तक तुमको मुझ पर भरोसा नहीं होता !

मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, ऐयारों के लिये यह ऐसा अनुचित नहीं है।

इतना कह कर साधू ने साँप की दुम पकड़ ली और अपनी पूरी ताकत के साथ खैंचा। दो हाथ के लगभग वह दुम खिंच कर आले के बाहर निकल आई और इसके साथ ही बगल में एक छोटा-सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई दिया।

भूतनाथ को लिये हुए साधू उसके अन्दर घुस गया और उसी समय वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। उस समय साधू ने भूतनाथ से कहा, "देख गदाधरसिंह, इधर भी उसी तरह का नाग बना हुआ है, बाहर निकलती समय इधर से भी उसी तरह दर्वाजा खोलना पड़ेगा।"

भूतनाथ ने उसे अच्छी तरह देखा और फिर उस कोठड़ी की तरफ निगाह दौड़ाई जिसमें इस समय वह मौजूद था। उसने देखा कि वहां चांदी के कितने ही बड़े बड़े देग या हण्डे रखे हुए हैं जिनका मुंह सोने के ढक्कनों से ढका हुआ है। भूतनाथ ने साधू की आज्ञा पाकर हण्डों का मुंह खोला और देखा कि उनमें अशर्फियां भरी हुई हैं।

इस समय भूतनाथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और उसने सोचा कि निःसन्देह ऐसे कई खजाने इस घाटी में होंगे मगर उनका पता जानने के लिए साधू से इस समय जिद करना ठीक न होगा, अवश्य यह पुनः यहां आवेंगे और मुझ पर कृपा करेंगे। लौटते समय आज्ञा पाकर भूतनाथ ने अपने हाथ से वह दर्वाजा बन्द किया और साधू के पीछे पीछे चल कर खोह के बाहर निकल आया। उस समय साधू ने कहा, "गदाधरसिंह अब मैं जाता हूं, जब लौट कर पुनः यहां आऊंगा तो ऐसे ऐसे कई खजाने तुझे दूंगा और तिलिस्म का दारोगा भी बनाऊंगा मगर मैं तुझे समझाये जाता हूं कि इन्द्रदेव के साथ दुश्मनी का ध्यान भी कभी अपने दिल में न लाइयो नहीं तो बर्बाद हो जायगा और दुःख भोगेगा, वह तुझसे बहुत ज्यादा जबर्दस्त है। अच्छा अब मैं जाता हूं, मेरे साथ आने की कोई जरूरत नहीं है।"

इतना कह कर साधू महाशय रवाना हो गए और आश्चर्य में भरे हुए भूतनाथ को उसी जगह छोड़ गए।

भूतनाथ बड़ी देर तक खड़ा खड़ा इस बात को सोचता रहा कि यह घू महाशय कौन हैं और मुझ पर इतनी कृपा करने का सबब क्या है ? चते सोचते उसका खयाल देवदत्त ब्रह्मचारी की तरफ चला गया जिन्होने से पाला था और ऐयारी सिखा कर इस लायक बना दिया था कि किसी जा या रईस के यहा रह कर इज्जत और हुर्मत पैदा करे ।*

भूतनाथ सोचने लगा कि 'ताज्जुब नही यदि यह मेरे गुरु महाराज देवदत्त ब्रह्मचारी ही हो जो बहुत दिनों से लापता हो रहे है । मुझे रणधीरसिहजी के यहां नौकर रखा देने के बाद वह यह कह कर चले गये थे कि अब मैं योगाभ्यास करने के लिए उत्तराखण्ड चला जाऊंगा, तुम मुझसे मिलने के लिए उद्योग मत करना । या सम्भव है कि उनके भाई ज्ञानदत्तजी ब्रह्मचारी हो जिनकी प्राय गुरुजी तारीफ किया करते थे और कहते थे कि वे एक अद्भुत तिलिस्म के दारोगा भी है । जहां तक मेरा खयाल है उन्हीं दोनो में से कोई न कोई जरुर है । ताज्जुब नही कि मैं कुछ दिनों में तिलिस्म का दारोगा बन जाऊ । अब मैं इस घाटी को कदापि न छोड़ूंगा और देखूंगा कि किस्मत क्या दिखाती है । अब प्रभाकरसिंह को भी लाकर इसी घाटी में रखना चाहिए । मगर वास्तव मे आजकल मैं बड़े सकट में पड गया हू । मैं अपने मित्र इन्द्रदेव पर किस तरह अविश्वास करूँ और किस तरह भरोसा ही करूँ, किस तरह समझूं कि जमना और सरस्वती बिना किसी की मदद के मुझसे दुश्मनी करने के लिए तैयार हो रही है ! खैर जो कुछ होगा देखा जायगा, अब प्रभाकरसिंह को शीघ्र इस घाटी में ले आना चाहिए और उसके बाद इन्द्रदेव से मिलना चाहिए । उनसे मुलाकात होने पर बहुत सी बातो का पता लग जायगा । मैं इन्द्रदेव के सिवाय और किसी से डरने वाला भी नही हूं ।' इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने दोस्तों और साथियो के पास चला गया और उनसे अपने कर्तव्य के विषय में बातचीत

---

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बाईसवा हिस्सा, भूतनाथ की जीवनी ।

करने लगा, मगर साधू महाशय की कृपा से खजाना मिलने का हाल उसने उन लोगों से नहीं कहा।

सातवां बयान

जमानिया वाला दलीपशाह का मकान बहुत ही सुन्दर और अमीराना ढंग पर गुजारा करने लायक बना हुआ है। उसमें जनाना और मर्दाना किता इस ढंग से बनाया गया है कि भीतर से दर्वाजा खोल कर जब चाहे एक कर लें और अगर भीतरी रास्ता बन्द कर दिया जाय तो एक का दूसरे से कुछ भी सम्बन्ध न मालूम पड़े, यहाँ तक कि अगर मर्दाने मकान में कोई मेहमान आकर टिके तो उसे यकायक इस बात का पता भी न लगे कि जनाने लोग कहां रहते हैं और उस तरफ आने जाने के लिए इस तरफ से कोई रास्ता भी है या नहीं।

इस मकान के सामने एक छोटा सा सुन्दर नजरबाग बना हुआ था और उसके सामने अर्थात् पूरब तरफ ऊँची दीवार और फाटक था। मकान के बांई तरफ लम्बा खपडैल था जिसका एक सिरा तो मकान के साथ सटा हुआ था और दूसरा सिरा सामने अर्थात् फाटक वाली दीवार के साथ। इसके बीच में छोटे बड़े कई दालान और कोठड़ियां बनी हुई थीं जिनमें दलीपशाह के खिदमतगार और सिपाही लोग रहा करते थे। इसी तरह मकान के दाहिनी तरफ इस सिरे से लेकर उस सिरे तक कुछ ऐसी इमारतें बनी हुई थी जिनमें कई गृहस्थियों का गुजारा हो सकता था और उनमें दलीपशाह के शागिर्द ऐयार लोग रहा करते थे। इस ढंग पर वह नजरबाग बीच में अर्थात् चारो तरफ से घिरा हुआ था। सरसरी तौर पर ख्याल करने से भी साफ मालूम होता था कि दलीपशाह बहुत ही अमीराना ढंग पर रह कर जिन्दगी के दिन बिता रहा है।

इस इमारत के बगल ही में दलीपशाह का एक बहुत बड़ा खुला हुआ बाग था जिसमें बड़े बड़े आम नीबू और अमरूद तथा इसी तरह के और भी बहुत किस्म के दरख्त लगे हुए थे।

भूतनाथ बड़ी देर तक खड़ा खड़ा इस बात को सोचता रहा कि यह साधू महाशय कौन हैं और मुझ पर इतनी कृपा करने का सबब क्या है ? सोचते सोचते उसका खयाल देवदत्त ब्रह्मचारी की तरफ चला गया जिन्होंने उसे पाला था और ऐयारी सिखा कर इस लायक बना दिया था कि किसी राजा या रईस के यहां रह कर इज्जत और हुर्मत पैदा करे।*

भूतनाथ सोचने लगा कि 'ताज्जुब नहीं यदि यह मेरे गुरु महाराज देवदत्त ब्रह्मचारी ही हो जो बहुत दिनों से लापता हो रहे हैं। मुझे रणधीरसिंहजी के यहां नौकर रखा देने के बाद वह यह कह कर चले गये थे कि अब मैं योगाभ्यास करने के लिए उत्तराखण्ड चला जाऊँगा, तुम मुझसे मिलने के लिए उद्योग मत करना। या सम्भव है कि उनके भाई ज्ञानदत्तजी ब्रह्मचारी हों जिनकी प्राय गुरुजी तारीफ किया करते थे और कहते थे कि वे एक अद्भुत तिलिस्म के दारोगा भी हैं। जहां तक मेरा खयाल है उन्हीं दोनों में से कोई न कोई जरूर है। ताज्जुब नहीं कि मैं कुछ दिनों में तिलिस्म का दारोगा बन जाऊं। अब मैं इस घाटी को कदापि न छोडूंगा और देखूंगा कि किस्मत क्या दिखाती है ! अब प्रभाकरसिंह को भी लाकर इसी घाटी में रखना चाहिए। मगर वास्तव में आजकल मैं बड़े सकट में पड़ गया हूं। मैं अपने मित्र इन्द्रदेव पर किस तरह अविश्वास करूँ और किस तरह भरोसा ही करूँ, किस तरह समझूं कि जमना और सरस्वती बिना किसी की मदद के मुझसे दुश्मनी करने के लिए तैयार हो रही हैं ! खैर जो कुछ होगा देखा जायगा, अब प्रभाकरसिंह को शीघ्र इस घाटी में ले आना चाहिए और उसके बाद इन्द्रदेव से मिलना चाहिए। उनसे मुलाकात होने पर बहुत सी बातों का पता लग जायगा। मैं इन्द्रदेव के सिवाय और किसी से डरने वाला भी नहीं हूं।'

इत्यादि तरह तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने दोस्तों और साथियों के पास चला गया और उनसे अपने कर्तव्य के विषय में बातचीत

---

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति बाईसवां हिस्सा, भूतनाथ की जीवनी।

करने लगा, मगर साधू महाशय की कृपा से खजाना मिलने का हाल उसने उन लोगों से नहीं कहा।

सातवां बयान

जमानिया वाला दलीपशाह का मकान बहुत ही सुन्दर और अमीराना ढंग पर गुजारा करने लायक बना हुआ है। उसमें जनाना और मर्दाना किता इस ढंग से बनाया गया है कि भीतर से दर्वाजा खोल कर जब चाहे एक कर लें और अगर भीतरी रास्ता बन्द कर दिया जाय तो एक का दूसरे से कुछ भी सम्बन्ध न मालूम पड़े, यहां तक कि अगर मर्दाने मकान में कोई मेहमान आकर टिके तो उसे यकायक इस बात का पता भी न लगे कि जनाने लोग कहां रहते हैं और उस तरफ आने जाने के लिए इस तरफ से कोई रास्ता भी है या नहीं।

इस मकान के सामने एक छोटा सा सुन्दर नजरबाग बना हुआ था और उसके सामने अर्थात् पूरब तरफ ऊंची दीवार और फाटक था। मकान के बाईं तरफ लम्बा खपड़ैल था जिसका एक सिरा तो मकान के साथ सटा हुआ था और दूसरा सिरा सामने अर्थात् फाटक वाली दीवार के साथ। इसके बीच में छोटे बड़े कई दालान और कोठड़ियां बनी हुई थीं जिनमें दलीपशाह के खिदमतगार और सिपाही लोग रहा करते थे। इसी तरह मकान के दाहिनी तरफ इस सिरे से लेकर उस सिरे तक कुछ ऐसी इमारतें बनी हुई थीं जिनमें कई गृहस्थियों का गुजारा हो सकता था और उनमें दलीपशाह के शागिर्द ऐयार लोग रहा करते थे। इस ढंग पर वह नजरबाग बीच में अर्थात् चारों तरफ से घिरा हुआ था। सरसरी तौर पर खयाल करने से भी साफ मालूम होता था कि दलीपशाह बहुत ही अमीराना ढंग पर रह कर जिन्दगी के दिन बिता रहा है।

इस इमारत के बगल ही में दलीपशाह का एक बहुत बड़ा खुला हुआ बाग था जिसमें बड़े बड़े आम नीबू और अमरूद तथा इसी तरह के और भी बहुत किस्म के दरख्त लगे हुए थे।

दलीपशाह अपने मर्दाने मकान में एक सुन्दर सजे हुए कमरे के बाहर दालान में चौकी के ऊपर फर्श पर बैठे हुए अपने दोस्त इन्द्रदेव से बातचीत कर रहे हैं। इस जगह से सामने का नजरबाग और उसके बाद फाटक अच्छी तरह दिखाई दे रहा है। आज इन्द्रदेव इनसे मिलने के लिये आये हुए हैं और इस समय इनके पास ही बैठे हुए कई जरूरी मामलो पर सलाह और बातचीत कर रहे हैं।

दलीप०। भाई साहब, गदाधरसिंह आपका दोस्त है इसलिये मैं लाचार होकर उसे अपना दोस्त मानता हू, मगर सच तो यो है कि उसके साथ रिश्तेदारी होने पर भी मैं उसे दिल से पसन्द नहीं करता।

इन्द्र०। हा उसकी चालचलन तो कुछ खराब जरूर है मगर आदमी बडे ही जीवट का ० और ऐयारी का ढग भी बहुत ही अच्छा जानता है।

दलीप०। इस बात को मैं जरूर मानता हू बल्कि जोर देकर कह सकता हू कि अगर वह ईमानदारी के साथ काम करता हुआ रणधीरसिंहजी के यहां कायदे से बना रहता तो एक दिन ऐयारों का सिरताज गिना जाता।

इन्द्र०। ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह का साथ छोड तो नही दिया।

दलीप०। अब इसे छोडना नहीं तो क्या कहते हैं? दो दो महीने तक गायब रहना और मालिक को मुह तक नही दिखाना, क्या इसी को नौकरी कहते हैं? आप ही कहिए कि अबकी कै महीने के बाद आया था? सिर्फ दो दिन रह कर चला गया। उससे तो उसकी स्त्री अच्छी है जो अपने मालिक अर्थात् रणधीरसिंह का साथ नही छोडती।

इन्द्र०। ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह के यहां अपने बदले में अपना शागिर्द रख दिया है, इसके अतिरिक्त जब रणधीरसिंहजी को उसकी जरूरत पडती है तो उसी शागिर्द की मार्फत उसे बुलवा भेजते हैं। अभी हाल ही में देखिये उसने कैसी बहादुरी के काम किये।

दलीप०। अजी यह तो मैं खुद कह रहा ह कि वह ऐयार परले सिरे का है, मगर इस जगह बहस तो ईमानदारी की हो रही है।

इन्द्र० । (दवी जुबान से) हाँ वह लालची तो जरूर है मगर अभी नई जवानी है सम्भव है आगे चल कर सुधर जाय ।

दलीप० । (हंस कर) जी हा ! बात तो यह है कि वह कम्बख्त आपके सामने ढोंग रचता है और दयारामजी के मामले पर उदासी दिखला कर कहता है कि अब मैं दुनिया ही छोड दूंगा, मगर मैं इस बात को कभी नही मान सकता, हा उसका यह कहना शायद सच हो कि दयारामजी के मामले में उसने धोखा खाया ।

इन्द्र० । भाई उसकी यह बात तो जरूर सच है, वह जानबूझ कर दयारामजी को कदापि नही मार सकता ।

दलीप० । जी हा मैं भी यही सोचता हू मगर आप देख लीजियेगा कि कुछ दिन के बाद वह हमारे और आपके ऊपर भी सफाई का हाथ जरूर फेरेगा । आपके ऊपर चाहे मेहरबानी भी कर जाय क्योंकि आपसे डरता है और उसे विश्वास है कि आप ऐयारी में किसी तरह उससे कम नही हैं, मगर मुझे तो कभी न छोडेगा ।

इन्द्र० । अजी भविष्य में जैसा करेगा वैसा पावेगा इस समय तो वह हमारा आपका किसी का भी कसूरवार नही है ?

दलीप० । (खिलखिला कर हंसने के बाद धीरे से) तब क्यो आपने बेचारे के पीछे जमना और सरस्वती को लगा दिया है ?

इन्द्र० । केवल उन दोनों का प्रण पूरा करने के लिए मैंने यह कार्रवाई कर दी है नहीं तो तुम ही सोचो कि बेचारी लड़किया उसका क्या बिगाड सकती हैं ।

दलीप० । तो आप उन लडकियों के साथ धोखेबाजी का काम करते हैं, सच्चे दिल से उनकी मदद नही करते !

इन्द्र० । (दांत से जुबान दबाने के बाद) नही नही, मैं जरूर उनकी मदद करता हूं मगर मेरी इच्छा यही है कि गदाधरसिंह मारा न जाय और दोनों लडकियों की अभिलाषा भी पूरी हो जाय ।

दलीप० । यह एक अनूठी बात है, खरबूजा खा भी लें और वह काटा भी न जाय ! मैं तो समझता हूं वह एक दिन जरूर जमना और सरस्वती को मार डालेगा ।

इन्द्र० । नहीं ऐसा तो न करेगा ।

दलीप० । अजी आप तो निरे ही साधू हैं, इतने बडे ऐयार होकर भी धोखा खाते हैं । मगर इसमें आपका कोई कसूर नहीं है, ईश्वर ने आपका दिल ही ऐसा नर्म बनाया है कि किसी की बुराई पर ध्यान नही देते, मगर भाई-जान मैं तो उससे बराबर खटका रहता हू । इससे आप यह न समझिये कि मै उसका दुश्मन हू, आपकी तरह मैं भी यही चाहता हू कि वह किसी तरह अच्छे ढर्रे पर आ जाय मगर यह उम्मीद नही । अच्छा यह बताइये कि उन लोगों के विषय में आजकल क्या कार्रवाई हो रही है अर्थात् जमना और सरस्वती क्या कर रही हैं ?

इन्द्र० । बस गदाधरसिंह के पीछे पडी हुई हैं, आज कई दिन हुए कि उसे गिरफ्तार भी कर लिया था मगर सिर्फ डरा धमका के छोड दिया, क्योंकि मैंने अच्छी तरह समझा दिया कि दुश्मन को सता के और दुःख दे के बदला लेना चाहिये न कि जान से मार के । वे बेचारियां तो मेरी बात मान जांयगी मगर गदाधरसिंह की तरफ से मैं डरता हूं ऐसा न हो कि वह उन दोनो का सफाया कर दे ।

दलीप० । (मुस्कुरा कर) मगर आप तो उसे नेक बना रहे हैं, उस पर भरोसा कर रहे है ! अभी अभी कह चुके हैं कि वह उन दोनो के साथ बुराई कभी न करेगा ।

इन्द्र० । आशा तो ऐसी ही है जो मैं कह चुका हू, फिर भी डरता हू क्योंकि आजकल उसका रंग ढंग और रहन सहन ठीक नही है ।

दलीप० । आप तो अच्छी दोतर्फी बात करते हैं ।

इन्द्र० । ऐसा नहीं है मेरे दोस्त, मैं खूब समझता हू कि वह आज कल बिगडा हुआ है मगर मैं उसे सुधारना चाहता हूं, मेरा खयाल है कि

वह दुःख भोग कर सुधर सकता है, अगर उसकी यातना की जाय तो ताज्जुब नहीं कि वह राह पर आ जाय।

दलीप०। तो क्या बेचारी जमना और सरस्वती ही के हाथ से उसकी यातना कराइयेगा ?

इन्द्र०। नही नही, वे बेचारियाँ भला क्या कर सकेंगी ! मैं अब आपके पास इसी लिये आया हूं कि इस काम में आपसे मदद लूं।

दलीप०। वह क्या ? मै आपके लिए हर तरह से तैयार हूं।

इन्द्र०।आप जानते ही हैं कि मैं अपना स्थान किसी तरह छोड नही सकता।

दलीप०। बेशक ऐसा ही है।

इन्द्र०। इसलिए मैं चाहता था कि आप कुछ दिनो तक उन लडकियो के साथ रह कर उनकी मदद करें मगर देखता हू कि आप बेतरह गदाधरसिंह पर टूटे हुए हैं। मै यह नही चाहता कि वह जान से मारा जाय।

दलीप०।तो क्या आप समझते है कि मै आपकी इच्छाके विपरीत चलूंगा ?

इन्द्र०। नही नही, ऐसा तो मुझे स्वप्न में भी गुमान नही हो सकता, हाँ यह सोचता हूं कि मेरा कहना आपकी इच्छा के विरुद्ध कही न हो।

दलीप०। चाहे जो हो मगर मैं आपकी बात कभी न टालूंगा, इसके अतिरिक्त आप जानते ही है कि वह मेरा रिश्तेदार है, उसको स्त्री शान्ता है तो मेरी साली मगर मैं उसे बहिन की तरह मानता और प्यार करता हू, ऐसी अवस्था में मैं कब चाहूंगा कि गदाधरसिंह मारा जाय और उसकी स्त्री विधवा होकर मेरी आखो के सामने आवे। मगर बात जो असल है वह जरूर कहने में आती है।

इन्द्र०। ठीक है मगर गदाधरसिंह खुद अपने पैर में कुल्हाडी मार रहा है, और जैसा करेगा वैसा पावेगा। हम लोग जहाँ तक हो सकेगा उसके सुधारने की कोशिश करेंगे आगे जो ईश्वर की मर्जी।

दलीप०। और मुझे आप क्या काम सुपुर्द करते है सो कहिये ?

इन्द्र०। मै चाहता हूँ कि आप कुछ दिनों तक जमना और सरस्वती

के साथ रह कर उनकी मदद कीजिये, मगर इस तरह पर नही कि जो कुछ वे कहतो जांय आप करते जायें।

दलीप०। तब किस तरह से ?

इन्द्र०। इस तरह से कि दोनों जिस तरह चाहें स्वयम् काम करके अपना हौसला पूरा करें और यही उनकी इच्छा भी है, मगर जब कभी वह धोखा खा जायें या किसी मुसीबत में फस जाय तब आप उनकी रक्षा करें।

दलीप०। यह तो बडा कठिन काम है !

इन्द्र०। बेशक कठिन काम है और इसे सिवाय आपके दूसरा पूरा नहीं कर सकता।

दलीप०। (कुछ सोच कर) बहुत अच्छा, मैं तैयार हू।

इन्द्र०। तो बस आज ही आप मेरे साथ चलिये, मैं उन दोनो को आपके सुपुर्द कर दूं और उस घाटी के भेद भी आपको बता दूं तथा जो कुछ मैं कर आया हू उसे भी समझा दूं।

दलीप०। जब आपकी इच्छा हो चलिए। (फाटक की तरफ खयाल करके) देखिए गुलाबसिंह चले आ रहे हैं, इन्हें चुनार से क्योंकर छुट्टी मिली।

इन्द्र०। इनका हाल आपको मालूम नहो है पर मैं सुन चुका हू और इस समय आपसे कहने ही वाला था कि इन्दुमति भी आज कल जमना और सरस्वती के पास पहुंची हुई हैं, मगर अब कहने को कोई जरूरत नही, खुद गुलाबसिंह की जुबानी आप सब कुछ सुन लेंगे और शायद इसी लिए वह यहां आए भी हैं।

दलीप०।शिवदत्त भी नया नया राज्य पाकर आजकल अंधा हो रहा है।

इन्द्र०। बेशक ऐसा ही है।

इतने ही में दरवान ने ऊपर आकर गुलाबसिंह के आने की इत्तिला की और उन्हें ले आने का हुक्म पाकर चला गया। थोडी ही देर में गुलाबसिंह वहां आ पहुचे और उन्होंने बडे अदब के साथ इन्द्रदेव को सलाम किया और दलीपशाह से मिले।

इशारा पाकर गुलाबसिंह एक कुर्सी पर बैठ गए और इस तरह बातचीत होने लगी—

दलीप० । कहो भाई गुलाबसिंहजी, आज तो बहुत दिनो के बाद आपसे मुलाकात हुई है, सब कुशल तो है ?

गुलाब० । जी कुशल तो नही है, और इसीलिए मुझे चुनारगढ से भागना पडा ।

दलीप० । क्या महाराज शिवदत्त की नौकरी आपने छोड दी !

गुलाब० । हा मजबूर होकर मुझे ऐसा करना पडा, क्योंकि मैं प्रभाकरसिंह के साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नही कर सकता था ।

दलीप०। प्रभाकरसिंह भी तो उन्हीके यहाँ सेनापति का काम करते हैं ?

गुलाब० । हाँ, मगर महाराज ने उनके साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया, उनकी स्त्री इन्दुमति पर हजरत आशिक हो गये और बड़ी बड़ी चालबाजियो से अपने महल में बुलवा लिया, मगर जब वह किसी तरह राजी न हुई और जान देने तथा लेने पर तैयार हो गई तब लाचार उसे महल के अन्दर कैद कर रक्खा और प्रभाकरसिंह को मार डालने का बन्दोबस्त करने लगे जिसमे निश्चिन्त होकर इन्दुमति को काम में लावें, परन्तु प्रभाकरसिंह को इस बात का पता लग गया और वे महल में घुस कर बड़ी बहादुरी से इन्दुमति को छुडा लाये, तो भी शिवदत्त का मुकाबला नही कर सकते थे इसलिये अपनी स्त्री को साथ लेकर वहाँ से भाग खडे हुए । इसके बाद शिवदत्त ने उनकी गिरफ्तारी के लिए मुझे मुकर्रर किया, मैंने इसी बात को गनीमत समझा और कई आदमियों को साथ लेकर उनकी खोज में निकला । आखिर उनसे मुलाकात हो गई और तब से मैं उनकी ताबेदारी में रहने लगा क्योकि उनके बुजुर्गों ने जो कुछ भलाई मेरे साथ की है उसे मैं भूल नही सकता । नौगढ की सरहद के पास ही उनसे मुलाकात हुई थी और अकस्मात् उसी जगह भूतनाथ भी मुझसे मिल गया । मैंने भूतनाथ से मदद मागी और वह मदद देने के लिए तैयार होकर हम लोगो को अपने डेरे पर ले गया, मगर कई

मामले ऐसे हो गए कि भूतनाथ दोस्ती का इस्तीफा देकर दुश्मन वन वैठा और उसके सवव से भी हमें तकलीफ ही उठानी पडी।

इतना कह कर गुलावसिंह ने इन्द्रदेव की तरफ देखा।

इन्द्र०। हाँ हाँ गुलावसिंह तुम कहते जाओ रुको मत, दलीपशाह से कोई वात छिपी हुई नही है।

गुलाव०। (हाथ जोड कर) जी नहा, अव जो कुछ कहना वाकी है आप ही इन्हें समझा दें, मैं डरता हू कि कदाचित् मेरी जुवान से ऐसी कोई वात निकल पडे जिसे आप नापसन्द करते हों तो ..

इन्द्र०। (मुस्कुरा कर) अजी नही गुलावसिंह मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हू, तुम वडे ही नेक और सज्जन आदमी हो, जमना और सरस्वती ने जो कुछ भेद की वातें प्रभाकरसिंह से कही हैं सो मुझे मालूम हैं और प्रभाकरसिंह ने जो कुछ तुम्हें वताया है उसे भी मैं कदाचित् जानता हू, अस्तु तुम जो कहना चाहते हो वेधडक कह जाओ।

गुलाव०। जो आज्ञा, अच्छा तो मैं सक्षेप ही में कह डालता हूं, (दलीपशाह से) भूतनाथ जिस घाटी में रहता है उसके पास ही जमना और सरस्वती भी रहती हैं। वह किसी तरह प्रभाकरसिंह को अपने यहाँ ले गई मगर इसके वाद ही इन्दुमति पुन दुश्मनो के हाथ में फस गई, उसे भी दोनो वहिनें छुडा कर अपने यहा ले गई। तव से इन्दुमति उन्ही के यहां रहती है। प्रभाकरसिंह उस खोह मे वाहर आए और कई दिनों के वाद हम दोनों आदमी चुनारगढ की तरफ रवाना हुए इसलिए कि कुछ सिपाहियों का वन्दोवस्त करके दुश्मन से वदला लें मगर भूतनाथ जिसे जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार करके नीचा दिखाया था हम लोगों का दुश्मन वन वैठा और धोखा देकर प्रभाकरसिंह को कैद कर अपने घर ले गया, कहा रक्खा मुझे मालूम नही।

इसके वाद गुलावसिंह ने वह किस्सा खुलासे तौर पर दलीपशाह और इन्द्रदेव से वयान किया। इन्द्रदेव को प्रभाकरसिंह की गिरफ्तारी का हाल

अभी तक मालूम नहीं हुआ था अस्तु उन्हें यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने दलीपशाह से कहा, "मेरे दोस्त, मुझे प्रभाकरसिंह के हाल पर अफसोस होता है। भूतनाथ ने भी यह काम अच्छा नहीं किया। खैर कोई चिन्ता नहीं, प्रभाकरसिंह को उसके कब्जे से निकाल लेना कोई बड़ी बात नहीं है। अब तुम सफर की तैयारी करो और जमना तथा सरस्वती के साथ ही साथ प्रभाकरसिंह की मदद करो, मैं खुद तुम्हारे साथ चल कर प्रभाकरसिंह को कैद से छुट्टी दिलाऊंगा!"

इतना कह कर इन्द्रदेव दलीपशाह को कमरे के अन्दर ले गये और आधे घण्टे तक एकान्त में न मालूम क्या समझाते रहे, इसके बाद बाहर आए और बहुत देर तक गुलाबसिंह से बातचीत करते रहे।

आठवां बयान

भूतनाथ को जब अपनी घाटी में घुसने का रास्ता नहीं मिला था तो वह प्रभाकरसिंह को एक दूसरे ही स्थान में ले जाकर रख आया था और अपने दो आदमी उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिये थे। अब जब भूतनाथ महात्मा की कृपा से अपनी सुहावनी घाटी में पहुंच गया, सुरंग का रास्ता उसके लिये साफ हो गया, दर्वाजा खोलने और बन्द करने की तर्कीब मिल गई बल्कि उसके साथ ही साथ बेअन्दाज दौलत का भी मालिक बन बैठा, तो उसका हौसला बनिस्बत पहिले के चौगुना बढ़ गया और उसने चाहा कि प्रभाकरसिंह को भी लाकर उसी घाटी में रख छोड़े अस्तु महात्माजी को बिदा करने के बाद दूसरे दिन वहां से रवाना हुआ और सन्ध्या होते होते तक प्रभाकरसिंह को उस घाटी में ले आया। प्रभाकरसिंह बेहोशी के नशे में बेहोश थे और उनके हाथ में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थी।

भूतनाथ ने उन्हें एक बहुत बड़ी साफ और सुन्दर चट्टान पर रख दिया, पैर की बेड़ी खोल दी, और लखलखा सुंघा कर उनकी बेहोशी दूर की। जब प्रभाकरसिंह उठ कर बैठ गये तो इस तरह बातचीत होने लगी:—

प्रभा० । (चारो तरफ देख कर) क्या अभी तक मेरी गिनती कैदियों ही में है ? मैं पुन बेहोश करके इस घाटी में क्यो लाया गया और तुम क्यों नही बताते कि इस तरह दु ख देने से तुम्हारा मतलब क्या है ?

भूत० । प्रभाकरसिंह, तुम खूब जानते हो कि ऐयारों को जरा जरा से काम के लिये बडे बडे नाजुक और अमीर आदमियों को तकलीफ देनी पडती है । मैं सच कहता हूं कि तुमसे मुझे किसी तरह की दुश्मनी नही थी, बल्कि मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिये तैयार हो गया था, मगर तुम धोखा देकर अपना ढग न बदलते तो देखते कि मैं किस खूबी और खूबसूरती के साथ तुम्हारे दुश्मनों से तुम्हारा बदला लेता और तुम्हें हर तरह से बेफिक्र कर देता, मगर अफसोस तुमने मेरे दुश्मनो से मिल कर मुझे धोखा दिया और गुलाबसिंह को भी जो मेरा दोस्त था बहका दिया !

प्रभा० । मैंने तुम्हारे किस दुश्मन से मिल कर तुम्हारा क्या नुकसान किया सो साफ साफ क्यो नही कहते ?

भूत० । क्या तुम नही जानते जो साफ साफ कहने की जरूरत है ? जमना और सरस्वती ने मुझे तकलीफ देने के लिए ही अवतार लिया है और तुम उनके पक्षपाती बन गये हो । वे तो भला औरत की जात हैं नासमझ कहलाती हैं, पर तुम्ही ने उनका भ्रम क्यों नही दूर कर दिया कि भूतनाथ ने दयाराम को कदापि न मारा होगा क्योकि वह उनके साथ मुहब्बत रखता था और उनका दोस्त था !

प्रभा० । (हस कर) तुमको भी तो वे गिरफ्तार करके उस घाटी में ले गई थीं, फिर तुम्हीं ने क्यो नहीं उसका भ्रम दूर कर दिया ? तुम ऐयार कहलाते हो, हर तरह से बात बनाना जानते हो !

भूत० । मुझे तो कसूरवार ही समझती है, फिर भला मेरी बात क्यों मानने लगीं ?

प्रभा० । इसी तरह मैं भी तो उनका रिश्तेदार ठहरा, मैं उनकी इच्छा के विरुद्ध क्यों करने लगा ? तुम जानो और वे जानें, मुझे इन झगड़ों से

मतलब ही क्या ? बेचारी औरत की जात अबला कहलाती है और तुम इतने बड़े नामी ऐयार हो, फिर भी जरा से मामले के लिये मुझसे मदद मांगते हो और चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये अपने एक ऐसे रिश्तेदार के साथ बेमुरौवती करूं जो दया करने के योग्य है ! तुम्हें शर्म नहीं आती ! हां अगर मैं खुद तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई करूं तो जरूर मुझसे बदला लेना उचित था।

भूत०। (मुस्कुरा कर) सत्य वचन ! मालूम हुआ कि आप बड़े सच बोलने वाले हैं और सिवाय सच के कभी झूठ नहीं बोलते। अच्छा खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, मैं तुमसे बहस करना पसन्द नहीं करता। मैं जो कुछ पूछता हूं उसका साफ साफ जवाब दो नहीं तो तुम्हारे लिये अच्छा न होगा।

प्रभा०। अब इस धमकी में आकर तो मैं तुम्हारी बातों का जवाब नहीं दे सकता, मुलायमियत से अगर पूछते तो शायद कुछ जवाब दे भी देता क्योंकि न तो तुम्हारे किसी अहसान का बोझ मेरी गर्दन पर है और न मैं तुमसे डरता ही हूं।

भूत०। ऐसी अवस्था में भी तुम मुझसे नहीं डरते ? देख रहे हो कि तुम्हारे हर्बे छीन लिये गये, हथकड़ी तुम्हारे हाथों में पड़ी हुई है, और इस समय तुम हर तरह से मजबूर और कमजोर हो !

"यह हथकड़ी तो कोई चीज नहीं है, मेरे ऐसे क्षत्री के लिये तुमने इसे पसन्द किया यह तुम्हारी भूल है !" इतना कह कर बहादुर प्रभाकरसिंह ने एक झटका ऐसा दिया कि हथकड़ी टूट कर उनके हाथों से अलग हो गई और साथ ही इसके वे अपनी कमर से तलवार खैंच कर भूतनाथ के सामने खड़े हो गये और बोले, "बताओ क्या अब भी मैं तुम्हारा कैदी हूं ?"

प्रभाकरसिंह की कमर में एक ऐसी तलवार थी जो बदन के साथ पेटी की तरह लपेट कर बांधी जा सकती थी, चमड़े की मुलायम म्यान उसके ऊपर चढ़ी हुई थी और उसे प्रभाकरसिंह कपड़े के अन्दर कमर में लपेट कर धोती और कमरबन्द से छिपाये हुए थे, अभी तक उस पर भूतनाथ की निगाह

नही गई थी, बल्कि उसे इस बात की कुछ गुमान भी न था। यह तिलिस्म तलवार विमला ने प्रभाकरसिंह को दी थी और बिमला ने इन्द्रदेव से पाई थी। इन्द्रदेव का बयान है कि उन्हें इसी तरह के कई हर्बे कुंअर गोपालसिंह ने अपने जमानिया के तिलिस्म में से निकाल कर दिये थे।

इस तलवार में भी करीब करीब वही गुण था जो उस तिलिस्मी खजर और नेजे में था, जिसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिख आये हैं, फर्क बस इतना था कि जिस तरह उन खजरों में कब्जा दबाने से चमक पैदा होती थी उस तरह इसमें चमक नही पैदा होती थी और न इसके छूने से आदमी बेहोश ही होता था, मगर इसका जख्म लगने से बिजली के असर से आदमी बेहोश हो जाता था। उसकी तरह इसके जोड की भी एक खूबसूरत अगूठी जरूरी थी जो इस समय प्रभाकरसिंह की तर्जनी उगली में पडी हुई थी। इस अगूठी में यह भी गुण था कि अगर धोखे से उन्ही को इसका जख्म लग जाय तो उन्हें कुछ असर न हो।

प्रभाकरसिंह की हिम्मत मरदानगी और ताकत देख कर भूतनाथ हैरान हो गया बल्कि यों कह सकते हैं कि घबडा गया। यद्यपि भूतनाथ भी मर्द मैदान और लडाका था तथा यहां पास ही में उसके कई मददगार भी थे जो उसके आवाज देने के साथ ही पहुंच सकते थे मगर फिर भी थोडी देर के लिये उसके ऊपर प्रभाकरसिंह का रोब छा गया और वह खडा होकर उनका मुंह देखने लगा।

प्रभा०। हां बताओ तो क्या अब भी मैं कैदी हूं

भूत०। (बनावटी मुस्कुराहट के साथ) हा बेशक तुम ताकतवर और बहादुर हो, मगर समझ रक्खो कि ऐयारो का मुकाबला करना तुम्हारा काम नही है।

प्रभा०। हां बेशक इस बात को मैं मानता हू, मगर खैर जैसा मौका होगा देखा जायगा। इस समय तुम्हारा क्या इरादा है सो साफ साफ कह डालो, मगर लडना चाहते हो तो मैं लडने के लिये तैयार हूं।

भूत० । मुझे न तो तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी ही है और न मैं व्यर्थ लड़ना ही चाहता हूं, हां इतना जरूर चाहता हूं कि जमना और सरस्वती का सच्चा सच्चा हाल मुझे मालूम हो जाय। न मालूम किस नालायक ने उन्हें समझा दिया है कि मैं अपने दोस्त दयारामजी का घातक हूं तथा इस बात पर उन्होंने विश्वास करके मेरे साथ दुश्मनी करने पर कमर बांध ली है, और....

प्रभा० । (बात काट कर) ओफ, इन पचड़ों को मैं सुनना पसन्द नहीं करता, इस बारे में मैं पहिले ही कह चुका हूं कि तुम जानो और वे जानें, मैं तुम्हारा तावेदार नहीं हूं कि तुम्हारे लिये उनको समझाने जाऊं।

भूत० । (क्रोध के साथ) तुम अजब ढंग पर बातें कर रहे हो ! तुम्हारा मिजाज तो आसमान पर चढ़ा हुआ है !!

प्रभा० । वेशक ऐसा ही है, तुम धोखा देकर मुझे गिरफ्तार कर लाए हो इसलिये मैं तुमसे बात करना भी पसन्द नहीं करता।

भूत० । फिर ऐसा करने से तो नहीं चलता, तुम्हें झकमार कर मेरी बातों का जवाब देना पड़ेगा।

यह कह कर भूतनाथ ने भी म्यान से तलवार निकाली और पैंतरा बदल कर सामने खड़ा हो गया।

प्रभा० । तुम्हारी तलवार बिल्कुल बेकार है, कुछ भी काम नहीं देगी, चलाओ और देखो क्या होता है।

भूत० । हां हां, देखो यह तलवार कैसा मजा करती है, मैं तुम्हें जान से न मारूंगा बल्कि बेकार करके छोड़ दूंगा।

इतना कह के भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह पर वार किया जिसे उन्होंने बड़ी चालाकी के साथ अपनी तलवार पर रोका।

प्रभाकरसिंह की तलवार पर पड़ने के साथ ही भूतनाथ की तलवार कट कर दो टुकड़े हो गई क्योंकि वह हर एक हर्बे को काट सकती थी। भूतनाथ ने टूटी हुई तलवार फेंक दी और कमर से खञ्जर निकाल कर वार

किया चाहता था कि प्रभाकरसिंह ने अपनी तलवार से उसे भी काट कर दो टुकड़े कर दिया। भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा कि यह अनूठी तलवार किस लोहे की बनी हुई है जो दूसरे हर्बों को इतने सहज ही में काट डाला करती है।

थोड़ी ही दूर पर भूतनाथ के कई आदमी खड़े यह तमाशा देख रहे थे मगर मालिक का इशारा पाये बिना पास नही आ सकते थे। इस समय भूतनाथ ने उन्हें इशारा किया और वे लोग जो गिनती में आठ थे वहाँ आ मौजूद हुए। यह कैफियत देख कर प्रभाकरसिंह ने कहा, "भूतनाथ मैं केवल तुम्ही से नही बल्कि एक साथ इन सभों से लड़ने के लिए तैयार हू।"

यह बात भूतनाथ को बहुत बुरी मालूम हुई और अपने एक साथी के हाथ से तलवार लेकर उसने पुन प्रभाकरसिंह पर वार किया और साथ साथ अपने साथियो को भी मदद करने के लिए इशारा किया।

प्रभाकरसिंह बड़ा ही बहादुर आदमी था और लड़ाई के फन में तो वह लासानी था। अगर वह चाहता तो सहज ही में अपनी तिलिस्मी तलवार से जख्मी करके सभों को बेहोश कर देता, मगर नही, उसने कुछ देर तक लड़ कर सभो को दिखला दिया कि हमारे सामने तुम लोग कुछ भी नहीं हो। यद्यपि उसके बदन पर भी कई जख्म लगे, मगर उसने सभों के हर्बे बेकार कर दिये और अन्त में भूतनाथ तथा उसके सभी साथी जख्मी होकर तल-वार वाली बिजली के असर से बेहोश हो जमीन पर गिर पड़े। प्रभाकरसिंह धीरे धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए वहाँ से रवाना हुए, मगर जब सुरंग में आये और दर्वाजा बन्द पाया तब मजबूर होकर उन्हें रुक जाना पड़ा।

प्रभाकरसिंह पुन लौट कर यहाँ आये जहाँ भूतनाथ और उसके साथी लोग बेहोश पड़े हुए थे। तिलिस्मी तलवार के जोड़ की अंगूठी उन्होने भूतनाथ के बदन से लगाई, उसी समय भूतनाथ की बेहोशी जाती रही, वह उठ कर खड़ा हो गया और ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह का मुह देखने लगा।

प्रभा०। कहो अब क्या इरादा है ?

भूत० । मैं समझ गया कि तुम बहादुर आदमी हो और तुम्हारे हाथ की यह तलवार बड़ी ही अनूठी है जिसके सबब से तुम और भी जबर्दस्त हो रहे हो । (मुस्कुरा कर) सच कहना यह तलवार तुमने कहा से पाई। पहिले तो यह तुम्हारे पास न थी, अगर होती तो उस बेइज्जती के साथ तुम चुनारगढ से न भागते ?

प्रभा० । ठीक है मगर इससे तुम्हें क्या मतलब, चाहे कही से यह तलवार मुझे मिली हो ।

भूत० । (मुलायमियत के साथ) नही नही प्रभाकरसिंह बुरा मत मानो, मेरी बातो का जवाब देने से तुम कुछ छोटे नहीं हो जाओगे । बताओ तो सही क्या यह तलवार जहर में बुझाई हुई है ? क्योकि इसका जख्म लगने के साथ ही नशा चढ आता है ।

प्रभा० । कदाचित ऐसा ही हो, मैं ठीक नही कह सकता !

भूत० । देखो मेरे साथी लोग अभी तक बेहोश पडे हुए हैं ।

प्रभा० । अभी बड़ी देर तक ये बेहोश पडे रहेंगे मगर मरेंगे नही । तुम्हारी बेहोशी तो मैने खुद दूर कर दी है, खैर यह बताओ कि अब तुम मेरे साथ क्या किया चाहते हो ?

भूत० । कुछ भी नही, मैं जो कुछ कर चुका हू उनके लिए आपसे माफी मागता हू और चाहता हू कि आइन्दे के लिए हमारे और आपके बीच सुलह हो जाय ।

प्रभा० । जैसा तुम बर्ताव करोगे मैं वैसा ही जवाब दूंगा, मुझे खास तौर पर तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नही है ।

भूत० । अच्छा तो चलिये मैं आपको इस घाटी के बाहर कर आऊं क्योंकि बिना मेरी मदद के आप यहा से बाहर नही जा सकते ।

प्रभा० । चलो ।

भूत० । मगर मैं देखता हूं कि आप बहुत जख्मी हो रहे हैं और खून से आपका कपड़ा तरबतर हो रहा है, मुझे आज्ञा दीजिए तो मैं आपके

जख्मो को धो कर उन पर गीले कपडे की पट्टी बाध दू ।

प्रभा० । नही इसकी कोई जरूरत नही है, घाटी के बाहर निकल कर मैं इसका उपाय कर लूगा ।

भूत । आखिर क्यो ऐसा किया जाय, जितनी देर होगी उतना ज्यादे खून निकल जायगा, आप इसके लिए जिद्द न करें । आप मुझ पर भरोसा करें और आज्ञा दें कि इन जख्मों पर पट्टी बाधदू ।

प्रभा० । खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, मैं तैयार हू ।

भूतनाथ तेजी के साथ उस गुफा में चला गया जिसमें उसका डेरा था और पीतल की गगरी पानी से भरी हुई और एक लोटा तथा कुछ कपडा पट्टी बाधने के लिए लेकर प्रभाकरसिंह के पास लौट आया ।

प्रभाकरसिंह ने कपडे उतारे और भूतनाथ ने जख्मों को धो कर उन पर पट्टिया बांधी । इसके बाद प्रभाकरसिंह कपडा पहिन कर चलने के लिए तैयार हो गए ।

भूतनाथ ने अपने आदमियो के विषय में प्रभाकरसिंह से पूछा कि 'इन सभों की बेहोशी खुदबखुद जाती रहेगी या इसके लिए कोई इलाज करना होगा ?'

पहिले तो प्रभाकरसिंह के जी में आया कि अपने हाथ की अगूठी छुला कर उन सभो की बेहोशी दूर कर दें मगर फिर कुछ सोच कर रुक गए और बोले, "नही इनकी बेहोशी आप से आप थोडी देर में जाती रहेगी, कुछ उद्योग करने की जरूरत नही ।"

आगे आगे भूतनाथ और पीछे पीछे प्रभाकरसिंह वहां से रवाना हुए । सुरग में घुस कर भूतनाथ ने वह दर्वाजा खोला जो बन्द था मगर प्रभाकर-सिंह को यह नही मालूम हुआ कि वह दर्वाजा किस ढग से खोला गया ।

घाटी के बाहर निकल जाने पर भी भूतनाथ बहुत दूर तक पहुचाने के लिए प्रभाकरसिंह के साथ मीठी मीठी बातें करता हुआ चला गया । लग-भग आध कोस के दोनो आदमी चले गये होंगे जब प्रभाकरसिंह का सर घूमने लगा और धीरे धीरे बेहोश होकर वे जमीन पर गिर पडे ।

भूतनाथ बड़ा ही चालाक और काइयां था और उसने प्रभाकरसिंह को बुरा धोखा दिया। हमदर्दी दिखा कर जख्म धोने के बहाने से वह बेहोशी की दवा का बर्ताव कर गया। जो पानी वह अपनी गुफा में से लेकर आया था उसमें जहरीली दवा मिली हुई थी मगर वह दवा ऐसी न थी जिससे जान जाती रहे बल्कि ऐसी थी कि खून के साथ मिलकर बेहोशी का असर पैदा करे।

जब प्रभाकरसिंह बेहोश हो गये तब भूतनाथ ने पहिले तो अंगूठी और तलवार पर कब्जा किया और बहुत ही खुश हुआ, इसके बाद प्रभाकरसिंह को गठड़ी में बांध पीठ पर लाद अपनी घाटी की तरफ रवाना हुआ। बेचारे प्रभाकरसिंह पुन. भूतनाथ के फन्दे में फंस गए, देखा चाहिए अब भूतनाथ उनके साथ क्या सलूक करता है।

नौवां बयान

अबकी दफे भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह को बड़ी सख्ती के साथ कैद किया, पैरों में बेड़ी और हाथों में दोहरी हथकड़ी डाल दी और उसी गुफा के अन्दर रख दिया जिसमें स्वयम् रहता था और उसके (गुफा के) बाहर आप चार पाई डाल कर रात को पहरा देने लगा।

भूतनाथ ने बहुत कुछ दम दिलासा देकर प्रभाकरसिंह से जमना और सरस्वती का हाल पूछा मगर उन्होंने उनका कुछ भी भेद न बताया, इस पर भी भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह को किसी तरह का दुःख नहीं दिया, हां इस बात का जरूर खयाल रक्खा कि वे किसी तरह भाग न जाय।

इसी तरह प्रभाकरसिंह की हिफाजत करते करते बहुत दिन गुजर गये मगर भूतनाथ की इच्छानुसार कोई कार्रवाई नहीं हुई। भूतनाथ ने जमना और सरस्वती के विषय में भी पता लगाने के लिये बहुत उद्योग किया मगर कुछ नतीजा न निकला।

भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों को तरह तरह का काम सुपुर्द करके चारो

तरफ दौड़ाया और कइयों को उस सुरंग के इर्द गिर्द घूम कर टोह लगाने के लिये मुकर्रर किया जिसकी राह से कला ने उसे खोह के बाहर किया था।

भूतनाथ को अपने शागिर्द भोलासिंह की बड़ी ही फिक्र थी क्योंकि वह मुद्दत से गायब था और हजार कोशिश करने पर भी उसका कुछ पता नहीं लगता था। वह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासी शागिर्द था और भूतनाथ उसे दिल से मानता था।

एक दिन दोपहर के समय भूतनाथ अपनी घाटी से बाहर निकला और सुरंग के मुहाने पर बाहर की तरफ पेड़ों की ठण्ढी छाया में टहलने लगा। सम्भव है कि वह अपने किसी शागिर्द का इन्तजार कर रहा हो। उसी समय दूर से आते हुए भोलासिंह पर उसकी निगाह पड़ी। वह बड़ी खुशी के साथ भोलासिंह की तरफ बढ़ा और भोलासिंह भी भूतनाथ को देख कर दौड़ता हुआ आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा। भूतनाथ ने भोलासिंह को गले से लगा लिया और पूछा, "इतने दिन तक तुम कहां थे? मुझे तुम्हारे लिए बड़ी ही फिक्र थी और दिन रात खुटके में जी लगा रहता था!"

भोला०। गुरुजी, मैं तो बड़ी आफत में फंस गया था, ईश्वर ही ने मुझे बचाया नहीं तो मैं बिल्कुल ही निराश हो चुका था।

भूत०। क्या तुम्हें किसी दुश्मन ने गिरफ्तार कर लिया था?

भोला०। जी हां।

भूत०। किसने?

भोला०। दो औरतों ने, जिन्हें मैं बिल्कुल ही नहीं पहिचानता!

भूत०। मालूम होता है कि तुम्हें भी जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार कर लिया?

भोला०। जमना और सरस्वती कौन?

भूत०। हमारे प्यारे दोस्त और मालिक दयाराम की स्त्रियां, जिनका जिक्र मैं कई दफे तुमसे कर चुका हूं।

भोला०। हां हां, अब मुझे याद आया, मगर आपने तो कहा था कि

वे मर गईं ?

भूत० । हां मुझे ऐसा ही विश्वास था, मुझे क्या तमाम दुनिया यही जानती है कि दोनों मर गईं मगर अब मुझे मालूम हुआ कि वे दोनों जीती हैं और (हाथ का इशारा करके) इसी पडौस वाली घाटी मे रहती हैं तथा उन्होंने अपने को कला और विमला के नाम से मशहूर किया है, इसलिए कि मुझे सता कर अपना कलेजा ठण्ढा करें क्योंकि किसी ने दोनों को विश्वास दिलाया है कि दयाराम को भूतनाथ ही ने मार डाला है।

भोला० । शिव शिव शिव, भला यह भी कोई बात है ! अच्छा तो ये सब बातें आपको किस तरह मालूम हुईं ?

भूत० । मैं एक दफे उनके फन्दे में पड गया था, वे मुझे गिरफ्तार करके अपनी घाटी मे ले गईं और कैद कर दिया।

भोला० । फिर आप छूटे किस तरह से ?

भूत० । वहां मैंने एक लौंडी को धोखा देकर अपना बटुआ जो छिन गया था मंगवा लिया। फिर कैदखाने से बाहर निकल जाना मेरे लिये कोई कठिन काम न था। इसके बाद मैंने उसी अन्धेरी रात मे पुन. एक लौंडी को गिरफ्तार किया और लालच दे कुछ पता लगाना चाहा मगर वह लालच में न पडी। तब मैंने अपने चाबुक से काम लिया. मुख्तसर यह कि वह मार खाते खाते मर गई पर इससे ज्यादे और कुछ भी न बताया कि हां जमना और सरस्वती यहां रहती हैं और उन्होंने अपना नाम कला और विमला रक्खा है। इसके बाद एक ऐसा मौका हाथ आया कि मैंने कला को पकड लिया। उस समय मुझे विश्वास हो गया कि जमना या सरस्वती में किसी एक को पकड लिया, मगर दिन के समय जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मालूम हुआ कि जमना सरस्वती दोनों में से कोई नहीं है क्योंकि नाम बदल दिया तो क्या हुआ मैं उन दोनों को अच्छी तरह पहिचानता हूं। पहिले तो शक हुआ कि शायद ऐयारी ढङ्ग पर इसने सूरत बदल ली है मगर नहीं, पानी से मुंह धुलवाने पर वह शक भी जाता रहा।

इतना कह कर भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल उस घाटी में गिरफ्तार हो कर जाने और फिर बाहर निकलने का तथा प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार करने का बयान किया और कहा, "मालूम होता है कि उन्ही में से किसी ने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया था, खैर खुलासा हाल कहो तो कुछ मालूम हो !"

भोला० । जी हां बेशक उन्हीं दोनों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था, जब तक मैं उनके यहां कैद रहा तब तक रोज उन दोनो से मुलाकात होती रही, क्योंकि वह रोज ही मुझे समझाने बुझाने के लिए आया करती थी। मैंने वहा एक नया ही ढग रचा, जिस पर कई दिनों तक तो उन्हें विश्वास ही न हुआ मगर अन्त में उन्होंने मान लिया कि जो कुछ मैं कहता हूं वह सब सच है। मैंने उन्हें यह समझाया कि मैं भूतनाथ का नौकर या शागिर्द नही हू बल्कि मैं राजा सुरेन्द्रसिह का ऐयार हू, जिनसे चुनार के राजा शिवदत्त से आज कल लड़ाई हुआ ही चाहती है। महाराज सुरेन्द्रसिह ने सुना है कि गदाधरसिह राजा शिवदत्त की मदद पर है इसलिए उन्होने मुझे तथा अपने कई ऐयारों को गदाधरसिह की गिरफ्तारी के लिये भेजा है !

भूत० । (मुस्कुरा कर) खूब समझाया, अच्छी सूझी ।

भोला० । जी हां, आखिर उन्हें मेरी बातों पर विश्वास हो गया और कई तरह के वादे करा के उन्होंने मुझे छोड़ दिया ।

भूत० । किस राह से उन्होंने तुम्हें बाहर निकाला ?

भोला० । सो मैं नही कह सकता, क्योकि उस समय मेरी आंखो पर पट्टी बांध दी गई थी, जब पट्टी खोली गई तो मैंने देखा कि वहां बहुत से सुन्दर और सुहावने बेल तथा पारिजात के पेड़ लगे हुए हैं और दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर साफ पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बह रहा है

भूत० । (बात काट के) ठीक है, ठीक है, मैं समझ गया, मैं भी उसी सुरग से बाहर निकाला गया था। परन्तु मैं समझता हू कि उसके अतिरिक्त और भी कोई रास्ता उस घाटी में जाने के लिए जरूर है, क्योंकि जब मैं गिरफ्तार हुआ था तो किसी दूसरे ही मुहाने पर था। उस समय

मुझे छुरी का एक जख्म लगा था जो अभी तक तकलीफ दे रहा है।

भोला०। सम्भव है, हो सकता है, इसमें आश्चर्य हो क्या है!

इसके बाद दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर देर तक बातें करते रहे। भूतनाथ पर जो कुछ बीती थी उसने ब्योरेवार बयान किया और भोलासिंह ने जो कुछ कहा उसे बड़े गौर से सुना।

भोलासिंह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था इसलिये साधू महाशय की कृपा का हाल भूतनाथ ने यद्यपि अपने किसी शागिर्द या आदमी से बयान नहीं किया था मगर भोलासिंह से साफ और पूरा पूरा बयान कर दिया, चाहे अभी यह नहीं बताया कि उस खजाने का दर्वाजा किस तरह खुलता और बन्द होता है। हां अन्त में इतना जरूर कह दिया कि मैं तुम्हें उस खजाने वाले घर में ले चलूंगा और दिखाऊंगा कि वहां कितनी बेशुमार दौलत है।

सन्ध्या होते ही भोलासिंह को लेकर भूतनाथ अपनी अनूठी घाटी में चला गया। रास्ते में उस दर्वाजे का हाल और भेद भी भोलासिंह को बताता गया जिसे विमला ने बन्द कर दिया था और जिसे साधू महाशय की कृपा से भूतनाथ ने खोला था।

भोलासिंह जब उस घाटी के अन्दर पहुंच गया तो भूतनाथ ने सबसे पहिले प्रभाकरसिंह से उसकी मुलाकात कराई। भोलासिंह को देख कर और यह सुन कर कि इसका नाम भोलासिंह है प्रभाकरसिंह चौंके और गौर से उसकी तरफ देख कर चुप हो रहे।

इसके बाद भोलासिंह को साथ लेकर भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें खजाना था, वह खजाना जो साधू महाशय की कृपा से मिला था। रोशनी न करके अंधेरे ही में भोलासिंह को सुरंग के अन्दर अपने पीछे पीछे आने के लिए भूतनाथ ने कहा और भोलासिंह भी बेखौफ कदम बढ़ाये चला गया, मगर अन्त में भूतनाथ खजाने के दर्वाजे पर पहुंचा और वह दर्वाजा खोल चुका तब उसने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान

निकाल कर रोशनी की ओर भोलासिंहको कोठडीके अन्दर आनेके लिए कहा।

भूत०। देखो भोलासिंह, इस तरफ निगाह दौड़ाओ। ये सब चांदी के देग अशर्फियों से नकानक भरे हैं, इनमें से सिर्फ एक देग मैंने खाली किया है।

भोला०। (देगों या हण्डो की तरफ देख के) बेशक यह बहुत दिनों तक काम देंगी।

भूत०। बेशक, साथ ही इसके यह भी सुन रक्खो कि वह साधू महाराज पुन यहा आवेंगे तो ऐसे ऐसे और भी कई खजाने मुझे देगे।

भोला०। ईश्वरकी कृपा है आपके ऊपर! हा यदि आप आज्ञा दीजिये तो मैं भी जरा इन अशर्फियो के दर्शन कर लूं।

भूत०। हां हा, अपने हाथों ही से ढकना खोलत जाओ और देखते जाओ, वल्कि मैं यह भी हुक्म देता हू कि इस समय जितनी अशर्फिया तुमसे उठाते बने उठा लो और अपने घर ले जाकर बाल बच्चो को दे आओ, तुम खूब जानते हो कि मैं तुम्हें अपने लडके की तरह मानता हू।

भोला०। नि सन्देह ऐसा ही है मगर मैं इस समय अशर्फिया लेकर क्या करूगा, आपकी बदौलत मुझे किसी बात की कमी तो है नहीं।

भूत०। नही नही नही, तुम्हें जरूर लेना पडेगा।

भोला०। (कई देगो के ढकने उठा कर देखने के बाद) मगर इनमें से तो कई हण्डे खाली हैं, आप कहते हैं कि सिर्फ एक ही हण्डे की अशर्फियां निकाली गई हैं।

भूत०। (ताज्जुब से) क्या कई हण्डे खाली पडे हैं!

इतना कह कर भूतनाथ ने एक एक करके उन हण्डो को देखना शुरू किया मगर यह मालूम करके उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उसका आधा खजाना एक दम से खाली हो गया है अर्थात् आधे हण्डो में अशर्फियों की जगह एक कौडी भी नहीं है।

भूत०। हैं, यह क्या हुआ! मै खूब जानता हू कि इन सब हण्डो में अशर्फिया भरी हुई थी, मैंने अपने हाथ से इन सभों का ढकना उठाया था

ग्रौर ग्रपनी ग्राखो से देखा था.....

भोला० । (बात काट कर) बेशक बेशक ग्रापने देखा होगा मगर बडे ग्राश्चर्य की बात है कि इतनी हिफाजत के साथ रहने पर भी ग्रश-र्फिया गायब हो गई । मैं कह तो नही सकता मगर हमारे साथियो में से किसी न किसी की नीयत... ...

भूत० । जरूर खराब हो गई, मैंने ग्रपनी जुबान से इस खजाने का हाल ग्रपने किसी साथी से भी नही कहा तिस पर यह हाल !

भोला० । सम्भव है कि ग्रापके पीछे पीछे ग्राकर किसी ने देख लिया हो ग्रौर यह भेद मालूम कर लिया हो ।

भूत० । ग्रगर ऐसा नही हुग्रा तो हुग्रा क्या ? इसका पता लगाना चाहिये ग्रौर जानना चाहिये कि हमारे साथियों में किस किस का दिल बेई-मान हो गया है, क्योकि इसमे तो कोई शक नही कि हमारे साथियो ही में से किसी ने यह चोरी की है ।

भोला० । मेरा खयाल तो यह है कि कई ग्रादमियो ने मिल कर चोरी की है ।

भूत० । हो सकता है, भला तुम ही कहो कि ग्रब मैं कब ग्रपने साथियो का विश्वास कर सकता हू ।

भोला० । कभी नही, मेरा विश्वास ग्रब इन सभो के ऊपर से उठ गया । हाय हाय, इतना बडा खजाना ग्रौर ऐसी नमकहरामी ।

भूत० । देखो तो सही मैं कैसा इन लोगो को छकाता हू ।

भोला० । ग्राप जल्दी न कीजिये, एक दो रोज ग्रौर देख लीजिए ।

भूत० । कही ऐसा न हो कि एक दो दिन ठहरने से यह भी जो बचा है। जाता रहे ।

इतना कह कर भूतनाथ कोठरी के बाहर निकल ग्राया ग्रौर दर्वाजा बन्द कर पेचोताब खाता हुग्रा सुरग के बाहर हो उस तरफ रवाना हुग्रा जिधर उसका डेरा था ।

भूतनाथ को इन अशर्फियों के गायब होने का बड़ा ही दुःख हुआ। रात के समय उसने किसी को कुछ कहना मुनासिब न समझा और चुप हो रहा, मगर रात भर उसे अच्छी तरह नींद न आई और क्रोध के मारे उसने कुछ भोजन भी नहीं किया। भोलासिंह कुछ देर के बाद उसके पास से हट गया और किसी दूसरी ही गुफा के बाहर बैठ कर उसने रात बिताई। जब घण्टे भर रात बाकी रही तब वह घबड़ाया हुआ भूतनाथ के पास आया और देखा कि वह गहरी नींद में सो रहा है। भोलासिंह ने हाथ से हिला कर भूतनाथ को सचेत किया, वह घबड़ा कर उठ बैठा और बोला, "क्यों क्या है!"

भोला०। मालूम होता है कि आज फिर आपकी चोरी हुई।

भूत०। सो कैसे?

भोला०। मैंने कई आदमियों को उस खजाने वाले सुरंग के अन्दर जाते और वहां से लदे हुए बाहर निकलते देखा है।

भूत०। फिर वे लोग कहा गये?

भोला०। मालूम होता है कि सब घाटी के बाहर निकल गये, मैं उन लोगों को नीचे उतर कर उस सुरंग में जो बाहर निकलने का रास्ता है जाते देख लपका हुआ आपके पास चला आया हूं, अब आप शीघ्र उठिए और उन लोगों का पीछा कीजिये।

भूतनाथ घबड़ा कर उठ बैठा और बोला, "जरा देख तो लो कि यहां से कौन कौन गायब है?"

भोला०। इस देखा देखी में तो बहुत देर हो जायगी और वे लोग दूर निकल जायगे।

भूत०। अच्छा चलो पहिले बाहर हो चलें।

दोनों आदमी तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे उतर आये और सुरंग में घुस कर उस घाटी के बाहर निकले। यहां बिल्कुल ही सन्नाटा था। थोड़ी देर तक ये दोनों आदमी इधर उधर घूमते रहे मगर जब कुछ पता न लगा

तो लौट कर सुरंग के मुहाने पर चले आए और यों बातचीत करने लगे :—

भोला० । मालूम होता है कि वे लोग दूर निकल गये, किस तरफ गये है इसका पता लगाना जल्दी मे नही हो सकता ।

भूत० । अच्छा तो तुम घाटी के अन्दर जाओ और वहा जो लोग हैं उनका ख्याल रक्खो, मै पुनः घूम कर टोह लगाता हू और देखता हू कि वे लोग कहां गये ।

भोला० । नही बल्कि आप ही घाटी के अन्दर जाइए और मुझे उन लोगो का पता लगाने की आज्ञा दीजिये, क्योकि जो लोग यहा से गये हैं वे अगर अपने ही आदमी हैं तो आखिर लौट कर यहा आवेंगे जरूर, ऐसी अवस्था मे ज्यादे देर तक पीछा करने की कोई जरूरत नही, इसके अतिरिक्त आप घाटी मे जा कर इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि वहा से कौन कौन आदमी गायब हैं क्योकि यह बात मुझे बिल्कुल ही नही मालूम है कि आज कल किस किस को आपने किस किस काम पर मुस्तैद किया है तथा घाटी के अन्दर कौन कौन रहता है ।

भूत० । ठीक है अच्छा मैं ही घाटी के अन्दर जाकर पता लगाता हू कि कौन कौन गायब है । अफसोस सुरग के अन्दर का दर्वाजा खोलना बन्द करना मैने अपने सब आदमियों को बता दिया है, अगर बताता नही तो काम भी नही चल सकता था क्योंकि नित्य ही लोग आते जाते रहते हैं, मेरी गैरहाजिरी में भी उन लोगो को जाना पड़ता है ।

भोला० । ठीक है बिना बताये काम नही चल सकता था ।

भूत० । इसके अतिरिक्त मैने उन सभो को यह भी हुक्म दे रक्खा है कि नित्य ही प्रातःकाल सूर्योदय के पहिले बारी बारी से दो चार आदमी घाटी के बाहर निकल कर इधर उधर घूमा फिरा करें, अगर वे लोग जिन्हें तुमने जाते देखा है लौट कर आवेंगे भी तो यही कहेंगे कि हम बालादवी*

* घूम फिर कर पहरा देने और टोह लगाने के लिए जाने को बालादवी कहते हैं ।

के लिए बाहर गये थे, फिर उन्हें कायल करने और चोर सिद्ध करने के लिए क्या तर्कीब हो सकती है ?

भोला० । ठीक ही तो है, फिर आप जानिये जो मुनासिब समझियेगा कीजियेगा, मगर पहिले जाकर देखिए तो सही कि कौन कौन गायब है और उस खजाने को भी एक नजर देख लीजिएगा कि बनिस्बत कल के कुछ और भी कम हुआ है या नही । जरूर कम हुआ होगा क्योंकि मैंने अपनी आखो से उन लोगो की कारवाई देखी है ।

"खैर मैं जाता हू" इतना कह कर भूतनाथ घाटी के अन्दर चला गया । सबके पहिले उसने खजाने को देखना मुनासिब समझा और पहिले उसी तरफ गया जिधर खजाने वाली गुफा थी ।

गुफा के अन्दर घुस कर और खजाने वाली कोठरी का दर्वाजा खोल कर जब भूतनाथ अन्दर गया और रोशनी करके गौर से उन हण्डो को देखा तो मालूम हुआ कि और भी कई हण्डे खाली हो गये हैं । भोलासिह को लेकर जिस समय वह इस कोठरी में आया था उस समय जिन हण्डों या देगो में भोलासिह ने अशर्फिया देखी थीं और भूतनाथ ने भी देखी थी उनमें से चार हण्डे इस समय बिल्कुल खाली दिखाई दे रहे थे । भूतनाथ ने मन में सोचा कि 'भोलासिह का कहना बहुत ठीक हैं, जरूर हमारे आदमियों ने रात को चोरी की है, खैर अब मैं इन हरामखोरों से जरूर समझू गा । मगर मामला बड़ा कठिन आ पड़ा है, अगर इन शैतानों को यहा से निकाल दू तब भी काम नही चल सकता है क्योंकि यहा का रास्ता इन लोगो का देखा हुआ है । अब तो कुछ डरते भी हैं, फिर दुश्मनी को नीयत से यहा छिप कर आया करेंगे, और यदि मैं खुद इस घाटी को छोड़ दू और बचा हुआ खजाना लेकर दूसरी जगह जा रहू तो बाबाजी से मुलाकात क्योंकर होगी जिन्होंने यह खजाना दिया है और पुन आकर बेहिसाब दौलत देने तथा तिलिस्म का दारोगा बनाने को प्रतिज्ञा कर गये हैं ? बड़ी मुश्किल है । फिर इन सभों को निकाल देने से भी मैं निश्चिन्त नही हो सकता क्योंकि ये सब

दुश्मन हो जायेंगे और दुश्मनो से जा मिलेंगे, इससे यही वेहतर है कि इन सभो को जान से मार कर बखेडा तै किया जाय।"

इसी तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने डेरे की तरफ गया जहा प्रभाकरसिंह को कैद कर रक्खा था। वहा पहुँच कर देखा तो प्रभाकरसिंह भी गायब हैं।

क्रोध के मारे भूतनाथ की आँखें लाल हो गईं, उसे विश्वास हो गया कि यह काम भी उनके आदमियो का ही है।

भूतनाथ ने अपनी गुफा के बाहर निकल कर इशारे की जफील बुलाई जिसके सुनते ही वे सब शागिर्द और ऐयार उसके पास आकर इकट्ठे हो गए जो इस समय वहा मौजूद थे। ये लोग गिनती में बारह थे जिनमें चार आदमी कुछ रात रहते ही बालादवी के लिए चले गए थे और बाकी आठ आदमी मौजूद थे जो इस समय भूतनाथ के सामने आये। कौन कौन आदमी बाहर गया हुआ है यह पूछने के बाद भूतनाथ ने कहा—

भूत०। (सभो की तरफ देख कर) बडे ताज्जुब की बात है कि प्रभाकरसिंह इस गुफा के अन्दर से गायब हो गये!

एक०। यह तो आप ही जानिए, क्योंकि रात को आप ही उनके पहरे पर थे, हम लोगो में से तो कोई यहा था नही।

भूत०। सो तो ठीक है मगर तुम्ही सोचो कि यकायक यहाँ से उनका गायब हो जाना कैसी बात है!

दूसरा०। बेशक ताज्जुब की बात है।

भूत०। इसके अतिरिक्त और भी एक बात सुनने लायक है। (उंगली से बता के) इस गुफा के अन्दर हमारा खजाना रहता है, उसमें से भी आज नामी रुपये की रकम चोरी हो गई है, इसके पहिले भी एक दफे चोरी हो चुकी है।

एक०। यह तो आप और ताज्जुब की बात सुनाते हैं? भला यहाँ चोर क्योंकर आ सकता है? इसके सिवाय उस गुफा में पचासों दफे हम लोग गये हैं मगर वहाँ खजाना वगैरह तो कभी नहीं देखा, न आप ही ने

हमलोगों से कहा कि वहां खजाना रख आये हैं ।

भूत० । उस गुफा के भीतर एक दर्वाजा है और उसके अन्दर जो कोठरो है उसी में खजाना था । उस दिन जो साधू महाशय आये थे उन्हीं का वह खजाना था और वे ही मुझे दे गये थे तथा वे उस कोठरी को खोलने और बन्द करने की तर्कीब भी बता गये थे, मगर अब जो हम देखते हैं तो वह खजाना आधा भी नहीं रह गया !

तीसरा० । अब ये सब बातें तो आप जानिए, हमें तो कभी आपने इसकी इत्तिला नहीं दी थी इसलिए हमलोगों का उस तरफ कुछ ख्याल भी नहीं था और खयाल हो अथवा न हो, यहाँ से चोरी जाने की बात कौन मान सकता है!

भूत० । तो क्या हम झूठ कहते हैं ?

चौथा० । यह तो हमलोग नहीं कह सकते मगर इसके जिम्मेदार भी हमलोग नहीं हैं ।

भूत० । फिर कौन इसका जिम्मेदार है ?

चौथा० । आप जिम्मेदार हैं या फिर जो चुरा ले गया है वह जिम्मेदार है ! आप तो हम लोगों से इस तरह पूछते हैं जैसे कोई लौंडी या गुलाम से आँख दिखा कर पूछता है । हम लोग आपके पास शागिर्दी का काम करते हैं, ऐयारी सीखते हैं, आपके लिए दिन रात दौड़ते परेशान होते हैं, और हरदम हथेली पर जान लिए रहते हैं, मरने की भी परवाह नहीं करते, तिस पर आप हम लोगों को चोर समझते हैं और ऐसा वर्ताव करते हैं ! यह हम लोगों के लिए एक नई बात है, आज के पहिले कभी आप ऐसे बेरुख नहीं हुए थे।

भूत० । हां, बेशक आज के पहिले हम तुम लोगो को ईमानदार समझते थे, यह तो आज मालूम हुआ कि तुम लोग ऐयार नहीं बल्कि चोर दगाबाज और बेईमान हो ।

पाँचवां० । देखिये जुबान सम्हालिए, हम लोगो को ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं है !

भूत० । मगर आदत नहीं होती तो ऐसा काम भी नहीं करते !

छठा० । (क्रोध में भर कर) सीधी तरह से यह क्यों नहीं कह देते कि यहां से चले जाओ । इस तरह इज्जत लेने और देने की जरूरत ही क्या है?

भूत० । वाह वाह, क्या अच्छी बात कही है । तमाम खजाना उठा कर हजम कर जाओ और इसके बदले में हम बस इतना ही कह कर रह जाय कि चले जाओ ।

इस तरह की बातें हो रही थी कि वे बाकी के चार आदमी भी आ गए जो वालादवी के लिए कुछ रात रहते घाटी के बाहर निकल गये थे । भूतनाथ ने उन सभों से भी इसी तरह की बातें की और अच्छी तरह डांट बताई। उन लोगो ने भी इसकी जानकारी से इनकार किया और कहा कि हम लोगों को कुछ भी नहीं मालूम कि कहां आपका खजाना रहता है, कब कौन उठा कर ले गया तथा प्रभाकरसिंह को किसने यहां से भगा दिया ।

भूतनाथ बड़ा ही लालची आदमी था, रुपये पैसे के लिए वह बहुत जल्द बेमुरौवत बन जाता था और खोटे से खोटा काम करने के लिए तैयार हो जाता था । बात तो यह है कि रुपये पैसे के विषय में वह किसी का एतबार ही नहीं करता था । आज उसकी बहुत बड़ी रकम गायब हो गई थी और मारे क्रोध के वह जलभुन कर खाक हो गया था । अपने आदमियो पर उसने इतनी ज्यादे सख्ती की और ऐसे बुरे शब्दों का प्रयोग किया कि वे सब एकदम बिगड़ खड़े हुए क्योंकि ऐयार लोग इस तरह की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

इन आदमियों या शागिर्दों के अतिरिक्त भूतनाथ के पास और भी कई आदमी थे जो दूसरी जगह रहते थे तथा और कामों पर मुकर्रर कर दिए गए थे मगर इस घाटी के अन्दर आजकल ये ही बारह आदमी रहते थे जो आज भूतनाथ की बातों से नाराज होकर बेदिल हो गये थे और उसका साथ छोड़ दूसरी जगह चले जाने के लिए तैयार थे मगर भूतनाथ ने उन्हें सीधी तरह जाने भी नहीं दिया बल्कि तलवार खैंच कर सभों को सजा देने के लिए तैयार हो गया ।

भूतनाथ की कमर में वही अनूठी तलवार थी जो उसने प्रभाकरसिंह से पाई थी, इस तलवार को वह बहुत ही प्यार करता था और उसे अपनी फतहमन्दी का सितारा समझता था। उसके आदमियों को इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस तलवार में कौन सा गुण है अस्तु लाचार हो वे लोग भी खंजर और तलवारें खींच मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये।

भूतनाथ अकेला ही सभों से लड़ने के लिए तैयार हो गया बल्कि बहुत देर तक लड़ा। भूतनाथ के बदन पर छोटे छोटे कई जख्म लगे मगर भूतनाथ के हाथ की तलवार का जिसको जरा सा भी चरका लगा वह बेकार हो गया और तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर गया। यह देख उन लोगो को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा था। थोड़ी हो देर में कुल आदमी जख्मी होने के कारण बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और भूतनाथ ने सभो की मुश्कें बांध कर एक गुफा में कैद कर दिया।

इसके बाद भूतनाथ घाटी के बाहर निकला और भोलासिंह की खोज में चारों तरफ घूमने लगा मगर तमाम दिन बीत जाने पर भी भोलासिंह का कही पता न लगा।

सन्ध्या होने पर भूतनाथ पुन लौट कर अपनी घाटी में आया और यह देखने के लिए उस गुफा के अन्दर गया जिसमें अपने शागिर्दों को कैद किया था कि उन सभों की बेहोशी अभी दूर हुई या नही, मगर अफसोस भूतनाथ ने वह तमाशा देखा जो कभी उसके खयाल में भी नही आ सकता था, अर्थात् उसके कैदी शागिर्दों में से वहां एक भी मौजूद न था, हा उनके बदले वह सब सामान वहा जमीन पर जमा दिखाई दे रहा था जिससे उनके हाथ पैर बेकार कर दिये गए थे या उनकी मुश्कें बांधी गई थी।

अपने शागिर्दों को कैदखाने में न देखकर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि 'ये सब कैदखाने में से निकल कर किस तरह भाग गये! मैं इनके हाथ पैर बड़ी मजबूती के साथ बांध गया था जो बिना किसी की मदद के किसी तरह भी खुल नहीं सकते थे फिर ये लोग क्योंकर

निकल गये ? मालूम होता है कि इनका कोई न कोई मददगार यहा जरूर आया चाहे वह मेरे शागिर्दों का दोस्त हो या मेरा दुश्मन । इधर कई दिनो से ऐसी बातें हो रही हैं कि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता है । क्या सम्भव है कि इन लोगो ने होश में आने के बाद आपुस मे मिल जुल कर किसी तरह अपने हाथ पैर खोल लिए होंगे ? हा हो भी सकता है । परन्तु अब मुझे मानना पड़ेगा कि मेरे दुश्मनो को गिनती बढ़ गया क्योंकि वे लोग भी अब मेरे साथ जरूर दुश्मनी करेंगे और ऐसा अवस्था में मै किस तरह का वार सम्हाल करूंगा ? मैं तो यही सोचे हुए था कि इन लोगो को एक दम मार कर बखेड़ा तै करूगा क्योंकि दुश्मनों की गिनती बढ़ाना अच्छा नही मगर अफसोस तो यह है कि अब मैं अकेला क्या करूगा ? दो चार साथी अगर और हैं भी तो अब उनका क्या भरोसा ? ये लोग अब जरूर उनको भी भड़कावेंगे और उन लोगो को जब यह मालूम हो जायगा कि मैं अपने शागिर्दों को इस तरह पर सजा दिया करता हू तो वे लोग भी मेरा साथ छोड़ देंगे, बल्कि ताज्जुब नही कि भविष्य मे कोई भी मेरा साथी बनना पसन्द न करे । आह,मैं मुफ्त परेशानी उठा रहा हू , व्यर्थ का दुःख भोग रहा हू , अगर अपने मालिक के पास चुपचाप बैठा रहता तो काहे को इस तरददुद में पड़ता, मगर अब तो मैं वहा भी जाना पसन्द नही करता क्योंकि दयाराम की दोनो स्त्रियां वहाँ मुझे और भी विशेष कष्ट देंगी । अफसोस यह बात रणजीतसिंह ने मुझसे व्यर्थ ही छिपाई और कह दिया कि दयाराम की दोनो स्त्रियो का देहान्त हो गया । मगर जहाँ तक मै ख्याल करता हू इसमें उनका कसूर कुछ भी नहीं जान पड़ता, सम्भव है कि मेरा तरह वे भी धोखे मे डाल दिये गये हो और अभी तक उन्हें इस बात को खबर भी न हो कि जमना और सरस्वती जीती हैं । मगर अब मुझे क्या करना चाहिये यह सोचने की बात है । मैं तो ऐसा गायब हो सकता हूं कि हवा को भी मेरी खबर न लगे मगर इस घाटी का छोड़ना जरा कठिन हो रहा है क्योंकि अगर मैं यहा से चला जाऊंगा तो फिर बाबू

हाशय से मुलाकात न होगी और मैं उस दौलत को न पा सकूगा जो उनकी बदौलत मिलने वाली है, मगर यहाँ का रहना भी अब कठिन हो रहा है। अच्छा कुछ दिन के लिये इस स्थान को अब छोड ही देना चहिये और जो कुछ बचा हुआ खजाना है उसे निकाल ले जाना चहिये।

इस तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ जिसमें उसका खजाना था। जब गुफा के अन्दर जाने के बाद रोशनी लिये हुए खजाने वाली कोठडी में पहुचा तो देखा कि अब उन हण्डो में एक भी अशर्फी बाकी नही है, सब की सब गायब हो गई, बल्कि वे हण्डे तक भी अब नहीं दिखाई देते जिनमें अशर्फिया रक्खी गई थी। भूतनाथ का दिमाग हिल गया और वह अपना माथा पीट कर उसी जगह बैठ गया।

थोडी देर बाद भूतनाथ उठा और मोमबत्ती की रोशनी में उसने उस कोठडी को अच्छी तरह देखा, इसके बाद दर्वाजा बन्द करके निकल आया। और गुफा की जमीन को बडे गौर से देखता तथा यह सोचता हुआ पहाडो के नीचे उतर गया कि 'अब यहा रहना उचित नही है'।

दसवां बयान

दोपहर का समय है मगर सूर्यदेव नही दिखाई पडते। आसमान गहरे बादलो से भरा हुआ है। ठण्ढी ठण्ढी हवा चल रही है और जान पडता है कि मूसलाधार पानी बरसा ही चाहता है।

भूतनाथ अपनी घाटी के बाहर निकल कर अकेला ही और मैदान जंगल की सैर कर रहा है। उसके दिल में हर तरह की बातें उठ रही हैं, तरह तरह के विचार पैदा हो और मिट रहे हैं। कभी वह अटक कर इस तरह चारो तरफ देखने लग जाता है जैसे किसी के आने की आहट लेता हो और कभी जफील बजा कर उसके जवाब का इन्तजार करता है।

इसी तरह वह बहुत देर तक घूमता रहा, आखिर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा। थोडी देर बाद उसने पुनः

जफील बुलाई और उसी समय उसका जवाब भी पाया। भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से जफील की आवाज आई थी। थोड़ी दूर जाने पर उसने अपने एक शागिर्द को देखा जिसका नाम रामदास था, इसे भूतनाथ बहुत ही प्यार करता और अपने लड़के के समान मानता था और वास्तव में रामदास बहुत चालाक और धूर्त था भी। यद्यपि उसकी उमर बीस साल के ऊपर होगी मगर देखने में वह बारह या तेरह वर्ष से ज्यादे का नही मालूम होता था। उसको रेख बिल्कुल ही नही आई थी और उसकी सूरत मे कुदरती तौर पर जनानापन मालूम होता था, यही सबब था कि वह औरतों की सूरत में बहुत अच्छा काम कर गुजरता था और हाव भाव में भी उससे किसी तरह की त्रुटि नही होती थी। इस समय उसकी पीठ पर एक गठड़ी लदी हुई थी जिसे देख भूतनाथ को आश्चर्य हुआ और उसने आगे बढ कर पूछा, "कहो रामदास, खैरियत तो है? यह तुम किसे लाद लाये हो? मालूम होता है कोई अच्छा शिकार किया है?"

रामदास०। (कानी आँख से प्रणाम करके) हां चचा, मैं बहुत अच्छा शिकार कर लाया हूं।

भूतनाथ०। (प्रसन्न होकर) अच्छा अच्छा आओ, इस पत्थर की चट्टान पर बैठ जाओ, देखें तुम्हारा शिकार कैसा है?

भूतनाथ ने गठड़ी उतारने में उसे मदद दी और दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये। भूतनाथ ने गठड़ी खोल कर देखा तो एक बेहोश औरत पर निगाह पड़ी। उसने पूछा, "यह कौन है?"

रामदास०। यह जमना और सरस्वती की लौंडी है।

भूत०। अच्छा, तुमने इसे कहां पाया?

रामदास०। उसी घाटी के बाहर जिसमें वे दोनो रहती हैं। यह किसी काम के लिए बाहर आई थी और मैं आपकी आज्ञानुसार उसी जगह छिप कर पहरा दे रहा था, मौका मिलने पर मैंने इसे गिरफ्तार कर लिया और जबर्दस्ती बेहोश करके एक गुफा के अन्दर छिपा आया। जहां किसी को पता-

यक पता नहीं लग सकता था। इसके बाद मैं इसी की सूरत बन कर उस सुरंग के पास चला आया जो उस घाटी के अन्दर जाने का रास्ता है और जहां मैंने इसे गिरफ्तार किया था। मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि उस घाटी के अन्दर जाऊं मगर इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह औरत जिसे मैंने गिरफ्तार किया है किस दर्जे की है या किस काम पर मुकर्रर है और इसका नाम क्या है, अस्तु इसके जानने के लिए मुझे कुछ पाखण्ड रचना पड़ा जिसमें एक दिन की देर तो हुई मगर ईश्वर की कृपा से मेरा काम बखूबी चल गया। मैंने सूरत बदलने के बाद इस लौंडी के कपड़े तो पहिर ही लिए थे तिस पर भी मैं चुटीला बन कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और इन्तजार करने लगा कि घाटी के अन्दर से कोई आवे तो मैं उसके साथ भीतर पहुंच जाऊं। थोड़ी ही देर बाद जमना और सरस्वती स्वयं घाटी के बाहर आईं, उस समय मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि यह जमना और सरस्वती हैं मगर जब घाटी के अन्दर चला गया और तरह तरह की बातें सुनने में आईं तब मालूम हुआ कि यही जमना और सरस्वती हैं। यद्यपि ये दोनों कला और विमला नाम से पुकारी जाती थीं मगर यह तो मैं आप से सुन ही चुका था कि उन्होंने अपना नाम कला और विमला रक्खा हुआ है इसलिये मुझे असल बात जानने में कोई कठिनता न हुई। खैर जब सुरंग के बाहर मुझे कला और विमला ने देखा तो पूछा, "अरी हरदेई, अभी तक इसी जगह बैठी हुई है?" मैंने धीरे से इसका जवाब दिया, "मैं पहाड़ी के ऊपर से गिर कर बहुत चुटीली हो गई हूं, मुझमें दस कदम चलने की भी ताकत नहीं है बल्कि बात करने में भी तकलीफ मालूम होती है।" इसके बाद मैंने कई जगह छिले और कटे हुए जख्म दिखाए जो कि अपने हाथों से बनाये थे। मेरी अवस्था पर उन दोनों को बहुत अफसोस हुआ और वे दोनों मदद देकर मुझे अपनी घाटी के अन्दर ले गईं और दवा इलाज करने लगीं। दो दिन तक मैं चारपाई पर पड़ा रहा और इस बीच मुझे बहुत सी बातें मालूम हो गईं जिन्हें मैं बहुत ही संक्षेप के साथ इस समय बयान करूंगा। दो दिन

के बाद मैं चंगा हो गया और उन सभों के साथ मिल जुल कर काम करने लगा क्योंकि इस बीच में मतलब की सभी बातें मुझे मालूम हो चुकी थी।

भूत०। निःसन्देह तुमने बड़ी हिम्मत का काम किया, अच्छा तो कौन कौन बातें वहा तुम्हे मालूम हुईं ?

रामदास०। पहिली बात तो यह मालूम हुई कि बेचारा भोलासिंह उन दोनों के हाथ से मारा गया। खुद कला और विमला ने उसे मारा था, यद्यपि यह नही मालूम हुआ कि कब किस ठिकाने और किस तरह से उसे मारा मगर इसे कई सप्ताह हो गये।

भूत०। (आश्चर्य से) क्या वह मारा गया ?

रामदास०। हा निःसन्देह मारा गया।

भूत०। अभी तो कल परसों वह मेरे साथ था !

रामदास०। वह कोई दूसरा होगा जिसने भोलासिंह बन कर आपको धोखा दिया।

भूत०।(कुछ सोच कर) बेशक वह कोई दूसरा ही था, अब जो सोचता हूं तो तुम्हारा कहना ठीक मालूम होता है। हाय मुझसे बड़ी भूल हो गई और मैंने अपने को बर्बाद कर दिया। मेरे साथी शागिर्द लोग बेचारे अपने दिल में क्या कहते होंगे ? वे लोग अगर मेरे साथ दुश्मनी करें तो इसमें उनका कोई कसूर नहीं।

राम०। यह क्या बात हुई, भला कुछ मैं भी सुनूं !

भूत०। तुमसे कुछ छिपा न रहेगा, मैं सब कुछ तुमसे बयान करूंगा, पहले तुम अपना किस्सा कह जाओ।

राम०। नही नहीं पहिले मैं आपका यह हाल सुन लूंगा तब कुछ कहूंगा।

रामदास ने इस बात पर बहुत जिद्द किया, आखिर लाचार होकर भूतनाथ को अपना सब हाल बयान करना ही पड़ा जिसे सुन कर रामदास को बड़ा ही दुःख हुआ।

भूत०। अच्छा और क्या क्या तुम्हें मालूम हुआ ?

राम०। और यह मालूम हुआ कि जिस साधू महाशय का अभी अभी

आपने जिक्र किया है, जिन्होंने आपको खजाना दिया था, वह कला और विमला के पक्षपाती हैं। जो रंग ढंग आपने उनके अभी बयान किये हैं ठीक उसी सूरत शक्ल में मैंने उन्हें वहाँ देखा और यह कहते अपने कानों से सुना था कि—'भूतनाथ को मैंने खूब ही लालच में फंसा लिया है, अब वह इस घाटी को कदापि न छोड़ेगा और प्रभाकरसिंह को भी इसी जगह ले आवेगा, तब हम लोग उन्हें सहज ही में छुड़ा लेंगे।' इसके अतिरिक्त मुझे यह भी निश्चय हो गया कि वह साधू अपनी असली सूरत मे नहीं है बल्कि कोई ऐयार है, मेरे सामने ही उसने विमला से कहा था कि 'अब मैं इसी सूरत में आया करूंगा।'

भूत०। बेशक वह कोई ऐयार था, मगर अशर्फियां किस तरह निकल गईं इसका भी पता कुछ लगा ?

राम०। इस विषय में तो मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

भूत०। खैर इस बारे में फिर सोचेंगे, अच्छा और क्या देखा सुना ?

राम०। और यह मालूम हुआ कि गुलाबसिंह आपकी शिकायत लेकर दलीपशाह के पास गये थे और दलीपशाह को साथ लिए हुए कला और विमला के पास आये थे, उस समय भी उस बुड्ढे साधु को मैंने उन दोनों के साथ देखा था।

भूत०। खैर तो अब मालूम हुआ कि दलीपशाह के सिर में भी खुजलाहट होने लगी।

रामदास०। बात तो ऐसी ही है, आपका वगली दुश्मन ठीक नहीं, उससे होशियार रहना चाहिये।

भूत०। बेशक वह बड़ा ही दुष्ट है, आश्चर्य नहीं कि वही भोलासिंह बन कर मेरे पास आया हो।

रामदास०। हो सकता है वही आया हो।

भूत०। खैर उससे समझ लिया जायगा। अच्छा यह बताओ कि कुछ इन्द्रदेव का हाल भी तुम्हें मालूम हुआ या नहीं ? मुझे शक होता है कि इन्द्रदेव उन दोनों की मदद पर हैं, ताज्जुब नहीं कि वहाँ वे भी जाते हों।

राम०। इन्द्रदेव को तो मैंने वहाँ नही देखा और न उनके विषय में कुछ सुना, मगर वे तो आपके मित्र हैं फिर आपके विरुद्ध क्यों कोइ कार्रवाई करेंगे ?

भूत० । हाँ मैं भी यही ख्याल करता हू, खैर अब और बताओ क्या क्या. ....

रामदास०। प्रभाकरसिंह मेरे सामने ही वहाँ पहुंच गये थे मगर मैं उनके विषय में कुछ विशेष हाल न जान सका क्योंकि और ज्यादे दिन वहाँ रहने की हिम्मत न पडी । मुझे मालूम हो गया कि अब अगर और यहा रहूगा तो मेरा भेद खुल जायगा क्यो के दलीपशाह ने दो तीन दफे मुझे जाच की निगाह से देखा, अस्तु लाचार हो मै बहाना करके एक लौडी के साथ जो सुरग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना जानती थी घाटी के बाहर निकल आया ।

भूत० । तुम्हें सुरंग का दर्वाजा खोलने और बन्द करने की तर्कीब मालूम हुई या नहीं ?

रामदास० । नही लेकिन अगर दो चार दिन और वहाँ रहता तो शायद मालूम हो जाती ।

इतने ही में पानी बरसने लग गया और हवा में भी तेजी आ गई ।

रामदास० । अब यहाँ से उठना चाहिये ।

भूत० । हा चलो किसी आड की जगह में चल कर आराम करें । मेरी राय मे तो अब इस घाटी में रहना मुनासिब न होगा. और साथ ही अब भविष्य के लिये बचे हुए आदमियो को आपुस मे कोई इशारा कायम कर लेना चाहिये जिसे मुलाकात होने पर हम लोग जांच के ख्याल से बरता करें, जिसमे फिर कभी ऐसा धोखा न हो जैसा भोलासिंह के विषय में हुआ है । तुम्हारा इशारा अर्थात् एक आंख बन्द करके प्रणाम करना तो बहुत ठीक है, तुम्हारे विषय में किसी तरह का धोखा नही हो सकता ।

रामदास० । बहुत मुनासिब होगा, अब यह सोचना चाहिये कि हम लोग अपना डेरा कहाँ कायम करेंगे ।

भूत० । तुम ही बताओ ?

रामदास० । मेरी राय में तो लामाघाटी उत्तम होगी ।*

भून० ।-खूब कहा, इस राय को मैं पसन्द करता हू !

इतना कह के भूतनाथ ने पुन उस औरत की गठडी बाधी जिसे रामदास ले आया था और अपनी पीठ पर लाद यहा से रवाना हुआ। रामदास भी उसके पीछे पीछे चल पडा।

ग्यारहवां बयान

भूतनाथ के हाथ से छुटकारा पाकर प्रभाकरसिंह अपनी स्त्री से मिलने के लिये उस घाटी में चले गये जिसमें कला और बिमला रहती थी। सध्या का समय था जब वे उस घाटी में पहुँच कर कला बिमला और इन्दुमति से मिले। उस समय वे तीनो बगले के आगे सुन्दर मैदान में पत्थर की चट्टानों पर बैठी आपुस में बातें कर रही थी। प्रभाकरसिंह को देख कर वे तीनों बहुत प्रसन्न हुई, कई कदम आगे बढ़ कर उनका इस्तकबाल किया तथा उसी जगह ला कर अपने पास बैठाया जहा वे सब बैठी हुई थी।

बिमला० । मैं भूतनाथ के हाथ से छुट्टी मिलने पर आपको मुबारकबाद देती हू । वास्तव में इन्द्रदेवजी ने इस विषय में बडी चालाकी की नही तो हम लोगों से गहरी भूल हो गई थी कि भूतनाथ की घाटी का रास्ता बन्द कर दिया था। उन्होंने साधू बन कर भूतनाथ को ऐसा धोखा दिया कि वह जन्म भर याद रक्खेगा।

प्रभा० । बेशक ऐसी ही बात है, मुझे अभी थोडी देर हुई है यहा आते समय इन्द्रदेवजी रास्ते में मिले थे जो तुम्हारे पास हो कर जा रहे थे, उन्होंने सब हाल मुझसे कहा था और उस समय भी वे उसी तरह साधू महात्मा बने हुए थे।

बिमला० । जी हा, अब वे बराबर उसी सूरत में यहा आया करेंगे, उनका खयाल है कि असली सूरत में आने जाने से कभी न कभी भूतनाथ

---

* लामाघाटी का जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति में आ चुका है।

को जरूर पता लग जायगा और भूतनाथ उनसे खटक जायगा क्योंकि वह बड़ा ही चांगला है।

प्रभा०। उनका खयाल बहुत ही ठीक है, मुझसे भी ऐसा ही कहते थे। उन्होंने मुझसे यह भी पूछा था कि अब तुम्हारा क्या इरादा है, भूतनाथ का पीछा करोगे या नहीं'? इसके जवाब में मैंने कहा कि 'भूतनाथ का पीछा करने की बनिस्बत मैं नौगढ़ के राजा से मिल कर चुनारगढ़ पर चढ़ाई करना अच्छा समझता हूं क्योंकि राजा शिवदत्त से बदला लिये बिना मेरा जी ठिकाने न होगा और इस काम को मैं सब से बढ़ कर समझता हूं। इन्द्रदेवजी ने मेरी यह बात स्वीकार कर ली और इस विषय में जो जो बातें मैंने सोची थी उसे भी पसन्द किया।

इन्दु०। तो क्या अब आप नौगढ़ जाकर चुनार की लड़ाई में शरीक होंगे!

प्रभा०। हां मैं जरूर ऐसा ही करूंगा, आजकल चन्द्रकान्ता की बदौलत वीरेन्द्रसिंह से और शिवदत्त से खूब खिंचाखिंची हो रही है, मेरे लिए इससे बढ़ कर और कौन सा मौका मिलेगा!

विमला०। आप स्वयम् फौज तैयार करके चुनार पर चढ़ाई कर सकते हैं। इस काम में मैं आपकी मदद करूंगी। वे सब अशर्फियां जो भूतनाथ को दिखाई गई थी और पुनः ले ली गईं मैं आपको दे सकती हूं क्योंकि इन्द्रदेवजी ने वे सब मुझे दे दी हैं। आप जानते ही हैं कि इस घाटी से भूतनाथ की घाटी में जाने लिए कई रास्ते हैं, इसी तरह उस खजाने वाली कोठरी में भी जाने के लिए एक रास्ता यहां से है और इसी रास्ते से हमलोग उन अशर्फियों को उठा लाये थे।

प्रभा०। मुझे मालूम है, यह हाल इन्द्रदेवजी से सुन चुका हूं मगर चुनार के विषय में मैं इस राय को पसन्द नहीं करता और न इस मामले में किसी से विशेष मदद ही लूंगा। हां मेरे दोस्त गुलाबसिंह जरूर मेरा साथ देंगे, मगर सुना है कि वे इस समय दलीपशाह के साथ कहीं गये हैं और दलीपशाह भी सुबह शाम में यहां आने वाले हैं।

विमला० । भोलासिंह की सूरत बन कर दलीपशाह जब से गए हैं तब से पुन मुझसे नही मिले ।

प्रभा० । क्या हुआ अगर नही मिले तो, इन्द्रदेवजी ने मुझसे कहा है कि वे कल तक यहा आवेंगे ।

विमला० । मालूम होता है कि आपने इन्द्रदेवजी से अपने बारे में सब बातें तै कर ली हैं ।

प्रभा० । हाँ जो कुछ मुझे करना है कम से कम उसके विषय में तो मैंने सभी बातें तै कर ली हैं ।

विमला० । तो आप जरूर नौगढ जायगे ?

प्रभा० । जरूर ।

विमला० । दूसरे ढ ग से बदला नही लेंगे ?

प्रभा० । नही

इन्दु० । तब तक मैं कहा रहू गी ?

प्रभा० । तुम्हारे बारे में यह निश्चय हुआ है कि तुम्हें मैं तब तक के लिए जमानिया में राजा साहब के यहा रख दू, क्योंकि इस समय वे ही मेरे बडे और बुजुर्ग जो कुछ हैं सो हैं ।

विमला०। (चौंक कर) मगर ऐसा करने से तो मेरा भेद खुल जायगा !

प्रभा० । तुम्हार भेद क्यों खुलेगा ? मैं इन्द्रदेवजी से वादा कर चुका हू कि इन सब बातो का वहा कभी जिक्र तक न करूगा । मेरी जुबानी तुम्हारा हाल उन्हें कभी मालूम न होगा, इन्दु को भी मैं ऐसा ही करने के लिए ताकीद करू गा और तुम भी अच्छी तरह समझा देना । क्या मैं नहीं समझता कि तुम्हारा भेद खुल जाने से आपुस में कई आदमियों की खटपट हो जायगी और बेदाग दोस्ती तथा मुहब्बत में बट्टा लग जायगा ।

विमला० । अगर भूतनाथ किसी तरह इन्दु को वहाँ देख ले तो क्या होगा, क्योंकि वह अकसर जमानिया जाया करता है ?

प्रभा० । तब क्या होगा ? भूतनाथ अपने मुह से इस सब बातो का

जिक्र कदापि न करेगा।

विमला०। मगर दुश्मनी तो जरूर करेगा, क्योंकि उसे इस बात का डर हो जायगा कि कहीं इन्दु इन सब बातों का भेद किसी से खोल न दे।

प्रभा०। एक तो वह जमानिया विशेष जाता ही नहीं है, दूसरे अगर कभी गया भी तो महल के अन्दर उसकी गुजर नहीं होती, तीसरे अगर वह किसी तरह इन्दु को देख भी लेगा तो वहां कुछ गड़बड़ी करने की उसको हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। फिर इसके अतिरिक्त और मैं कर ही क्या सकता हूं, मेरे लिये दूसरा कौन सा घर है? हां अपने साथ नौगढ़ ले चलूं तो हो सकता है, वहां भूतनाथ के जाने का डर नहीं है।

इन्दु०। मेरा ख्याल तो यही है कि जमानिया की बनिस्बत नौगढ़ में मैं ज्यादा निडर रहूंगी।

विमला०। तो आप इन्हें इसी जगह हमारे पास क्यों नहीं छोड़ जाते।

प्रभा०। यहां तुम लोग स्वयम् ही तरद्दुद में पड़ी हुई हो, इसके सबब से और भी.....

विमला०। नहीं नहीं, इसके सबब से किसी तरह की तकलीफ मुझे नहीं हो सकती है, और फिर अगर मैं ज्यादे बखेड़ा देखूंगी तो इन्हें इन्द्रदेवजी के सुपुर्द कर दूंगी वे अपने घर ले जायगे।

प्रभा०। यह सबसे ठीक है, इन्द्रदेवजी का घर हमारे लिए सब से अच्छा है, और उन्होंने ऐसा कहा भी था कि अगर तुम्हारी राय हो तो इन्दु को मेरे घर पर रख सकते हो।

विमला०। तो बस यही ठीक रखिये और इन्हें मेरे पास छोड़ जाइये।

प्रभाकरसिंह से और कला विमला तथा इन्दुमति से इस विषय पर बड़ी देर तक बहस होता रही और अन्त में लाचार होकर प्रभाकरसिंह को विमला की बात माननी पड़ी अर्थात् इन्दुमति को विमला ही के पास छोड़ देना पड़ा।

रात भर प्रभाकरसिंह वहां रहे और प्रातःकाल सभों से मिल जुल कर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

विमला० । भोलासिंह की सूरत बन कर दलीपशाह जब से गए हैं तब से पुन मुझसे नहीं मिले ।

प्रभा० । क्या हुआ अगर नहीं मिले तो, इन्द्रदेवजी ने मुझसे कहा है कि वे कल तक यहा आवेंगे ।

विमला० । मालूम होता है कि आपने इन्द्रदेवजी से अपने बारे में सब बातें तै कर ली हैं ।

प्रभा० । हाँ जो कुछ मुझे करना है कम से कम उसके विषय में तो मैंने सभी बातें तै कर ली हैं ।

विमला० । तो आप जरूर नौगढ जायगे ?

प्रभा० । जरूर ।

विमला० । दूसरे ढ ग से बदला नही लेंगे ?

प्रभा० । नही

इन्दु० । तब तक मैं कहां रहू गी ?

प्रभा० । तुम्हारे बारे में यह निश्चय हुआ है कि तुम्हें मैं तब तक के लिए जमानिया में राजा साहब के यहा रख दू, क्योंकि इस समय वे ही मेरे बडे और बुजुर्ग जो कुछ हैं सो हैं ।

विमला०। (चौंक कर) मगर ऐसा करने से तो मेरा भेद खुल जायगा !

प्रभा० । तुम्हार भेद क्यों खुलेगा ? मैं इन्द्रदेवजी से वादा कर चुका हू कि इन सब बातो का वहा कभी जिक्र तक न करूगा । मेरी जुबानी तुम्हारा हाल उन्हें कभी मालूम न होगा, इन्दु को भी मैं ऐसा ही करने के लिए ताकीद करू गा और तुम भी अच्छी तरह समझा देना । क्या मैं नही समझता कि तुम्हारा भेद खुल जाने से आपुस में कई आदमियों को खटपट हो जायगी और बेदाग दोस्ती तथा मुहब्बत में बट्टा लग जायगा ।

विमला० । अगर भूतनाथ किसी तरह इन्दु को वहाँ देख ले तो क्या होगा, क्योंकि वह अक्सर जमानिया जाया करता है ?

प्रभा० । तब क्या होगा ? भूतनाथ अपने मुह से इन सब बातो का

जिक्र कदापि न करेगा।

विमला०। मगर दुश्मनी तो जरूर करेगा, क्योंकि उसे इस बात का डर हो जायगा कि कहीं इन्दु इन सब बातों का भेद किसी से खोल न दे।

प्रभा०। एक तो वह जमानिया विशेष जाता ही नहीं है, दूसरे अगर कभी गया भी तो महल के अन्दर उसकी गुजर नहीं होती, तीसरे अगर वह किसी तरह इन्दु को देख भी लेगा तो वहां कुछ गड़बड़ी करने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। फिर इसके अतिरिक्त और मैं कर ही क्या सकता हूं, मेरे लिये दूसरा कौन सा घर है? हां अपने साथ नौगढ़ ले चलूं तो हो सकता है, वहां भूतनाथ के जाने का डर नहीं है।

इन्दु०। मेरा ख्याल तो यही है कि जमानिया की बनिस्बत नौगढ़ में मैं ज्यादा निडर रहूंगी।

विमला०। तो आप इन्हें इसी जगह हमारे पास क्यों नहीं छोड़ जाते।

प्रभा०। यहां तुम लोग स्वयम् ही तरद्दुद में पड़ी हुई हो, इसके सबब से और भी. . .

विमला०। नहीं नहीं, इसके सबब से किसी तरह की तकलीफ मुझे नहीं हो सकती है, और फिर अगर मैं ज्यादे बखेड़ा देखूंगी तो इन्हें इन्द्रदेवजी के सुपुर्द कर दूंगी वे अपने घर ले जायगे।

प्रभा०। यह सबसे ठीक है, इन्द्रदेवजी का घर हमारे लिए सब से अच्छा है, और उन्होंने ऐसा कहा भी था कि अगर तुम्हारी राय हो तो इन्दु को मेरे घर पर रख सकते हो।

विमला०। तो बस यही ठीक रखिये और इन्हें मेरे पास छोड़ जाइये।

प्रभाकरसिंह ने और बात विमला तथा इन्दुमति से इस विषय पर बड़ी देर तक बहस होती रही और अन्त में लाचार होकर प्रभाकरसिंह को विमला की बात मानना पड़ी अर्थात् इन्दुमति को विमला ही के पास छोड़ देना पड़ा।

रात भर प्रभाकरसिंह वहीं रहे और प्रातःकाल सभों से मिल जुल कर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए।

बारहवां बयान

गुलाबसिंह को साथ लेकर प्रभाकरसिंह नौगढ़ चले गये। वहा उन्हें, फौज में एक ऊचे दर्जे की नौकरी मिल गई और चुनार पर चढाई होने से उन्होने अपने दिल का हौसला खूब ही निकाला। वे मुद्दत तक लौट कर इन्दुमति के पास न आये और न इस तरफ का कुछ हाल ही उन्हें मालूम हुआ।

जब चुनारगढ फतह हो गया, राजा शिवदत्त उदासीन हो कर भाग गए, चन्द्रकान्ता की शादी हो गई और चुनार की गद्दी पा राजा बीरेन्द्र-सिंह बैठ गये, तब बहुत दिनों के बाद प्रभाकरसिंह को इस बात का मौका मिला कि वे जाकर इन्दुमति से मुलाकात करें।

प्रभाकरसिंह के दिल में तरह तरह का खुटका पैदा हो रहा था और यह जानने के लिए वे बहुत ही उत्सुक हो रहे थे कि उनके पीछे कला, विमला और इन्दुमति पर क्या क्या बीती, अस्तु वे गुलाबसिंह को साथ लिए हुए बहुत तेजी के साथ कूच और मुकाम करते एक दिन दोपहर के समय उस पहाडी के पास पहुचे जिसके अन्दर वह सुन्दर घाटी थी जिसमें कला और विमला रहती थी। वे सोच रहे थे कि अब थोडी ही देर में उन लोगो से मुलाकात हुआ चाहती है जिनसे मिलने के लिए जो बेचैन हो रहा है।

आज कई वर्ष के बाद प्रभाकरसिंह इस घाटी के अन्दर पैर रक्खेंगे। आज पहिले की तरह गर्मी या बरसात का मौसम नही है, बल्कि जाडे के दिनो में प्रभाकरसिंह उस घाटी के अन्दर जा रहे हैं, देखा चाहिये वहा का मौसम कैसा दिखाई देता है।

सुरग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना उन्हें बखूबी मालूम था, बल्कि इस घाटी के विषय में वे और भी बहुत कुछ जान चुके थे अस्तु गुलाबसिंह को बाहर ही छोड कर वे सुरग के अन्दर घुसे और दर्वाजा खोलते और बन्द करते हुए उस घाटी के अन्दर चले गये। मगर उन्हें पहुँ-चने के साथ ही वहा कुछ उदासी सी मालूम हुई, ताज्जुब के साथ चारो तरफ

देखते हुए बंगले के अन्दर गये और वहा बिल्कुल ही सन्नाटा पाया। जिस बंगले को ये पहिले मजा हुआ देख चुके थे और जिसके अन्दर पहिले तरह तरह के सामान मौजूद थे आज वह बंगला बिल्कुल ही खाली दिखाई दे रहा है। सजावट की बात तो दूर रही वहा एक चटाई बैठने के लिये और एक लुटिया पानी पीने के लिए भी मौजूद न थी। यही हाल वहा की आलमारियो का भी था जिनमें से एक भी पहिले खाली नही दिखाई देती थी। आज वहा हर तरह से सन्नाटा छाया हुआ है और ऐसा मालूम होता है कि वर्षो से इस बगले के अन्दर किसी आदमी ने पैर नही रक्खा।

इस बगले में से एक रास्ता उस मकान के अन्दर जाने के लिए था जिसमे कला और बिमला खास तौर पर रहती थी अथवा जिस मकान मे पहिले पहिल इन्दुमति की बेहोशी दूर हुई थी। प्रभाकरसिंह हैरान और परेशान उस मकान में पहुचे मगर देखा कि वहा की उदासी उस बगले से भी ज्यादे बढी चढी है और एक तिनका भी वहां दिखाई नही देता।

"यह क्या मामला है, यहा ऐसा सन्नाटा क्यो छाया हुआ है? कला, बिमला और इन्दुमति कहाँ चली गईं? अगर कही किसी मालूम वाले के घर में चली गईं तो यहा इस तरह उजाड कर जाने की क्या जरूरत थी? कही ऐसा तो नही हुआ कि वे तीनो भूतनाथ के कब्जे में पड गई हों और भूतनाथ ने ही इस मकान को ऐसा उजाड बना दिया हो!" इन सब बातों को सोचते हुए प्रभाकरसिंह उदास और दुःखित चित्त से बहुत देर तक चारो तरफ घूमते रहे और तब यह निश्चय कर वहां से चल पडे कि अब भूतनाथ की घाटी का हाल मालूम करना चाहिये और देखना चाहिये कि वह किस अवस्था में है।

पहिले प्रभाकरसिंह उस सुरग में घुसे जिसमें से उन्होने पहिले दिन भूतनाथ की घाटी में इन्दुमति को एक अपनी ही सूरत वाले के साथ टहलते हुए देखा था। सुरंग के अन्त में पहुच सूराख की राह से उन्होंने देखा कि भूतनाथ की घाटी में भी बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है अर्थात् यह नहीं

जान पडता कि इसमें कोई आदमी रहता है। कुछ देर तक देखने और गौर करने के बाद प्रभाकरसिंह सुरग के बाहर निकल आये। अब उनको हिम्मत न पडी कि एक सायत के लिए भी उस घाटी के अन्दर ठहरें। उदास और दु खित चित्त से सोचते और गौर करते हुए वे वहां से रवाना हुए और सुरग की राह से बाहर निकल कर सन्ध्या होने के पहिले ही उस ठिकाने पहुँचे जहा गुलाबसिंह को छोड़ गये थे। दूर ही से प्रभाकरसिंह की सूरत और चाल देख कर गुलाबसिंह समझ गए कि कुछ दाल में काला है, रग अच्छा नही दिखाई देता। जब गुलाबसिंह के पास प्रभाकरसिंह पहुँचे तो सब हाल बयान किया और उदास होकर उनके पास बैठ गये। गुलाबसिंह को बडा ही ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

प्रभाकरसिंह के दिल पर क्या गुजरी होगी इसे पाठक स्वय समझ सकते है। उनके लिये दुनिया ही उजाड हो गई थी और चुनारगढ की लडाई में जो कुछ बहादुरी कर आये थे वह सब व्यर्थ जान पडती थी। दोनों बहादुरों ने मुश्किल से उस जगल में रात बिताई और सवेरा होने पर अच्छी तरह निश्चय करने के लिए भूतनाथ की घाटी में जाने का इरादा किया। दोनों आदमी वहा से रवाना हुए और कुछ देर के बाद उस सुरग के मुहाने पर जा पहुँचे जिस राह से भूतनाथ अपनी घाटी में आया जाया करता था। रास्ते तथा दर्वाजे का हाल प्रभाकरसिंह से कुछ छिपा न था अस्तु वे दोनो शीघ्र ही घाटी के अन्दर जा पहुचे और देखा कि वास्तव में यहा भी सब उजाड पडा हुआ है और लक्षणो से जाना जाता था कि यहा वर्षो से कोई नही आया और न कोई रहता है। अब कहा चलना चाहिये।

तरह तरह की बातें सोचते विचारते प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह घाटी के बाहर निकल आये और एक पेड के नीचे बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगे —

गुलाब०। आश्चर्य की बात तो यह है कि दोनों घाटिया एक दम से खाली हो गई। अब रणधीरसिंहजी के यहा चल कर पता लगाना चाहिए

कि भूतनाथ का क्या हाल है, क्योंकि असल में भूतनाथ ही इस बखेडे की जड है और तज्जुब नही कि वे तीनों औरतें भूतनाथ के कब्जे में आ गई हो। वहा चलने से कुछ न कुछ पता जरूर लग जायगा।

प्रभा०। रणधीरसिंह के यहाँ तो मैं किसी तरह नही जा सकता। यद्यपि वे मेरे रिश्तेदार है मगर इस समय में उनके दामाद (शिवदत्त) से लड कर आ रहा हू, इस लिये मुझे देखते ही वे आग हो जायगे क्योंकि उन्हें अपने दामाद और अपनी लडकी की बुरी अवस्था पर बहुत दुःख हो रहा होगा।

गुलाब०। ठीक है, ऐसा जरूर होगा, मगर मैं यह तो नही कहता कि आप सीधे रणधीरसिंह के पास चले चलिये, मेरा मतलब यह है कि हम लोग सौदागरो की सूरत में वहा जाकर किसी सराय मे डेरा डालें तथा ऊपर ही ऊपर लोगो से मिलजुल कर भूतनाथ का पता लगावें और जो कुछ हाल हो मालूम करें।

प्रभा०। हा यह हो सकता है, अच्छा तो अब यहा ठहरना व्यर्थ है, चलो उठो, मैं समझता हू कि इन्द्रदेवजी से मुलाकात किये बिना दिल को तसल्ली न होगी।

गुलाब०। जरूर, वहाँ भी चलना ही होगा, मगर पहिले भूतनाथ की खबर लेनी चाहिये।

इतना कह कर गुलाबसिंह उठ खडे हुए, प्रभाकरसिंह ने भी उनका साथ दिया और दोनो आदमी मिर्जापुर की तरफ रवाना हुए, इस बात पर कुछ भी खयाल न किया कि समय कौन है और रास्ता कैसा कठिन है।

तेरहवां बयान

प्रेमी पाठक महाशय, अब तक भूतनाथ के विषय में जो कुछ हम लिख आये है उसे आप भूतनाथ के जीवनी की भूमिका ही समझें, भूतनाथ का मजेदार हाल जो अद्भुत घटनाओं से भरा हुआ है पढने के लिये अभी आप थोडा सा और सब्र कीजिए, अब उसका अनूठा किस्सा आया ही चाहता है।

यद्यपि चन्द्रकान्ता सन्तति में प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का नाम नहीं आया है मगर भूतनाथ की जीवनी का इन दोनों व्यक्तियों से बहुत ही घना सम्बन्ध है और भूतनाथ की बरबादी या ढिठाई का जमाना शुरू होने के बहुत दिन पहिले ही से भूतनाथ को इन दोनों से वास्ता पड़ चुका था और इन्हीं दोनों के सबब से इन्द्रदेव और दलीपशाह के ऊपर भी भूतनाथ की निगाह पड चुकी थी इसलिये हमें सबसे पहिले प्रभाकरसिंह और इन्दुमति का परिचय देना पड़ा, तथापि आपको आगे चल कर प्रभाकरसिंह और इन्दुमति की अवस्था पर आश्चर्य करना पड़ेगा।

यद्यपि इन्दुमति का पता न लगने से प्रभाकरसिंह को बहुत दुःख हुआ परन्तु इन्द्रदेव का खयाल उन्हें ढाढ़स दे रहा था। वे समझते थे कि इन्दु-मति अपनी दोनों बहिनों के साथ जरूर इन्द्रदेव के यहां चली गई होगी, अस्तु सब से पहिले इन्द्रदेव ही के यहां चल कर उसका पता लगाना चाहिए, इस बात का निश्चय कर गुलाबसिंह को साथ लिए हुए प्रभाकरसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए रवाना हुए।

जमना और सरस्वती की जुबानी प्रभाकरसिंह को मालूम हो चुका था कि इन्द्रदेव वास्तव में किसी तिलिस्म के दारोगा हैं परन्तु इन्द्रदेव ने अपने को ऐसा मशहूर नहीं किया था और न साधारण लोगों को उनके विषय में ऐसा खयाल ही था। उनके मुलाकातियों में से भी बहुत कम आदमियों को यह बात मालूम थी कि इन्द्रदेव किसी तिलिस्म के दारोगा हैं और यदि कोई इस बात को जानता भी था तो उसे तिलिस्म के विषय में कुछ ज्ञान ही न था। अगर कोई इन्द्रदेव से तिलिस्म के विषय में कुछ पूछता भी तो इन्द्रदेव समझा देते कि यह सब दिल्लगी की बातें हैं। हां, दो चार आदमियों को इस बात का पूरा पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव किसी भारी तिलिस्म के दारोगा हैं, मगर अपनी जबान से उन्हें भी पूरा पूरा पता नहीं लगने देते थे। इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव का रहन सहन ऐसा था कि किसी को उनके विषय में जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती

थी और न वे विशेष दुनियादारी के मामले में ही पड़ते थे, वह वास्तव में साधू और महात्मा की तरह अपनी जिन्दगी बिताते थे मगर ढंग उनका अमीराना था। मतलब यह है कि सर्वसाधारण को इन्द्रदेव के विषय में पूरा पूरा ज्ञान नहीं था, हाँ इतना जरूर मशहूर था कि इन्द्रदेव ऊँचे दर्जे के ऐयार हैं और उनके बुजुर्गों ने ऐयारी के फन में बहुत दौलत पैदा की है जिसकी बदौलत आज तक इन्द्रदेव बहुत रईस और अमीर बने हुए हैं।

यह सब कुछ था सही परन्तु इन्द्रदेव के दो चार दोस्त ऐसे भी थे जिन्हें इन्द्रदेव का पूरा पूरा हाल मालूम था। मगर इन्द्रदेव की तरह वे लोग भी इस बात को मन्त्र की भांति छिपाये रहते थे।

इन्द्रदेव का रहने का स्थान कैसा था और वहां जाने के लिये किसी कैसी कठिनाइयां उठानी पड़ती थी इसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है यहां पुन लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है, हाँ इतना कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि जिन दिनों का हाल इस जगह लिखा जा रहा है उन दिनों इन्द्रदेव निश्चित रूप से उस तिलिस्मी घाटी ही में नहीं रहा करते थे बल्कि अपने लिये उन्होंने एक मकान तिलिस्मी घाटी के बाहर उसके पास ही एक पहाड़ी पर बनवाया हुआ था जिसका नाम "कैलाश" रक्खा और इसी मकान में वह ज्यादे रहा करते थे, हाँ जब जमाने के हाथों से वह ज्यादे सताये गये और उन्होंने उदास होकर दुनिया ही को तुच्छ समझ लिया तब उन्होंने बाहर का रहना एक दम से बन्द कर दिया जैसा कि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है।

प्रभाकरसिंह जब इन्द्रदेव से मिलने गये तब उसी 'कैलाश भवन' में मुलाकात हुई। उन दिनों इन्द्रदेव बीमार थे, यद्यपि उनकी बीमारी ऐसी न थी कि चारपाई पर पड़े रहते परन्तु घर के बाहर निकलने योग्य भी वह न थे।

प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह से मिल कर इन्द्रदेव ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और बड़ी खातिरदारी से इन दोनों को अपने यहां रक्खा। प्रभाकरसिंह और गुलाबसिंह ने भी इन्द्रदेव की बीमारी पर खेद प्रगट किया और उसी

के साथ अपने आने का सबब भी प्रभाकरसिंह ने बयान किया जिसे सुन इन्द्रदेव की आखें डबडबा आई और एकान्त होने पर उन दोनो में इस तरह बातचीत होने लगी, इस बातचीत में गुलाबसिंह शरीक नही थे ।

इन्द्र० । प्रभाकरसिंह, तुम्हें यह सुन कर बहुत दु ख होगा कि तुम्हारी स्त्री इन्दुमति हमारे यहा नही है तथा जमना और सरस्वतो का भी कुछ पता नही लगता कि वे दोनों कहाँ गायब हो गई । अफसोस, उन दोनो ने मेरी शिक्षा पर कुछ ध्यान नही दिया और अपनी बेवकूफी से अपने को थोडे ही दिनों में जाहिर कर दिया, अगर वे मेरी आज्ञानुसार अपने को छिपाये रहती और धीरे धीरे कार्य करती तो धोखा न उठाती ।

प्रभा० । (दु खित चित्त से) नि सन्देह ऐसा ही है, उस घाटी में पहिले जब मुझसे मुलाकात हुई थी तब उन्होने कहा था कि ऐसे स्थान में रह कर भी हम लोग अपने को हर वक्त छिपाये रहती हैं, यहा तक कि अपनी लौंडियो को भी अपनी असली सूरत नही दिखाती.

इन्द्र० । (बात काट के) बेशक ऐसी ही बात थी और मैंने ऐसा ही प्रबन्ध कर दिया था कि उनके साथ रहने वाली लौंडियो को भी इस बात का ज्ञान न था कि ये दोनो वास्तव मे जमना सरस्वती हैं । वे सब उन दोनो को कला और विमला ही जानती थी मगर इस बात को जमना ने बहुत जल्द चौपट कर दिया और लौंडियो पर भरोसा करके शीघ्र ही अपने को प्रगट कर दिया । अगर लौंडियों को यह भेद मालूम न हो गया होता तो भूतनाथ को समझ में खाक न आता कि वे दोनो कौन हैं और क्या चाहती हैं।

प्रभा० । आपका कहना बहुत ठीक है ।

इन्द्र० । बडो ने सच कहा है कि स्त्रियो के विचार में स्थिरता नही होती और वे किसी भेद को ज्यादे दिनो तक छिपा नही सकती, कइयो का कथन तो यह है कि स्त्रियो की बुद्धि प्रलय करने वाली होती है, और मैं भी इसी बात का पक्षपाती हू ।

प्रभा० । अफसोस करने के सिवाय और मैं क्या कहू, इन बखेडों में

मैं तो व्यर्थ ही पीसा गया, मेरे हौसले सब मटियामेट हो गये और मैं कहीं का भी न रहा, मैं क्या कहूं कि कैसी उम्मीदें अपने साथ लेकर आपके पास आया था, मगर... ....

इन्द्रदेव० । प्रभाकरसिंह, तुम एक दम से हताश न हो जाओ और उद्योग का पल्ला मत छोड़ो। क्या कहूं, मैं बहुत दिनों से बीमार पड़ा हुआ हूं और इस योग्य नहीं कि स्वयम् कुछ कर सकूं तथापि मैंने अपने कई आदमी उन सभों की खोज में दौड़ा रक्खे हैं। दलीपशाह का भी बहुत दिनों से पता नहीं है, वे भी उन सभों के साथ ही गायब हैं।

प्रभा० । और भूतनाथ ?

इन्द्र० । भूतनाथ अपने मालिक के यहां स्थिर भाव से बैठा हुआ है। मुद्दत से वह कहीं आता जाता नहीं है, रणधीरसिंहजी को जो कुछ उसकी तरफ से रंज हो गया था उसे भी भूतनाथ ने ठीक कर लिया। अब तो ऐसा मालूम होता है कि मानो भूतनाथ ने कभी रंग बदला ही न था, इधर साल भर में चार पांच दफे भूतनाथ मुझसे मिलने के लिये आया था मगर जमना और सरस्वती के विषय में न तो मैंने ही कुछ जिक्र किया और न उसने ही कुछ छेड़ा, यद्यपि मालूम होता है कि भूतनाथ उसी विषय में छेड़छाड़ करने के लिये आया था मगर मैंने कुछ चर्चा उठाना मुनासिब न समझा।

प्रभा० । अस्तु अब क्या करना चाहिये सो कहिये। मैं तो आपका बहुत भरोसा रख के यहां आया था परन्तु यह जान कर मुझे आश्चर्य हुआ कि आपने जमना सरस्वती के लिये कुछ भी नहीं किया।

इन्द्र० । ऐसा मत कहो, मैंने उस नतो के लिये बहुत उद्योग किया मगर लाचार हूं कि उद्योग का कोई अच्छा नतीजा न निकला, हां यह जरूर मानना पड़ेगा कि मैं स्वयम् अपने हाथ पैर से कुछ न कर सका, इसका सबसे बड़ा सबब तो यह है कि मैं इस मामले में अपने को प्रगट करना उचित नहीं समझता, दूसरे बीमारी से भी लाचार हो रहा हूं। खैर जो कुछ होना था सो तो हो गया। अब तुम आ गये हो तो उद्योग करो। ईश्वर

तुम्हारी सहायता करेगा और मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए तैयार हू । मेरी यह प्रबल इच्छा है कि किसी तरह उन तीनो का पता लगे, यदि मुझे इस बात का निश्चय हो जायगा कि उन तीनों से भूतनाथ ने कोई अनुचित व्यवहार किया है तो मैं निःसन्देह भूतनाथ से बदला लूंगा मगर जब तक इस बात का निश्चय न होगा मैं कदापि भूतनाथ से सम्बन्ध न तोड़ूंगा, हां तुम्हें हर तरह से मदद बराबर देता रहूंगा।

प्रभा० । अच्छा तो फिर मुझे शीघ्र बताइये कि अब क्या करना चाहिये, अब मुझमें बैठे रहने की सामर्थ्य नही है ।

इन्द्र० । जल्दी न करो, मैं सोच विचार कर कल तुमसे कहूंगा कि अब क्या करना चाहिए, एक दिन के लिये और सब्र करो ।

प्रभा० । जो आज्ञा, परन्तु . .

लाचार होकर प्रभाकरसिंह को इन्द्रदेव की बात माननी पडी परन्तु इस बात का उनको आश्चर्य बना ही रहा कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती के लिए इतनी सुस्ती क्यों की और वास्तव में जमना और सरस्वती गायब हो गई हैं या इसमें भी कोई भेद है ।

चौदहवां बयान

अब हम कुछ हाल जमना सरस्वती और इन्दुमति का बयान करना उचित समझते हैं । जब महाराज शिवदत्त से बदला लेने का विचार करके प्रभाकरसिंह नौगढ की तरफ रवाना हो गये तो उनके चले जाने के बाद बहुत दिनों तक जमना और सरस्वती को कोई ऐसा मौका हाथ न आया कि भूतनाथ से कुछ छेडछाड करें और न भूतनाथ ही ने उनके साथ कोई बदसलूकी की, हां यह जरूर होता रहा कि जमना और सरस्वती भूतनाथ की घाटी में ताकझांक करके इस बात की बराबर टोह लगाती रही कि भूतनाथ क्या करता है अथवा किस धुन में है ।

थोडे ही दिनों में उन दोनों को मालूम हो गया कि भूतनाथ अब इस

घाटी में नहीं रहता, न मालूम वह कहीं चला गया या उसने जगह बदल दी। बहुत दिनों तक उनकी लौंडिया और ऐयारा इस विषय का पता लगाने के लिए इधर उधर दौड़ती रही मगर सफल मनोरथ न हो सकी। कुछ दिन बीत जाने के बाद यह मालूम हुआ कि भूतनाथ अपने मालिक रणधीरसिंह के यहां चला गया तथा अब बराबर एकाग्रचित्त से उन्हीं का काम किया करता है और उन्हीं के यहां स्थिर भाव से रहता है। यह बात इन दोनों को अच्छी नहीं मालूम हुई और इन दोनों ने समझा कि अब भूतनाथ से बदला लेना कठिन हो गया तथा अब बिना प्रकट भये काम नहीं चलेगा। कई दफे इन दोनों ने सोचा कि रणधीरसिंह के यहां चली जाय, और जो कुछ मामला हो चुका है उसे साफ साफ कह के भूतनाथ को सजा दिलावें, परन्तु इन्द्रदेव ने ऐसा करने से मना किया और समझाया कि अगर तुम वहां चली जाओगी तो रणधीरसिंह मुझसे इस बात के लिए रञ्ज हो जायगे कि मैंने इतने दिनों तक तुम दोनों को छिपा रक्खा और झूठ ही मशहूर कर दिया कि जमना और सरस्वती मर गयीं, साथ ही इसके हमसे और भूतनाथ से भी खुल्लम खुल्ला लड़ाई हो जायगी। केवल इतना ही नहीं बल्कि यह भी सोच रखना चाहिये कि रणधीरसिंह भूतनाथ का कुछ बिगाड़ न सकेंगे, सिवाय इसके कि उसे अपने यहां से निकाल दें, बल्कि ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ रणधीरसिंह से रंज होकर उन्हें भी किसी तरह की तकलीफ पहुंचावे।

इन्द्रदेव का यह विचार भी बहुत ठीक था, इसलिए वे दोनों बहुत दिनों तक चुपचाप बैठी रह गयीं और रणधीरसिंह के यहां भी न गईं।

इसी तरह सोचते विचारते और समय का इन्तजार करते वर्षों बीत गये और इस बीच में जमना सरस्वती और इन्दुमति प्रायः घूमने फिरने के लिए इस घाटी के बाहर निकलती रहीं।

एक दिन माघ के महीने में दोपहर के समय अपनी कई लौंडियों को साथ लिए हुए ये तीनों भेष बदले हुए उस घाटी के बाहर निकलीं और जंगल में चारो तरफ घूम फिर कर दिल बहलाने लगीं। यकायक उनकी निगाह एक

मरे हुए घोडे पर पडी जिस पर अभी तक चारजामा कसा हुआ था। वे सब ताज्जुब में आकर उसके पास गई और गौर से देखने लगी। वह घोडा कई जगहो से जख्मी हो रहा था जिससे गुमान होता था कि किसी लडाई में इसके सवार ने वहादुरी दिखाई और अन्त मे किसी सबब से यह भाग निकला है, सम्भव है कि इसका सवार लडाई मे गिर गया हो। मगर इस बात पर भी विमला का विचार नही जमा, वह यही सोचती थी कि जरूर यह अपने सवार को लेकर भागा है, अस्तु विमला आख फैला कर चारो तरफ इस खयाल से देखने लगी कि शायद इस घोडे की तरह गिरा हुआ कोई आदमी भी कही दिखाई दे जाय।

विमला कला और इन्दुमति घूम घूम कर इस बात का पता लगाने लगी और आखिर थोडी देर मे एक आदमी पर उनकी निगाह पडी। ये सब तेजी के साथ घवडाई हुई उसके पास गई और देखा कि प्रभाकरसिंह वेहोश पडे हुए हैं, उनका कपडा खून से तरवतर हो रहा है और उनके वदन मे कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए हैं तथा सर पर भी एक भारी जख्म लगा हुआ है जिसमें से निकलते हुए खून के छींटे चेहरे पर अच्छी तरह पडे हुए है। लडाई के समय जो तलवार उनके हाथ में थी इस समय भी उसका कब्जा उनके हाथ ही में है।

प्रभाकरसिंह को इस अवस्था मे देखते ही इन्दुमति एक दफे चिल्ला उठी और उसकी आखो में आसू भर आए,परन्तु तुरत ही उसने अपने दिल को सभाल लिया और जमना तथा सरस्वती की तरफ देखा जिनकी आखो से आंसू की धारा वह रही थी और जो वडे गौर से प्रभाकरसिंह के चेहरे पर निगाह जमाये हुए थीं।

इन्दु०। (जमना से) वहिन, तुम इनके चेहरे की तरफ क्या देख रही हो? जो वातें देखने लायक है पहिले उन्हें देखो इसके वाद रोने धोने का खयाल करना।

जमना०। (ताज्जुव से) सो क्या है?

इन्दु० । पहिले तो यह देखो कि इनके पीठ में भी कोई जख्म लगा है या नही जिससे यह मालूम हो कि इन्होने लडाई में पीठ तो नही दिखाई है, इसके बाद इस बात को जाच करो कि इनमें कुछ दम है या नही । अगर इन्होने लडाई में वीरता दिखाई और बहादुरी के साथ प्राण त्याग किया है तो कोई चिन्ता नही, मैं बडी प्रसन्नता से इनके साथ सती होकर अपना कर्तव्य पूरा करूगी, और इनके हाथ की तलवार मुझे विश्वास दिलाती है कि इन्होने लडाई में पीठ नही दिखाई ।

जमना० । मेरा भी यही खयाल है, और वीर पत्नियों के लिए रोना कैसा? उन्हें तो हरदम अपने पति के साथ जाने के लिए तैयार रहना ही चाहिये।

सरस्वती० । (प्रभाकरसिंह की नाक पर हाथ रख कर) जीते हैं । जख्मी होने के सबब से बेहोश हो गये है !!

सरस्वती की बात सुन कर जमना और इन्दुमति ने भी उन्हें अच्छी तरह देखा और निश्चय कर लिया कि प्रभाकरसिंह मरे नही हैं और इलाज करने से बहुत जल्द अच्छे हो जायगे । अब पुनः इन्दुमति की आंखो से आंसू की धारा बहने लगी तथा जमना और सरस्वती ने उसे समझाया और दिलासा दिया । इसके बाद सब कोई मिल जुल कर प्रभाकरसिंह को उठा कर घाटी के अन्दर ले गई और बगले के बाहर दालान में एक सुन्दर चारपाई पर लेटा कर उन्हें होश में लाने का उद्योग करने लगी ।

मुंह पर केवड़ा और वेदमुश्क छिड़कने तथा लखलखा सुंघाने से थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह चैतन्य हो गए और जमना की तरफ देख कर बोले, "मैं कहां हूं ?"

जमना० । आप उस घाटी में हैं जहां हम दोनों बहिनों तथा इन्दुमति से मुलाकात हुई थी ।

प्रभा० । (चारो तरफ देख कर) ठीक है, मगर मैं यहां कैसे आया ?

जमना० । पहले यह बताइये कि अब आपकी तबीयत कैसी है ?

प्रभा० । अब मैं अच्छा हूं होश में हूं और सब कुछ समझ सकता हूं ।

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया !

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहां आपको बेहोश पडे हुए देख कर उठा लाई । उस जगह एक घोडा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोडा हो ।

प्रभा० । बेशक वह मेरा ही घोडा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बडी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उडाये हुए ले आया ।

इन्दु० । क्या वह घोडा लडाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा० । हा, लडाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनो तरफ की फौजें बराबर दिल तोड कर लडती ही रह गई यहा तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुअर वीरेन्द्रसिंह लडते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहां कम्बख्त शिवदत्त खडा हुआ अपने सिपाहियो को लडने के लिए ललकार रहा था । चाद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नही मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोडा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोडे की पीठ पर से लुढ़क कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लडते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनो के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनो हाथो से घोडे का गला थाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) बेशक आपने बड़ी बहादुरी की । घोड़ा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहां से ले भागा ।

प्रभा० । बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोये जायें ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हूं । जख्म मुझे बहुत गहरे नहीं लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहां से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खड़ा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहां से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडियां भी जाने लगीं । उस समय वहां हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊंगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड़ दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ़ आई और अपने

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया !

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहां आपको बेहोश पडे हुए देख कर उठा लाई । उस जगह एक घोडा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोडा हो ।

प्रभा० । बेशक वह मेरा ही घोडा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बडी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उडाये हुए ले आया ।

इन्दु० । क्या वह घोडा लडाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा० । हा, लडाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनो तरफ की फौजें बराबर दिल तोड कर लडती ही रह गई यहां तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिह का सेनापति तथा कुअर वीरेन्द्रसिह लडते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ कम्बख्त शिवदत्त खडा हुआ अपने सिपाहियो को लडने के लिए ललकार रहा था । चाद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तक-लीफ नही मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोडा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोडे की पीठ पर से लुढक कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लडते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनो के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनों हाथो से घोडे का गला थाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) वेशक आपने बडी बहादुरी की । घोडा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये है और इसलिये आपको वहा से ले भागा ।

प्रभा० । वेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपडे उतार कर आपके जख्म धोये जायँ ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मै उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हू । जख्म मुझे बहुत गहरे नही लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पडेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खडा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहा से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडियां भी जाने लगी । उस समय वहा हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये है, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने मे तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊंगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ आई और अपने

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया !

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहा आपको बेहोश पडे हुए देख कर उठा लाई । उस जगह एक घोडा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोडा हो ।

प्रभा० । बेशक वह मेरा ही घोडा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बडी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उडाये हुए ले आया ।

इन्दु० । क्या वह घोडा लडाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा० । हा, लडाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनों तरफ की फौजें बराबर दिल तोड कर लडती ही रह गईं यहां तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुअर वीरेन्द्रसिंह लडते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ कम्बख्त शिवदत्त खडा हुआ अपने सिपाहियो को लडने के लिए ललकार रहा था । चाद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नही मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोडा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोडे की पीठ पर से लुढक कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लडते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनो के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनो हाथो से घोडे का गला थाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) बेशक आपने बड़ी बहादुरी की । घोड़ा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहा से ले भागा ।

प्रभा० । बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोये जायँ ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हू । जख्म मुझे बहुत गहरे नही लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खड़ा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहा से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडियां भी जाने लगी । उस समय वहा हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊँगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड़ दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ़ आई और अपने

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया ।

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहां आपको बेहोश पड़े हुए देख कर उठा लाईं । उस जगह एक घोड़ा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोड़ा हो ।

प्रभा० । बेशक वह मेरा ही घोड़ा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बड़ी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उड़ाये हुए ले आया ।

इन्दु० । क्या वह घोड़ा लड़ाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा० । हां, लड़ाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनो तरफ की फौजें बराबर दिल तोड़ कर लड़ती ही रह गई यहां तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुंअर वीरेन्द्रसिंह लड़ते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुंचे जहां कम्बख्त शिवदत्त खड़ा हुआ अपने सिपाहियो को लड़ने के लिए ललकार रहा था । चांद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नही मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोड़ा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोड़े की पीठ पर से लुढ़क कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लड़ते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनों के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनो हाथो से घोड़े का गला थाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) बेशक आपने बडी बहादुरी की । घोडा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहा से ले भागा ।

प्रभा० । बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपडे उतार कर आपके जख्म धोये जायँ ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हू । जख्म मुझे बहुत गहरे नही लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पडेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये यहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खडा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहा से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडिया भी जाने लगी । उस समय वहा हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊँगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ आई और अपने

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया !

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहा आपको बेहोश पडे हुए देख कर उठा लाई । उस जगह एक घोडा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोडा हो ।

प्रभा० । बेशक वह मेरा ही घोडा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बडी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उडाये हुए ले आया ।

इन्दु० । क्या वह घोडा लडाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा० । हा, लडाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनो तरफ की फौजें बराबर दिल तोड कर लडती ही रह गईं यहा तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुअर वीरेन्द्रसिंह लडते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ कम्बख्त शिवदत्त खडा हुआ अपने सिपाहियो को लडने के लिए ललकार रहा था । चाद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तक-लीफ नही मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोडा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोडे की पीठ पर से लुढक कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लडते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनों के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनो हाथो से घोडे का गला थाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) बेशक आपने बड़ी बहादुरी की । घोड़ा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहां से ले भागा ।

प्रभा० । बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोये जायें ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हूं । जख्म मुझे बहुत गहरे नहीं लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहां से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खड़ा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहां से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडियां भी जाने लगीं । उस समय वहां हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊंगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड़ दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ़ आई और अपने

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया।

जमना०। हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहा आपको बेहोश पडे हुए देख कर उठा लाई। उस जगह एक घोडा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोडा हो।

प्रभा०। बेशक वह मेरा ही घोडा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बडी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उडाये हुए ले आया।

इन्दु०। क्या वह घोडा लडाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा०। हा, लडाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनो तरफ की फौजें बराबर दिल तोड कर लडती ही रह गई यहां तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुअर वीरेन्द्रसिंह लडते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ कम्बख्त शिवदत्त खडा हुआ अपने सिपाहियों को लडने के लिए ललकार रहा था। चाद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तक-लीफ नही मालूम हो सकती थी। महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोडा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोडे की पीठ पर से लुढक कर जमीन पर आ रहा। मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लडते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनो के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला। उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनो हाथो से घोडे का गला थाम उससे चिपट गया। फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) बेशक आपने बडी बहादुरी की । घोडा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहा से ले भागा ।

प्रभा० । बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपडे उतार कर आपके जख्म धोये जायें ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हू । जख्म मुझे बहुत गहरे नही लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पडेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा । मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर आगे रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि खडा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहा से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडिया भी जाने लगी । उस समय वहा हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊँगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ आई और अपने

मगर आश्चर्य में हू कि यहा कैसे आया !

जमना० । हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहा आपको बेहोश पडे हुए देख कर उठा लाई । उस जगह एक घोडा भी मरा हुआ दिखाई दिया, कदाचित् वह आप ही का घोडा हो ।

प्रभा० । बेशक वह मेरा ही घोडा होगा, जानवर होकर भी उसने मेरी बडी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उडाये हुए ले आया ।

इन्दु० । क्या वह घोडा लडाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभा० । हा, लडाई ऐसी गहरी हो गई थी कि सन्ध्या हो जाने पर भी दोनो तरफ की फौजें बराबर दिल तोड कर लडती ही रह गई यहां तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिह का सेनापति तथा कुअर वीरेन्द्रसिह लडते हुए दुश्मन की फौज मे घुस गये और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहां कम्बख्त शिवदत्त खडा हुआ अपने सिपाहियों को लडने के लिए ललकार रहा था । चाद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तक-लीफ नही मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देख कर झिझका और घोडा घुमा कर भागने लगा, मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नही दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोडे की पीठ पर से लुढक कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और मैं सुबह से उस समय तक बराबर लडते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था, तिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनो ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारो तरफ से घेर कर मारने लगे मगर मैं हताश न हुआ, दुश्मनो के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मण्डली को चीर कर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और मैं दोनो हाथो से घोडे का गला थाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही, मैं नही कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ ?

इन्दु० । (प्रसन्न होकर) वेशक आपने बडी वहादुरी की । घोडा भी उस समय समझ गया कि अब आप वेहोश हो गये हैं और इसलिये आपको वहा से ले भागा ।

प्रभा० । वेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना० । अब आप आज्ञा दीजिये तो कपडे उतार कर आपके जख्म धोये जायँ ।

प्रभा० । जरा और ठहर जाओ क्योकि मैं उठ कर मैदान जाने का इरादा कर रहा हू । जख्म मुझे बहुत गहरे नही लगे हैं, इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पडेगी, केवल धो कर साफ कर देना ही काफी होगा ! मेरे लिए एक धोती और गमछे का बन्दोवस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ तथा मैदान की तरफ ले चलो ।

जमना० । बहुत अच्छा ऐसा ही होगा ।

इतना कह कर जमना ने एक लौंडी की तरफ देखा । वह सामान दुरुस्त करने के लिये वहाँ से चली गई और दूसरी लौंडी ने बाहर जाने के लिये जल का लोटा भर कर अलग रख दिया । प्रभाकरसिंह ने उठने का इरादा किया, जमना सरस्वती और इन्दु ने सहारा देकर उन्हे उठाया बल्कि खडा कर दिया । जमना और इन्दु का हाथ थामे हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे वहा से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा पीछे पीछे कई लौंडिया भी जाने लगी । उस समय वहा हरदेई लौंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आये हैं, हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकरसिंह के साथ साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकरसिंह ने कहा, "इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ होती जाती है, तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊँगा ।" इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इन्दु का हाथ छोड दिया । हरदेई जल का लोटा लिये हुए आगे बढ आई और अपने

दूसरे हाथ से प्रभाकरसिंह का हाथ थाम कर धीरे धीरे आगे की तरफ बढी।

जमना सरस्वती और इन्दुमति वहाँ से पीछे हट कर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गई और इन्तजार करने लगी कि प्रभाकरसिंह मैदान से होकर लौटें और चश्मे पर जाय तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घन्टे भर से भी कम देर में सब कामो से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिये हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुँचे जहा जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई इनका इन्तजार कर रही थी। जख्मो के विषय में सवाल करने पर प्रभाकरसिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हूं अब उनके विषय में चिन्ता करने की कोई जरूरत नही है।

प्रभाकरसिंह भी उन तीनो के पास बैठ गए और लड़ाई के विषय में तरह तरह की बातें करने लगे। जब सन्ध्या होने मे थोडी देर रह गई और हवा में सर्दी बढ़ने लगी तब सब कोई वहाँ से उठ कर बगले के अन्दर चले गये। एक कमरे के अन्दर जाकर प्रभाकरसिंह चारपाई पर लेट रहे। थोडी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामों से छुट्टी पाने तथा भोजन की तैयारी करने के लिये जमना और सरस्वती वहा से चली गई और केवल चारपाई की पाटी पकडे हुए इन्दुमति तथा पैर दबाती हुई हरदेई वहाँ रह गई।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह और इन्दुमति में मामूली ढंग पर धीरे धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकरसिंह ने यह कह कर इन्दुमति को विदा किया कि 'मैं भूख से बहुत दुःखी हो रहा हू, जो कुछ तैयार हो थोडा बहुत खाने के लिए जल्द लाओ।'

आज्ञानुसार इन्दुमति वहा से उठ कर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकरसिंह और हरदेई में धीरे धीरे इस तरह बातचीत होने लगी —

प्रभा०। हा तो तुम्हें दर्वाजा खोलने का ढग अच्छी तरह मालूम हो चुका है?

हरदेई०। जी हां उसके लिये आप कोई चिन्ता न करें।

प्रभा०। मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहिले किसी तरह दर्वाजा खोलने की तर्कीब मालूम कर लूं तब दूसरा काम करूं।

हरदेई०। नहीं अब आप अपनी कार्रवाई कीजिये, सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना अब मेरे लिये कोई कठिन काम नहीं है।

प्रभा०। (अपने जेब में से एक पुड़िया निकाल कर और हरदेई के हाथ में देकर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो फिर मैं समझ लूंगा।

हरदेई०। अब इन्दुमति आ जाय तो मैं जाऊं।

प्रभा०। हां मेरी भी यही राय है।

थोड़ी देर बाद चांदी की रकाबी में कुछ मेवा लिए हुए इन्दुमति वहां आ पहुंची, उसके साथ एक लौंडी चांदी के लोटे में जल और एक गिलास लिए हुए थी।

प्रभाकरसिंह ने मेवा खाकर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठ कर कमरे के बाहर चली गई।

पन्द्रहवां बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। बंगले के अन्दर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी (उस अन्न के खाने से) से बेहोश हो रहे हैं। हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जी जान से मानती थी इसलिए कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था, परन्तु इस समय हमारे पाठक बखूबी समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकरसिंह का रूप धारण किए हुए है उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है, असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार करके ले

दूसरे हाथ से प्रभाकरसिंह का हाथ थाम कर धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ी।

जमना सरस्वती और इन्दुमति वहाँ से पीछे हट कर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गईं और इन्तजार करने लगीं कि प्रभाकरसिंह मैदान से होकर लौटें और चश्मे पर जायँ तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घन्टे भर से भी कम देर में सब कामों से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिये हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुँचे जहाँ जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुईं इनका इन्तजार कर रही थीं। जख्मों के विषय में सवाल करने पर प्रभाकरसिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हूँ अब उनके विषय में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

प्रभाकरसिंह भी उन तीनों के पास बैठ गए और लड़ाई के विषय में तरह तरह की बातें करने लगे। जब सन्ध्या होने में थोड़ी देर रह गई और हवा में सर्दी बढ़ने लगी तब सब कोई वहाँ से उठ कर बंगले के अन्दर चले गये। एक कमरे के अन्दर जाकर प्रभाकरसिंह चारपाई पर लेट रहे। थोड़ी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामों से छुट्टी पाने तथा भोजन की तैयारी करने के लिये जमना और सरस्वती वहाँ से चली गईं और केवल चारपाई की पाटी पकड़े हुए इन्दुमति तथा पैर दबाती हुई हरदेई वहाँ रह गईं।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह और इन्दुमति में मामूली ढंग पर धीरे धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकरसिंह ने यह कह कर इन्दुमति को विदा किया कि 'मैं भूख से बहुत दुःखी हो रहा हूँ, जो कुछ तैयार हो थोड़ा बहुत खाने के लिए जल्द लाओ।'

आज्ञानुसार इन्दुमति वहाँ से उठ कर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकरसिंह और हरदेई में धीरे धीरे इस तरह बातचीत होने लगी —

प्रभा०। हाँ तो तुम्हें दर्वाजा खोलने का ढंग अच्छी तरह मालूम हो चुका है?

हरदेई० । जी हां उसके लिये आप कोई चिन्ता न करें ।

प्रभा० । मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहिले किसी तरह दर्वाजा खोलने की तर्कीब मालूम कर लूं तब दूसरा काम करूं ।

हरदेई० । नहीं अब आप अपनी कार्रवाई कीजिये, सुरंग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना अब मेरे लिये कोई कठिन काम नहीं है ।

प्रभा० । (अपने जेब में से एक पुड़िया निकाल कर और हरदेई के हाथ में देकर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो फिर मैं समझ लूंगा ।

हरदेई० । अब इन्दुमति आ जाय तो मैं जाऊं ।

प्रभा० । हां मेरी भी यही राय है ।

थोड़ी देर बाद चांदी की रकाबी में कुछ मेवा लिए हुए इन्दुमति वहां आ पहुँची, उसके साथ एक लौंडी चांदी के लोटे में जल और एक गिलास लिए हुए थी ।

प्रभाकरसिंह ने मेवा खाकर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठ कर कमरे के बाहर चली गई ।

पन्द्रहवां बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है । बंगले के अन्दर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी (उस अन्न के खाने से) बेहोश हो रहे हैं । हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जी जान से मानती थी इसलिए कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था, परन्तु इस समय हमारे पाठक जरूर समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकरसिंह का रूप धारण किए हुए है उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है, असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार करके ले

दूसरे हाथ से प्रभाकरसिंह का हाथ थाम कर धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ी।

जमना सरस्वती और इन्दुमति वहाँ से पीछे हट कर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गईं और इन्तजार करने लगी कि प्रभाकरसिंह मैदान से होकर लौटें और चश्मे पर जाय तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घन्टे भर से भी कम देर में सब कामों से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिये हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुँचे जहा जमना सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई इनका इन्तजार कर रही थी। जख्मों के विषय में सवाल करने पर प्रभाकरसिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हू अब उनके विषय में चिन्ता करने की कोई जरूरत नही है।

प्रभाकरसिंह भी उन तीनो के पास बैठ गए और लडाई के विषय में तरह तरह की बातें करने लगे। जब सन्ध्या होने में थोडी देर रह गई और हवा में सर्दी बढने लगी तब सब कोई वहाँ से उठ कर बगले के अन्दर चले गये। एक कमरे के अन्दर जाकर प्रभाकरसिंह चारपाई पर लेट रहे। थोडी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामो से छुट्टी पाने तथा भोजन की तैयारी करने के लिये जमना और सरस्वती वहा से चली गईं और केवल चारपाई की पाटी पकडे हुए इन्दुमति तथा पैर दबाती हुई हरदेई वहाँ रह गईं।

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह और इन्दुमति मे मामूली ढंग पर धीरे धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकरसिंह ने यह कह कर इन्दुमति को बिदा किया कि 'मैं भूख से बहुत दुःखी हो रहा हूं, जो कुछ तैयार हो थोडा बहुत खाने के लिए जल्द लाओ।'

आज्ञानुसार इन्दुमति वहा से उठ कर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकरसिंह और हरदेई में धीरे धीरे इस तरह बातचीत होने लगी —

प्रभा०। हां तो तुम्हे दर्वाजा खोलने का ढग अच्छी तरह मालूम हो चुका है?

हरदेई० । जी हां उसके लिये आप कोई चिन्ता न करें ।

प्रभा० । मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहिले किसी तरह दर्वाजा खोलने की तर्कीब मालूम कर लूं तब दूसरा काम करूं ।

हरदेई० । नहीं अब आप अपनी कार्रवाई कीजिये, सुरग का दर्वाजा खोलना और बन्द करना अब मेरे लिये कोई कठिन काम नहीं है ।

प्रभा० । (अपने जेब में से एक पुडिया निकाल कर और हरदेई के हाथ में देकर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो फिर मैं समझ लूंगा ।

हरदेई० । अब इन्दुमति आ जायं तो मैं जाऊं ।

प्रभा० । हां मेरी भी यही राय है ।

थोड़ी देर बाद चांदी की रकाबी में कुछ मेवा लिए हुए इन्दुमति वहां आ पहुंची, उसके साथ एक लौंडी चांदी के लोटे में जल और एक गिलास लिए हुए थी ।

प्रभाकरसिंह ने मेवा खाकर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठ कर कमरे के बाहर चली गई ।

पन्द्रहवां बयान

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है । बंगले के अन्दर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी (उस अन्न के खाने से) से बेहोश हो रहे हैं । हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जान से मानती थी इसलिए कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था, परन्तु इस समय हमारे पाठक बखूबी समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकरसिंह का रूप धारण किए हुए है उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है, असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार करके ले

गया था। और सभो की तरह नकली प्रभाकरसिंह भी अपनी चारपाई पर बेहोश पडे हुए हैं। हरदेई ने आकर प्रभाकरसिंह को लखलखा सुघ'या और जब वे होश मे आ गए तो उनसे कहा, "अब उठिए काम करने का समय आ गया।"

प्रभा०। कितनी रात जा चुकी है ?

हरदेई०। आधी से ज्यादे।

प्रभा०। सभो के साथ मुझे भी वही अन्न खाना पडा, यद्यपि मैंने बहुत कम भोजन किया था तथापि बेहोशी का असर बहुत ज्यादे रहा।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह उठ खडे हुए और सब तरफ घूम कर देखने लगे कि कहा कौन सोया हुआ है। जमना सरस्वती और इन्दुमति तो उसी कमरे मे फर्श के ऊपर सोई हुई थी जिसमें प्रभाकरसिंह थे और बाकी की सब लौडियां तथा ऐयार दूसरे कमरे मे पडे हुए थे।

प्रभाकरसिंह ने जमना और सरस्वती की तरफ देख कर हरदेई से कहा, "पहिले तो मुझे यह देखना है कि इन लोगो ने किस ढग पर अपना चेहरा रगा हुआ है।"

हरदेई०। मै आपसे कह चुका हू कि इन लोगो ने एक प्रकार की झिल्ली चेहरे पर चढाई हुई है जिस पर पानी का असर नही होता।

प्रभा०। (जमना और सरस्वती के चेहरे पर से झिल्ली उतार कर) बेशक यह एक अनूठी चीज है, इसे मैं अपने पास रक्खूगा।

हरदेई०। (अथवा रामदास) बेशक यह चीज रखने योग्य है।

प्रभा०। इन लोगो ने भी बडा ही उत्पात मचा रक्खा था, आज इनकी चालबाजियो का अन्त हुआ। अब इन्हे शीघ्र ही दुनिया से उठा देना चाहिए नही तो एक न एक दिन इन दोनो की बदौलत बडा ही अनर्थ हो जायगा और मै किसी को अपना मुह दिखाने लायक न रहूगा। (कुछ सोच कर) मगर मुझसे इनके गले पर छुरी न चलाई जायेगी, यद्यपि मैं इनको जान लेने के लिए तैयार हू मगर लाचारी से।

हरदेई० । यदि दया आती हो तो इन्हें किसी कूए में ढकेल कर निश्चिन्त हो जाइये । इस जंगल के पीछे की तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ के एक कूआ है जो इस काम के लिए बहुत ही मुनासिब होगा । मैं अच्छी तरह जांच कर चुका हूं कि वह बहुत गहरा और अन्धेरा है, उसमें गया हुआ आदमी फिर नहीं निकल सकता ।

प्रभा० । अच्छी बात है, दोनों को उसी कूए में ले चल कर डाल दो, मगर इन्दुमति को मैं अपने घर अर्थात् लामाघाटी में ले जाऊंगा क्योंकि इसकी जुबानी बहुत सी बातों का पता लगाना है ।

हरदेई० । मैं इस राय को पसन्द नहीं करता, मैं इन्दुमति को भी उसी कूए में पहुंचाना मुनासिब समझता हूं ।

प्रभा० । (कुछ सोच कर) अच्छा खैर इसे भी उसी में दाखिल करो ।

इतना कह कर नकली प्रभाकरसिंह ने जमना को और रामदास ने सरस्वती को उठा कर पीठ पर लाद लिया और उस कूए पर चले गये जिसका पता रामदास ने दिया था ।

वह कूआ बंगले के पश्चिम तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ कर पड़ता था । कूआ बहुत प्रशस्त और गहरा था मगर उसका मुंह इतना छोटा था कि वहां के रहने वालों ने एक मामूली पत्थर की चट्टान से उसे ढाक रक्खा था । कदाचित् रामदास को इसका पता अच्छी तरह लग चुका था इसीलिए वह नकली प्रभाकरसिंह को लिए हुए बहुत जल्द वहां जा पहुंचा । जमना और सरस्वती को जमीन पर रख दोनों ने मिल कर उस कूए का मुंह खोला और फिर उन दोनों औरतों को एक एक करके उसके अन्दर फेंक दिया । अफसोस ! अफसोस ! अफसोस ! भूतनाथ को इस दुष्कर्म का क्या नतीजा भोगना पड़ेगा इस पर उसने कुछ भी ध्यान न दिया ।

दोनों बेचारियों को कूए में ढकेल कर भूतनाथ ने ध्यान देकर और कान लगा कर सुना कि नीचे गिरने की आवाज आती है या नहीं, मगर किसी तरह की आवाज उसके कान में न गई जिससे उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ ।

उन दोनों को कूए मे ढकेल देने के बाद रामदास दौड़ा हुआ गया और इन्दुमति को उठा लाया। भूतनाथ ने उसे भी कूए के अन्दर ढकेल दिया और फिर पत्थर से उसका मुह उसी तरह ढाक दिया जैसा पहिले था।

इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ और रामदास ने यह सोचा कि अब बाकी की औरतें जो इस घाटी मे मौजूद हैं उन्हें भी मार कर बखेड़ा तय कर देना चाहिये क्योंकि इनमें से अगर एक भी जीती रह जायगी तो भगड़ा फूटने का डर लगा ही रह जायगा, अस्तु यह निश्चय किया गया कि उन सभों के लिये कोई दूसरा कूआ खोजना चाहिए, क्योंकि जिस कूए में जमना और सरस्वती तथा इन्दु को डाला है उसके अन्दर घुस कर देखना उचित है कि उसमें पानी है या नही अथवा उसके अन्दर का क्या हाल है।

आखिर ऐसा ही हुआ। उस कूएँ से थोड़ी दूर पहाड़ के कुछ ऊपर चढ़ कर एक कूआ और था जिसका मुंह बहुत चौड़ा था। भूतनाथ और रामदास दोनो आदमी सब बेहोश लौंडियो को बगले के अन्दर और बाहर से उठा लाये और एक एक करके उस कूए के अन्दर डाल दिया। आह, भूतनाथ का कैसा कड़ा कलेजा था और यह कैसा घृणित कार्य उसने किया। अब उस घाटी के अन्दर कोई भी न रहा जो इन दोनो की खबर ले।

अब सवेरा हो गया बल्कि सूर्य भगवान भी उदयाचल से निकल कर अपनी आखो से भूतनाथ और रामदास के कुकर्म देखने लगे।

भूतनाथ और रामदास उस कूए पर आये जिसमें जमना सरस्वती और इन्दुमति को ढकेल दिया था। भूतनाथ ने रामदास से कहा कि तू कमन्द के सहारे इस कूए के अन्दर उतर जा और देख कि इसमें पानी है या नही।

भूतनाथ की आज्ञानुसार रामदास कमन्द थाम कर उसके अन्दर उतर गया। कमन्द का दूसरा सिरा भूतनाथ ने एक पत्थर से मजबूती के साथ अटा दिया था। रामदास ने नीचे जाकर आवाज दी—"गुरुजी, यह कूआ इस लायक नही था कि इसके अन्दर दुश्मनों को डाला जाता बल्कि यह तो स्वर्ग से भी बढ़ कर सुख देने वाला है। लीजिए अब कमन्द को छोड़ता

तू खैंच लीजिये क्योंकि अब मैं बाहर आने की इच्छा नहीं करता।'

रामदास की बात सुन कर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और जब उसने कमन्द खैंच कर देखा तो वास्तव में उसे ढीला पाया।

सोलहवां बयान

धीरे धीरे बिल्कुल कमन्द खिंच कर भूतनाथ के हाथ में आ गया और तब वह बड़ी ही बेचैनी के साथ कूएं के अन्दर झांक कर देखने लगा मगर अन्धकार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं दिया।

रामदास भूतनाथ का बहुत ही प्यारा शागिर्द था और साथ ही इसके भूतनाथ को उस पर विश्वास भी परले सिरे का था। इस मौके पर हरदेई की सूरत में जो कुछ काम उसने किया था उससे भूतनाथ बहुत प्रसन्न था और समझता था कि मेरा यह होनहार शागिर्द नि:सन्देह किसी दिन मेरा ही स्वरूप हो जायगा। केवल इतना ही नहीं, जिस तरह भूतनाथ उसे लड़के के समान मानता था उसी तरह रामदास भी भूतनाथ को पिता-तुल्य मानता था, परन्तु ऐसे रामदास का इस तरह कूएं के अन्दर जाकर बेमुरौवत हो जाना कोई मामूली बात न थी। इससे भूतनाथ को बड़ा ही सदमा हुआ और उसने ऐसा समझा कि मानो पला पलाया और दुनिया में नाम पैदा करने वाला बराबर का लड़का जिसे निर्विघ्न समझता था हाथ से निकला जा रहा है। भूतनाथ इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सकता था और उससे यह नहीं हो सकता था कि रामदास को ऐसी अवस्था में छोड़ कर वहां से चला जाय।

कुछ देर तक सोचने और विचारने के बाद भूतनाथ ने कमन्द का एक सिरा पत्थर के साथ अड़ाया और तब खुद भी उसी के सहारे नीचे उतर गया।

भूतनाथ को विश्वास था कि कूएं के नीचे या तो पानी होगा या बिल्कुल सूखे में कला धिमला और इन्दुमति की लाश पावेंगे और वहीं अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी देखेंगे मगर ये सब कुछ भी बातें न थीं। न तो वह कूंआ सूखा था और न उसमें पानी ही दिखाई दिया। इसी तरह कला

बिमला इन्दुमति और रामदास का भी वहाँ नामोनिशान न था। कमर बराबर मुलायम और गुदगुदी घास कूएं की तह में जमी हुई थी जिस पर खड़े होकर भूतनाथ ने सोचा कि कोई आदमी ऊपर से इस घास पर गिर कर चुटीला नहीं हो सकता, अतएव निश्चय है कि कला बिमला और इन्दुमति मरी न होंगी, मगर आश्चर्य है कि यहाँ उनमें से एक भी नजर नहीं आती और न रामदास ही का कुछ पता है।

उस कूएं की तह में बिल्कुल ही अन्धकार था इसलिये अच्छी तरह देखने ढूंढने और जांच करने के लिए भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगा।

अन्दर से वह कूआ बहुत चौड़ा था और उसकी दीवारें संगीन थीं। जब कोई आदमी वहां नजर न आया तब भूतनाथ ने उस घास के अन्दर टटोलना और ढूंढना शुरू किया मगर इससे भी कोई काम न चला, हां दो बातें जरूर ताज्जुब की वहां दिखाई पड़ीं। एक तो उस कूए की दीवार में से (चारो तरफ से) थोड़ा थोड़ा पानी टपक कर तह में आ रहा था जिससे सिर्फ वहाँ की घास जो एक अजीब किस्म की थी बराबर तर और ताजा बनी रहती थी, दूसरे छोटे छोटे दो दर्वाजे भी दीवार में दिखाई दिये जो एक दूसरे के मुकाबले में थे। भूतनाथ बड़े ही आश्चर्य से उन दोनों दर्वाजों को देख रहा था क्योंकि जब वह कूए में इधर उधर घूमता तो कभी कोई दर्वाजा (उन दोनों में से) बंद हो जाता और कोई खुल जाता। मगर जब वह कुछ देर तक एक ही जगह पर स्थिर भाव से खड़ा रह जाता तब वे दर्वाजा भी ज्यों के त्यों एक ही ढंग पर कायम रह जाते अर्थात् जो खुल जाता वह खुला ही रह जाता और जो बन्द होता वह बन्द ही रह जाता। अस्तु भूतनाथ ने समझा कि इन दर्वाजों के खुलने और बन्द होने के लिये वहां की जमीन ही में कदाचित् कोई कमानी लगी हुई है। वह बहुत देर तक इधर उधर घूम घूम कर इन दर्वाजों के खुलने और बन्द होने का तमाशा देखता रहा।

इसी बीच में एकाएक गाने की सुरीली आवाज भूतनाथ के कानों में पड़ी जो कि किसी औरत की मालूम पड़ रही थी और उन्ही दोनों में से एक दर्वाजे के अन्दर से आ रही थी तथा थोड़ी देर बाद ही पखावज तथा कई पाजेबों के बजने की आवाज आई जो सम और ताल से खाली न थी। कभी कभी गाने की आवाज एक दम बन्द हो जाती और केवल पाजेब ही की आवाज सुनाई देती जिससे मास होता कि वे सब औरतें (या जो कोई हों) पखावज की गत से साथ मिल कर नाच रही हैं।

अब भूतनाथ से ज्यादे देर तक ठहरा न गया और वह हाथ में मोम-बत्ती लिये हुए उस दर्वाजे के अन्दर घुस गया जिसके अन्दर से गाने तथा घुंघरू के बजने की आवाज आ रही थी।

दर्वाजे के अन्दर पैर रखते ही भूतनाथ को मालूम हो गया कि यहां तो खासी लम्बी चौड़ी इमारत बनी हुई है और ताज्जुब नही कि कुछ और आगे बढ़ने से बड़े बड़े दालान और कमरे भी दिखाई पड़ें। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

कुछ दूर आगे बढ़ते ही भूतनाथ ने उजाला पाया और देखा कि एक सुन्दर दालान में चार या पाच औरतें हाथ में मशाल लिये खड़ी हैं और कई औरतें गा बजा तथा कई नाच रही हैं। यद्यपि भूतनाथ के दिल में आगे बढ़ कर देखने और उन लोगों को पहिचानने का उत्साह भरा हुआ था मगर साथ ही इसके वह डरता भी था कि आगे बढ़ने से कही मुझ पर कोई आफत न आवे।

भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा कर बटुए में रख ली और हाथ में खंजर लेकर दबे कदम धीरे धीरे आगे बढने लगा। ओफ, यह क्या भूतनाथ के लिये कोई कम आश्चर्य की बात है कि उन औरतों में भूतनाथ ने अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी नाचते हुए देखा और मालूम किया कि वह अपनी धुन में ऐसा मस्त हो रहा है कि उसे किसी बात की मानों परवाह ही नहीं है सबसे ज्यादे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह (रामदास)

बिमला इन्दुमति और रामदास का भी यहां नामोनिशान न था। कमर बराबर मुलायम और गुदगुदी घास कूएं की तह में जमी हुई थी जिस पर खड़े होकर भूतनाथ ने सोचा कि कोई आदमी ऊपर से इस घास पर गिर कर चुटोला नहीं हो सकता, अतएव निश्चय है कि कला बिमला और इन्दुमति मरी न होंगी, मगर आश्चर्य है कि यहां उनमें से एक भी नजर नहीं आतीं और न रामदास ही का कुछ पता है।

उस कूएं की तह में बिल्कुल ही अन्धकार था इसलिये अच्छी तरह देखने ढूढ़ने और जांच करने के लिए भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगा।

अन्दर से वह कूआ बहुत चौड़ा था और उसकी दीवारें संगीन थीं। जब कोई आदमी वहां नजर न आया तब भूतनाथ ने उस घास के अन्दर टटोलना और ढूंढ़ना शुरू किया मगर इससे भी कोई काम न चला, हां दो बातें जरूर ताज्जुब की वहां दिखाई पड़ीं। एक तो उस कूए की दीवार में से (चारो तरफ से) थोड़ा थोड़ा पानी टपक कर तह में आ रहा था जिससे सिर्फ वहां की घास जो एक अजीब किस्म की थी बराबर तर और ताजा बनी रहती थी, दूसरे छोटे छोटे दो दर्वाजे भी दीवार में दिखाई दिये जो एक दूसरे के मुकाबले में थे। भूतनाथ बड़े ही आश्चर्य से उन दोनों दर्वाजों को देख रहा था क्योंकि जब वह कूए में इधर उधर घूमता तो कभी कोई दर्वाजा (उन दोनों में से) बंद हो जाता और कोई खुल जाता। मगर जब वह कुछ देर तक एक ही जगह पर स्थिर भाव से खड़ा रह जाता तब वे दर्वाजा भी ज्यों के त्यों एक ही ढंग पर कायम रह जाते अर्थात् जो खुल जाता वह खुला ही रह जाता और जो बन्द होता वह बन्द ही रह जाता। अस्तु भूतनाथ ने समझा कि इन दर्वाजो के खुलने और बन्द होने के लिये वहां की जमीन ही में कदाचित् कोई कमानी लगी हुई है। वह बहुत देर तक इधर उधर घूम घूम कर इन दर्वाजो के खुलने और बन्द होने का तमाशा देखता रहा।

इसी सोच में एकाएक गाने की सुरीली आवाज भूतनाथ के कानों में पड़ी जो कि किसी औरत की मालूम पड़ रही थी और उन्हीं दोनों में से एक दर्वाजे के अन्दर से आ रही थी तथा थोड़ी देर बाद ही पखावज तथा कई पाजेबों के बजने की आवाज आई जो सम और ताल से खाली न थी। कभी कभी गाने की आवाज एक दम बन्द हो जाती और केवल पाजेब ही की आवाज सुनाई देती जिससे भास होता कि वे सब औरतें (या जो कोई हों) पखावज की गत से साथ मिल कर नाच रही हैं।

अब भूतनाथ से ज्यादे देर तक ठहरा न गया और वह हाथ में मोमबत्ती लिये हुए उस दर्वाजे के अन्दर घुस गया जिसके अन्दर से गाने तथा घुंघरू के बजने की आवाज आ रही थी।

दर्वाजे के अन्दर पैर रखते ही भूतनाथ को मालूम हो गया कि यहां तो खासी लम्बी चौड़ी इमारत बनी हुई है और ताज्जुब नहीं कि कुछ और आगे बढ़ने से बड़े बड़े दालान और कमरे भी दिखाई पड़ें। वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

कुछ दूर आगे बढ़ते ही भूतनाथ ने उजाला पाया और देखा कि एक सुन्दर दालान में चार या पांच औरतें हाथ में मशाल लिये खड़ी हैं और कई औरतें गा बजा तथा कई नाच रही हैं। यद्यपि भूतनाथ के दिल में आगे बढ़ कर देखने और उन लोगों को पहिचानने का उत्साह भरा हुआ था मगर साथ ही इसके वह डरता भी था कि आगे बढ़ने से कहीं मुझ पर कोई आफत न आवे।

भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा कर बटुए में रख ली और हाथ में खंजर लेकर दबे कदम धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। ओफ, यह क्या भूतनाथ के लिये कोई कम आश्चर्य की बात है कि उन औरतों में भूतनाथ ने अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी नाचते हुए देखा और मालूम किया कि वह अपनी धुन में ऐसा मस्त हो रहा है कि उसे किसी बात की मानों परवाह ही नहीं है सबसे ज्यादे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह (रामदास)

भूतनाथ को देख कर बहुत रंज हुआ और कड़े शब्दों की बौछार करते हुए उसने भूतनाथ को निकल जाने के लिए कहा।

* दूसरा भाग समाप्त *

२५ वां संस्करण] १९७० ई० [१२०० प्रति

लहरा प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥

भूतनाथ

उपन्यास

अथवा भूतनाथ की जीवनी

तीसरा हिस्सा

पहिला बयान

काशी शहर के बाहर उत्तर तरफ लाट भैरव का एक प्रसिद्ध स्थान है। पास ही में एक पक्का तालाब है और स्थान के इर्द गिर्द कई पक्के कूएं भी हैं। वही पक्का तालाब कपालमोचन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। काशी नगर मे वहां स्नान करने का बड़ा ही माहात्म्य लिखा है। उस तालाब के कोने पर (कुछ हट के) एक कूआ है जिसकी जगत बहुत ऊंची है और ऊपर बैठने का स्थान भी बहुत प्रशस्त है तथा सीढ़ी के दोनों तरफ छोटे छोटे दो दालान भी बने हैं जिनसे मुसाफिरों और यात्रियों का बहुत उपकार होता है तथा काशी के मनचले और शौकीनमिजाज लोगों को भंग छानने के समय (यदि बरसात का मौसम हो तो) रोटी बाटी बनाने में भी अच्छी सहायता मिलती है।

इस तालाब या कूए के पास मे सिवाय जंगल मैदान के किसी गृहस्थ का कोई कच्चा या पक्का मकान नहीं है। अगर यहां दस पांच आदमी

आपुस में लड भिड जाय तो पास से किसी अडोसी पडोसी की सहायता भी नही मिल सकती ।

इसी कूए पर सन्ध्या होने से कुछ पहिले हम काशी के पाच सात खुश-मिजाज आदमियो को बैठे हसी दिल्लगी करते तथा भग बूटी के इन्तजाम में व्यस्त देख रहे हैं । कोई भग घो रहा है कोई पीसने का चिकना पत्थर घोकर जगह साफ करने की धुन में है, कोई टिकिया सुलगा रहा है और कोई गौरैया (मिट्टी के हुक्के) में पानी भर रहा है, इत्यादि तरह तरह के काम में सब लगे हुए है और साथ ही साथ अपनी बनारसी अधकचरी तथा अक्खड भाषा में हसी दिल्लगी भी करते जाते हैं । इनकी बातें भी सुनने के ही लायक हैं । यद्यपि इससे किसी तरह का उपकार तो नही हो सकता परन्तु मनवहलाव जरूर है और एक प्रकार की जानकारी भी हो सकती है, अस्तु सुनिए तो सही ।

एक० । (जो भग घो रहा था) यार, देखो सारे दूकानदार ने मुफ्त ही चार पैसे ले लिए । हमे तो यह भग दो पैसे की जमा नही दिखाई देती । यह देखो निचोडने पर मुट्ठी भर के भी नही होती ।

दूसरा० । (उचक के और देख के) हा यार, यह तो कुछ भी नही है । तू हू निरे गोखे ही रह्यो, पहिले काहे नही कहा, सारे की टोपी उतार लेते और ऐसा गड्डो देते कि जनम भर याद रखता ।

तीसरा० । ऐसे ही तो जमा मार मार के सरवा मुटा गया है, तोंद कैसी निकली हुई है सारे की ।

चौथा० । अच्छा अब कल समझेंगे चोघर से ।

पाचवा० । कल आती दफे धीरे से उसकी दौरी ही उलट देंगे, ज्यादे बोलेगा तो लड जायगे और गुल करेंगे कि चार आना पैसा तो ले लिहिस है मगर भाग देता ही नही ।

छठा० । (जो भला आदमी और कुछ पैसे वाला भी मालूम होता था क्योकि उसके गले में सोने की सिकरी पडी हुई थी) नही नही ऐसा न

करना, कोई जान पहिचान का देख लेगा और जा कर कह देगा तो मुफ्त की झाड़ * सुननी पड़ेगी !

दूसरा० । अरे रहो बाबू साहब, हम लोगन के साथ आया करो तो ऐसी भलमनसी घर छोड़ आया करो, हम लोग ऐसा दवा करें तो दिन दुपहरिए लुट जांय !

लेखक० । कगाल बांकड़े भी खूब ही लुटा करते होंगे ।

सातवा० । (सुलगती हुई टिकिया हाथ मे हिलाते हुए) अरे यारो ये बाबू साहब ठहरे महाजन आदमी, भला ई लोग लड़ना भिड़ना का (क्या) जानें, चाहे कोई धोती ही उतार के ले जाय । ई (यह) हम ही लोगन (लोगों) क काम हो कि कोई आग दिखावे तो कान उपार (उखाड़) लेई । हमी लोगन की बदौलत बाबू साहब बचत भी जात-है, नही तो गुदड़ सफरदा ससवा ऐसा रग बाधे लगा था कि बस कुछ पूछो नहीं, ओ रोज (उस दिन) चिथड़ू न होते तो गले की सिकरिये उतार लिए होता ।

छठा० । (अर्थात् बाबू साहब) हा यह बात तो ठीक है और जी मे तो उसी रोज आ गया था कि अब आज से इस रास्ते को छोड़ दें और खटी मुण्डी का नाम भी न लें बल्कि कसम खाने के लिए भी तैयार हो गया था मगर क्या करें 'नागर' की मुहब्बत ने ऐसा करने नही दिया, वह बेशक मुझे प्यार करती है और मुझ पर आशिक है ।

सातवां० । (मुस्कुराते हुए) बल्कि तुम पर मरती है ! एक दिन हमने कहती थी कि बाबू साहब हमे छोड़ देंगे तो हम जहर खा लेंगे !!

इसी तरह ये लोग बेतुकी और अक्खड़पन लिये हुए मिश्रित भाषा मे बातचीत कर रहे थे कि यकायक विचित्र ढंग का एक नया मुसाफिर यहा आ पहुंचा और उसने कूएं के ऊपर चलते हुए इन सातवे आदमी की बात बखूबी सुन ली । इस आदमी की उम्र का पता लगाना जरा कठिन है, तथापि बाबू साहब की निगाहों मे वह पचीस वर्ष का मालूम पड़ता था । यह

* झाड़ अर्थात् डाट ।

जरा लम्बा और चेहरा रोआवदार था। कपडे की तरफ ध्यान देकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किस देश का रहने वाला है। भीतर चाहे जैसी पोशाक हो मगर ऊपर एक स्याह अवा डाले हुए था और एक छोटी सी गठरी उसके हाथ में थी।

पहिले से जो लोग उस कूए पर बैठे हसी दिल्लगी कर रहे थे उनके दिल में आया कि इस नये मुसाफिर से कुछ छेड छाड करें और यहा से भगा दें क्योकि वास्तव में काशी के रहने वाले अक्खड मिजाज लोगो की आदत ही ऐसी होती है, जहा इस मिजाज के चार पाच आदमी इकट्ठे होते हैं वहाँ वे लोग अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नही और दूसरे लोगो से विना दिल्लगी किये नही रहते।

एक०। (नये मुसाफिर से) कहाँ रहते हो साहव ?

मुसाफिर०। गयाजी।

दूसरा०। यहा कव आये ?

मुसाफिर०। आज ही तो आये हैं।

दूसरा०। तभी आप इस कूएं पर आए हैं, अगर कोई जानकार होता तो यहा कभी न आता।

मुसाफिर०। सो क्यो ?

चौथा०। यहा शैतान और जिन्न लोग रहते है, जो कोई नया मुसाफिर आता है उसे चपत लगाए विना नही रहते।

मुसाफिर०। ठीक है, तो तुम लोगो को भी उन्होंने चपत लगाया होगा ?

दूसरा०। (चिढ़ कर, जोर से) हम लोगो से वे लोग नही वोल सकते क्योंकि हम लोग यहाँ के रहने वाले हैं और उन सभो के दोस्त हैं ?

मुसाफिर०। वेशक शैतान के दोस्त शैतान ही होते हैं।

चौथा०। क्यो वे, मुह सम्हाल के नही वोलता।

मुसाफिर०। अवे तवे करोगे वच्चा तो ठीक करके रख देंगे। हमें कोई मामूली मुसाफिर न समझना॥

पाँचवा । (नमस्कार) मार मारे के, दे थईया तपत ।

इतना कह कर पाचवा आदमी उठा और मुक्का तान कर उस मुसाफिर की तरफ झपटा । मारना ही चाहता था कि मुसाफिर ने हाथ पकड़ लिया और ऐसा झटका दिया कि वह कूए के नीचे जा गिरा और वहुत चुटीला हो गया । यह कैफियत देखते ही वाबू साहव तो डर के मारे कूए के नीचे उतर गये और किसी झाड़ी में जाकर छिप रहे मगर वाकी के आदमी सब उस मुसाफिर पर जा टूटे और एक ने अपनी कमर में से एक छूरी भी निकाल ली, मगर उस मुसाफिर ने उन सभों की कुछ भी पर्वाह न की । वात की वात में उसने और तीन आदमियों को कूए के नीचे ढकेल दिया और उसके वाद कमर से खंजर निकाल कर मुकाविले को तैयार हो गया । खंजर की चमक देखते ही सभो का मिजाज ठण्ढा हो गया और मेल माकफत के ढंग की वातचीत करने लगे, मगर मुसाफिर का गुस्सा कम न हुआ और उसने लात तथा मुक्कों से खूब सभो की मरम्मत की, इसके वाद एक किनारे हट कर खड़ा हो गया और वोला, "कहो अव क्या इरादा है ?"

मुसाफिर की हिम्मत और मर्दानगी देख कर सभो को वड़ा ही आश्चर्य हुआ । उनको इस वात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह अकेला आदमी हम लोगों को इस तरह नीचा दिखा देगा । सभो ने समझा कि यह जरूर कोई राक्षस या जिन्न है जो आदमी का रूप धर के हम लोगों को डराने के लिए आया है, परन्तु किसी ने भी उसकी वातों का जवाव नहीं दिया वल्कि डरते हुए अपना अपना सामान और कपड़ा लत्ता उठा कर भागने के लिए तैयार हो गये मगर मुसाफिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा, "देखो तुम लोगों ने जान वूझ कर मुझसे छेड़खानी की और तकलीफ उठाई परन्तु अव शान्त हो कर वैठो और अपना अपना काम करो । तुम्हारे कई साथियों को वहुत चोट आ गई है सो उन्हें धो कर पट्टी वाँधो और कुछ देर आराम लेने दो, और हाँ यह तो वताओ कि तुम्हारे वह

सुन्दर सलोने बाबू साहब कहा चले गये जिन पर बीबी नागर आशिक हो गई है ?"

एक० । न मालूम कहा चला गया, ऐसा भग्गू आदमी

दूसरा० । जाने दो, अगर भाग गया तो जहन्नुम में जाय, उसी के सबब से तो हम लोग तकलीफ उठाते हैं ।

मुसाफिर० । नही नही, भागो मत, अपने साथी को आने दो बल्कि खोजो कि वह कहा चला गया है । यह कोई भलमनसी की बात नही है कि उसे इस तरह छोड कर सब कोई चले जाओ, हम तुम लोगो को कभी न जाने देंगे और खास कर के तुम्हारे सुन्दर सलोने से तो जरूर ही बात-चीत करेंगे ।

मुसाफिर की बातों ने उन लोगो को और भी परेशान कर दिया। उसका रोब इन सभो पर ऐसा छा गया था कि उसकी तरफ आख उठा। कर देख नही सकते थे और उसे आदमी नही बल्कि देवता या राक्षस समझने लग गये थे, अस्तु उसका रोकना इन लोगो को और भी बुरा मालूम हुआ और सभो ने डरते हुए हाथ जोड कर कहा, "बस अब कृपा कीजिए और हम लोगो को जाने दीजिए ।"

मुसाफिर० । नही नही यह कभी न होगा, पहिले तुम अपने साथी को तो खोजो ।

एक० । अब हम उसे कहा खोजें ?

मुसा० । चलो हम भी तुम लोगो के साथ मिल कर उसे खोजें । वह कही दूर न गया होगा इसी जगह किसी झाडी में छिपा होगा । तुम लोग डरो मत, अब हमारी तरफ से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न पहुँचेगी ।

यद्यपि मुसाफिर ने उन लोगो को बहुत दिलासा दिया और समझाया मगर उन लोगो का जी ठिकाने न हुआ और डर उनके दिल से न गया बल्कि इस बात का ख्याल हुआ कि यह मुसाफिर बाबू साहब को खोजने के लिए जिद्द करता है तो इसमें कोई भेद जरूर है, बेशक यह बाबू साहब को

खोज कर उन्हे तकलीफ देगा। मगर जो हो उन सभो को खोजना ही पडा।

उधर बाबू साहब उस कूए के पास ही एक झाडी मे छिपे हुए सब देख सुन रहे थे और डर के मारे उनका तमाम बदन काप रहा था। जब उन्होंने देखा कि वह राक्षस सभो को लिए हुए उनकी खोज में कूए के नीचे उतरा है तब तो वह एक दम घबडा उठे और उनके मुंह से हजार कोशिश कर के रोकने पर भी एक चीख की आवाज निकल ही पडी। आवाज सुनते ही वह मुसाफिर समझ गया कि इसी झाडी के अन्दर बाबू साहब छिपे हुए हैं, झपट कर वहा जा पहुचा और झाडी के अन्दर से हाथ पकड के बाबू साहब को बाहर निकाला। मालूम होता था कि बाबू साहब को इस समय जडैया बुखार चड आया है। उनका तमाम बदन तेजी के साथ काप रहा था। बाबू साहब जल्दी से मुसाफिर के पैरो पर गिर पड़े और आसू बहाते हुए बोले, "ईश्वर के लिए मुझे माफ करो, मैं बडा ही गरीब हू किसी के भले बुरे मे मुझे कुछ सरोकार नही, मैने आपका कुछ भी नही बिगाडा है।"

मुसाफिर०। डरो मत, मैने तुम्हें किसी बुरी नीयत से नही छुआ है, ये लोग तुम्हें यहा जंगल में छोड कर भागे जाते थे इसलिए मैने सभो को रोक लिया और कहा कि अपने साथी को खोज कर अपने साथ लिये जाओ। अब तुम बेखौफ होकर अपने दोस्तो के साथ अपनी प्यारी सागर के पास चले जाओ और मुझसे बिलकुल मत डरो।

मुसाफिर की बातो ने बाबू साहब को कुछ ढाढस हुई वे सम्हल कर उठ खडे हुए और मुसाफिर से कुछ कहा ही चाहते थे कि पास की दूसरी झाडी मे से एक दूसरा आदमी निकल कर झपटता हुआ इन सभो के पास आ पहुंचा और मुसाफिर की तरफ देख के बोला, "तुम क्यो इस बेचारे सूधे और डरपोक आदमी को तग कर रहे हो, नही जानते कि तुम्हारा गुरु चन्द्रशेखर इसी जगह छिपा हुआ तुम्हारी शैतानी का तमाशा देख रहा है!"

इस आदमी की सूरत शक्ल का अदाजा नही मिल सकता था क्योकि इसका तमाम वदन स्याह कपडे से छिपा हुआ था और चेहरे पर भी स्याह नकाव पडी हुई थी, मगर वह मुसाफिर उसकी वात सुन कर वडे गौर में पड गया और आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखने लगा।

मुसाफिर०। तुम कौन हो, पहिले अपना परिचय दो तव मैं तुमसे कुछ वात करू।

नया०। तुम्हारा मुह इस योग्य नही है कि मुझसे वात करो, और परिचय के लिये यही काफी है कि मेरा नाम चन्द्रशेखर है। लेकिन अगर इससे भी विशेष कुछ जानने की इच्छा हो तो मैं और भी कुछ कहने के लिये तैयार हू। आह, वह धोखा देने वाली चादनी रात। वात की वात में चन्द्रमा वादलो में छिप गया और अधकार हो जाने के कारण तरह तरह की भयानक सूरतें दिखाई देने लगी। उसी समय पहिले एक स्याह रग का ऊट दिखाई दिया जिसके सिर पर लम्वे लम्वे सीघ विजली की तरह चमक रहे थे।

मुसाफिर०। (डर के मारे कापता और पीछे की तरफ हटता हुआ) वस वस वस ! मैं समझ गया कि तुम कौन हो !!

चन्द्रशेखर०। उसके वाद एक सफेद रग का हाथी दिखाई दिया जिसके ऊपर नागर और मनोरमा मशाल लिये चढी हुई थी और जोर जोर से श्यामलाल को पुकार रही थी क्योकि वे चाहती थी कि किसी तरह खून से लिखी हुई किताव उनके हाथ लगे।

मुसाफिर०। (हाथ जोड कर) मैं कह चुका और फिर भी कहता हू कि वस करो, माफ करो, दया करो, मैं तुम्हे पहिचान गया, अगर तुम्हें कुछ कहना ही हो तो किनारे चल कर कहो जिसमें कोई तीसरा न सुनने पावें।

चन्द्रशेखर०। नही नहीं, मैं इसी जगह सव के सामने ही कहूंगा क्योकि इन वावू साहव का इस मामले मे वहुत ही घना सम्वन्ध है और इनके साथी लोग भी इसी जगह आकर इकट्ठे हो गय है और आश्चर्य

भरी निगाहो से हम दोनो का तमाशा देख रहे है। हा तो मै क्या कह रहा था? अच्छा, अब याद आया, उसी अन्धेरी रात मे एक विल्ली भी आ पहुँची जो अपने मुह मे लम्बी गर्दन वाला स्याह रग का ऊट दवाये हुए थी और ऊट के माथे पर लिखा हुआ था—

"सर्वगुण सम्पन्न चाचला सेठ।"

"वस वस वस!" कहता हुआ मुसाफिर पीछे की तरफ हटा और कापता हुआ जमीन पर गिरने के साथ ही वेहोश हो गया।

इस नए आए हुए व्यक्ति तथा इस मुसाफिर की वातचीत से सभी को आश्चर्य तो हुआ ही था परन्तु मुसाफिर की अन्तिम अवस्था देख कर सभी को वडा विस्मय और आनन्द भी हुआ। इसके वाद जव मुसाफिर खौफ से वेहोश हो गया और नये आदमी अर्थात् चन्द्रशेखर ने वावू साहव तथा उनके साथियो को वहुत जल्द वहा से चले जाने के लिए कहा तव वे लोग इस तरह वहा से भागे जैसे वाज के झपट्टे से वची हुई चिडियाए भागती है। जव वे लोग तेजी के साथ चल कर घने मुहल्ले में पहुँचे तव उन लोगो का जी ठिकाने हुआ और उन्होने समझा कि जान वची।

दूसरा वयान

पाठक महाशय, अव हम कुछ हाल जमानिया का लिखना मुनासिव समझते हैं और उस समय का हाल लिखते है जव राजा गोपालसिह की कम्वख्ती का जमाना शुरू हो चुका था और जमानिया मे तरह तरह की घटनाये होने लग गई थी।

जमानिया तथा दारोगा और गोपाल वगैरह के सम्वन्ध की वातें जो चन्द्रकान्ता सन्तति मे लिखी जा चुकी हैं उन्हे हम इस ग्रन्थ में विना कारण लिखना उचित नही समझते, उनके अतिरिक्त और जो वातें हुई हैं उन्हे लिखने की इच्छा है, हा यदि मजवूरी से कोई जरूरत आ ही पडेगी तो वेशक पिछली वातें संक्षेप के साथ दोहराई जायगी और राजा गोपाल-

सिंह की शादी के पहिले का कुछ हाल लिखा जायगा। इसका कारण यही है कि यह भूतनाथ चन्द्रकान्ता सन्तति का परिशिष्ट भाग समझा जाता है।

अपने संगी साथियो को साथ लिए हुए बाबू साहब जो भागे तो सीधे अपने घर की तरफ नही गये बल्कि नागर रंडी के मकान पर चले गये क्योंकि बनिस्बत अपने घर के उन्हें उसी का घर प्यारा था और उसी को वे अपना हमदर्द और दोस्त समझते थे। जिस समय वे उस जगह पहुँचे तो सुना कि नागर अभी तक बैठी हुई उनका इन्तजार कर रही है। बाबू साहब को देखते ही नागर उठ खडी हुई और बडी खातिरदारी के साथ उनका हाथ पकड कर अपने पास एक ऊची गद्दी पर बैठाया और मामूल के खिलाफ आज देर हो जाने का सबब पूछा, मगर बाबू साहब ऐसे बद-हवास हो रहे थे कि उनके मुह से कोई बात न निकलती थी। उनकी ऐसी अवस्था देख कर नागर को बडा ही आश्चर्य हुआ और उसने लाचार होकर उनके साथियो से उनकी परेशानी और बदहवासी का कारण पूछा।

बाबू साहब कौन है और उनका नाम क्या है इसका पता अभी तक नही मालूम हुआ, खैर इसके जानने की विशेष आवश्यकता भी नही जान पडती इसलिए अभी उन्हें बाबू साहब के नाम ही से सम्बोधन करने दीजिए आगे चल कर देखा जायगा।

बाबू साहब ने अपनी जुबान से अपनी परेशानी का हाल यद्यपि नागर से कुछ भी नही कहा मगर उनके साथियो की जुबानी उनका कुल हाल नागर को मालूम हो गया और तब नागर ने दिलासा देते हुए बाबू साहब से कहा, "यह तो मामूली घटना थी!"

बाबू साहब०। जी हा, मामूली घटना थी! अगर उस समय आप वहा होती तो मालूम हो जाता कि मामूली घटना कैसी होती है।

नागर०। (मुस्कुराती हुई) खैर किसी तरह मुह से बोले तो सही!

बाबू साहब०। पहिले यह तो बताओ कि नीचे का दर्वाजा तो बन्द है? कही कोई आ न जाय और हम लोगो की बातें न सुन ले।

नागर० । आप जानते ही हैं कि आपके आने के साथ ही लौंडियां फाटक बन्द कर दिया करती हैं। हमारे यहां सिवाय आपके दूसरे किसी ऐसे सर्दार का आना जाना तो है ही नही कि जिससे मुझे किसी तरह का लगाव या मुहब्बत हो, हां बाजार में बैठा करती हूं इसलिए कभी कभी कोई मारा पीटा आ ही जाया करता है, सो भी जब आप आते हैं तो उसी वक्त फाटक बन्द कर दिया जाता है।

बाबू साहब इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि एक आदमी यह कहता हुआ कमरे के अन्दर दाखिल हुआ, "झूठ भी बोलना तो मुंह पर !"

इस आदमी की सूरत देखते ही बाबू साहब चौंक पड़े और घबराहट के साथ बोल उठे, "यही तो है।"

यह वही आदमी था जिसे बाबू साहब और उनके संगी साथियों ने कपालमोचन के कुए पर देखा था और जिसके डर से अभी तक बाबू साहब की जान पर सदमा हो रहा था।

बाबू साहब की ऐसी हालत देख कर उस आदमी ने जो अभी अभी आया था कहा, "डरो मत डरो मत, मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं बल्कि दोस्त हूं।" इतना कह इस आदमी ने अपने हाथ की गठरी एक किनारे रख दी और मामूली कपड़े उतार कर इस तरह खूंटियों पर सजा दिये कि जैसे यहां उसी का घर हो या इस घर पर उसका बहुत बड़ा अधिकार हो और नित्य ही वह यहां आता जाता हो।

यह आदमी असल में भूतनाथ (गदाधरसिंह) था जिससे नागर की गहरी दोस्ती थी मगर बाबू साहब को इसकी कुछ भी खबर न थी और न कभी ऐसा ही इत्तिफाक हुआ था कि इस जगह पर इन दोनों का सामना हुआ हो। हां बाबू साहब ने गदाधरसिंह का नाम जरूर सुना था और यह भी सुना था कि वह मामूली आदमी नहीं है।

नागर ने जिस खातिरदारी और आवोभगत के साथ भूतनाथ का सन्मान किया और प्रेम दिखाया उससे बाबू साहब को मालूम हो गया कि

नागर बनिस्वत मेरे इस आदमी को बहुत प्यार करती है।

खूँटियो पर कपडे रख कर भूतनाथ बाबू साहब के पास बैठ गया और बोला, "भला मैंने आपको क्या तकलीफ दी है जो आप मुझसे इतना डरते है? एक ऐयाश और खुशदिल आदमी को इतना डरपोक न होना चाहिए। आप मुझे शायद पहिचानते नही, मेरा नाम गदाधरसिंह है, आपने अगर मुझे देखा नही तो नाम जरूर ही सुना होगा।"

बाबू साहब०। (आश्चर्य और डर के साथ) हाँ मैंने आपका नाम सुना है और अच्छी तरह सुना है।

नागर०। (मुस्कुराती हुई, बाबू साहब से) आपके तो अब ये गहरे रिश्तेदार हो गये है फिर भी आप इन्हे न पहिचानेंगे।

बाबू साहब०। (कुछ शर्माते हुए) हाँ हाँ मै बखूबी जानता हू मगर पहिचानता नही था, अफसोस की बात है कि इतने दिनो तक इनसे कभी मुलाकात नही हुई।

नागर०। (बाबू साहब से) आपसे इनसे कुछ नातेदारी भी तो है?

बाबू साहब०। हाँ, मेरी मौसेरी बहिन रामदेई* इनके साथ ब्याही है। आज अगर मुझे इस बात की खबर होती कि आप ही मेरे बहनोई हैं तो मैं उस कूएँ पर इतना परेशान न होता बल्कि खुशी के साथ मुलाकात होती। (भूतनाथ से) हाँ यह तो बताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन था जिसके खौफ से आप परेशान हो गये थे।

गदाधरसिंह०। (कुछ डर और सकोच के साथ) वह मेरा बहुत पुराना दुश्मन है। मेरे हाथ से कई दफे जक उठा चुका और नीचा देख चुका है, अब वह मुझसे बदला लेने की धुन मे लगा हुआ है। आज बडे बेमौके मिल गया था क्योंकि मै बेफिक्र था और वह हर तरह का सामान लेकर

---

* रामदई—नानक की माँ, जिसका जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति मे आ चुका है।

मेरी खोज मे निकला था।

बाबू साहब०। आखिर हम लोगो के चले आने के बाद क्या हुआ? आपसे और उससे कैसी निपटी?

गदाधर०। मै इस मौके को बचा गया और लडता हुआ धोखा देकर निकल भागा! खैर फिर कभी देखा जायगा, अबकी दफे उस साले को ऐसा छकाऊगा कि वह भी याद करेगा।

चन्द्रशेखर का नाम सुन कर नागर चौंक पडी और उसके चेहरे की रंगत बदल गई। मालूम होता था कि वह भूतनाथ से कुछ पूछने के लिए उतावली हो रही है मगर बाबू साहब के खयाल से चुप है और चाहती है कि किसी तरह बाबू साहब यहा से चले जायं तो बात करे।

बाबू साहब०। (भूतनाथ से) ठीक है वह बेशक आपका दुश्मन है, आज आठ दस दिन हुए होगे कि वह मुझसे बरना* के किनारे एकान्त में मिला था। उस समय उसके साथ तीन चार औरतें भी थी जिनमें से एक का नाम विमला था।

गदाधर०। (चौंक कर) विमला?

बाबू साहब०। हा विमला, और एक मर्द भी उसके साथ था जिसे उसने एक दफे प्रभाकरसिंह के नाम से सम्बोधन किया था।

गदाधर०। (घबडा कर) क्या तुम उस समय उसके सामने मौजूद थे?

बाबू साहब०। जी नही, मै उन सभो को वहा आते देख एक झाडी में छिप गया था।

गदाधर०। तब तो तुमने और भी बहुत सी बातें सुनी होगी।

बाबू साहब०। नही, मैं कुछ विशेष बातें न सुन सका, हां इतना जरूर मालूम हुआ कि वह मनोरमा से और जमानिया के राजा से मिलने का उद्योग कर रहा है।

गदाधर०। (कुछ सोच कर और बाबू साहब की तरफ खिसक कर)

---

* काशी के उत्तर बहती हुई नदी का नाम बरना है।

शक आपने और भी वहुत सी बातें सुनी होंगी और यह भी मालूम किया होगा कि वे औरतें वास्तव में कौन थी।

वावू साहव०। सो मैं कुछ भी न जान सका कि वे औरतें कौन थी या वहा पहुँचने से उन लोगो का क्या मतलव था।

गदाधर०। खैर मैं थोडी देर के लिए आपकी वातें मान लेता हू।

नागर०। (वावू साहव से) मगर मैंने तो सुना था कि आपका और उन लोगो का सामना हो गया था और आप उसी समय उनके साथ कही चले भी गए थे।

वावू साहव०। (घवडाने से होकर) नही नहीं, मेरा उनका सामना विल्कुल नही हुआ वल्कि मैं उन लोगो को उसी जगह छोड कर छिपता हुआ किसी तरह निकल भागा और अपने घर चला आया क्योकि मुझे उन लोगो की वातो से कोई सम्वन्ध नही था, फिर मुझे जरूरत ही क्या थी कि छिप कर उन लोगो की वात सुनता या उन लोगो के साथ कही जाता।

नागर०। शायद ऐसा ही हो मगर जिसने मुझे यह खवर दी थी उसे झूठ वोलने की आदत नही है।

वावू साहव०। तो उसने धोखा खाया होगा अथवा किसी दूसरे को मौके पर देखा होगा।

नागर ने इस मौके पर जो कुछ वावू साहव से कहा वह केवल धोखा देने की नीयत से था और वह चाहती थी कि वातों के हेर फेर में डाल कर वावू साहव से कुछ और पता लगा ले, अस्तु जो कुछ हो मगर इस खवर ने भूतनाथ को वहुत ही परेशान कर दिया और वह सर नीचा कर तरह तरह की वातें सोचने लगा। उसे इस वात का निश्चय हो गया कि वावू साहव ने जो कुछ कहा है वह वहुत कम है अथवा जान वूझ कर वे असल वातो को छिपा रहे हैं।

कुछ देर तक सिर झुका कर सोचते सोचते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने कुछ तीखी आवाज में वावू साहव से कहा—

गदाधरसिंह० । सुनिए रामलालजी*, इसमें कोई सन्देह नही कि आप मेरे नातेदार है और इस खयाल से मुझे आपका मुलाहिजा करना चाहिए मगर ऐसी अवस्था में जब कि आप मुझसे झूठ बोलने और मुझे धोखा देने की कोशिश करते है अथवा यो कह सकते है आप मेरे दुश्मन से मिल कर उसके मददगार बनते है तो मै आपका मुलाहिजा कुछ भी न करूगा । हा यदि आप मुझसे सब कुछ साफ साफ कह दें तो फिर मैं भी ..

रामलाल० । (अर्थात् बाबू साहब) ठीक है अब मुझे मालूम हो गया कि उन औरतो से और प्रभाकरसिंह से आप डरते हैं, यदि यह बात सच है तो डरपोक और कमजोर होने पर भी मैं आपसे डरना पसन्द नही करता ....

रामलाल ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि सीढ़ियो परसे जिसका दर्वाजा इन लोगो के सामने ही था तेजी के साथ एक नकाबपोश आया और एक लिफाफा भूतनाथ के सामने फेक कर यह कहता हुआ वहाँ से निकल गया 'बेशक डरने की कोई जरूरत नही है, और खास कर ऐसे आदमी से जो पूरा नमकहराम और बेईमान है तथा जिसने अपने मालिक और दोस्त दयाराम को अपने हाथ से जख्मी किया था, मगर ईश्वर की कृपा थी कि वह बेचारा बच गया और जमानिया मे बैठा हुआ भूतनाथ के इस्तकबाल की कोशिश कर रहा है ।"

इस आवाज ने भूतनाथ को एक दम परेशान कर दिया । उसने लिफाफा खोल कर चिट्ठी पढने का इन्तजार न किया और खजर के कब्जे पर हाथ रखता हुआ तेजी के साथ दर्वाजे पर और फिर सीढियो पर जा पहुचा मगर किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पडी । वह घडधडाता हुआ सीढियों के नीचे उतर आया और फाटक के बाहर निकलने पर उस नकाबपोश को कुछ दूरी पर जाते हुए देखा । भूतनाथ ने उसका पीछा किया मगर वह गलियों मे घूम फिर कर ऐसा गायब हुआ कि भूतनाथ को उसकी गंध

---

* बाबू साहब का असली नाम रामलाल था ।

तक न मिली और अन्त में वह लाचार होकर नागर के मकान में लौट आया। आने पर उसने देखा कि बाबू साहब वहा नही हैं कही चले गये। तब उसने उस लिफाफे की खोज की जो नकाबपोश उसके सामने फेंक गया था और देखना चाहा कि उसमें क्या लिखा हुआ है।

लिफाफा वहाँ मौजूद न देख कर भूतनाथ ने नागर से पूछा, "क्या वह लिफाफा तुम्हारे पास है ?"

नागर०। हाँ तुमको उस नकाबपोश के पीछे जाते देख मैं भी तुम्हारे पीछे पीछे सीढियाँ उतर कर फाटक तक चली गई थी, जब तुम दूर निकल गये तब मैं वापस लौट आई और देखा कि बाबू साहब उस लिफाफे को खोल कर पढ रहे हैं। मुझको उसकी ऐसी नालायकी पर क्रोध चढ आया और मैंने उसके हाथ से वह चीठी छीन कर बहुत कुछ बुरा भला कहा जिस पर वह नाराज होकर यहाँ से चला गया।

भूतनाथ०। यह बहुत ही बुरा हुआ कि उसने यह चीठी पढ ली। फिर तुमने उसे जाने क्यो दिया ? मै उसे बिना ठीक किये कभी न रहता और बता देता कि इस तरह की बदमाशी का क्या नतीजा होता है।

नागर०। खैर अगर भाग भी गया तो क्या हर्ज है, जब तुम उसे सजा देने पर तैयार हो हो जाओगे तो क्या वह तुम्हारे हाथ न आवेगा ?

भूत०। खैर वह चीठी कहा है जरा दिखाओ तो सही !

नागर०। (खुला हुआ लिफाफा भूतनाथ के हाथ मे देकर) लो यह चीठी है।

भूतनाथ०। (चीठी पढ कर) क्या तुमने भी यह चीठी पढा है ?

नागर०। नही मगर यह सुनने की इच्छा है कि इसमें क्या लिखा है ?

भूत०। (पुन उस चीठी को अच्छी तरह पढ के और लिफाफे को गौर से देख कर) अन्दाज मे मालूम होता है कि इस लिफाफे मे केवल यही एक चीठी नहीं बल्कि और भी कोई कागज था।

नागर०। शायद ऐसा ही हो और बाबू साहब ने कोई कागज निकाल

लिया हो तो मैं नहीं कह सकती ।

भूत० । खैर देखा जायगा, मेरा द्रोही मुझसे बच के कहाँ जा सकता है, फिर भी आज मैं जिस नियत से तुम्हारे पास आया था वह न हो सका, अच्छा अब मैं जाता हू ।

नागर० । नही नही, मैं तुम्हें इस समय जाने न दूगी, मुझे बहुत सी बातें तुमसे पूछनी और कहनी है। मुझे इस बात का दिन रात खुटका बना रहता है कि कही तुम अपने दुश्मनो के फेर में न पड जाओ क्योकि केवल तुम्हारे ही तक मेरी जिन्दगी है, मुझे सिवाय तुम्हारे इस दुनिया में और किसी का भी भरोसा नही है, और तुम्हारे दुश्मनो की गिनती दिन पर दिन बढती ही जाती है ।

भूत० । हाँ ठीक है । (कुछ सोच कर) मगर इस समय मैं यहाँ नही रह सकता और .

नागर० । कल मनोरमाजी भी तो तुमसे मिलने के लिए यहाँ आने वाली हैं ।

भूत० । खैर देखा जायगा, बन पडेगा तो कल मैं फिर आ जाऊगा ।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खडा हुआ और सीढियो के नीचे उतर कर देखते देखते नजरो से गायब हो गया ।

भूतनाथ के चले जाने के बाद नागर आधे घंटे तक चुपचाप बैठी रही, इसके बाद उसने उठ कर अपनी लौडियो को बुलाया और कुछ बातचीत करने के बाद एक लौडी को साथ लिए हुए सीढियो के नीचे उतरी ।

चन्द्रकान्ता सन्तति में नागर के जिस मकान का हाल हम लिख आये है वह मकान इस समय नागर के कब्जे में नही है क्योकि अभी तक जमानिया राज्य की वह हालत नही हुई थी और न उस इज्जत को अभी नागर पहुँची थी । इस समय नागर रण्डियो की सी अवस्था में है और उसके कब्जे में एक मामूली छोटा सा मकान है, फिर भी मकान सुन्दर और मजबूत है तथा उसके सामने एक छोटा सा नजरबाग भी है । यद्यपि अभी

तक कम उम्र नागर की [illegible] नहीं है फिर भी उसकी चालाकियो का जाल अच्छी तरह फैल चुका है जिसका एक सिरा जमानिया राजधानी मे भी जा पहुचा है क्योकि उस मनोरमा से इसकी दोस्ती अच्छी तरह हो चुकी है जिसने जमानिया की खरावी मे सबसे बडा हिस्सा लिया हुआ था।

नागर सीढियो मे नीचे उतर कर नजरवाग मे होती हुई सदर फाटक पर पहुँची और उसे वन्द करके एक मजबूत ताला उसकी कुण्डी मे लगा दिया। इसके वाद लौट कर मकान की सीढियो पर चढनेवाला दर्वाजा भी अच्छी तरह वन्द करके अपने कमरे में चली आई।

लौंडी को कमरे का फर्श साफ करने की आज्ञा देकर नागर ऊपर छत पर चढ गई जहाँ एक वगला था और इस समय उसके वाहर ताला लगा हुआ था जिसे खोल कर नागर वगले के अन्दर चली गई।

यह वगला वहुत खुलासा और मामूली ढग पर सजा हुआ था। जमीन पर साफ सुथरा फर्श विछा हुआ था, एक तरफ सुन्दर मसहरी विछी हुई थी तथा छोटे वडे कई तकिए फर्श पर पडे हुए थे। मगर यह कमरा खाली न था, इसमे इस समय मनोरमा वैठी हुई थी और जमानिया राजधानी का वेईमान दारोगा (वावाजी) भी उसके साथ था। नागर भी उन दोनो के पास जा कर वैठ गई।

तीसरा वयान

अव हम अपने पाठको को पुन उस घाटी में ले चलते है जिसमें कला और विमला रहती थी और जिसमे भूतनाथ ने पहुच कर वडी ही सगदिली का काम किया था अर्थात् कला विमला और इन्दुमति के साथ ही साथ कई लौंडियो को भी कूए मे ढकेल कर अपनी जिन्दगी का आईना गदला किया था।

भूतनाथ यद्यपि अपने शागिर्द रामदास की मदद से उस घाटी मे पहुँच गया था और अपनी इच्छानुसार उसने सव कुछ करके अपने दिल का गुवार निकाल लिया था मगर घाटी के वीच वाले उस वगले के सिवाय

वह वहाँ का और कोई स्थान नही देख सका जिसमे कला और विमला रहती थी या जहाँ जख्मी इन्दुमति का इलाज किया गया था, और न वहाँ का कोई भेद ही भूतनाथ को मालूम हुआ। वह केवल अपने दुश्मनो को मार कर उस घाटी के बाहर निकल आया और फिर कभी उसके अन्दर नही गया। मगर प्रभाकरसिंह को उस घाटी का बहुत ज्यादा हाल मालूम हो गया था। कुछ तो उन्होंने बीच वाले बगले की तलाशी लेते समय कई तरह के कागजो पुर्जो और किताबो को देख कर मालूम कर लिया था और कुछ कला विमला ने बताया था और बाकी का भेद इन्द्रदेव ने बता कर प्रभाकरसिंह को खूब पक्का कर दिया था।

आज प्रात काल सूर्योदय के समय उस घाटी में प्रभाकरसिंह को एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए देखते हैं। उनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटक रहा है और हाथ मे एक छोटी सी किताब है जिसे वे बडे गौर से देख रहे हैं। यह किताब हाथ की लिखी हुई है और इसके अक्षर बहुत ही बारीक है तथा इसमें कई तरह के नक्शे भी दिखाई दे रहे हैं जिन्हें वे बार बार उलट कर देखते हैं और फिर कोई दूसरा मजमून पढने लगते है।

इस काम में उन्हें कई घन्टे बीत गए। जब धूप की तेजी ने उन्हे परेशान कर दिया तब वे वहाँ से उठ खडे हुए तथा बडे गौर से दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ देखने लगे और कुछ देर तक देखने के बाद उसी तरफ चल निकले। नीचे उतर कर मैदान खतम करने के बाद जब दक्खिन और पश्चिम कोण वाली पहाडी के नीचे पहुँचे तब इधर उधर बडे गौर से देख कर उन्होंने एक पगडंडी का पता लगाया और उसी सीध पर चलते हुए पहाडी के ऊपर चढने लगे। करीब करीब पचास साठ कदम चले जाने के बाद उन्हे एक छोटी सी गुफा मिली और वे लापरवाही के साथ उस गुफा के अन्दर चले गये।

यह गुफा बहुत बडी न थी और इसमे केवल दो आदमी एक साथ मिल कर चल सकते थे, फिर भी ऊँचाई इसकी ऐसी कम न थी कि इसके

अन्दर जाने वाले का सिर छत के साथ टकराये, अस्तु प्रभाकरसिंह धीरे धीरे टटोलते हुए इसके अन्दर जाने लगे। जब लगभग दो सौ कदम के चले गये तब उन्हे एक छोटी सी कोठरी मिली जिसके अन्दर जाने के लिए दरवाजे को किस्म से किसी तरह की रुकावट न थी सिर्फ एक चौखट लांघने ही के सबब से कह सकते है कि वे उस कोठरी के अन्दर जा पहुँचे। अंधकार के सबब से प्रभाकरसिंह को कुछ दिखाई नही देता था इसलिये वे बैठकर वहा की जमीन हाथ से इस तरह टटोलने लगे मानों किसी खास चीज को ढूढ रहे है ?

एक छोटा सा चबूतरा कोठरी के बीचोबीच मिला जो हाथ भर चौडा और इसी कदर लम्बा था। उसके बीच में किसी तरह का खटका था जिसे प्रभाकरसिंह ने दबाया और साथ ही इसके चबूतरे के ऊपर वाला हिस्सा किवाड के पल्ले की तरह खुल गया, मानो वह पत्थर का नही बल्कि किसी धातु या लकड़ी का बना हो।

अब प्रभाकरसिंह ने अपने बटुए मे से मोमबत्ती निकाली और इसके बाद चकमक पत्थर निकाल कर रोशनी की। प्रभाकरसिंह ने देखा कि ऊपर का हिस्सा खुल जाने से उस चबूतरे के अन्दर नीचे उतरने के लिए सीढिया लगी दिखाई देती है। प्रभाकरसिंह ने रोशनी मे उस कोठरी को बडे गौर से देखा। वहा चारो तरफ दीवार मे चार आले (ताक) थे जिनमे से सिर्फ सामने वाले एक आले मे बनावटी गुलाब का एक पेड बना हुआ था जिसमें बेहिसाब कलिया लगी हुई थी और सिर्फ चार फूल खिले हुए थे बाकी के तीनो आले खाली थे।

प्रभाकरसिंह ने उस गुलाब के पेड और फूलो को बडे गौर से देखा और यह जानने के लिये कि वह पेड किस चीज का बना हुआ है उसे हाथ से अच्छी तरह टटोला। मालूम हुआ कि वह पत्थर या किसी और मजबूत चीज का बना हुआ है।

प्रभाकरसिंह उन खिले हुए चार फूलों को देख कर बहुत ही खुश हु

और इस तरह धीरे धीरे बुदबुदाने लगे जैसे कोई अपने मन से दिल खोल कर बातें करता हो। उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा "है, यह चार फूल कैसे! खैर मेरा परिश्रम तो सुफल हुआ चाहता है। इन्द्रदेवजी का ख्याल ठीक निकला कि वे तीनो औरतें (जमना सरस्वती और इन्दु) जरूर उस तिलिस्म के अन्दर चली गई होगी। अब इन खिले फूलो को देख कर मुझे भी विश्वास होता है कि उन तीनो से तिलिस्म में मुलाकात होगी और मैं उन्हे खोज निकालूं गा, मगर इन्द्रदेवजी ने कहा था कि जितने आदमी इस तिलिस्म के अन्दर जायेंगे इस पेड के उतने ही फूल खिले दिखाई देगे। इसके अतिरिक्त उस कागज में भी ऐसा ही लिखा है, मगर अब जो देखता हूं तो तीन की जगह चार फूल खिले हुए है, अस्तु यह चौथा आदमी इस तिलिस्म मे कौन जा पहुंचा? इस बात का मुझे विश्वास नही होता कि किसी लौंडी को भी वे तीनो अपने साथ ले गई होगी क्योकि ऐसा करने के लिए इन्द्रदेवजी ने उन्हें सख्त मनाही कर दी थी। या सम्भव है कि किसी विशेष कारण से वे किसी लौंडी को अपने साथ ले भी गई हो, खैर जो होगा देखा जायगा मगर यदि ऐसा किया तो यह काम उन्होने अच्छा नही किया।

इसी तरह की बहुत सी बातें वे देर तक सोचते रहे, साथ ही इसके इस बात पर भी गौर करते रहे कि उन तीनो को तिलिस्म के अन्दर जाने की जरूरत ही क्या पड़ी।

प्रभाकरसिंह बेखटके उन सीढियो के नीचे उतर गये। नीचे उतर जाने के बाद उन्हे पुन एक सुरग मिली जिसमे तीस या चालीस हाथ से ज्यादे जाना न पड़ा। जब वे उस सुरग को खतम कर चुके तब उन्हें रोशनी दिखाई दी तथा सुरग के बाहर निकलने पर एक छोटा सा बाग और कुछ इमारतो पर उनकी निगाह पडी। आसमान पर निगाह करने से ख्याल हुआ कि दोपहर ढल चुकी है और दिन का तीसरा पहर बीत रहा है।

इस बाग में मकान बारहदरी कमरे दालान चबूतरे या इसी तरह की इमारतो के अतिरिक्त और कुछ भी न था अर्थात् फूल के अच्छे दरख्त

दिखाई नही देते थे या अगर कुछ थे भी तो केवल वे जगली पेड जो कि वहा बहते हुए एक चश्मे के सबब से कदाचित् बराबर ही हरे भरे रहते थे, हाँ केले के दरख्त यहाँ बहुतायत से दिखाई दे रहे थे और उनमें फल भी बहुत लगे हुए थे।

प्रभाकरसिंह थक गये थे इसलिए कुछ आराम करने की नीयत से बाहर किनारे एक चबूतरे पर बैठ गये और वहाँ की इमारतो को बडे गौर से देखने लगे। कुछ देर बाद उन्होने अपने बटुए में से मेवा निकाला और उसे खाकर चश्मे का बिल्लौर की तरह साफ बहता हुआ जल पी कर सन्तोष किया।

प्रभाकरसिंह सिपाही और बहादुर आदमी थे कोई ऐयार न थे मगर आज इनके बगल मे ऐयारी का बटुआ लटका हुआ देख रहे हैं इससे मालूम होता है कि इन्होने समयानुकूल चलने के लिए कुछ ऐयारी जरूर सीखी है मगर इनका उस्ताद कौन है सो अभी मालूम नही हुआ।

हम कह चुके हैं कि यह बाग नाम मात्र को बाग था मगर इसमें इमारतो का हिस्सा बहुत ज्यादे था। बाग के बीचोबीच मे एक गोल गुम्बद था जिनके चारो तरफ छोटी छोटी पाच कोठडिया थी और वह गुम्बद इस समय प्रभाकरसिंह की आखो के सामने था जिसे वह बडे गौर से देख रहे थे। बाग के चारो तरफ चार बडी बडी बारहदरिया थी और उनके ऊपर उतने ही खूबसूरत कमरे बने हुए थे जिनके दर्वाजे इस समय बन्द थे, सिर्फ पूरब तरफ वाले कमरे के दर्वाजो मे से एक दर्वाजा खुला हुआ था और प्रभाकरसिंह को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था।

प्रभाकरसिंह और कमरो तथा दालानो को छोड कर उसी बीच वाले गुम्बद को बडे गौर मे देख रहे थे जिसके चारो तरफ वाली कोठडियो के दर्वाजे बन्द मालूम होते थे। कुछ देर बाद प्रभाकरसिंह उठे और उस गुम्बद के पास चले गये। एक कोठरी के दर्वाजे को हाथ से हटाया तो वह खुल गया अस्तु वह कोठरी के अन्दर चले गये। इस कोठरी की जमीन सगमर्मर की थी और बीच में स्याह पत्थर का एक सिंहासन था जिस पर हाथ

रखते ही प्रभाकरसिंह का शरीर कापा और वे चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ होवेहोश हो गये तथा उसी समय उस कोठडी का दर्वाजा भी वन्द हो गया।

दिन वीत गया, आधी रात का समय था जब प्रभाकरसिंह की आख खुली। अन्धेरी रात होने के कारण वे कुछ स्थिर नही कर सकते थे कि वे कहा पर हैं। घबराहट मे उन्होने पहिले अपने हर्बो को टटोला और फिर ऐयारी का बटुआ खोला। ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे सब चीजें उनके पास मौजूद थी, इसके वाद वे विचारने लगे यह कि स्थान कैसा है तथा हमको अब क्या करना चाहिए। बहुत देर के वाद उन्हें मालूम हुआ कि वे किसी छोटे दालान में हैं और उनके सामने एक घना जगल है। इस अन्धकार के समय मे उनको हिम्मत न पडी कि उठ कर इधर उधर घूमे या किसी वात का पता लगावें अस्तु उन्होने चुपचाप उसी दालान में पडे रह कर रात विता दी।

रात वीत गई और सूर्य भगवान का पेशखेमा आसमान पर अच्छी तरह तन गया। प्रभाकरसिंह उठ खडे हुए और यह जानने के लिए उस दालान मे घूमने और दरोदीवार को अच्छी तरह देखने लगे कि वे क्योंकर इस स्थान मे पहुचे तथा उनके यहा आने का जरिया क्या है, परन्तु इस वात का उन्हे कुछ भी पता न लगा। उस दालान के सामने जो जगल था वह वास्तव में वहुत घना था और सिर्फ देखने से इस वात का पता नही लगता था कि वह कितना वडा है तथा उसके वाद किसी तरह की इमारत है या कोई पहाड, साथ ही इसके इन्हें इस वात की भी फिक्र थी कि अगर कोई पानी का चश्मा दिखाई दे तो स्नान इत्यादि का काम चले।

जगल मे घूम कर क्या करें और किसको ढूंढे इस विचार मे वे बहुत देर तक सोचते और इधर उधर घूमते रह गये, यहा तक कि सूर्य भगवान ने चौथाई आसमान का सफर तै कर लिया और धूप में कुछ गर्मी मालूम होने लगी। उसी समय प्रभाकरसिंह के कान मे यह आवाज आई, "हाय, वहुत ही बुरे फसे ! यह मेरे कर्मों का फल है। ईश्वर न करे किसी..."

बस इसके आगे की आवाज इतनी बारीक हो गई थी कि प्रभाकरसिंह उसे अच्छी तरह समझ न सके।

इस आवाज ने प्रभाकरसिंह को परेशान कर दिया और खुटके में डाल दिया। आवाज जगल के बीच में से आई थी अतएव वे उसी आवाज की सीध पर चल पडे और उस घने जगल में ढूढने लगे कि वह दुखिया कौन और कहा है जिसके मुह से ऐसी आवाज आई है।

प्रभाकरसिंह को ज्यादा ढूढना न पडा। उस जगल में थोडी ही दूर जाने पर उन्हें पानी का एक सुन्दर चश्मा दिखाई दिया और उसी चश्मे के किनारे उन्होंने एक औरत को देखा जो बदहवास और परेशान जमीन पर पडी हुई थी और न मालूम किस तरह की तकलीफ से करवटें बदल रही थी। प्रभाकरसिंह बडे गौर से उस औरत को देखने लगे क्योंकि वह कुछ जानी पहिचानी सी मालूम पडती थी। उस औरत ने प्रभाकरसिंह को देख के हाथ जोडा और कहा, "मेरी जान बचाइये, मैं बेतरह इस आफत में फस गई हू। मुझे उम्मीद थी कि अब कुछ ही देर मे इस दुनिया से कूच कर जाऊगी, परन्तु आपको देखने से विश्वास हो गया कि अभी थोडी जिन्दगी बाकी है। आप बडे गौर से मुझे देख रहे हैं, मालूम होता है कि आपने मुझे पहिचाना नही। मैं आपकी ताबेदार लौंडी हरदेई हू, आपकी स्त्री और सालियो की बहुत दिनो तक खिदमत कर चुकी हू।"

प्रभाकर०। हा अब मैंने तुझे पहिचाना, कला और बिमला के साथ मैंने तुझे देखा था मगर सामना बहुत कम हुआ इसलिये पहिचानने मे जरा कठिनाई हुई, अच्छा यह तो बता कि वे तीनो कहा हैं?

हरदेई०। मैं उन्ही की सताई होने पर भी उनकी ही खोज मे यहा आई थी, एक दफे वे तीनों दिखाई देकर पुन गायब हो गई—आह अब मुझसे बोला नही जाता।

प्रभाकर०। तुझे किस बात की तकलीफ है?

हरदेई०। मैं भूख से परेशान हो रही हू। आज कई दिन से मुझे

कुछ भी खाने को नही मिला . .बस . अब. .प्राण निकला ही

प्रभाकर० । तुझे यहां आये कै दिन हुए ?

हरदेई० । आज से सात....

बस इससे ज्यादे कुछ भी बोल न सकी अस्तु प्रभाकरसिंह ने अपने बटुए मे से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिये दिया और हाथ का सहारा देकर उसे बैठाया । मेवा देख कर हरदेई खुश हो गई, भोजन किया और नहर का जल पीकर सम्हल बैठी और बोली, "अब मेरा जी ठिकाने हुआ, अब मै बखूबी बातचीत कर सकती हू ।"

प्रभाकर० । (उसके पास बैठ कर) अच्छा अब बता कि तुझे यहा आये कितने दिन हुए और तूने कला बिमला तथा इन्दु को कहा और किस अवस्था मे देखा तथा क्योकर उनका साथ छूटा । क्या तू भी उन तीनो के साथ ही इस तिलिस्म मे आई थी ?

हरदेई० । नही मै तो बेसबब और बिना कसूर के मारी गई । मैने आज तक अपने मालिको के साथ कोई बुराई नही की थी मगर न मालूम उन्होने क्यो मुझे इस तरह की सजा दी । यद्यपि उन्होंने अपना धर्म बिगाड दिया था और जिस तरह सती साध्वियो को चलना चाहिए उस तरह नही चलती थी, अपनी सुफेद और साफ चादर मे बदनामी के कई धब्बे लगा चुकी थी मगर मैने आपसे भी इस बात की कभी शिकायत नही की और उनका भेद किसी तरह प्रगट होने न दिया, फिर भी अन्त मे मै ही कसूरवार समझी गई और मुझी को प्राणदण्ड दिया गया, परन्तु ईश्वर की कृपा से मै जीती बच गई । अब मेरी समझ मे नही आता कि मै क्या कहू और जो कुछ कहने की बातें है वह आपने. . . .

प्रभाकर० । (कुछ घबडा कर) तू क्या कह रही है । क्या कला और बिमला के सतीत्व में धब्बा लग चुका है ? और क्या उन दोनो ने अपनी चाल चलन खराब कर डाली है ?

हरदेई० । बेशक ऐसी ही बात है । आज से नही बल्कि आपसे मुला-

कात होने के पहले ही से ये दोनो बिगडी हुई है और दो आदमियो से अनुचित प्रेम करके अपने धर्म को बिगाड चुकी है, वल्कि बडे अफसोस की वात है कि इन्दुमति को भी उन्होने अपनी पक्ति मे मिला लिया है । ईश्वर ने इसी पाप का फल उन्हे दिया है, मेरी तरह वे भी इ . तिलिस्म में कैद कर दी गई है और आश्चर्य नही कि वे भी इसी तरह की तकलीफें उठा रही हो । वस इससे ज्यादे और मै कुछ भी नही कहूगी क्योकि.

प्रभाकर० । नही नही, रुक मत, जो कुछ तू जानती है वेशक कहे जा, मै खुशी से सुनने के लिए तैयार हू ।

हरदेई० । अगर मैं ऐसा करूगी तो फिर मेरी क्या दशा होगी यही मैं सोच रही हू ।

हरदेई की वातो ने प्रभाकरसिह के दिल मे एक तरह का दर्द पैदा कर दिया । 'कला और विमला वदकार है और उन्होने इन्दु को भी खराव कर दिया ।' यह सुन कर उनका क्या हाल हुआ सो वे ही जानते होगे । नेक और पतिव्रता इन्दु की कोई वदनामी करे यह वात प्रभाकरसिह के दिल में नही जम सकती थी मगर कला और विमला पर उन्हे पहले भी एक दफे शक हो चुका था । जव वे उस घाटी मे थे तभी उनकी स्वतन्त्रता देख कर उनका मन आशङ्कित हो गया था मगर जाँच करने पर उनका दिल साफ हो गया था । आज हरदेई ने उन्हे फिर उसी चिन्ता मे डाल दिया और साथ ही इसके इन्दु का भी आँचल गदला सुन कर उनका कलेजा काँप उठा और वे सोचने लगे कि क्या यह वात सच हो सकती है ?

केवल इतना ही नही, प्रभाकरसिह के चित्त मे चिन्ता और घृणा के साथ ही साथ क्रोध की भी उत्पत्ति हो गई और वहुत कुछ विचार करने के वाद उन्होने सोचा कि यदि वास्तव मे हरदेई का कहना सच है तो मुझे फिर उन दुष्टाओ के लिये परिश्रम करने को आवश्यकता ही क्या है, परन्तु सत्य असत्य की जाच तो आवश्यक है इत्यादि सोचते हुए फिर उन्होने हरदेई से पूछा—

प्रभाकर० । हा तो जो कुछ असल मामला है तू बेखौफ होकर कह जा, मै प्रतिज्ञा करता हू कि तेरी रक्षा करूगा और तुझे इस आफत मे वचाऊंगा ।

हरदेई० । यदि आप वास्तव में प्रतिज्ञा करते है तो फिर मै सब वातें साफ साफ कह दूगी ।

प्रभाकर० । वेशक मै प्रतिज्ञा करता हू मगर साथ ही इसके यह भी कहता हू कि अगर तेरी वात झूठ निकली तो तेरे लिए सवसे वुरी मौत का ढग तजवीज करूगा ।

हरदेई० । वेशक मैं इसे मजूर करती हू ।

प्रभाकर० । अच्छा तो जो कुछ ठीक ठीक मामला है तू कह जा और यह वता कि वह सव कहा गई और क्या हुईं और तू क्योकर इस दशा को पहुची ।

हरदेई० । अच्छा तो मैं कहती हू, सुनिए । कला और विमला की चालचलन अच्छी नही है । आप स्वयम् सोच सकते है कि जिन्हे ऐसी नौजवानी मे इस तरह की स्वतन्त्रता मिल गई हो और रहने तथा आनन्द करने के लिए ऐसा स्वर्ग-तुल्य स्थान मिल गया हो तथा दौलत की भी किसी तरह कमी न हो तो वे कहा तक अपने चित्त को रोक सकती हैं ? खैर जो कुछ हो, कला और विमला दोनो ही ने अपने लिए दो प्रेमी खोज निकाले और दोनो को औरतो के भेप मे ठीक करके अपने यहा रख छोडा तथा नित्य नया आनन्द करने लगी, मगर साथ ही इनके भूतनाथ से वदला लेने का भी ध्यान उनके दिल मे वना रहा और उन दोनो मर्दों ने भी इस काम मे वरावर मदद मागती रही । वे दोनो मर्द कुछ दिन तक इस घाटी मे रह आनन्द करते और फिर कुछ दिन के लिए कही चले जाया करते थे ।

प्रभाकर० । (वात काट कर) उन दोनो का नाम क्या था ?

हरदेई० । सो मैं नही कह सकती क्योकि कला और विमला ने वडी कारीगरी से उन दोनो का भेप वदल दिया था, कभी कभी मर्दाने भेप में

रहने पर भी उनकी सूरत दिखाई नही देती थी, इसलिए मैं उनके नाम और ग्राम के विषय में ठीक तौर पर कुछ भी नही कह सकती, हां इतना जरूर है कि अगर मुझे कुछ मदद मिले तो मैं उन दोनो का पता जरूर लगा सकती हू क्योंकि एकान्त की अवस्था में छिप लुक कर उन लोगो की बहुत सी बातें सुन चुकी हू जिनका ...

प्रभाकर० । खैर इस बात को जाने दे फिर देखा जायगा, अच्छा तब क्या हुआ ?

हरदेई० । बहुत दिनो तक कला और बिमला ने उन दोनो से सम्बन्ध रक्खा मगर जब इन्दु इस घाटी मे लाई गई और आपका आना भी यहा हुआ तब वे दोनो कुछ दिन के लिए गायब कर दिए गये । मै ठीक नही कह सकती कि वे कहा चले गये या क्या हुए । मैं इस किस्से को बहुत मुख्तसर में बयान करती हू। फिर जब आप विजयगढ और चुनार की लडाई में चले गये और बहुत दिनो तक आपके आने की उम्मीद न रही तब पुन वे दोनो इस घाटी में दिखाई देने लगे । सग और कुसग का असर मनुष्य के ऊपर अवश्य पडा करता है । कुछ हा दिनो के बाद इन्दुमति को मैंने उन दोनो में से एक के साथ मुहब्बत करते देखा और इसी कारण से कला बिमला और इन्दुमति में अन्दर ही अन्दर कुछ खिचाव भी हो गया था ।

मै समझती हू कि भूतनाथ को इस विषय का हाल जरूर मालूम हो गया जिसने उन दोनो को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और उस घाटी में जाने आने का रास्ता देख लिया । इसी बीच में मैंने आपको उस घाटी मे देखा । पहिले तो मुझे विश्वास हो गया कि वास्तव में प्रभाकर-सिहजी ही लडाई में नामवरी हासिल करके यहा आ गये हैं परन्तु कुछ दिन के बाद मेरा वह ख्याल जाता रहा और निश्चय हो गया कि असल में आपकी सूरत बन कर यहा आने वाला कोई दूसरा ही था ।

मैं इस विषय में कला और बिमला को बार बार टोका करती थी और कहा करती थी कि तुम लोगो के रहन सहन का यह ढग अच्छा नही

है, एक न एक दिन इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा, मगर वे दोनो इस बात का कुछ ख्याल नही करती थी और मुझे यह कह कर टाल दिया करती थी कि खैर जो कुछ हुआ सो हुआ अब ऐसा न होगा। मगर मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि मेरे रोक टोक करने से उनके दिल मे रंज बैठता जाता है। मैंने अपने काम में और भी कई लौंडियो को शरीक कर लिया मगर इसका नतीजा मेरे लिए अच्छा न निकला।

एक दिन वह आदमी जो आपकी सूरत बना हुआ था जब उस घाटी मे आया तो उसके साथ और भी दस बारह आदमी आए। जब वे लोग कला विमला और इन्दुमति से मिले तो उनका रग ढंग देख कर मै डर गई और एक किनारे हट कर उनका तमाशा देखने लगी। थोड़ी देर के बाद जब संध्या हुई तब कला विमला और इन्दुमति उन सभो को साथ लिए हुए बंगले के अन्दर चली गई अस्तु इसके बाद क्या हुआ सो मै कुछ भी न जान सकी, लाचार मैं अपनी हमजोलियो के साथ जा मिली और भोजन इत्यादि की सामग्री जुटाने के काम मे लगी।

पहर रात बीत जाने के बाद जब भोजन तैयार हुआ तब सभो ने मिल जुल कर भोजन किया, पश्चात् हम लोगो ने भी खाना खाया मगर भोजन करने के थोड़ो देर बाद हम लोगो का सर घूमने लगा जिससे निश्चय हो गया कि आज के भोजन में बेहोशी की दवा मिलाई गई है। खैर जो हो आधी रात जाते जाते तक हम सब की सब बेहोश होकर दीन दुनिया को भूल गईं। प्रातःकाल जब मेरी आंख खुली तो मैंने अपने आपको इसी स्थान पर खड़े हुए पाया। घबड़ा कर उठ बैठी और आश्चर्य के साथ चारो तरफ देखने लगी, उस समय मेरे सर में बेहिसाब दर्द हो रहा था।

तीन दिन और रात मैं घबड़ाई हुई इस जंगल में और (हाथ का इशारा करके) इस पास वाली इमारत और दालान में घूमती रही मगर न तो किसी से मुलाकात हुई और न यहा से निकल भागने के लिए कोई

रास्ता ही दिखाई दिया। [illegible] होकर मैं इसी जगल मे घूम रही थी कि यकायक इन्दुमति कुछ दूरी पर दिखाई पडी जो कि आपके गले में हाथ डाले हुए धीरे धीरे पूरव की तरफ जा रही थी। मैं नही कह सकती कि वह वास्तव मे आप ही के गले में हाथ डाले हुई थी या किसी दूसरे ऐयार के गले मे जो आपकी सूरत वना हुआ था।

उसी के पीछे मैंने कला और विमला को भी जाते हुए देखा। मैं खुशी खुशी लपकती उनकी तरफ वढ़ी मगर नतीजा कुछ भी न निकला। देखते ही देखते इसी जगल और झाडियो मे घूम फिर वे सव की सव न जाने कहा गायव हो गई, तव से आज तक कई दिन हुए मैं उनकी खोज मे परेशान हू, अन्त मे भूख के मारे वदहवास होकर इसी जगह गिर पडी और कई पहर तक मुझे तनोवदन की कुछ भी सुध न रही, जव होश में आई तव आपसे मुलाकात हुई। वस यही तो मुख्तसर हाल है।

हरदेई की वात सुन कर प्रभाकरसिंह के तो होश उड गये। वे ऐसे वेसुध हो गये कि उन्हे तनोवदन की सुध विल्कुल ही जाती रही। थोडी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वे प्रभाकरसिंह नही वल्कि पत्थर की कोई मूरत हैं, इसके वाद उन्होंने एक लम्वी सास ली और वडे गौर से हरदेई के चेहरे की तरफ देखने लगे। कई क्षण वाद उन्होने सिर नीचा कर लिया और किसी गहरे चिन्ता-सागर में डुवकिया लगाने लगे। हरदेई मन ही मन प्रसन्न होकर उनके चेहरे की तरफ देखने लगी जिसका रग थोडी थोडी देर पर गिरगिट के रग की तरह वरावर वदल रहा था।

प्रभाकरसिंह के चेहरे पर कभी तो क्रोध कभी दु ख कभी चिन्ता कभी घवराहट और कभी घृणा की निशानी दिखलाई देने लगी। आह, प्रभाकरसिंह के जिस हृदय में इन्दुमति का अगाध प्रेम भरा हुआ था उसमें इस समय भयानक रस का सचार हो रहा है। जो वीर हृदय सदैव करुण रस से परिपूरित रहता था वह क्षण मात्र के लिये अद्भुत रस का स्वाद लेकर रौद्र और तत्पश्चात् वीभत्स रस की इच्छा कर रहा है। जिस हृदय में

इन्दुमति पर निगाह पडते ही शृङ्गार रस की लहरें उठने लगती थी वह अपनी भविष्य जीवनी पर हास्य करता हुआ अब सदैव के लिये शान्त हुआ चाहता है। आह इन्दुमति के विषय मे स्वप्न मे भी ऐसे शब्दो के सुनने की क्या प्रभाकरसिंह को आशा हो सकती थी ? कदापि नही, यह प्रभाकर सिंह की भूल है कि हरदेई की जुबान से विष भरी अघटित घटना को सुन अनुचित चिन्ता करने लग गये हैं। वह नही जानते कि यह हरदेई वास्तव मे हरदेई नही है बल्कि कोई ऐयार है। परन्तु हमारे प्रेमी पाठक इस बात को जरूर समझ रहे होगे कि यह भूतनाथ का शागिर्द रामदास है जिसकी मदद से भूतनाथ ने उस घाटी मे पहुच कर बडा ही अनुचित और घृणित व्यवहार किया था। नि सन्देह भूतनाथ ने जमना सरस्वती और इन्दुमति के साथ जो कुछ किया था वह ऐयारी के नियम के बिल्कुल ही बाहर था, ऐयारी का यह मतलब नही है कि वह बेकसूरो के खून से अपने जीवन की पवित्र चादर में धब्बा लगाये। यदि प्रभाकरसिंह उसकी कार्रवाई का हाल सच्चा सच्चा सुनते तो न मालूम उनकी क्या अवस्था हो जाती। परन्तु इस रामदास ने उन्हें बडा ही धोखा दिया और ऐसी बेढंगी बातें सुनाई कि उनका पवित्र हृदय कांप उठा और इन्दुमति तथा कला और बिमला की तरफ से उन्हें एकदम घृणा उत्पन्न हो गई। तब क्या प्रभाकरसिंह ऐसे बेवकूफ थे कि एक मामूली ऐयार अथवा लौंडी के मुँह से ऐसी अनहोनी बात सुन कर उन्होने उस पर कुछ विचार न किया और उसे सच्चा मान कर अपने आपे से बाहर हो गये ? नही, प्रभाकरसिंह तो ऐसे न थे परन्तु प्रेम ने उनका हृदय ऐसा बना दिया था कि इन्दु के विषय मे ऐसी बातें सुन कर वे अपने चित्त को सम्हाल नही सकते थे। प्रेम का अगाध समुद्र थोडी ही सी आंच लगने से सूख सकता है और प्रेमी का मन-मुकुल जरा ही सी ठेस लगने से चकनाचूर हो जाता है। अस्तु जो हो प्रभाकरसिंह के दिल की उस समय क्या अवस्था थी वे ही ठीक जानते होगे या उनको देख कर रामदास कुछ कुछ समझता होगा क्योकि वह उनके सामने बैठा हुआ

उनके चेहरे की तरफ बडे गौर से देख रहा था।

नकली हरदेई अर्थात् रामदास के दिल की अवस्था भी अच्छी न थी। वह कहने के लिये तो सब कुछ कह गया परन्तु उसका परिणाम क्या होगा यह सोच कर उसका दिल डाँवाडोल होने लगा। यद्यपि इस तिलिस्म में फँस कर वह वर्बाद हो चुका था बल्कि थोडी देर पहिले तो मौत की भयानक सूरत अपनी आखो के सामने देख रहा था परन्तु प्रभाकरसिंह पर निगाह पडते ही उसकी काया पलट हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब किसी न किसी तरह उसकी जान बच जायगी। परन्तु इन्दुमति को बदनाम करके उसका चित्त भी शान्त न रहा और थोडी ही देर बाद वह सोचने लगा कि मैंने यह काम अच्छा नही किया। यदि मैं कोई दूसरा ढग निकालता तो कदाचित यहा से शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता परन्तु अब जल्दी छुटकारा मिलना मुश्किल है क्योकि मेरी बातो का निर्णय किये बिना प्रभाकरसिंह मुझे यहाँ से बाहर नही जाने देंगे। अफसोस भूतनाथ को मदद पहुँचाने के खयाल मे मैंने व्यर्थ ही इन्दु को बदनाम किया। इन्दुमति नि सन्देह सती और साध्वी है, उस पर कलक लगाने का नतीजा मुझे अच्छा न मिलेगा। अफसोस, खैर अब क्या करना चाहिये, जबान से जो बात निकल गई वह तो लौट नहीं सकती। तब? मुझे अपने बचाव के लिए शीघ्र ही कोई तरकीब सोचना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि इन्दुमति कला और बिमला घूमती फिरती इस समय यहा आ पहुँचें। यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा, मेरी कलई खुल जायगी और मैं तुरन्त ही जान से मारा जाऊँगा। यदि मैं उन सभो को बदनाम न किये होता ता इतना डर न था।

इसी तरह की बातें सोचते हुए रामदास का दिल बडी तेजी के साथ उछल रहा था। वह बडी बेचैनी से प्रभाकरसिंह की सूरत देख रहा था।

बहुत देर तक तरह तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह ने पुन नकली हरदेई से सवाल किया—

प्रभाकर०। अच्छा यह तो बता कि कला और बिमला किसी विषय

वे किसी दिन तुमसे रंज भी हुई थी ?

हरदेई०। (मन में) इस सवाल का क्या मतलब ! (प्रगट) नही अगर कभी कुछ रंज हुई थी तो केवल उसी विषय में जो मै आपसे बयान कर चुकी हू।

इस जवाब को सुन कर प्रभाकरसिह चुप हो गये और फिर कुछ गौर करके बोले, "खैर कोई बात नही देखा जायगा, यह जगत ही 'कर्मप्रधान' है, जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा। यदि वे तीनो इस तिलिस्म के अदर हैं तो मै उन्हें जरूर खोज निकालूंगा, तू सब्र कर और मेरे साथ साथ रहे।"

इतना कह कर प्रभाकरसिह ने फिर वही छोटी किताब निकाली और पढने लगे जिसे इस तिलिस्म के अन्दर घुसने के पहिले एक दफे पढ़ चुके थे।

प्रभाकरसिह घन्टे भर से ज्यादे देर तक वह किताब पढते रहे और तब तक रामदास बराबर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखता रहा। जब वे उस किताब मे अपने मतलब की बात अच्छी तरह देख चुके तब यह कहते हुए उठ खडे हुए कि 'कोई चिन्ता नही, यहाँ हमारे खाने पीने का सामान बहुत कुछ मिल जायगा और हम उन सभो को जल्द ही खोज भी निकालेंगे। (नकली हरदेई से) आ तू भी हमारे साथ चली आ।'

रामदास उस किताब के पढ़ने और उनके इन शब्दो के कहने से समझ गया कि उस किताब में जरूर इस तिलिस्म का ही हाल लिखा हुआ है, अगर किसी तरह वह किताब मेरे हाथ लग जाय तो सहज ही में मैं यहा से निकल भागूं बल्कि और भी बहुत सा काम निकालूं।

रामदास अर्थात् नकली हरदेई को साथ लिए हुए प्रभाकरसिह उसी जंगल में घुस गये और दक्खिन झुकते हुए पूरब की तरफ चल निकले। आधे घंटे तक बराबर चले जाने के बाद उन्हें एक बहुत ऊची दीवार मिली जिसकी लम्बाई का वे कुछ अंदाजा नही कर सकते थे और न इसकी जांच करने की उन्हें कोई जरूरत ही थी। उस दीवार में बहुत दूर तक ढूंढने के बाद उन्हें एक छोटा सा दर्वाजा दिखाई दिया। वह दर्वाजा लोहे

का वना हुआ था मगर उसमे ताला या जजीर वगैरह का कुछ निशान नही दिखाई देता था। रामदास का ध्यान किसी दूसरी तरफ था तथापि वह जानना चाहता था कि यह दर्वाजा क्योकर खुलता है, परन्तु प्रभाकरसिंह ने उसे खोलने के लिये जो कुछ कार्रवाई की वह देख न सका, यकायक दर्वाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह ने उसके अन्दर कदम रक्खा तथा रामदास को भी अपने साथ आने के लिये कहा।

प्रभाकरसिंह और रामदास दर्वाजे के अन्दर जाकर कुछ ही दूर आगे बढ़े होगे कि दरवाजा पुन ज्यो का त्यो बन्द हो गया। अब प्रभाकरसिंह एक ऐसे बाग मे पहुँचे जहाँ केले और अनार के पेड बहुतायत के साथ लगे हुए थे और पानी का सुन्दर चश्मा भी बडी खूबसूरती के साथ चारो तरफ बह रहा था। इस बाग के अन्दर एक छोटा सा बगला भी बना हुआ था जिसमें कई कोठडियाँ थी और इस बगले के चारो तरफ सगमर्मर के चार चबूतरे बने हुए थे। बस इस बाग में इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। प्रभाकरसिंह ने वहाँ के पके हुए स्वादिष्ट केले और अनार से पेट भरा और चश्मे का जल पीकर कुछ शान्त हुए तथा नकली हरदेई से भी ऐसा ही करने के लिये कहा।

जब आदमी की तबियत परेशान होती है तो थोडी सी भी मेहनत बुरी मालूम होती है और वह बहुत जल्द थक जाता है। प्रभाकरसिंह का चित्त बहुत ही व्यग्र हो रहा था और चिन्ता ने उदास और हताश भी कर दिया था अतएव आज थोडी ही देर की मेहनत से थक कर वे एक संगमर्मर के चबूतरे पर कुछ आराम करने की नीयत से लेट गये और साथ ही निद्रा-देवी ने भी उन पर अपना अधिकार जमा लिया।

यहाँ प्रभाकरसिंह ने बहुत ही बुरा धोखा खाया। नकली हरदेई की बातो ने उन्हें अधमूआ कर ही दिया था और इस दुनिया से वे एक तौर पर विरक्त हो ही चुके थे, कारण यही था कि उन्होने नकली हरदेई को पहिचाना न था। अगर इन बातो के हो जाने के बाद भी वे जाँच कर लेते

तो कदाचित् सम्हल जाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और नकली हरदेई को वास्तव में हरदेई मान कर अपने भाग्य का सब दोष समझ लिया, यही सबब था कि यहा पर भी वे रामदास की तरफ से बिल्कुल ही बेफिक्र बने रहे और चबूतरे पर लेट कर बेफिक्री के साथ खर्राटे लेने लगे।

प्रभाकरसिंह को निद्रा के वशीभूत देख कर रामदास चौकन्ना हो गया। उसने ऐयारी के बटुए में से जिसे वह बड़ी सावधानी से छिपाये हुए था बेहोशी की दवा निकाली और होशियारी से प्रभाकरसिंह को सुंघाया। जब उसे विश्वास हो गया कि अब ये बेहोश हो गये तब उनके जेब में से वह किताब निकाल ली जिसमें इस तिलिस्म का कुछ हाल लिखा हुआ था और जिसे प्रभाकरसिंह दो दफे पढ चुके थे।

किताब निकाल कर उसने बडे गौर से थोडा सा पढा तब बडी प्रसन्नता के साथ सिर हिला कर उठ खडा हुआ और दिल्लगी के ढंग पर बेहोश प्रभाकरसिंह को झुक कर सलाम करता हुआ एक तरफ चला गया।

बेहोशी का असर दूर हो जाने पर जब प्रभाकरसिंह की आंखें खुली तो वे घबडा कर उठ बैठे और बेचैनी से चारो तरफ देखने लगे। आसमान की तरफ निगाह दौड़ाई तो मालूम हुआ कि सूर्य भगवान का रथ अस्ताचल को प्राप्त कर चुका है परन्तु अभी अन्धकार को मुँह दिखाने की हिम्मत नही पडती, वह केवल दूर ही से ताक झाक कर रहा है। हरदेई को जब देखना चाहा तो निगाहो की दौड धूप से उसका कुछ भी पता न लगा, तब वे लाचार होकर उठ बैठे और उसे इधर उधर ढूंढने लगे, परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी उसका पता न लगा। आखिर वे पुन उसी चबूतरे पर बैठ कर तरह तरह की बातें सोचने लगे।

"हरदेई कहा चली गई! इस बाग में जहा तक सम्भव था अच्छी तरह खोज चुका मगर उसका कुछ भी पता न लगा। तब वह गई कहा? इस बाग के बाहर हो जाना तो उसके लिए बिल्कुल ही असम्भव है, तो क्या उसे किसी तरह की मदद मिल गई? अगर मदद भी मिली होती या कोई

उसका दोस्त यहा आया होता तो भी बिना मेरी आज्ञा के उसे यहा से चले जाना मुनासिब न था। (अपना सर पकड के) ओफ, सर में बेहिसाब दर्द हो रहा है। मालूम होता है कि जैसे किसी ने बेहोशी की दवा का मुझ पर प्रयोग किया हो। ठीक है, बेशक यह सरदर्द उसी ढग का है। तो क्या हरदेई की सूरत में वह कोई ऐयार तो नहीं था जिसने मुझे धोखा दिया हो (घबराहट के साथ जेब टटोल के) आह, वह किताब तो जेब में है ही नही, क्या कोई ले गया ? या हरदेई ले गई ? (पुन उस किताब को अच्छी तरह खोज कर) हैं, वह किताब नि सन्देह गायब हो गई और ताज्जुब नही कि यही किताब लेने की नीयत से उस ऐयार ने मुझे बेहोशी की दवा दी हो और इसी किताब की मदद पाकर यहा से चला गया हो। अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा हुआ और मैंने बेढब धोखा खाया। लेकिन अगर वह वास्तव में कोई ऐयार था तो कला विमला और इन्दुमति वाली बात भी उसने झूठ ही कही होगी। ऐसी अवस्था में मैं उसका पता लगाये बिना नही रह सकता और इस काम में सुस्ती करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाडी मारना है।"

इत्यादि बातो को सोच कर प्रभाकरसिंह पुन उठ खडे हुए और नकली हरदेई को खोजने लगे। अबकी दफे उनका खोजना बडी सावधानी के साथ था यहा तक कि एक एक पेड के नीचे जा जा और खोज खोज कर वे उसकी टोह लेने लगे। यकायक केलों की झुरमुट में उन्हें कोई कपडा दिखाई दिया, जब उसके पास गये और अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि यह हरदेई का कपडा है, मुलाकात होने के समय वह यही कपडा पहिने हुए थी। और भी अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वह साडी का एक हिस्सा है और खून से तर हो रहा है। वही जमीन और पेडों के निचले हिस्से पर भी खून के छीटे दिखाई दिए।

अब प्रभाकरसिंह का खयाल बदल गया और वे सोचने लगे कि क्या यहा कोई हमारा दुश्मन आ पहुचा और हरदेई उसके हाथ से मारी गई

या जख्मी हुई ? ताज्जुब नही कि वही हरदेई को गिरफ्तार भी कर ले गया हो ? परन्तु यहा दूसरे आदमी का आना बिलकुल ही असम्भव है ? हा हो सकता है कि कला विमला और इन्दु यहा आ पहुँची हो और उन्होने हरदेई को दुश्मन समझ के उसका काम तमाम कर दिया हो ? ईश्वर ही जाने यह क्या मामला है पर वह तिलिस्मी किताब मेरे कब्जे से निकल गई यह बहुत ही बुरा हुआ ?

इत्यादि बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह बहुत ही परेशान हो गये। वे और भी घूम फिर कर हरदेई के विषय मे कुछ पता लगाने का उद्योग करते परन्तु रात की अन्धेरी घिर आने के कारण कुछ भी न कर सके। साथ ही इसके सर्दी भी मालूम होने लगी और आराम करने के लिए वे आड की जगह तलाश करने लगे।

आज की रात प्रभाकरसिंह ने उसी बाग के बीच वाले बंगले में बिताई और तरह तरह की चिन्ता में रात भर जागते रहे। तिलिस्मी किताब के चले जाने का दु ख तो उन्हें था ही परन्तु इस बात का खयाल उन्हें बहुत ज्यादे था कि अगर वह किताब किसी दुश्मन के हाथ में पड गई होगी तो वह इस तिलिस्म में पहुँच कर बहुत कुछ नुकसान पहुँचा सकेगा और यहा की बहुत सी अनमोल चीजें भी ले जायगा।

यद्यपि वह किताब इस तिलिस्म की चाभी न थी और न उसमें यहा का पूरा पूरा हाल ही लिखा हुआ था तथापि वह यहा के मुख्तसर हाल का गुटका जरूर थी और उसमें की बहुत सी बातें इन्द्रदेव ने जरूरी समझ कर नोट करा दी थी। प्रभाकरसिंह उसे कई दफे पढ चुके थे परन्तु फिर भी उसके पढने की जरूरत थी। इस समय अपनी भूल से वे शर्मिन्दा हो रहे थे और सोचते थे कि इस विषय में इन्द्रदेव के सामने मुझे बेवकूफ बनना पडेगा।

ज्यों त्यो करके रात बीत गई। सवेरा होते ही प्रभाकरसिंह बंगले के बाहर निकले। मामूली कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के जल से स्नान किया और सन्ध्या पूजा करके पुन. बंगले के अन्दर घुस गये। कई कोठरियों में

घूमते फिरते वे एक ऐसी कोठरी मे पहुचे जिसकी लम्बाई चौडाई यहा की सब कोठरियों से ज्यादे थी। यहा चारो तरफ की दीवारों में बडी बडी आलमारिया बनी हुई थी और उन सभों के ऊपर नम्बर लगे थे। सात नम्बर की आलमारी उन्होंने किसी गुप्त रीति से खोली और उसके अन्दर चले गये। नीचे उतर जाने के लिए सीढियां बनी हुई थी अस्तु उसी राह से प्रभाकरसिंह नीचे उतर गये और एक दालान में पहुंचे। बटुए मे से मोमबत्ती निकाल कर रोशनी की तो मालूम हुआ कि यह दालान लम्बा चौडा है और यहा की जमीन मे बहुत सी लोहे की नालिया बनी हुई है जो सडक का काम देने के लिए है तथा उस पर छोटी छोटी बहुत सी गाडियां रक्खी हुई है जिन पर सिर्फ एक आदमी के बैठने की जगह है। दालान के चारो तरफ दीवारो मे बहुत से रास्ते बने हुए है जिनमे से होकर वे लोहे की सडकें न मालूम कहा तक चली गई है।

गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि उन छोटी छोटी गाडियों पर पीठ की तरफ नम्बर लगे हुए है और उन नम्बरो के नीचे कुछ लिखा हुआ भी है। प्रभाकरसिंह बडी उत्कण्ठा से पढने लगे। एक गाडी पर लिखा हुआ था 'जमानिया दुर्ग' दूसरी पर लिखा हुआ था, 'खास बाग' तीसरी पर लिखा हुआ था 'चुनार विक्रमीचन्द्र' चौथी पर लिखा हुआ था 'केन्द्र', इसी तरह किसी पर 'मुकुट' किसी पर 'सूर्य' और किसी पर 'सभा-मण्डप' लिखा हुआ था, मतलब यह है कि सभी गाडियो पर कुछ न कुछ लिखा था। प्रभाकरसिंह एक गाडी के ऊपर सवार हो गए जिसकी पीठ पर 'चन्द्र' लिखा हुआ था। सवार होने के साथ हो वह गाडी चलने लगी। दालान के बाहर हो जाने पर मालूम हुआ कि वह किसी सुरग के अन्दर जा रही है। जैसे जैसे वह गाडी आगे बढती जाती थी तैसे तैसे उसकी चाल भी तेज होती जाती थी और हवा के झपेटे भी अच्छी तरह लग रहे थे, यहा तक कि उनके हाथ की मोमबत्ती बुझ गई और हवा के झपेटों से मजबूर होकर उन्होंने अपनी दोनो आंखें बन्द कर ली।

आधे घण्टे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद गाडी एक ठिकाने पहुच कर रुक गई। प्रभाकरसिंह ने आखें खोल कर देखा तो उजाला मालूम हुआ। वे गाडी से नीचे उतर पडे और गौर से चारो तरफ देखने लगे। वह स्थान ठीक उसी तरह का था जैसा कि कला और विमला के रहने का स्थान था और इसे देखते ही प्रभाकरसिंह को शक हो गया कि हम पुन. उसी ठिकाने पहुँच गये जहा कला और विमला से मुलाकात हुई थी परन्तु वहा की जमीन पर पहुच कर उनका खयाल बदल गया और वे पुन दूसरी निगाह से उस स्थान को देखने लगे।

यहा भी ठीक उसी ढग का एक बगला बना हुआ था जैसा कि कला और विमला के रहने वाली घाटीमें था मगर इसके पास मौलसिरी (मालश्री) के पेड न थे। दक्षिण तरफ पहाड के ऊपर चढ जाने के लिए सीढिया दिखाई दे रही थी और जहा पर वह सीढिया खतम हुई थी वहा एक सुन्दर मन्दिर बना हुआ था जिसके ऊपर का सुनहरा शिखर ध्वजा और त्रिशूल सूर्य की रोशनी पडने से बडी तेजी के साथ चमक रहा था।

जब प्रभाकरसिंह गाडी से नीचे उतर पडे तो वह गाडी पीछे को तरफ उसी तेजी के साथ चली गई जिस तेजी के साथ यहा आई थी। प्रभाकरसिंह चारो तरफ अच्छी तरह देखने के बाद दक्षिण तरफ वाली पहाडी के नीचे चले गये और सीढियां चढने लगे। जब तमाम सीढियां खतम कर चुके तब उस मदिर के अंदर जाने वाला फाटक मिला अस्तु प्रभाकरसिंह उस फाटक के अन्दर चले गये।

इस पहाडी के ऊपर चढने वाला इस मन्दिर के अन्दर आने के सिवाय और कही भी नही जा सकता था क्योंकि मन्दिर के चारो तरफ बहुत दूर तक फैली हुई कम्मी ऊंची जालीदार चारदीवारी थी जिसके उत्तर तरफ सिर्फ एक फाटक था जो इन सीढियो के साथ मिला हुआ था अर्थात् इस सिलसिले की कुई सीढिया फाटक के अन्दर तक चली गई थी। सीढियो के बगल बगल से भी कोई रास्ता या मौका ऐसा न था जिसे लाघ या कूद

कर आदमी दूसरी तरफ निकल जा सके। यह पहा बहुत बडा और ऊपर से प्रशस्त था वल्कि यह कह सकते हैं कि ऊपर से कोसों तक चौडा था परन्तु इस मन्दिर में से न तो कोई उस तरफ जा सकता था और न उस तरफ से कोई इस मन्दिर के अन्दर आ सकता था।

प्रभाकरसिंह ने उस मदिर और चारदीवारी को वडे गौर से देखा। मदिर के अन्दर किसी देवता की मूर्ति न थी, केवल एक फौवारा बीचोबीच में वना हुआ था और दीवारो पर तरह तरह की सुन्दर तस्वीरें लिखी हुई थी। मन्दिर के आगे सभामण्डप में लोहे के बडे बडे सन्दूक रक्खे हुए थे मगर उनमें ताले का स्थान विल्कुल खाली था अर्थात् यह नही जाना जाता था कि इनमें ताली लगाने की भी कोई जगह है या नही।

उन लोहे के संदूकों को भी अच्छी तरह देखते प्रभाकरसिंह मन्दिर के वाहर निकले और खडे होकर कुछ सोच ही रहे थे कि उस जालीदार चार दीवारी के वाहर मैदान में मदिर की तरफ आती हुई कई औरतो पर निगाह पडी। प्रभाकरसिंह घवडा कर दीवार के पास चले गये और इसके सूराखो में से उन औरतो को देखने लगे। इस दीवार के सूराख वहुत वडे वडे थे, यहा तक कि आदमी का हाथ वखूवी उन सूराखो के अदर जा सकता था।

प्रभाकरसिंह ने देखा कि कला विमला और इन्दुमति धीरे धीरे इसी मन्दिर को तरफ चली आ रही हैं और उन तानो के चेहरे से हद दर्जे की उदासी और परेशानी टपक रही है। उस समय प्रभाकरसिंह को हरदेई वाली वात भी याद आ गई मगर क्रोध आ जाने पर भी उनका दिल उन तीनो के पास गये विना वहुत वेचैन होने लगा। यद्यपि वे दीवार के पार जाकर उन सभो से मिल नही सकते थे तथापि सोचने लगे कि अव इन लोगो के साथ कैसा वर्ताव करना चाहिये ? हरदेई को जुवानी जो कुछ सुना है उसे साफ साफ कह देना चाहिए या धीरे धीरे सवाल करके उन वातो की जाँच करनी चाहिए।

धीरे धीरे चल कर वे तीनो औरतें भी मन्दिर की दीवार के पास आ पहुचीं और एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगी–

इन्दु। (कला से) बहिन, अभी तक समझ में नही आया कि हम लोग किस तरह इस तिलिस्म के अन्दर आकर फस गईं।

कला०। मेरी बुद्धि भी किसी बात पर नही जमती, और न ख्याल ही को आगे बढने का मौका मिलता है। अगर कोई दुश्मन भी हमारी घाटी में आ पहुचा होता तो समझते कि यह सब उसी की कार्रवाई है, मगर...

विमला०। भला यह कैसे कह सकते है कि कोई दुश्मन वहा नही आया। अगर नही आया तो यह मुसीबत किसके साथ आई ? हाँ यह जरूर कहेंगे कि प्रगट मे सिवाय प्रभाकरसिंह और कोई आया हुआ मालूम नही हुआ और न इसी बात का पता लगा कि हमारी लौंडियो मे से किसी की नियत खराब हुई या नही।

इन्दु०। (लम्बी सास ले कर) हाय ! इस बात का भी कुछ पता नही लगा कि उन पर (प्रभाकरसिंह पर) क्या बीती ? एक तो लडाई में जख्मी होकर वे स्वयम् कमजोर हो रहे थे, दूसरे यह नई आफत और भी आ पहुँची ? ईश्वर ही कुशल करे !!

विमला०। हाँ बहिन ? मुझे भी जीजाजी के विषय में बडी चिन्ता लगी हुई है परन्तु साथ ही इसके मेरे दिल में इस बात का भी बड़ा ही खटका लगा हुआ है कि उन्होंने बदन खोल कर अपने जख्म जो घोर संग्राम में लगे थे हम लोगों को क्यो नही देखने दिये ? इसके अतिरिक्त हम लोगों के भोजन में बेहोशी की दवा देने वाला कौन था इस बात को जब मैं विचारती हूँ....... (चौंक कर) इस चारदीवारी के अन्दर कौन है ?

कला०। अरे, यह तो जीजाजी मालूम पडते है।

बात करते करते विमला की निगाह मन्दिर की चारदीवारी के अन्दर जा पडी जहाँ प्रभाकरसिंह खडे थे और नजदीक होने के कारण इन सभो की बातें सुन रहे थे। दीवार को जालीदार सूराख बहुत बडी होने के कारण

इनका चेहरा विमला को अच्छी तरह दिखाई दे गया था।

कला बिमला और इन्दु लपक कर प्रभाकरसिंह के पास आ गई। प्रभाकरसिंह भी अपने दिल का भाव छिपा कर इन लोगों से बातचीत करने लगे।

प्रभाकर०। तुम तीनो यहाँ पर किस तरह आ पहुँची? मै तुम लोगों की खोज में बहुत दिनो से बेतरह परेशान हो रहा हू। लडाई से लौट कर जब मैं तुम्हारी घाटी मे गया तो उसे बिल्कुल ही उजाड देख कर मैं हैरान रह गया।

इन्दु०। यही बात मैं आपसे पूछने वाली थी मगर

विमला०। ताज्जुब की बात है कि आप कहते हैं कि लड़ाई से लौट कर जब हम उस घाटी में आये तो उसे बिल्कुल ही उजाड पाया। क्या लडाई से लौटने के बाद आप हम लोगों से नही मिले? और आपके घायल देह का हम लोगो ने इलाज नही करना चाहा? या यह कहिए कि आपका जख्मी घोडा आपको लडाई में से बचा कर भागता हुआ क्या हमारी घाटी के बाहर तक नही आया था।

प्रभाकर०। न मालूम तुम क्या कह रही हो? मैं लडाई में से भाग कर नही आया बल्कि प्रसन्नता के साथ महाराज सुरेन्द्रसिह से विदा होकर तुम्हारी तरफ आया था।

इन्दु०। (ऊची सास ले कर) हाय, बडा ही अनर्थ हुआ। हम लोग बेढब धोखे में डाले गए? हाय आपका जख्मों को छिपाना हमे खुटके में डाल चुका था, परन्तु प्रेम! तेरा बुरा हो। तू ही ने मुझे सम्हलने न दिया।

प्रभाकर०। (मन में) मालूम होता है कि हरदेई का कहना ठीक है और कोई दूसरा गैर आदमी मेरी सूरत बन कर इन लोगो के पास जरूर आया था परन्तु इन्दु के भाव से यह नही जाना जाता कि इसने जान बूझ कर उसके साथ . अस्तु जो हो, सम्भव है कि यह अपने जवाब के लिए मुझे बनावटी भाव दिखा रही हो, हा यह निश्चय हो गया कि हरदेई एक दम झूठी नही है कुछ न कुछ दाल में काला अवश्य है। (प्रगट) मेरी समझ

में नहीं आता कि तुम क्या कह रही हो, खुलासा कहो तो मालूम हो और विचार किया जाय कि मामला क्या है। क्या तुम्हारे कहने का वास्तव में यही मतलव है कि मैं लड़ाई से लौट कर तुम लोगों से मिल चुका हू ?

इन्दु०। वेशक आपका जख्मी घोड़ा आपके शरीर को वचाता हुआ वहाँ तक ले आया था और हम लोग आपको जब कि आप विल्कुल ही वेहोश थे उठा कर घाटी के अन्दर ले आए थे।

प्रभाकर०। मगर ऐसा नही हुआ। हरदेई ने तुम लोगो का पर्दा खोलते समय यह भी कहा था कि कोई गैर आदमी प्रभाकरसिंह वन कर उस घाटी में आया था और वहुत दिनो तक इन्दुमति ने उसके साथ .....

इन्दु०। (वात काट कर) क्या यह वात हरदेई ने आपसे कही थी ?

प्रभा०। हा वेशक ! साथ ही इसके (विमला की तरफ देख के) तुम लोगो के गुप्त प्रेम का हाल भी हरदेई ने मुझसे कह दिया था।

इन्दु०। हाय ! अव मैं क्या कहू ? (आसमान की तरफ देख के) हे सर्वशक्तिमान जगदीश ! तू ही मेरा न्याय करने वाला है ?

इतना कहते कहते इन्दुमति की आँखों से आँसुओ की धारा वहने लगी।

विमला०। मालूम होता है कि हरदेई ने मेरे साथ दुश्मनी की।

प्रभाकर०। वेशक !

विमला०। और उसी ने घाटी में आपसे मिल कर . . . .

प्रभाकर०। (वात काट कर) नहीं, वह मुझसे घाटी में नहीं मिली वल्कि तुम लोगो का सताई हुई हरदेई इसी तिलिस्म के अन्दर मुझसे मिली थी। वेशक उसने तुम लोगो का भराडा फोड के तुम लोगो के साथ वडी दुश्मनी की, मगर वह ऐसा क्यो न करती ? तुम लोगो ने भी तो उसके साथ वडी वेदर्दी का वर्ताव किया था ?

प्रभाकरसिंह के मुंह से इतना सुनते ही कला विमला और इन्दुमति ने अपना माथा ठोका और इसके वाद इन्दुमति ने एक लम्बी साँस लेकर प्रभाकरसिंह से कहा, "अगर मुझमें सामर्थ्य होती तो मैं जरूर अपना

भूतनाथ को वहा बैठे हुए घण्टे भर से कुछ ज्यादे देर भई होगी कि उसका एक शागिर्द वहा आ पहुचा जो इस समय एक देहाती जमीदार की सूरत बना हुआ था। उसने भूतनाथ को जो इस समय अपनी असली सूरत में था देखते ही प्रणाम किया और बोला, "मैं श्यामदास हू, आपको खोजने के लिए काशी गया हुआ था।"

भूत०। आओ हमारे पास बैठ जाओ और बोलो कि वहा तुमने क्या क्या देखा और किन किन बातो का पता लगाया।

श्यामदास०। वहा बहुत कुछ टोह लेने पर मुझे मालूम हुआ कि प्रभाकरसिंह सही सलामत लडाई पर से लौट आये और जब वे उस घाटी में गये तो जमना सरस्वती इन्दुमती को न पाकर बहुत ही परेशान हुए। इसके बाद वे इन्द्रदेव के पास गये और अपने दोस्त गुलाबसिंह के साथ कई दिनो तक वहा मेहमान रहे।

भूत०। ठीक है, यह खबर मुझे भी वहा लगी थी, मैं इन्द्रदेव को देखने के लिए वहा गया था क्योंकि आज कल वे बीमार पडे हुए हैं। अच्छा तब क्या हुआ ?

श्याम०। इसके बाद मैं जमानिया गया, वहा मालूम हुआ कि कुअर गोपालसिंह की शादी के बारे में तरह तरह की खिचडी पक रही है जिसका खुलासा हाल मैं फिर किसी समय आपसे बयान करूगा, इसके अतिरिक्त आज पन्द्रह दिन से भैयाराजा (गोपालसिंह के चाचा) कही गायब हो गये हैं, बाबाजी (दारोगा)वगैरह उनकी खोज में लगे हुए हैं, बहुत से जासूस भी चारो तरफ भेजे गये हैं, मगर अभी तक उनका पता नही लगा।

भूतनाथ०। ऐसी अवस्था में कुअर गोपालसिंह तो बहुत ही परेशान और दुखी हो रहे होंगे।

श्याम०। होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर उनके चेहरे पर उदासी और तरद्दुद की कोई निशानी मालूम नही पडती और इस बात से लोगो को बडा ही ताज्जुब हो रहा है। आज तीन चार दिन हुए होंगे कि कुअर

गोपालसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए 'कैलाश' गये थे, दोपहर तक रह कर वह पुन जमानिया लौट गये । सुनते हैं कि इन्द्रदेव भी दो चार दिन में जमानिया जाने वाले है ।

भूतनाथ० । इन्द्रदेव के बारे मे जो कुछ सुना करो उसका निश्चय मत माना करो, वह बडे विचित्र आदमी हैं और यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह मेरे साथ कभी कोई बुराई न करेंगे मगर फिर भी मैं उनसे डरता हू । दूसरी बातो को जाने दो उनके चेहरे से इस बात का भी शक नही लगता कि आज वह खुश है या नाखुश ।

श्याम० । इन्द्रदेवजी चाहे आपके दोस्त हो मगर मुझे इस बात का शक जरूर है कि वे जमना और सरस्वती को मदद दे रहे है ।

भूत० । शक क्या मुझे तो इस बात का यकीन सा हो रहा है परन्तु हजार कोशिश करने पर भी इसका मुझे कोई पक्का सबूत नही मिला । अभी तक मै इस विषय का भेद जानने के लिए बराबर कोशिश कर रहा हू ।

श्याम० । ठीक है परन्तु मै तो इसी बात को एक बहुत बड़ा सबूत समझता हू कि जमना और सरस्वती उस अद्भुत घाटी में रहती हैं जो एक छोटा सा तिलिस्म समझा जा सकता है । क्या इन्द्रदेव के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी ने उन्हें ऐसी सुन्दर घाटी दी होगी ? मुझे तो ऐसा विश्वास नही होता ।

भूत० । जो हो मगर फिर भी यह एक अनुमान है प्रमाण नही । खैर इस विषय पर इस समय बहस करने की कोई जरूरत नही, मैं आज किसी दूसरे ही तरद्दुद मे पडा हुआ हू जिसके सबब से मेरी तबीयत भी बेचैन हो रही है ।

श्याम० । वह क्या ?

भूत० । तुम जानते हो कि तुम्हारे भाई रामदास की मदद से मै जमना सरस्वती इन्दुमति तथा उनकी लौंडियो को उसी घाटी में एक कूएं के अन्दर ढकेल कर जहन्नुम मे पहुँचा चुका हू ।

श्याम० । जी हा, [illegible] तो .

भूत० । बेशक मुझे रामदास के लिए बडी चिन्ता लगी हुई है मगर जिस अवस्था में मैं रामदास को देख कर लौटा हू उसे विचारने से खयाल होता है कि जमना सरस्वती और इन्दुमति जीती बच गई हो तो कोई ताज्जुब नही ।

श्याम० । सम्भव है कि ऐसा ही हुआ हो, परन्तु जीती बच जाने पर भी मै समझता हू कि वे सब कुछ दिन बाद भूख और प्यास की तकलीफ से मर गई होगी ।

भूत० । नही ऐसा नही हुआ, अभी कल ही मैंने काशी मे सुना है कि वे तीनों प्रभाकरसिंह के साथ बरना नदी के किनारे घूमती फिरती देखी गई हैं ।

श्याम० । (चौंक कर) हैं ! अगर ऐसी बात है तो उन लोगो की तरह मेरा भाई भी बच कर निकल भागा होगा ।।

भूत० । होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर रामदास अभी तक मुझसे नही मिला ।

श्याम० । तो आपने काशी में किसकी जुबानी ऐसा सुना था ?

इसके जवाब में भूतनाथ ने बाबू साहब, नागर तथा चन्द्रशेखर का कुछ हाल बयान किया और कहा ।

भूत० । जमना सरस्वती और इन्दुमति के विषय में मेरा खयाल है कि रामलाल (बाबू साहब) भी कुछ जानता होगा, मगर उस समय डाट डपट बताने पर भी उसने मुझसे कुछ नही कहा ।

श्याम० । अगर आप आज्ञा दें और बुरा न मानें क्योंकि वह आपका साला है तो मैं उसे अपने फन्दे में फसाकर असल भेद का पता लगा लू । मुझे विश्वास है कि अगर जमना और सरस्वती छूट कर आ गई है तो मेरा भाई भी उस आफत से जरूर बच गया होगा ।

इतने में भूतनाथ की निगाह मैदान की तरफ जा पडी, एक आदमी को

अपनी तरफ आते देख कर वह चौका और बोला।

भूत०। देखो देखो, वह कौन आ रहा है ॥

श्याम०। (मैदान की तरफ देख कर) हा कोई आ रहा है। ईश्वर करे मेरा भाई रामदास ही हो।

भूत०। मेरे पक्षपाती के सिवाय दूसरा कोई यहा कब आ सकता है?

देखते ही देखते वह आदमी भूतनाथ के पास आ पहुँचा और झुक कर सलाम करने बाद बोला, "मेरा नाम रामदास है, पहिचान के लिए मै 'चंचल' शब्द का परिचय देता हू। ईश्वर की कृपा से मेरी जान बच गई और मै राजी खुशी आपकी खिदमत में हाजिर हो गया, खाली हाथ नही बल्कि अपने साथ एक ऐसी चीज लाया हू जिसे देख कर आप फडक उठेंगे और बारबार मेरी पीठ ठोकेंगे।"

भूत०। (प्रसन्न होकर) वाह वाह, तुम जो कुछ तारीफ का काम करो वह थोड़ा है! तुम्हारे ऐसा नेक ईमानदार और धूर्त शागिर्द पाकर मै दुनिया मे अपने को धन्य मानता हू। आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो कि किस तरह तुम्हारी जान बची और मेरे लिए क्या तोहफा लाए हो।

रामदास परिचय लेने के बाद अपने भाई श्यामदास के गले मिला और भूतनाथ के पास बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगा—

राम०। मेरी जान ऐसी दिल्लगी के साथ और ऐसे ढंग से बची है कि उसे याद करके मै बार बार खुश हुआ करता हू।

श्याम०। मैने अभी अभी औरत दजी से यही बात कही थी कि अगर जमना सरस्वती और इन्दु बच कर निकल आई है तो मेरा भाई भी जरूर बच कर निकल आया होगा।

राम०। (ताज्जुब के ढंग पर) सो क्या! जमना, सरस्वती और इन्दुमति छूट कर कैसे निकल आई?

भूत०। कैसे छूट कर निकल आई सो तो मै नही जानता मगर इतना सुना है कि तीनो प्रभाकरसिंह के साथ काशी मे वरुना नदी के किनारे टह-

लती हुई देखी गई हैं ?

राम० । कब देखी गई हैं ?

भूत० । आज आठ दस दिन हुए होंगे ।

राम० । और उन्हें देखा किसने ?

भूत० । मेरे साले रामलाल ने ।

राम० । झूठ, बिल्कुल झूठ ! अगर आपने स्वय अपनी आखो से देखा होता तब भी मैं न मानता ।

भूत० । सो क्यो ?

राम० । अभी चौबीस घंटे भी नही हुए होंगे कि मैं उन्हें तिलिस्म के अन्दर फसी हुई छोड कर आया हू ।

भूत० । किस तिलिस्म में ?

राम०। उसी तिलिस्म में, जिस कुए में आपने उन तीनो को फेंक दिया था वह उसी घाटी वाले तिलिस्म का एक रास्ता है । उसके अन्दर गया हुआ आदमी मरता नही बल्कि तिलिस्म के अन्दर फस जाता है, यही सबब है कि उन लोगो के साथ ही मैं भी उस तिलिस्म में जा फसा। कुछ दिन बाद प्रभाकरसिंह उन तीनो की खोज में उस तिलिस्म के अन्दर गये और वहा एकाएक मुझसे मुलाकात हो गई। मुझे देख कर वे धोखे में पड गये क्योकि ईश्वर की प्रेरणा से मैं उस समय भी हरदेई की सूरत में था । प्रभाकरसिंह ने मुझसे कई तरह के सवाल किये और मैंने उन्हे खूब ही धोखे में डाला । उनके पास एक छोटी सी किताब थी जिसमे उस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था । उसी किताब की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर गये थे। मैंने धोखा देकर वह किताब उनकी जेब में से निकाल ली और उसी की मदद से मुझे छुटकारा मिला। तिलिस्म से निकलते ही मैं सीधा आपसे मिलने के लिए इस तरफ रवाना हुआ और उन सभों को तिलिस्म के अन्दर ही छोड दिया। (बटुए में से किताब निकाल कर और भूतनाथ के हाथ में देकर) देखिये यही वह तिलिस्मी किताब है, अब आप इसकी मदद से

बखूबी उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते है।

भूत०। (किताब देख कर और दो चार पन्ने उलट पुलट कर रामदास की पीठ ठोंकता हुआ) शावाश, शावाश, तुमने वह काम किया जो आज मेरे किए भी कदाचित् नही हो सकता था? वाह वाह वाह! अब मेरे वरावर कौन हो सकता है? अच्छा अब तुम हमारे साथ इस खोह के अन्दर चलो और कुछ खा पीकर निश्चिन्त होने के वाद मुझसे खुलासे तौर पर कहो कि उस कूएं में जाने के वाद क्या हुआ। नि संदेह तुमने वडा काम किया, तुम्हारी जितनी तारीफ की जाय थोडी है। अच्छा यह तो वताओ कि वह तिलिस्मी किताव प्रभाकरसिंह को कहा से मिली, क्या इस वात का भी कुछ पता लगा?

राम०। इसके विषय में मै कुछ भी नही जानता।

भूत०। खैर इसके जाच करने की कुछ विशेष जरूरत भी नही है।

राम०। मै समझता हू कि अब आप उस तिलिस्म के अन्दर जरूर जायगे और जमना और सरस्वती तथा इन्दुमति को अपने कब्जे में करेंगे।

भूत०। जरूर, क्या इसमें भी कोई शक है! अभी घटे डेढ घंटे में हम और तुम यहा से रवाना हो जायंगे और आधी रात वीतने के पहिले ही वहा जा पहुचेंगे। अब तो हम लोग पास आ गये है सिर्फ तीन चार घंटे का ही तो रास्ता है। आज के पहिले जमना और सरस्वती का इतना डर न था जितना अब उनके ख्याल से मै काप उठता हू क्योकि पहले तो सिवाय दयाराम के मारने के और किसी तरह का इल्जाम वे मुझ पर नही लगा सकती थी और उस वात का कुछ सवूत मिल भी नही सकता था क्योंकि मैने ऐसा किया ही नही, परन्तु अब तो वे लोग कई तरह का इल्जाम मुझ पर लगा सकती हैं और वेशक इधर मैंने उन सभों के साथ वडी वडी वुराइयां भी की है, ऐसी अवस्था में उनका वच जाना मेरे लिये वडा ही अनर्थकारक होगा अस्तु जिस तरह हो सकेगा मैं जमना सरस्वती इन्दुमति प्रभाकरसिंह और गुलावसिंह को भी जान से मार कर वखेड़ा तै करूंगा। हा

गुलाबसिंह का कुछ पता है कि वह कहा है और क्या कर रहा है ? क्योंकि तुम्हारी जुबानी जो कुछ सुना है उससे मालूम होता है कि वह प्रभाकरसिंह के साथ तिलिस्म के अन्दर नही गया ।

राम० । हा ठीक है, पर गुलाबसिंह का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ । अच्छा मैं एक बात आपसे पूछा चाहता हू ।

भूत० । वह क्या ?

राम० । आपने जो अभी अपना हाल बयान किया है । उसमे चन्द्रशेखर का हाल सुनने से मुझे बडा ही ताज्जुब हो रहा है । कृपा कर यह बताइये कि वह चन्द्रशेखर कौन है और आप उससे इतना क्यो डरते है । क्योकि उसे अपने कब्जे में करने की सामर्थ्य आप में नही है ?

भूत० । (उसकी याद से काप कर) इस दुनिया मे मेरा सबसे बडा दुश्मन वही है, ताज्जुब नही कि एक दिन उसी की बदौलत जीते जागते रहने पर भी मुझे यह दुनिया छोडनी पडे । वह बडा ही बेढब आदमी है, बडा ही भयानक है, तथा ऐयारी में भी बडा ही होशियार है । कुश्ती में मैं दो दफे उससे हार चुका हू और ऐयारी मे वह कई दफे मुझे जक दे चुका है ! आश्चर्य होता है कि उसके बदन पर कोई हरबा असर नही करता ! न मालूम उसने किसी तरह का कवच पहिर रक्खा है या ईश्वर ने उसका बदन ही ऐसा बनाया है ! उसके बदन पर मेरी दो तलवारें टूट चुकी है । उसकी तो सूरत ही देख कर मै बदहवास हो जाता हू ।

राम० । (आश्चर्य के साथ) आखिर वह है कौन ?

भूत० । (कुछ सोच कर) अच्छा फिर कभी उसका हाल तुमसे कहेगे, इस समय जो कुछ बातें दिमाग मे पैदा हो रही है उन्हे पूरा करना चाहिए अर्थात् जमना सरस्वती और इन्दुमति के बखेडे से तो छुट्टी पा लें फिर चन्द्रशेखर को भी देख लिया जायगा, आखिर वह अमृत पीकर थोडे ही आया होगा ।

इतना कह कर भूतनाथ उठ खडा हुआ और अपने दोनो शागिर्दो को

साथ लिए हुए खोह के अन्दर चला गया। इस समय रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी ?

पांचवां बयान

दूसरी पहाड़ी पर चढ कर ऊपर ही ऊपर जमना सरस्वती और इन्दुमति के पास पहुचने में जल्दी करने पर भी प्रभाकरसिंह को आधे घंटे से ज्यादा देर लग गई। "क्या इतनी देर तक दुश्मन ठहर सकता है ? क्या इतनी देर तक ये नाजुक औरतें ऐसे भयानक दुश्मन के हाथ से अपने को बचा सकती हैं ? क्या इस निर्जन स्थान में कोई उन औरतो का मददगार पहुच सकता है ?, नही ऐसी बात तो नही हो सकती !" यही सब कुछ सोचते हुए प्रभाकरसिंह बडी तेजी के साथ रास्ता तै करके वहा पहुचे जहा जमना सरस्वती और इन्दुमति को छोड गये थे। उन्हे यह आशा न थी कि उन तीनो से मुलाकात होगी, मगर नही, ईश्वर बड़ा ही कारसाज है, उसने इस निर्जन स्थान मे भी उन औरतो के लिए एक बहुत बडा मददगार भेज दिया जिसकी बदौलत प्रभाकरसिंह के पहुँचने तक वे दोनो दुश्मन के हाथ से बची रह गईं।

प्रभाकरसिंह ने वहा पहुँच कर देखा कि जमना सरस्वती और इन्दुमति दुश्मन के खौफ से बदहवास होकर मैदान की तरफ भागी जा रही हैं और एक नौजवान बहादुर आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तलवार से उस दुश्मन का मुकाबिला कर रहा है जो उन तीनों औरतो को मारने के लिए वहा आया था। यह तमाशा देख प्रभाकरसिंह तरद्दुद मे पड गये और सोचने लगे कि हम उन भागती हुई औरतो को ढाढस देकर लौटा लावें या पहिले इस बहादुर की मदद करें जो इस समय हमारे दुश्मन का मुकाबिला बडी बहादुरी के साथ कर रहा है। उन दोनो बहादुरो की अद्भुत लड़ाई देख कर प्रभाकरसिंह प्रसन्न हो गये। थोडी देर के लिए उनके दिल से तमाम फुलकत जाती रही और वे एकटक उन दोनो की लड़ाई का तमाशा देखने लगे। वह शैतान जो जमना इत्यादि को मारने आया था यद्यपि बहादुर

था और लडाई में अपनी तमाम कारीगरी खर्च कर रहा था मगर उस नकाबपोश के मुकाबले वह बहुत दबा हुआ मालूम पड़ने लगा, यहा तक कि उसका दम फूलने लगा और नकाबपोश के मोढ़े पर बैठ कर उसकी तलवार दो टुकडे हो गई।

कुछ देर के लिए लडाई रुक गई और दोनो बहादुर हट कर खडे हो गये। उस शैतान दुश्मन को जिसका नाम इस मौके के लिये हम बैताल रख लेते हैं विश्वास था कि तलवार टूट जाने पर नकाबपोश उस पर जरूर हमला करेगा, मगर नकाबपोश ने ऐसा न किया। वह हट कर खडा हो गया और बैताल से बोला, "कहो अब किस चीज से लडोगे? मैं उस आदमी पर हर्बा चलाना उचित नही समझ जिसका हाथ हथियार से खाली हो।"

इसका जवाब बैताल ने कुछ न दिया, उसी समय नकाबपोश ने प्रभाकरसिंह की तरफ देखा और कहा, "मुझे तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नही है, तुम (हाथ का इशारा करके) उन औरतों को सम्हालो और ढाढ़स दो जो इस शैतान के डर से बदहवास होकर भागी जा रही हैं या दुश्मन का मुकाबला करो तो मैं उन्हें जाकर समझाऊ और यहाँ लौटा ले आऊ।"

प्रभाकरसिंह के दिल में यह खयाल बिजली की तरह दौड गया कि उन औरतो की तरफ जाता हूं तो यह नकाबपोश मुझे नामर्द समझेगा और अगर स्वयम् दुश्मन का मुकाबिला करके नकाबपोश को औरतों की तरफ जाने के लिए कहता हू तो क्या जाने यह भी उन सभों का दुश्मन ही हो और उन औरतों के पास जाकर कोई बुराई का काम कर बैठे। इस खयाल ने क्षणमात्र के लिए प्रभाकरसिंह को चुप कर दिया। इसके बाद प्रभाकरसिंह ने कहा, "जो तुम कहो वही करूं?"

नकाब०। बेहतर होगा कि तुम उन्ही औरतो की तरफ जाओ।

"बहुत अच्छा" कह प्रभाकरसिंह बडी तेजी के साथ उनकी तरफ लपक पडे जो भागती हुई अब कुछ कुछ आंखो की ओट हो चली थी। वे भागती चली जाती थी और पीछे की तरफ फिर फिर कर देखती जाती

थी। दौड़ते दौड़ते वे एक ऐसे स्थान पर पहुंची जिसके आगे एक लम्बी और बहुत ऊंची दीवार थी और बीच में उस पार जाने के लिए एक दर्वाजा बना हुआ था जो इस समय खुला था। इन औरतों को इतनी फुर्सत कहां कि दीवार की लम्बाई चौड़ाई की जांच करतीं या दूसरी तरफ भागने की कोशिश करतीं? वे सीधी उस दर्वाजे के अन्दर घुस गईं, खास करके इस खयाल से भी कि अगर इसके अन्दर जाकर दर्वाजा बन्द कर लेंगे तो दुश्मन से बचाव हो जायगा।

उसी समय प्रभाकरसिंह भी नजदीक पहुँच गये और इन्दुमति की निगाह प्रभाकरसिंह के ऊपर जा पड़ी। प्रभाकरसिंह ने हाथ के इशारे से उन्हें रुक जाने के लिए कहा परन्तु उसी समय वह दर्वाजा बन्द हो गया जिसके अन्दर जमना सरस्वती और इन्दुमति घुस गई थीं। प्रभाकरसिंह को यह चिन्ता उत्पन्न हुई कि यह दर्वाजा खुद बन्द हो गया या इन्दुमति ने जान बूझ कर बन्द कर दिया।

थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह उस दर्वाजे के पास पहुंचे और धक्का देकर उसे खोलना चाहा मगर दर्वाजा न खुला। प्रभाकरसिंह ने चाहा कि आगे बढ़ कर देखें कि यह दीवार कहाँ तक गई है परन्तु उसी समय सरस्वती की आवाज कान में पड़ने से वे रुक गये और ध्यान देकर सुनने लगे। यह आवाज उस दर्वाजे के पास दीवार के अन्दर से आ रही थी मानो सरस्वती किसी दूसरे आदमी से बातचीत कर रही है जैसा कि नीचे लिखा जाता है :—

सरस्वती०। हाय! यहाँ भी दुष्टों से हम लोगों का पिण्ड न छूटेगा? ये लोग इस तिलिस्म के अन्दर आ क्योंकर आ गये यही ताज्जुब है!!

जवाब०। (जो किसी जानकार आदमी के मुंह से निकली हुई आवाज मालूम पड़ती थी) खैर अब तो आ ही गये, अब तुम लोगों के निकाले हम लोग नहीं निकल सकते और अब तुम लोग जान बचा ही कर क्या करोगी क्योंकि प्रभाकरसिंह की निगाह में तुम लोगों की कुछ भी इज्जत न रही,

उन्ही को नही बल्कि मुझे भी वह सब हाल मालूम हो गया। इस समय तुम लोग उसी पाप का फल भोग रही हो, अफसोस यही, तुम लोगों से ऐसी आशा कदापि न थी! अगर मैं ऐसा जानता तो इस पवित्र माटी को तुम लोगों के पापमय शरीर से कभी अपवित्र होने न देता।

प्रभाकर०। (ताज्जुब से मन में) है? क्या यह सब हाल इन्द्रदेव को है!

सरस्वती०। मेरी समझ में नही आता कि तुम क्या कह रहे हो! क्या किसी दुष्ट ने हम लोगो को बदनाम किया है? क्या किसी कमीने ने हम लोगो पर कलंक का धब्बा लगाना चाहा है? कभी कदापि नही, स्वप्न में भी ऐसा नही हो सकता? हम लोगों के चाल चलन को डावाँडोल करने वाला इस संसार में कोई भी नही है। मैं इसके लिए खुले दिल से कसम खा सकती हूं।

जवाब०। दुनिया में जितने बदकार आदमी होते हैं वे कसम खाने में बहुत तेज होते है! मुझसे तुम लोगो की यह चालाकी नहीं लग सकती। जो कुछ मैं इस समय कह रहा हूं यह केवल किसी से सुनी सुनाई बातों के कारण नही है बल्कि मुझे इस बात का बहुत ही पक्का सबूत मिल चुका है जिससे तुम कदापि इनकार नही कर सकतीं।

प्रभाकर०। (मन में) बेशक यह वही बात मालूम होती है जो हरदेई ने मुझसे कही थी।

सर०। कैसा सबूत और किसने बतलाया? जरा मैं भी तो उसे सुनूं।

जवाब०। सुना तो जरूर ही सुनाता, अभी नही तो और घण्टे भर में सही, प्रभाकरसिंह के सामने ही मैं इस बात को खोलूंगा और इस कहावत को चरितार्थ करके दिखा दूंगा कि 'छिपत न दुष्कर पाप, कोटि जतन कीजे तऊ।'

सरस्वती०। कोई चिन्ता नही, मैं भी अच्छी तरह उस आदमी का मुंह काला करूंगी जिसने हम लोगों को बदनाम किया है और अपने को अच्छी तरह निर्दोष साबित कर दिखाऊंगी।

आवाज० । अगर तुम्हारे किये हो सकेगा तो जरूर ऐसा ही करना।

सर० । हा हा, जरूर ही ऐसा करूंगी । मेरा दिल उसी समय खटका था जब प्रभाकरसिंह ने कुछ व्यंग के साथ बातें की थी। मै उस समय उसका मतलब कुछ नही समझ सकी थी मगर अब मालूम हो गया कि कोई महापुरुष हम लोगों को बदनाम करके अपना काम निकाला चाहते हैं।

जवाब० । इस तरह की बातें तुम प्रभाकरसिंह को समझाना, मुझ पर इसका कुछ भी असर नही हो सकता, यदि मै तुम्हारा नातेदार न होता तो मुझे इतना कहने की कुछ जरूरत भी न थी, मैं तुम लोगो का मुह भी न देखता और अब भी ऐसा ही करूगा। मैं नही चाहता कि अपना हाथ औरतो के खून मे नापाक करूं तथापि एक दफे प्रभाकरसिंह के सामने इन बातो को साबित जरूर करूगा जिसमे कोई यह न कहे कि जमना सरस्वती और इन्दुमति पर किसी ने व्यर्थ ही कलंक लगाया । अच्छा अब मै जाता हू फिर मिलू गा ।

सरस्वती० । अच्छा अच्छा देखा जायगा, इन चालबाजियो से काम नही चलेगा ।

बस इसके बाद किसी तरह की आवाज न आई, अस्तु कुछ देर तक और कान लगा कर ध्यान देने के बाद प्रभाकरसिंह पुन उस दीवार के अन्दर जाने का उद्योग करने लगे। इस ख्याल से कि देखें यह दीवार कहा पर खतम हुई है वे दीवार के साथ ही साथ पूरब तरफ रवाना हुए। दीवार बहुत दूर तक नहीं गई थी, केवल चार या पाँच बिगहे के बाद मुड़ गई थी, परन्तु प्रभाकरसिंह भी घूम कर दूसरी तरफ चल पड़े। बीस पचीस कदम आगे जाने के बाद उन्हे एक खुला दर्वाजा मिला। प्रभाकरसिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और दूर से जमना सरस्वती और इन्दुमति को एक पेड के नीचे बैठे देखा जो नीचे की तरफ सिर झुकाये हुए आखो से गरम गरम आसू गिरा रही थी। क्रोध म भरे हुए प्रभाकरसिंह उन तीनो के पास चले गये और सरस्वती की तरफ देख के बोले—"यह कौन आदमी

था जो अभी तुमसे बाते कर रहा था ?"

सरस्वती० । मुझे नहीं मालूम कि वह कौन था ।

प्रभा०। फिर तुमसे इस तरह की बातें करने की उसे जरूरत ही क्या थी ?

सरस्वती० । सो भी मैं कुछ कह नही सकती ।

प्रभाकर० । हा ठीक है, मुझसे कहने की तुम्हें जरूरत ही क्या है ! खैर जाने दो, मुझे भी विशेष सुनने की कोई आवश्यकता नहीं है, मैं तो पहिले ही हरदेई की जुबानी तुम लोगो की बदकारियो का हाल सुन कर अपना दिल ठढा कर चुका था, अब इस आदमी की बातें सुन कर और रहा सहा शक जाता रहा । यद्यपि तुम लोग इस योग्य थी कि इस दुनिया से उठा दी जाती और यह पृथ्वी तुम्हारे असह्य बोझ से हलकी कर दी जाती, परन्तु नही, उस आदमी की तरह जो अभी तुमसे बाते कर रहा था मैं भी तुम लोगों के खून से अपना हाथ अपवित्र नही किया चाहता । खैर तुम दोनों बहिनो से तो मुझ कुछ विशेष कहना नही है, रही इन्दुमति सो इसे मैं इस समय से सदैव के लिए त्याग करता हू । शास्त्र में लिखा हुआ है कि किसी का त्याग कर देना मार डालने के ही बराबर है ।

इन्दु० । (रोती हुई हाथ जोड कर) प्राणनाथ ! क्या तुम दुश्मनो की जुबानी गढी गढाई बाते सुन कर मुझे त्याग कर दोगे !

प्रभा० । हा त्याग कर दूंगा, क्योंकि जो कुछ बाते तुम्हारे विषय में मैंने सुनी हैं उन्हें यह दूसरा सबूत मिल जाने के कारण मैं सत्य मानता हू । केवल इतना ही नही तुम्हारी ही जुबान से उन बातो की पुष्टि हो चुकी है । अब इसकी भी कोई जरूरत नही कि तुम लोगों को इस तिलिस्म के बाहर ले जाने का उद्योग करू अन्तु अब मैं जाता हू । (छाती पर हाथ रख कर) मैं इस वज्र की चोट को इसी छाती पर सहन करूगा और फिर जो कुछ ईश्वर दिखावेगा देखूगा । मुझे विश्वास हो गया कि बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी ।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह वहा से रवाना हो गये । इन्दुमति रो रो

कर पुकारती ही रह गई मगर उन्होंने उसकी कुछ भी न सुनी। जिस खिड़की की राह वे इस दीवार के अन्दर गये थे उसी राह से बाहर चले आये और उस तरफ रवाना हुए जहाँ नकाबपोश और बैताल को लड़ते हुए छोड़ आये थे।

वहाँ पहुंच कर प्रभाकरसिंह ने दोनो में से एक को भी न पाया, न तो बैताल ही पर निगाह पड़ी और न नकाबपोश ही की सूरत दिखाई दी। ताज्जुब के साथ प्रभाकरसिंह चारो तरफ देखने और सोचने लगे कि कही मैं जगह तो नहीं भूल गया, या वे दोनो ही तो आपुस में फैसला करके कही नही चले गये।

कुछ देर तक इधर उधर ढूंढने के बाद प्रभाकरसिंह एक पत्थर को चट्टान पर बैठ गये और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा देकर तरह तरह की बात सोचने लगे। उन्हें इन्दुमति को त्याग देने का बहुत ही रंज था और वे अपनी जल्दबाजी पर कुछ देर के बाद पछताने लग गये थे। वे अपने दिल से कहने लगे कि अफसोस, मैंने इस काम में जल्दबाजी की। यद्यपि इन्दुमति की बदकारी का हाल सुन कर मेरे सिर से पैर तक आग लग गई थी मगर मुझे उसका कुछ सबूत भी तो ढूंढ लेना चाहिये था। सम्भव है कि हरदेई इन सभो की दुश्मन बन गई हो और उसने हम लोगों को रंज पहुँचाने के खयाल मे ऐसी मनगढन्त कहानी कह कर और इन्दुमति पर इल्जाम लगा कर अपना कलेजा ठण्डा किया हो। अगर वास्तव में यही बात हो तो कोई खास सबब जरूर है। अच्छा तो वह दूसरा आदमी कौन हो सकता है जिसने उस दीवार के अन्दर सरस्वती से बातचीत की थी? सम्भव है कि बैताल की तरह वह भी इन्दुमति जमना और सरस्वती का दुश्मन हो और मुझे सुनाने और धोखे में डालने के लिए उसने यह ढंग रचा हो। हो सकता है, यह कोई आश्चर्य की बात नही है। साथ ही इसके यह भी तो सोचना चाहिये कि अगर जमना और सरस्वती को ऐसा ही बुरा काम करना होता तो वे मुझे और इन्दुमति को अपने घर क्यों लाती और

पहुचे तो उसी खिडकी की राह उसके अन्दर घुसे जिस राह से पहिले गये थे। इस समय वह रोशनी जो एक दफे बडी तेजी के साथ बढ़ चुकी थी धीरे धीरे कम होने लगी थी।

जहां पर जमना सरस्वती और इन्दुमति से मुलाकात हुई थी वहा पहुँच कर प्रभाकरसिंह ने देखा कि एक बहुत बडी चिता सुलग रही है और बहुत ध्यान देने पर मालूम होता है कि उसके अन्दर कोई लाश भी जल रही है जो अब अन्तिम अवस्था को पहुच कर भस्म हुआ ही चाहती है। धूए मे बदबू होने से भी इस बात की पुष्टि होती थी।

प्रभाकरसिंह का दिल बडी तेजी के साथ उछल रहा था और वे बेचैनी और घबराहट के साथ उस चिता को देख रहे थे कि यकायक उनकी आखे डबडबा आई और गरम गरम आसू उनके गुलाबी गालों पर मोतियो की तरह लुढ़कने लगे। इससे भी उनके दिल की हालत न सम्हली और वे बडे जोर से पुकार उठे, "हाय इन्दे! क्या इस धधकती हुई अग्नि के अन्दर तू ही तो नही है?" इतना कह कर प्रभाकरसिंह जमीन पर बैठ गए और सर पर हाथ रख कर अपने बेचैन दिल को काबू में लाने की कोशिश करने लगे।

घण्टे भर तक अपने को सम्हालने का उद्योग करने पर भी वे कृतकार्य न हुए और फिर उठ कर बडी बेदिली के साथ पुन उस चिता की तरफ देखने लगे जो अब लगभग निर्धूम सी हो रही थी परन्तु उसकी रोशनी दूर दूर तक फैल रही थी।

यकायक प्रभाकरसिंह की निगाह किसी चीज पर पडी जो उस चिता से कुछ दूरी पर थी परन्तु आग की रोशनी के कारण अच्छी तरह दिखाई दे रही थी। प्रभाकरसिंह उसके पास चले गये और बिना कुछ सोचे विचारे उसे उठा कर बडे गौर मे देखने लगे। यह कपडे का एक टुकडा था जो हाथ भर से कुछ ज्यादे बडा था। प्रभाकरसिंह ने पहिचाना कि यह इन्दुमति की उसी साडी में का एक टुकडा है जिसे पहिरे हुए उसे आज उन्होंने उस जगह पर देखा था। इस टुकडे ने उनके दिल को चकनाचूर कर दिया और

उस समय तो उनको अजीब हालत हो गई जब उस टुकडे के एक कोने में कुछ बधा हुआ उन्होने देखा। खोलने पर मालूम हुआ कि वह एक चीठी है जिसकी लिखावट ठीक इन्दुमति के हाथ की लिखावट सी है, परन्तु अफसोस कि इस रोशनी में तो वह पढी ही नही जाती और चिता की आच अपने पास आने की इजाजत नही देती। अब उस चिता में इतनी रोशनी भी नही रह गई थी कि दूर ही से इस लिखावट को पढ सकें।

इस समय कोई दुश्मन भी प्रभाकरसिंह की बेचैनी को देखता तो कदाचित उनके साथ हमदर्दी का बर्ताव करता।

धीरे धीरे चिता ठढी हो गई मगर प्रभाकरसिंह ने उसका पीछा न छोड उसी के पास ही बैठ कर रात बिता दी। हाथ में वह कागज लिए हुए कई घण्टे तक प्रभाकरसिंह सुबह की सुफेदी का इन्तजार करते रहे और जब पत्र पढने योग्य चांदना हो गया तब उसे बडी बेचैनी के साथ पढने लगे। यह लिखा हुआ था —

"प्राणनाथ! बस हो चुका, दुनिया इतनी ही थी। मैं अब जाती हूं और तुम्हें दयामय परमात्मा के सुपुर्द करती हूं। मै अब तक इस दुनिया मे रही बहुत ही सुखी रही, तरह तरह के दुःख भोगने पर भी मुझे विशेष कष्ट न हुआ क्योंकि तुम्हारे प्रेम का सहारा हर दम मेरे साथ था। इसके अतिरिक्त आशालता की हरियाली जिसका सब कुछ सम्बन्ध तुम्हारे ही शरीर के साथ था मुझे सदैव प्रसन्न रखता था, परन्तु अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नही रहा और मेरी वह आशालता भी बिल्कुल ही सूख गई। तुम्हारे अतिरिक्त यदि और कुछ इस दुनिया में मुझे देखना होता तो मै अवश्य जीती रहती परन्तु नही, जब तुम्ही ने मुझे त्याग दिया तो अब क्यो और किसके लिए जीऊं? मै इसी विचार से बहुत सन्तुष्ट हूं कि तुम्हें मेरे लिए दुःख न होगा क्योंकि किसी दुष्ट की कृपा से तुम मुझसे रुष्ट हो चुके हो इसलिए तुमने मुझे त्याग दिया और तुम्हें मेरे मरने का कुछ भी दुःख न होगा, परन्तु यदि कदाचित् किसी समय इस जालसाजी का भंडा फूट जाय और

तुम्हारे विचार से मैं बेकसूर समझी जाऊं तो यही प्रार्थना है कि तुम मेरे लिए कदापि दुःखित न होना, बस

इस पत्र को पढ़ कर प्रभाकरसिंह बहुत बेचैन हुए। मालूम होता था कि किसी ने अन्दर घुस और हाथ से पकड़ के उनका कलेजा ऐंठ दिया है। यद्यपि उन्होंने इन्दुमति का तिरस्कार कर दिया था परन्तु इस समय उनके दिल ने गवाही दे दी कि 'हाय, तूने व्यर्थ इन्दुमति को त्याग दिया? वह वास्तव में निर्दोष थी इसी कारण तेरे उन शब्दों को बर्दाश्त न कर सकी जो उसके सतीत्व में धब्बा लगाने के लिये तूने कहे थे। हाय इन्दे? अब मुझे मालूम हो गया कि तू वास्तव में निर्दोष थी, आज नहीं तो कल इस बात का पता लग ही जायगा।' इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने पुनः उस चिता की तरफ देखा और कुछ सोचने के बाद गरम गरम आँसू बहाते हुए वहाँ से रवाना हुए मगर उनकी भृकुटी, उनके फड़कते हुए होंठ और उनकी लाल लाल आँखों से जाना जाता है कि इस समय किसी से बदला लेने का ध्यान उनके दिल में जोश मार रहा है।

उस दीवार के बाहर हो जाने बाद प्रभाकरसिंह को यकायक यह खयाल पैदा हुआ कि इन्दुमति का हाल तो जो कुछ हुआ मालूम हो गया, परन्तु जमना और सरस्वती के विषय में कुछ मालूम न हुआ, सम्भव है कि वहां उन लोगों ने भी इसी तरह कुछ लिख कर रख दिया हो जिसके देखने से उन लोगों का कुछ हाल मालूम हो जाय। यदि उन लोगों से मुलाकात हो गई तो उनकी जुबानी इन्दुमति की अन्तिम अवस्था का ठीक ठीक हाल मालूम हो जायगा। यह सोच कर प्रभाकरसिंह पुनः पलट पड़े और उस चिता के पास जाकर इधर उधर देखने लगे परन्तु और किसी बात का पता न लगा, लाचार प्रभाकरसिंह लौट कर उस दीवार के बाहर निकल आये।

अब दिन घण्टे भर से ज्यादे चढ़ चुका था। दीवार के बाहर निकल कर प्रभाकरसिंह कुछ सोचने लगे और इधर उधर देखने के बाद कुछ सोच कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और दूर तक निगाह दौड़ा कर देखने लगे।

यकायक उनकी निगाह हरदेई के ऊपर पडी जो उसी दीवार की तरफ बढ़ी जा रही थी जिसके अन्दर जमना सरस्वती और इन्दुमति को प्रभाकरसिंह ने छोड़ा था। हरदेई को देखते ही प्रभाकरसिंह पेड के नीचे उतरे और बडी तेजी के साथ उसी तरफ जाने लगे।

यह हरदेई वास्तव मे वही नकली हरदेई थी जो एक दफे प्रभाकरसिंह को धोखे में डाल चुकी थी अर्थात् भूतनाथ का शागिर्द रामदास इस समय भी हरदेई की सूरत बना हुआ भूतनाथ के साथ ही इस तिलिस्म के अन्दर आया हुआ था और पुन जमना सरस्वती इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को धोखे में डाल कर अपना या अपने ओस्ताद का कुछ काम निकालना चाहता था, मगर इस समय उसे यह खबर न थी कि प्रभाकरसिंह मुझे देख रहे हैं और न वह प्रभाकरसिंह से मिला ही चाहता था।

रामदास ने जब आशा के विरुद्ध प्रभाकरसिंह को अपनी तरफ आते देखा तो ताज्जुब में आकर चौंक पडा और भाग जाना मुनासिब न समझ कर खडा हो गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये।

प्रभाकर०। (नकली हरदेई के पास पहुच कर) हरदेई, तू यहा कैसे आई ?

हरदेई०। मेरी किस्मत मुझे यहा ले आई। मै तो उसी समय अपनी जान से हाथ धो चुकी थी जिस समय आपसे अलग हुई थी, मगर मेरी किस्मत में अभी कुछ दिन और जीना बदा था इसलिए एक महापुरुष की मदद से बच गई।

प्रभाकर०। आखिर तुझ पर क्या आफत आई थी सो तो सुनूं ?

हरदेई०। आप जब थकावट मिटाने के लिये उस चबूतरे पर लेट गये तो उसी समय आपकी आख लग गई, मै बडी देर तक चुपचाप बैठी बैठी घबडा गई थी इस लिए उठ कर इधर उधर टहलने लगी। घूमती फिरती मैं कुछ दूर निकल गई, उसी समय यकायक पत्तों की झुरमुट में से एक आदमी निकल आया जो स्याह कपडे और नकाब से अपने बदन और चेहरे को छिपाये हुए था। मैं उसे देख कर घबडा गई और दौड कर आपको

तरफ आने लगी मगर उसने झपट कर मुझे पकड़ लिया और एक मुक्का मेरी पीठ पर इस जोर से मारा कि मैं तिलमिला कर बैठ गई। उसने मुझे जबर्दस्ती कोई दवा सुंघा दी जिससे मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुध जाती रही, दूसरे दिन जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया, तब से मैं आपको बराबर खोज रही हूं।

प्रभाकर०। (हरदेई की बेतुकी बातों को ताज्जुब से सुन कर) आखिर उसने तुझे इस तरह सता कर क्या फायदा उठाया?

हरदेई०। (कुछ घबड़ानी सी होकर) सो तो मैं कुछ भी नहीं जानती।

प्रभाकर०। उसने छुरी या खञ्जर से तुझे जख्मी तो नहीं किया था?

हरदेई०। जी नहीं।

प्रभाकर०। मैं जब सो कर उठा तो तुझे ढूंढने लगा। एक जगह केले की झुरमुट में तेरे कपड़े का टुकड़ा खून से भीगा हुआ देखा था जिससे मुझे खयाल हुआ कि हरदेई को किसी ने खञ्जर या छुरी से जख्मी किया है।

हरदेई०। जी नहीं मुझे तो इस बात की कुछ भी खबर नहीं।

प्रभाकर०। और वह महात्मा पुरुष कौन थे जिन्होंने तुझे बचाया? अभी अभी तू कह चुकी है कि 'बेहोशी के बाद जब मैं होश मे आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया' अस्तु कैसे समझा जाय कि किसी महापुरुष ने तुझे बचाया?

नकली हरदेई के चेहरे पर घबड़ाहट की निशानी छा गई और वह इस भाव को छिपाने के लिए मुड़ कर पीछे की तरफ देखने लगी मगर प्रभाकरसिंह इस ढंग को अच्छी तरह समझ गये और जरा तीखी आवाज में बोले, "बस मुझे ज्यादे देर तक ठहरने की फुरसत नहीं है, मेरी बातों का जवाब जल्दी जल्दी देती जा।"

हरदेई०। जी हां, जब मैं खुलासे तौर पर अपना हाल कहूंगी तब आपको मालूम हो जायगा कि वह महात्मा कौन था और अब कहां है जिसने मुझे बचाया था, अभी मैंने सक्षेप ही में अपना हाल आपसे कहा था।

प्रभा०। खैर तो वह खुलासा हाल कहने में देर क्या है। अच्छा जाने

दे खुलासा हाल भी मैं सुन लूंगा, पहिले तेरी तलाशी लिया चाहता हू।

हरदेई० (घवडा कर) तलाशी कैसी और क्यो ?

प्रभाकर०। इसका जवाव मैं तलाशी ले लेने के वाद दूंगा।

हरदेई०। आखिर मुझ पर आपको किस तरह का शक हुआ ?

प्रभाकर०। मुझे कई वातो का शक हुआ जो मैं अभी कहना नही चाहता।

इतना कहते ही कहते प्रभाकरसिंह ने हरदेई का हाथ पकड लिया क्योकि उसके रग ढग से मालूम होता था कि वह भागना चाहती है। हरदेई ने पहिले चाहा कि झटका देकर अपने को प्रभाकरसिंह के कब्जे से छुडा ले मगर ऐसा न हो सका। प्रभाकरसिंह ने जव देखा कि यह धोखा देकर भाग जाने की फिक्र मे है तव उन्हें वेहिसाव क्रोध चढ आया और एक मुक्का उसकी गरदन पर मार कर जवर्दस्ती उन्होने उसके ऊपर का कपडा खैंच लिया।

रामदास यद्यपि ऐयार था मगर उसमें इतनी ताकत न थी कि वह प्रभाकरसिंह का मुकावला कर सकता। प्रभाकरसिंह के हाथ का मुक्का खाकर वह वेचैन हो गया और उसकी आंखो के आगे अन्धेरा छा गया और फिर उसकी हिम्मत न पडी कि वह भाग जाने के लिए उद्योग करे। प्रभाकरसिंह को भी विश्वास हो गया कि यह हरदेई नही है वल्कि कोई ऐयार है। मामूली कपडा उतार लेने के साथ ही प्रभाकरसिंह का वचा वचाया शक भी जाता रहा साथ ही इसके उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया कि हमारी तिलिस्मी किताव जरूर इसी ऐयार ने चुराई है।

तिलिस्मी किताव पा जाने की उम्मीद में प्रभाकरसिंह ने जहा तक हो सका वडी होशियारी के साथ उसकी तलाशी ली और उसके ऐयारी के वटुए में भी जिसे वह छिपा कर रखते हुए था देखा मगर किताव हाथ न लगी। तलाशी में केवल ऐयारी का वटुया खजर और एक कटार उसके पास से मिला जिसे प्रभाकरसिंह ने अपने कब्जे मे कर लिया और पूछा, "वस अव तो तेरा भेद अच्छी तरह खुल गया। खैर यह वता कि तेरा क्या नाम है और मेरे साथ तूने इस तरह की दगावाजी क्यो की ?"

राम०। क्या जो कुछ मैं बताऊंगा उस पर आप विश्वास कर लेंगे ?

प्रभाकर०। नही।

राम०। फिर इसे पूछने से फायदा ही क्या ?

प्रभाकरसिंह ने क्रोध भरी आँखों से सिर से पैर तक उसे देखा और कहा, "बेशक कोई फायदा नही मगर तूने मेरे साथ बडी दगाबाजी की और व्यर्थ ही वेचारी इन्दुमति पर झूठा कलक लगा कर उसे और साथ ही इसके मुझे भी बर्बाद कर दिया।"

राम०। बेशक मैंने किया तो बहुत बुरा मगर मैं तो ऐयार हू, मालिक की भलाई के लिये उद्योग करना मेरा धर्म है। जो कुछ मुझसे बन पडा किया अब आपके कब्जे में हू, जो उचित और धर्म समझिये कीजिये।

प्रभाकर०। (क्रोध को दबाते हुए) तू किसका ऐयार है ?

राम०। मैं पहिले ही कह चुका हू कि मेरी बातो पर आपको विश्वास न होगा, फिर इन सब बातो को पूछने से फायदा क्या है ?

प्रभाकरसिंह का दिल पहिले ही से जख्मी हो रहा था, अब जो मालूम हुआ कि हरदेई वास्तव में हरदेई नही है बल्कि कोई ऐयार है और इसने धोखा देकर अपना काम निकालने के लिये इन्दुमति जमना और सरस्वती को बदनाम किया था तो उनके दुःख और क्रोध की सीमा न रही, तिस पर रामदास की ढिठाई ने उनकी क्रोधाग्नि को और भडका दिया, अस्तु वे उचित अनुचित का कुछ भी विचार न कर सके। उन्होंने रामदास की कमर में एक लात ऐसी मारी कि वह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पडा, इसके बाद लात और जूते से उसकी ऐसी खातिरदारी की कि वह बेहोश हो गया और उसके मुह से खून भी बहने लगा। इतने पर भी प्रभाकरसिंह का क्रोध शान्त न हुआ और वे उसे कुछ और सजा दिया चाहते थे कि सामने से आवाज आई, "हा हा, बस जाने दो, हो चुका, बहुत हुआ !"

प्रभाकरसिंह ने आख उठा कर सामने की तरफ देखा तो एक वृद्ध महात्मा पर उनकी निगाह पडी जो तेजी के साथ प्रभाकरसिंह की तरफ चढ़े आ रहे थे।

छठवां बयान

वृद्ध महात्मा का ठाठ कुछ अजब ही ढग का था, सिर से पैर तक तमाम वदन में भस्म लगे रहने के कारण इनके रङ्ग रूप का वयान करना चाहे कठिन हो परन्तु फिर भी इतना जरूर कहेगे कि लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी उनके खूवसूरत और सुडौल वदन में अभी तक कही झुर्री नही पडी थी और न उनके सीधेपन में कोई झुकाव आया था। वड़ी वडी आखो मे अभी तक गुलावी डोरियां दिखाई दे रही थी और उनके कटाक्ष से जाना जाता था कि अभी तक उनकी रोशनी और ताकत में किसी तरह की कमी नही हुई है। रोआवदार चेहरा चौडी छाती तथा मजवूत और गठीले हाथ पैरो की तरफ ध्यान देने से यही कहने को जी चाहता है कि यह शरीर तो छत्र और मुकुट धारण करने योग्य है न कि जटा और कम्वल की कफनी के योग्य।

महात्मा के सिर पर लम्वी लम्वी जटा थी जो खुली हुई पीठ की तरफ लहरा रही थी। मोटे और मुलायम कम्वल का झगा वदन में और लोहे का एक डण्डा हाथ में था, वस इसके अतिरिक्त उनके पास और कुछ भी दिखाई नही देता था।

महात्मा को देखते ही प्रभाकरसिंह ने झुक के प्रणाम किया, वावाजी ने भी पास आकर आशीर्वाद दिया और कहा, "प्रभाकरसिंह, वस जाने दो, वहादुर लोग ऐयारों की जान नही मारते और ऐयार भी जान से मारने के योग्य नही होते वल्कि कैद करने के योग्य होते हैं। तुम इस समय यद्यपि इस योग्य नहीं हो कि इसे कैद करके कही रख सको तथापि यदि कहो तो हम इसका प्रवन्ध कर दें क्योंकि इस तिलिस्म के अन्दर हम इस वात को वखूवी कर सकते है ..

प्रभाकर०। (वात काट कर) आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं कदापि न करूंगा। आप वडे हैं, मेरा दिल गवाही देता है और कहता है कि यदि आप वास्तव में साधू न भी हों तो भी मेरे पूज्य और वडे हैं। जो कुछ

आज्ञा कीजिये मैं करने को तैयार हू पर आपको कदाचित यह न मालूम हुआ होगा कि इसने मुझे कैसी कैसी तकलीफें दी हैं और किस तरह मेरा सर्वनाश किया है, और इस समय भी यह कैसी ढिठाई के साथ बातें कर रहा है, अपना नाम तक नही बताता ।

बाबा० । मैं सब कुछ जानता हू, तुमने स्वयम् भूल कर अपने को इसके हाथ फसा दिया है, अगर वह किताब जिसमें इस तिलिस्म का कुछ थोडा सा हाल लिखा हुआ था और जो इन्द्रदेव ने तुमको दी थी इसने तुम्हारे जेब से न निकल ली होती तो यह कदापि यहाँ तक पहुँच न सकता, मगर अफसोस, तुमने पूरा धोखा खाया और उस किताब की भी बखूबी हिफाजत न कर सके ।

प्रभाकर० । बेशक ऐसा ही है, मुझसे बहुत बडी भूल हो गई । अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वास्तव में यह कौन है ।

बाबा० । हाँ तुम इसे नही जानते, हरदेई समझ कर तुम इसके हाथ से बर्बाद हो गये, यह असल में गदाधरसिंह का शागिर्द रामदास है । इसी ने असली हरदेई को धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और स्वयम हरदेई की सूरत बन जमना और सरस्वती को धोखे में डाला, इस तिलिस्मी घाटी का रास्ता देख लिया और भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाकर जमना सरस्वती और इन्दुमति को आफत में फसा दिया । भूतनाथ ने अपने हिसाब से तो उन तीनों को मार ही डाला था परन्तु ईश्वर ने उन्हें बचा लिया, सुनो हम इसका खुलासा हाल तुमसे बयान करते हैं ।

इतना कह कर बाबाजी ने भूतनाथ और रामदास का पूरा पूरा हाल जो हम ऊपर के बयानों में लिख आए हैं कह सुनाया अर्थात् जिस तरह रामदास ने हरदेई को गिरफ्तार किया, स्वय हरदेई की सूरत बन कर कई दिनो तक जमना सरस्वती के साथ रहा, घाटी मे आने जाने का रास्ता देख कर भूतनाथ को बताया, प्रभाकरसिंह की सूरत बन कर जिस तरह भूतनाथ इस घाटी के अन्दर आया, और जमना सरस्वती इन्दुमति तथा और लौडियो को भी कूंए के अन्दर फेंक कर बखेडा तै किया और अन्त में रामदास

स्वयं जिस तरह कूंए के अन्दर जाकर खुद भी उसमे फस गया आदि आदि रत्ती रत्ती हाल बयान किया, जिसे सुनकर प्रभाकरसिंह हैरान हो गये और ताज्जुब करने लगे।

प्रभाकर०। (आश्चर्य से) यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ ?

बाबा०। इसके पूछने की कोई जरूर नही है, जब हमको तुम पहिचान जाओगे तब स्वयम् तुम्हें इसका सबब मालूम हो जायगा। (रामदास की तरफ देख के) क्यो रामदास ! जो कुछ हमने कहा वह सब सच है या नही ?

रामदास०। बेशक आपने जो कुछ कहा सब सच है।

बाबा०। (रामदास से) अब तो बताओ कि तुम्हारा गुरु भूतनाथ कहा है ?

रामदास०। मुझे नही मालूम।

बाबा०। (हंस कर) अगर तुम्हें मालूम नही है तो मुझे जरूर मालूम है ! (प्रभाकरसिंह से) अच्छा, अब हम जाते है, जरूरत होगी तो फिर मुलाकात करेंगे। हम केवल इसीलिए तुम्हारे पास आये थे कि इस रामदास और भूतनाथ की चालबाजी से तुम्हें होशियार कर दे जिसमें इन लोगो के बहकाने में पड कर तुम जमना सरस्वती और इन्दुमति के साथ किसी तरह की बेमुरौवती न कर जाओ मगर अफसोस हमारे पहुंचने के पहिले ही तुमने इन लोगो के धोखे में पड कर इन्दुमति और साथ ही उसके जमना सरस्वती का तिरस्कार कर दिया और उन लोगो के साथ ऐसा बर्ताव किया जो तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान के योग्य न था !

प्रभाकर०। (डबडबाई हुई आंखो से और एक लम्बी सास लेकर) बेशक मैंने बहुत बुरा धोखा खाया, मेरी किस्मत ने मुझे डुबा दिया और कहीं का न रखा ! (आसमान की तरफ देख कर) हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ? क्या मै इसी लिए इस दुनिया में आया था कि तरह तरह की तकलीफें उठाऊं ? जब से मैंने होश सम्हाला तब से आज तक साल भर सुख से बैठना नसीब न हुआ ! किस किस दुःख को रोऊं और किस किसको याद करूं ! हाय, माता पिता की अवस्था पर ध्यान देता हूं तो कलेजा मुंह को आता है, अपनी दुर्दशा पर विचार करता हूं, तो दुनिया अन्धकार-

मय दिखाई पडती है। तो फिर क्या मैं ऐसा ही बदकिस्मत बनाया गया हूं? क्या यह मेरे कर्मो ही का फल है! कदाचित् ऐसा भी हो तो फिर दुनिया में जितने आदमी हैं सभी तो अपने अपने कर्म का फल भोग रहे हैं। फिर मुझमे और अन्य अभागो में भेद ही किस बात का ठहरा? और जब अपने ही कर्मो का फल भोगना ठहरा तो तुम्हारा भरोसा ही करके क्या किया। अगर यह कहो कि इस भरोसे का फल किसी और समय मिलेगा तो यह भी कोई बात न ठहरी, जब मेरे समय पर तुम्हारा भरोसा काम न आया तो खेत सूखे पर वर्षा वाली कहावत सिद्ध हुई

बाबा०। (बात काट कर) बेटा घबडाओ मत और परमेश्वर का भरोसा मत छोडो, वह तुम्हारे सभी दु खो को दूर करेगा। उसकी कृपा के आगे कोई बात कठिन नही है। वह यदि दयालु होगा तो तुम्हें तुम्हारे माता पिता से भी मिला देगा और तुम्हारी स्त्री इन्दुमति भी पुन तुम्हारी सेवा मे दिखाई दे जायगी। बस अब मैं जाता हू ईश्वर तुम्हारा भला करे।

प्रभाकर०। (बाबाजी को रोक कर) कृपा कर और भी मेरी दो एक बातो का जवाब देते जाइये।

बाबा०। पूछो क्या पूछना चाहते हो!

प्रभाकर०। जिस मनुष्य के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह पञ्चतत्व में मिल गया भला उससे पुन क्योकर मुलाकात हो सकती है!

बाबा०। ईश्वर की माया बडी प्रबल है, जिसे आज 'नही' समझते हैं वही कल 'हा' के रूप में दिखाई देता है, मैं यह नही कह सकता कि ऐसा अवश्य ही होगा परन्तु यह जरूर कहूगा कि ईश्वर पर भरोसा रखने वाले के लिए कोई भी बात असम्भव नही। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो।

प्रभाकर०। मैं यह जानना चाहता हू कि आज के बाद यदि मैं आपसे मिलना चाहू तो क्योकर मिल सकता हू?

बाबा०। तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे नही मिल सकते।

प्रभाकर०। आपका परिचय जान सकता हू?

बाबा०। नहीं।

इतना कह कर बाबाजी वहाँ से रवाना हो गये और देखते देखते प्रभाकरसिंह की नजरो से गायब हो गये

बाबाजी के चले जाने के बाद कुछ देर तक प्रभाकरसिंह खड़े कुछ सोचते रहे, इसके बाद क्रोध भरी आँखों से रामदास की तरफ देखा और कहा, "रामदास, यद्यपि लोग कहते हैं कि ऐयारों को मारना न चाहिये बल्कि कैद कर रखना चाहिये परन्तु यह काम ऐयारो का और राजा लोगो का है। मैं न तो ऐयार हू और न राजा हूं, इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई ऐसी जगह भी नही है जहां तुझे कैद करके रखूं, अतएव मैं तुझ पर किसी तरह का रहम नहीं कर सक्ता। (रामदास का खञ्जर उसके आगे फेंक कर) ले अपना खञ्जर उठा ले और मेरा मुकाबला कर क्योंकि मैं उस आदमी पर वार करना पसन्द नही करता जिसके हाथ में किसी तरह का हर्बा नही है, साथ ही तूने मुझ पर जो जुल्म किया है उसे मैं बर्दाश्त भी नही कर सकता।

रामदास०। (खजर उठा कर) तो क्या मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नही हू ?

प्रभाकर०। नही, अगर इन्दुमति इस दुनिया से न उठ गई होती तो कदाचित् मैं तेरा अपराध क्षमा कर सकता, मगर इन्दुमति का वियोग जो केवल तेरी ही दुष्टता के कारण हुआ है मैं सह नहीं सकता।

रामदास०। अगर तुम्हारी इन्दुमति को तुमसे मिला दूं तो ?

प्रभाकर०। अरे दुष्ट! क्या अब भी तू मुझे धोखा दे सकेगा? जिसकी चिता मैं अपनी आखो देख चुका हू उसके विषय मे तू इस तरह की बातें करता है मानो ब्रह्मा तू ही है।

रामदास०। नही नही, आपने मेरा मतलब नही समझा।

प्रभाकर०। तेरा मतलब मैं खूब समझ चुका, अब समझने की जरूरत नहीं है, बस अब सम्हल जा और अपनी हिफाजत कर।

इतना कह कर प्रभाकरसिंह ने म्यान से तलवार खैंच ली और रामदास को ललकारा। रामदास ने जब देखा कि अब वह भाग कर भी अपने को

प्रभाकरसिंह के हाथ से नही वचा सकता तब उसने खञ्जर सम्हाल कर

प्रभाकरसिंह का मुकावला किया।

प्रभाकरसिंह ऐसे वहादुर आदमी से मुकावला करना रामदास का काम न था, दो ही चार हाथ के लेने देने के वाद प्रभाकरसिंह की तलवार से रामदास दो टुकडे हो जमीन पर गिर पडा और वहाँ की मिट्टी से अपनी तलवार साफ करके प्रभाकरसिंह पुन उसी दीवार की तरफ रवाना हुए जिसके अन्दर इन्दुमति की सुलगती हुई चिता देख चुके थे।

तरह तरह की वातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह धीरे धीरे चल कर उसी चिता के पास पहुचे जो अभी तक निर्धूम हो जाने पर भी बडे वडे अगारो के कारण धधक रही थी और जिसके वीच वीच में हड्डियो के छोटे छोटे टुकडे भी दिखाई दे रहे थे।

सातवां बयान

यद्यपि सूर्य भगवान् अभी उदय नही हुए थे तथापि उनके आने का समय निकट जान अन्धकार ने पहिले ही से अपना दखल छोडना आरम्भ कर दिया था और धीरे धीरे भाग कर पहाड की कन्दराओं और गुफाओं में अपने शरीर को सुकडाता या समेटता हुआ घुसा चला जा रहा था।

एक छोटे मैदान में जिसे चारो तरफ से ऊचे ऊचे पहाडों ने घेर रक्खा है हम एक विचित्र तमाशा देख रहे हैं। वह मैदान चार या पांच विगहे से ज्यादा न होगा जिसके वीचोवीच में स्याह पत्थर का पुरसे भर ऊचा वहुत वडा और खूबसूरत चवूतरा वना हुआ था, जिसके ऊपर जाने के लिए चारो तरफ सीढिया वनी थी। चवूतरे के ऊपर चढ जाने पर देखा कि एक वहुत ही सुन्दर हौज वना हुआ है जिसमे विल्लौर की तरह साफ सुथरा जल भरा हुआ था और उतरने के लिए सगमर्मर की छोटी छोटी सीढिया वनी हुई थी।

हौज के चारो कोनो पर चार हस इस कारीगरी से वनाये और वैठाये हुए थे कि जिन्हें देख कर कोई भी न कह सकेगा कि ये हस असली नहीं

बल्कि नकली हैं। देखने वाला जब तक उन्हें अच्छी तरह टटोल न लेगा तब तक उसके दिल मे असली हंस होने का शक न मिटेगा। इसी तरह हौज के अन्दर उतरने वाली सीढियो पर भी मोर और सारस इत्यादि कई जानवर दिखाई दे रहे थे और वे भी उन्ही हंसो की तरह नकली किसी धातु के बने हुए थे, मगर देखने में ठीक असली जान पडते थे। इनके अतिरिक्त उसी हौज के अन्दर संगमर्मर की सीढी पर एक नेहायत हसीन और खूबसूरत औरत भी बेहोश पडी हुई दिखाई दे रही थी जिसके खुले हुए बाल सुफेद पत्थर की चट्टान पर बिखरे हुए थे बल्कि बालो का कुछ हिस्सा जल की हलकी लहरो के कारण हिलता हुआ बहुत ही भला मालूम होता था। पहिले तो मेरे दिल में आया कि मै और जानवरो की तरह इस औरत को भी नकली और बनावटी समझूं मगर उसकी खूबसूरती और नजाकत को देख कर मै सहम गया। अहा ! क्या ही खूबसूरत चेहरा, बडी बडी मगर इस समय पलको से ढकी हुई आखें, चौडी पेशानी मे सिंदूर की केवल एक बिन्दी कैसी अच्छी मालूम होती थी कि हजार रोकने पर भी मुंह से निकल ही पडा कि 'यह जरूर स्वर्ग की देवी है।' चाहे उसके हाथो मे सिवाय दस बारह पतली स्याह चूडियो के और कुछ भी न हो, किसी अंग मे किसी तरह का कोई भी गहना दिखाई देता न हो, परन्तु उसकी खूबसूरत किसी गहने की मुहताज न थी।

मै खडा यही सोच रहा था कि यह औरत असली है या बनावटी और यह इरादा भी हो चुका था कि जिस तरह ऊपर वाले हंस को टटोल कर देख चुका हू उसी तरह नीचे की सीढियो पर बैठे हुए जानवरो के साथ ही साथ इस औरत को भी टटोल कर देखूं और निश्चय करूं कि असली है या नकली कि इतने हो में उस औरत ने गर्दन हिलाई और अपना चेहरा जल की तरफ से घुमा कर सीढी की तरफ कर दिया। बस फिर क्या था, मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा, मुझे विश्वास हो गया कि और जानवरो की तरह यह औरत बनावटी नही है। फिर मै सोचने लगा कि इसे किसी तरह जगाना चाहिए परन्तु मैने जोर से कई तालियां बजाई मगर इसका

असर कुछ भी न हुआ। उस समय मुझे पुन उसकी सचाई पर शक हुआ और मैं यह जाचने के लिए कि देखू इस औरत की सांस चलती है या नही उसके पेट की तरफ गौर से देखने लगा जिसके आधे हिस्से का कपडा घिसक जाने के कारण खुला हुआ था, मगर सास चलने की आहट मालूम न हुई। इतने ही मे हवा का एक बहुत कडा झपेटा आया, मैंने तो समझा कि इस झपेटे के लगते ही वह जाग जायगी और उसके बदन का कपडा भी जो लापरवाही के साथ हर तरह से ढीला पडा हुआ है जरूर घिसक जायगा और उसका सुन्दर तथा सुडौल बदन मुझे अच्छी तरह देखने का मौका मिलेगा मगर अफसोस ऐसा न हुआ। न तो उसकी निद्रा ही भग हुई और न उसके बदन पर से कपडा ही घिसका।

मुझे बडा आश्चर्य हुआ और अन्त में मैंने निश्चय कर लिया कि स्वयम् हौज के अन्दर उतर कर उस औरत की निद्रा भग करूगा क्योकि उसकी खूबसूरती और उसके अग की सुडौली मेरे दिल को बेतरह मसोस रही थी।

मैं दिल कडा करके हौज के अन्दर उतरने लगा एक सीढी उतरा, दूसरी सीढी उतरा, तीसरी सीढी पर पैर रक्खा ही था कि मैं डर कर चौंक उठा और मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा क्योकि यकायक वे चारो हस जो हौज के ऊपर खडे थे और जिन्हें मैं अच्छी तरह देख भाल चुका था कि वे असली नही बनावटी है, अपनी जगह छोड और गरदन ऊची कर इधर उधर घूमने और बडी बेचैनी के साथ मेरी तरफ देखने लगे मानो मेरा हौज के अन्दर उतरना उन्हे बहुत बुरा मालूम हुआ। यह बात सिर्फ दस बारह सायत तक रही, इसके बाद वे अपने बडे बडे परो को फैला कर बेतरह मुझ पर टूट पडे जिसे देख मै डर गया और अपना दाहिना हाथ (जिसमें खजर था) आगे की तरह बढाये हुए पीछे हट कर चौथी सीढी पर उतर गया।

हौज के अन्दर चौथी सीढी पर उतर जाना तो मेरे लिए बडा ही भयानक हुआ। हौज के अन्दर सीढियो पर जो बहुत से बनावटी जानवर

(परिन्दा) थे वे भी ऊपर वाले हंसो की तरह अपनी क्रोध वाली अवस्था दिखाते हुए पर फैला फैला कर इस तरह मुझ पर झपट पडे मानो ये सब बात की बात में नोच कर खा जायगे। केवल इतना ही नही वह औरत भी उठ कर बैठ गई और गर्दन ऊंची करके क्रोध भरी आंखों से मेरी तरफ देखने लगी।

वह दृश्य बडा ही भयकर था, जानवरो के बेतरह झपट पडने से मैं कदापि न डरता यदि वे वास्तव में सच्चे होते और मैं उन्हें अपने खञ्जर से काट सकता, परन्तु मैं तो अच्छी तरह जाच कर समझ चुका था कि वे सब असली नही है फिर भी जब उन्होने हमला किया तब मैंने अपने खजर से उन्हें रोकना चाहा, परन्तु खजर ने भी उनके बदन पर कुछ असर न किया मानो उनका बदन फौलाद का बना हुआ हो। ऐसी अवस्था मे उन सभो का एक साथ मिल कर हमला करना मुझे जरूर नुकसान पहुँचा सकता था अस्तु आश्चर्य के साथ ही साथ भय ने भी मुझ पर अपना असर जमा लिया। इसके अतिरिक्त उस औरत का एक अजीब ढंग मे मेरी तरफ देखना और भी घबराहट पैदा करने लगा।

पहिले तो मैंने चाहा कि जिस तरह हो सके इस बावली के बाहर निकल जाऊं मगर ऐसा न हो सका, लाचार पीछे की तरफ हट कर मैं और भी दो सीढी नीचे उतर गया मगर वहाँ भी ठहरने की हिम्मत न पडी क्योकि उन जानवरो का हमला और भी तेज हो गया तथा वह औरत भी इस जोर से चिल्ला उठी कि मै घबडा गया तथा और भी कई सीढी नीचे उतर कर उस औरत के पास जा पहुँचा। बस उसी समय औरत ने मेरा पैर पकड लिया और एक ऐसा झटका दिया कि मैं जल के अन्दर जा पड़ा और बेहोश हो गया। इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नही है।

छोटी छोटी चार पहाडियों के अन्दर एक खुशनुमा बाग है। इसमें सुन्दर सुन्दर बहुत सी क्यारिया बनी हुई हैं, हर तरफ छोटी छोटी नहरें जारी हैं और पेडों के ऊपर बैठ कर बोलने वाली तरह तरह की चिड़ि-

याओ की सुरीली आवाजों से यह सुबह का सुहावना समय और भी मजेदार मालूम हो रहा है।

इस बाग के पूरब तरफ बहुत बडी इमारत है जिसमें सैकडों आदमियो का खुशी से गुजारा हो सकता है। यह इमारत तिमञ्जली है। नीचे के हिस्से में एक बहुत बडा दीवानखाना है और दीवानखाने के दोनो तरफ बारहदरिया है। ऊपर की मजिलो में छोटे बडे बहुत से खूबसूरत दर्वाजे दिखाई दे रहे हैं, उनके अन्दर क्या है सो तो इस समय नही कह सकते मगर अन्दाज मे मालूम होता है कि ऊपर भी कई कमरे कोठडिया दालान शहनशीन और बारहदरिया जरूर होगी।

नीचे वाला दीवानखाना मामूली नही बल्कि राजसी ढग का बना हुआ है। छ पहले चालीस खम्भो पर इसकी छत कायम है। खम्भे स्याह पत्थर के हैं और उन पर सोने से पच्चीकारी का काम किया हुआ है। बाहर के रुख पर बडे बडे पांच महराब हैं और उन महराबो पर भी नेहायत खूबसूरत पच्चीकारी का काम किया हुआ है। अन्दर की तरफ अर्थात् पिछली दीवार पर भी जहा एक जडाऊ सिंहासन रक्खा हुआ है जडाऊ तथा मीनाकारी का काम हुआ है जिसमें कारीगर ने जगली सीन और शिकारगाह की तस्वीरें बहुत ही बारीकी के साथ बनाई हैं। बाई और दाहिनी तरफ की दीवारो पर कुछ ऐसा मसाला चढा हुआ है जिससे मालूम होता है कि ये दोनो दीवारें बिल्लौरी शीशे की बनी हुई हैं। सिंहासन पिछली दीवार के साथ मध्य में रक्खा हुआ है और उस सिंहासन से चार हाथ ऊपर एक खूबसूरत दरीची (खिडकी) है जिसमें एक नफीस चिक पडी हुई है और उस चिक के अन्दर कदाचित् कोई औरत बैठी हुई है, और आवाज से यही जान पडता है कि बेशक वह औरत ही है। सिंहासन के ऊपर एक खूबसूरत और बहादुर नौजवान खडा चिक की तरफ गर्दन ऊची करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं वह सब इसी नौजवान ने ऊपर खिडकी की तरफ मुँह करके बयान किया है। जब उस जवान ने यह कहा कि-'इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे

कुछ भी खबर नही' तब उस चिक के अन्दर से यह बारीक आवाज आई—
"आखिर तुम यहाँ तक क्योंकर पहुचे ?"

नौजवान०। जब मेरी आँखें खुलों और मै होश मे आया तो अपने को इसी बाग मे एक रविश के ऊपर पडे हुए पाया। उस समय वहाँ कई औरतें मौजूद थी जिन्होने मुझमे तरह तरह के सवाल किये और इसके बाद मुझे इस दीवानखाने में पहुचा कर वह सब न मालूम कहा चली गईं।

चिक के अन्दर से०। अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो बताओ ?

नौजवान०। पहिले तो मै यहाँ के मालिक का परिचय लिया चाहता हू।

चिक के०। समझ लो कि यहाँ की मालिक मै ही हू।

नौजवान०। मगर यह मालूम होना चाहिए कि आप कौन हैं ?

चिक के०। मै एक स्वतन्त्र औरत हू, यहाँ की रानी कह कर मुझे सम्बोधन करते हैं।

नौजवान०। आपका कोई मालिक या अफसर भी यहाँ नही है ?

चिक के०। मैं एक राजा की लडकी हू, मेरा बाप मौजूद है और अपनी रियासत मे है, मुझे उसने इस तिलिस्म के अन्दर कैद कर रक्खा है मगर मै अपने को यहाँ स्वतन्त्र समझती हू और खुश हू, दु ख इतना ही है कि इस तिलिस्म के बाहर मैं नही जा सकती।

नौजवान०। आपके पिता ने आपको कैद क्यो कर रक्खा है ?

चिक के०। इसलिए कि मै शादी करना मजूर नही करती और इसमे वह अपनी बेइज्जती समझता है।

नौजवान०। क्या आपका और आपके पिता का नाम मै सुन सकता हू ?

चिक के०। नहीं, पहिले मै आपका नाम सुनना चाहती हू।

नौजवान०। मेरा नाम प्रभाकरसिंह है।

चिक के०। हैं, क्या आप सच कहते हैं ? मुझे विश्वास नही होता !!

प्रभाकर०। बेशक मैं सच कहता हू, झूठ बोलने की मुझे जरूरत ही क्या है ?

चिक के०। और आपके पिता का नाम क्या है ?

प्रभाकर० । दिवाकरसिहजी ।

चिक के० । ग्राह, क्या वह सच है । फिर भी मैं कहती हू कि मुझे विश्वास नही होता ॥

प्रभाकर० । ग्रगर ग्रापको मेरी वातों पर विश्वास नही होता तो लाचारी है, मुझे कोई ऐसी तर्कीव नही सूझती जिससे मैं ग्रापको विश्वास दिला सकू ।

चिक के० । हाँ मुझे एक तर्कीव याद ग्राई है।

प्रभाकर० । वह क्या ।

चिक के० । लडकपन में गेंद खेलते समय ग्रापको जो चोट लगी थी उसे मैं देखूगी तो जरूर विश्वास कर लूंगी ।

प्रभाकर० । (ग्राश्चर्य से) यह वात ग्रापको कैसे मालूम हुई ।

चिक के० । सो मै पीछे वताऊगी ।

इतना सुनते ही प्रभाकरसिह ने ग्रपना कपड़ा उतार दिया ग्रौर दाहिने मोढे के नीचे पीठ पर एक वडे जख्म का निशान चिक की तरफ दिखा कर कहा, "यही वह निशान है ।"

इसके जवाव में चिक का पर्दा उठ गया ग्रौर एक वहुत ही हसीन ग्रौरत उस खिडकी में वैठी हुई प्रभाकरसिह को दिखाई दी, उसे देखने के साथ ही प्रभाकरसिह वदहवास से हो गये ग्रौर उनके ग्राश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा ।

ग्रव हम थोडा हाल जमना सरस्वती ग्रौर इन्दुमति का वयान करते हैं नकली हरदेई ग्रर्थात् रामदास ने जमना सरस्वती ग्रौर इन्दुमति की तरफ से प्रभाकरसिह का दिल जिस तरह खट्टा कर दिया था उसे हमारे प्रेमी पाठक ग्रच्छी तरह पढ़ ही चुके हैं इसके वाद वावाजी ने जव रामदास का ग्रसली भेद खोल कर सच्चा हाल प्रभाकरसिह को वता दिया तव प्रभाकरसिह चैतन्य हो गये ग्रौर समझ गये कि जमना सरस्वती ग्रौर इन्दुमति वास्तव में निर्दोष हैं ग्रौर उनके वारे में जो कुछ हमने सोचा समझा ग्रौर किया वह सव ग्रनुचित था ग्रस्तु प्रभाकरसिह को ग्रपनी कारंवाई पर वडा खेद हुग्रा। यह सव कुछ था परन्तु जमना सरस्वती ग्रौर इन्दुमति के दिल

पर जो गहरी चोट बैठ चुकी थी उसकी तकलीफ किसी तरह कम न हुई और न उन तीनो को इस बात का पता ही लगा कि किसी बाबाजी ने पहुँच कर हमारी तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल साफ कर दिया।

अपने शागिर्द की मदद से प्रभाकरसिंह वाली तिलिस्मी किताब पाकर भूतनाथ वहा की बहुत सी बातो से जानकार हो चुका था जो सिर्फ काम चलाने और कार्रवाई करने के लिए इन्द्रदेव ने तैयार करके प्रभाकरसिंह को दे दी थी, परन्तु भूतनाथ ऐसे धूर्त और शैतान के लिए वही बहुत थी, उसी की मदद से भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दो के साथ उस तिलिस्म के अन्दर पहुच कर जमना सरस्वती और इन्दुमति को बेतरह सताया और दुःख दिया जिसका हाल हम खुलासे तौर पर नीचे लिखते हैं।

ग्रहदशा की सताई हुई जमना सरस्वती और इन्दुमति को जब भूतनाथ ने तिलिस्मी कूए मे ढकेल दिया तो वहाँ उन्हे एक मददगार मिल गया जिसके सबब से तीनो की जान बच गई और उसी आदमी की मदद से वे तिलिस्म के अन्दर किसी कार्यवश स्वतन्त्रता के साथ घूम रही थी। वह मददगार कौन था और उस कूए के अन्दर ढकेल देने के बाद उन लोगो की जान क्योंकर बची इसका हाल फिर किसी मौके पर बयान किया जायगा, इस समय हम उस समय से उन तीनो का हाल बयान करते है जहा से तिलिस्म के अन्दर प्रभाकरसिंह ने उन तीनो को देखा था।

जमना सरस्वती और इन्दुमति का जो मददगार था वह बराबर अपने चेहरे पर नकाब डाले रहता था इससे उन तीनो ने उसकी सूरत नही देखी थी कि उनका मददगार किस सूरत का और कैसा आदमी है, यही सबब था कि जब भूतनाथ उस तिलिस्म के अन्दर गया तो उसने भी जमना और सरस्वती के मददगार को नही पहिचाना, हाँ पहिचानने के लिए उद्योग बराबर करता रहा।

एक दफे जमना ने अपने मददगार से प्रार्थना भी की थी कि अपनी सूरत दिखा दे और अपना परिचय दे, परन्तु नकाबपोश ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नही की थी, हा इतना जरूर कह दिया था कि तुम लोग मुझे अपने

वाप के बराबर समझो और जब कभी सम्बोधन करने की जरूरत पडे तो नारायण के नाम से सम्बोधन किया करो अस्तु अब हम भी आगे चल कर मौका पडने पर उसे नारायण ही के नाम से सम्बोधन किया करेंगे।

जब मन्दिर की जालीदार दीवार के अन्दर से प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति को देखा था और कुछ रूखी सूखी वातचीत भी की थी उस समय जो आदमी उन तीनो को मारने के लिए आया था और जिसे हम बैताल के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं वह वास्तव में भूतनाथ ही था। प्रभाकरसिंह को तो उसके हाथ से उन तीनों की रक्षा करने के लिए वहाँ तक पहुचने में दर लगी परन्तु नारायण ने बहुत जल्द वहा पहुच कर उस शैतान के हाथ से उन तीनो को बचा लिया। नारायण जानते थे कि वह वास्तव में भूतनाथ है और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को भी शक हो चुका था कि वह भूतनाथ है क्योकि नससे घटे ही भर पहिले वह तीनो से मिल चुका था और अपना विचित्र ढ ग दिखला कर अच्छी तरह धमका चुका था मगर उस समय उसे काम करने का मौका नही मिला था। यही सवब था कि उसकी सूरत देखते ही वे तीनो चिल्ला उठी और विमला (जमना) ने आँसू गिराते हुए चिल्ला कर प्रभाकरसिंह से कहा था—"बचाइए बचाइए, आप जल्दी यहा आकर हम लोगो की रक्षा कीजिये, यही दुष्ट हम लोगो के खून का प्यासा है।"

इसके वाद जव प्रभाकरसिंह दूसरी पहाडी पर चढ कर ऊपर ही ऊपर वहा पहुचे तो देखा कि वैताल अर्थात् भूतनाथ से एक नकाबपोश मुकाबला कर रहा है। वही नकावपोश नारायण था। नारायण ने वहाँ पहुँच कर उन तीनो औरतो को भाग जाने का इशारा करके भूतनाथ का मुकावला किया और वडी खूवी के साथ लडा। जब प्रभाकरसिंह वहाँ पहुचे और नारायण के कहे मुताविक जमना सरस्वती और इन्दुमति के पीछे चले तव पुन भूत-नाथ और नारायण मे लडाई होने लगी। भूतनाथ का कोई हर्वा नारायण के वदन पर कारगर नही होता था वल्कि नारायण के मोढे पर वैठ कर भूतनाथ की तलवार टूट चुकी थी, अन्त में नारायण के हाथ से जख्मी

होकर भूतनाथ ने मुकाबले से मुँह फेर लिया। उसे विश्वास हो गया कि अगर थोडी देर तक और मुकाबला करूंगा तो बेशक मारा जाऊगा, अस्तु वह धोखा देकर वहा से भाग खडा हुआ और नारायण ने भी उसका पीछा किया।

नारायण यद्यपि लडाई में भूतनाथ से ज्यादा ताकतवर और होशियार था मगर दौडने मे उसका मुकाबला किसी तरह नही कर सकता था इसलिए भूतनाथ को पकड न सका और वह भाग कर नारायण की आखो की ओट हो गया।

प्रभाकरसिंह ने जमना सरस्वती और इन्दुमति का पीछा किया। वे तीनो दीवार के दूसरी तरफ चली गई मगर दर्वाजा बन्द हो जाने के कारण प्रभाकरसिंह उसके अन्दर न जा सके। उसी समय उन्होंने बाहर ही से खडे खडे सुना कि सरस्वती से और किसी गैर आदमी से बातचीत हो रही है। गैर आदमी जमना सरस्वती और इन्दुमति को बदकारी साबित किया चाहता था और इसकी बातो से प्रभाकरसिंह के दिल की खटाई और भी बढ गई थी मगर वास्तव मे मामला दूसरा ही था। वह आदमी जो प्रभाकरसिंह को सुना सुना कर सरस्वती से बातें कर रहा था असल मे भूतनाथ का एक शागिर्द था और उसका मतलब यही था कि अपनी बातो से प्रभाकरसिंह का दिल जमना सरस्वती और इन्दुमति की तरफ से फेर दे, साथ ही इसके उस ऐयार ने यह भी चालाकी की थी कि अपनी असली सूरत मे उन औरतो के पास न जाकर उसने एक जमीदार की सूरत बनाई थी और बातचीत करने के बाद बिना किसी तरह की तकलीफ दिए जमना सरस्वती और इन्दुमति के सामने से चला गया था। इसके बाद प्रभाकरसिंह स्वय जमना सरस्वती और इन्दुमति से जाकर मिले और जिस तरह से बातचीत करके इन्दु का परित्याग किया आप लोग पढ ही चुके हैं। अब हमें इस जगह केवल उन तीनों औरतों ही का हाल लिखना है।

जब प्रभाकरसिंह इन्दुमति को त्याग कर उन तीनो के सामने से चले गये तब इन्दुमति बहुत ही उदास हुई और देर तक बिलख बिलख कर रोती रही। अन्त मे उसने जमना से कहा—"बहिन, अब मेरे लिए जिन्दगी

अपार हो गई, जब पति ने ही मुझे त्याग दिया तब इस पापमय शरीर को लेकर इस दुनिया में रहना और चारो तरफ मारे मारे फिरना मुझे पसन्द नही अस्तु मैं इस शरीर को इसी जगह त्याग कर बखेडा तै करूगी।"

जमना०। नही बहिन, तुम इस काम में जल्दी मत करो और इस तरह यकायक हताश मत हो जाओ। मालूम होता है कि किसी दुश्मन ने उन्हें भडका दिया है और इसी से उनका मिजाज बदल गया है मगर यह बात बहुत दिनो तक कायम नही रह सकती, धर्म हमारी सहायता करेगा और एक न एक दिन असल भेद खुल जाने से वे अपने किये पर पश्चात्ताप करेंगे।

इन्दुमति०। मगर बहिन, मैं कब तक उस दिन का इन्तजार करूगी?

जमना०। इन बातो का फैसला बहुत जल्द हो जायगा, हम लोगो को ज्यादे इन्तजार न करना पडेगा।

इन्दुमति०। खैर अगर तुम्हारी बात मान भी ली जाय तो उस दुश्मन के हाथ से बचे रहने की क्या तर्कीब हो सकती है जो बार बार हम लोगो का पीछा करके भी शान्त नही होता, अगर नारायण की मदद न होती तो वह

इन्दुमति इसके आगे कुछ कहने ही को थी कि उसने सामने से अपने मददगार नारायण को आते हुए देखा। इस समय नारायण की पीठ पर एक गठरी थी जिनमें कोई आदमी बधा हुआ था।

नारायाण तेजी के साथ कदम बढाता हुआ जमना सरस्वती और इन्दु-मति के पास आया और गठरी जमीन पर रख कर तथा अपना परिचय देकर इन्दुमति ने बोला, "इन्दु, मुझे मालूम हो गया कि तेरे दुश्मनो ने तुझे बल्कि जमना और सरस्वती को भी व्यर्थ बदनाम किया है और तुम लोगो की तरफ से प्रभाकरसिंह का दिल फेर दिया है। यह काम खास भूतनाथ के एक ऐयार का है जिसने हरदेई की सूरत बन कर तुमको और प्रभाकरसिंह को धोखा दिया। आज कल में मैं जरूर उसकी खबर लूगा। इस समय मैं तुम्हारे जिस दुश्मन से लड रहा था वह वास्तव मे भूतनाथ था?"

इन्दु०। (ताज्जुब से बात काट कर) क्या वह भूतनाथ है? मगर इस तिलिस्म के अन्दर वह क्योंकर आ पहुँचा?

नारायण० । हाँ वह भूतनाथ ही है । इन्द्रदेव ने प्रभाकरसिंह को हाथ की लिखी हुई एक छोटी सी किताब दी थी, उसी किताब को पढ कर प्रभाकरसिंह इस तिलिस्म के अन्दर आए थे, भूतनाथ के उसी ऐयार ने जो हरदेई बना हुआ था धोखा देकर वह किताब प्रभाकरसिंह की जेब से निकाल ली और अपने गुरु भूतनाथ को दे आया । उसी किताब की मदद से भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँचा है और तुम तीनो को तथा प्रभाकरसिंह को मारने का उद्योग कर रहा है । खैर कोई चिन्ता नही, जहाँ तक हो सकेगा मै तुम लोगो की मदद करूंगा । अफसोस इस बात का है कि मै इस समय यहा अकेला हू मगर भूतनाथ अपने कई ऐयारो को साथ लेकर यहा आया हुआ है और तुम लोगो की मदद करते हुए इस समय मुझे इतनी फुरसत नही है कि घर जाकर अपने आदमियो को ले आऊं या इन्द्रदेव को ही इस मामले की खबर करूं, अगर चार पहर की भी मोहलत मिल जाय तो मै इन्द्रदेव को खबर पहुचा सकता हू, वह अगर यहाँ आ जायगा तो फिर किसी दुश्मन के किए कुछ न हो सकेगा

इन्दु० । तो हम लोगो को आप अपने साथ इन्द्रदेवजी के पास क्यों नही ले चलते ?

नारायण० । हा तुम लोगो को मै अपने साथ वहा ले जा सकता हू मगर प्रभाकरसिंह की मदद करनी है । अगर उन्हें इसी अवस्था में छोड कर तुम लोगो को साथ लेकर चला जाऊं तो भूतनाथ का ऐयार उन्हे जरूर मार डालेगा क्योंकि वह अभी तक हरदेई की सूरत में है और प्रभाकरसिंह उस पर विश्वास करते है ।

जमना० । तो उन्हें इस मामले की खबर कर देनी चाहिए ।

नारायण० । मै इसी फिक्र में हू । तुम्हारे जिस दुश्मन से मै लड रहा था वह अर्थात् भूतनाथ जख्मी होकर मेरे सामने से भाग गया, मै उसी के पीछे दौडा हुआ चला गया था मगर उसे पकड न सका क्योंकि बीच में उसका एक शागिर्द पहुँच गया और उसने मेरा मुकाबला किया । अन्त में वह मेरे हाथ से मारा गया, मै उसी को इस गठरी में बाध कर यहा लाया

हू, अब इसी जगह चिता बना कर इसे फूक दू गा, इसके बाद तुम लोगो को यहा से ले चलूगा और किसी अच्छे ठिकाने बैठा कर प्रभाकरसिंह के पास जाऊ गा। अब ज्यादे देर तक बातचीत करना मैं मुनासिब नही समझता क्योकि काम बहुत करना है और समय कम है, तुम लोग मेरी मदद करो और जल्दी से लकडी बटोर कर चिता बनाओ।

बात की बात मे चिता तैयार हो गई और नारायण ने उस ऐयार की लाश को चिता पर रख कर आग लगा दी। थोडी देर तक इन्दुमति खडी उस चिता की तरफ देखती और कुछ सोचती रही, इसके बाद नारायण से बोली, "आपके बगल में बटुआ लटक रहा है, इससे मालूम होता है कि आप भी कोई ऐयार है, अगर मेरा खयाल ठीक है तो आपके पास लिखने का सामान भी जरूर होगा ?"

नारायण०। हा हा, मेरे पास लिखने का सामान है, क्या तुमको चाहिए ?

इन्दुमति०। जी हा, कागज का एक टुकडा और कलम दावात चाहिए।

नारायण ने अपने बटुए में से कागज का टुकडा और स्याही से भरी हुई एक सोने की जडाऊ कलम निकाल कर इन्दु को दी। इन्दु ने उस कागज पर कुछ लिखा और अपने आचल में से कपडे का एक टुकडा फाड कर उसी में उस कागज को बाध कर एक तरफ फेंक दिया। यही वह चीठी थी जो प्रभाकरसिंह को उस चिता के पास मिली थी।

इन्दुमति ने उस पुर्जे में क्या लिखा है सो इस समय उसने किसी से न बताया और न किसी ने उससे पूछा ही, हा कुछ देर बाद उसने यह भेद कला और विमला पर खोल दिया।

जमना सरस्वती और इन्दुमति को साथ लिए हुए नारायण वहा से रवाना हुए। वे उस तरफ नही गए जिस तरफ दीवार थी बल्कि उसके विपरीत दूसरी तरफ रवाना हुए। थोडी दूर जाने बाद उन लोगों को जगल मिला वे लोग उस जगल मे चले गये। क्रमश वह जंगल घना मिलता गया यहा तक कि लगभग दो कोस के जाते वे लोग एक ऐसी भयानक जगह में जा पहुँचे जहा बारीक बारीक सैकडो पगडण्डियां थी और उनमें से अपने मतलब का

रास्ता निकाल लेना बडा ही कठिन था मगर तीनो औरतो को लिए हुए नारायण अपने रास्ते पर इस तरह चले जाते थे मानो उन्हे सिवाय एक रास्ते या पगडण्डी के कोई दूसरा पगडण्डी दिखाई देती ही नही थी।

उस भयानक जंगल मे थोडी दूर चले जाने के बाद उन्हे ढालवी जमीन मिली और वे लोग पहाडी के नीचे उतरने लगे। जंगल पतला होता गया और वे लोग क्रमश. मैदान की हवा खाते हुए नीचे की तरफ जाने लगे।

लगभग आध घन्टे के और चले जानेके बाद वे लोग एक खूबसूरत मकान के पास पहुचे जो बडी ऊँची चारदीवारी से घिरा हुआ था और अन्दर जाने के लिए सिर्फ पूरब तरफ एक बहुत बडा लोहे का फाटक था।

वह मकान यद्यपि बाहर मे देखने में खूबसूरत और शानदार मालूम होता था मगर उसके अदर एक सहन और दस बारह कमरे तथा कोठडियो के सिवाय और कुछ भी न था मकान क्या मानो कोई महाराजी धर्मशाला था।

मकान के चारो तरफ बाग था मगर इस समय उसकी अवस्था जगल की सी दिखाई दे रही थी। उसके चारो तरफ ऊची चारदीवारी थी मगर वह भी कई जगह से मरम्मत के लायक हो रही थी।

तीनो औरतो को साथ लिए नारायण उस चारदीवार के अन्दर घुसे और इधर उधर देखते हुए उस इमारत के अन्दर चले गये जहा एक कमरे के अन्दर जाकर वे जमना से बोले, "देखो जमना यह बाग के अन्दर जाने का दरवाजा है। इस मकान में जितने कमरे हैं उन सभी को कही न कही जाने का रास्ता समझना चाहिये। मै तुम लोगो को जिस स्थान में ले जाया चाहता हू वहाँ का रास्ता यही है। मै इस दवाजे का भेद तुमको दिखा और समझा देना चाहता हू जिसमे यहाँ से जाने आने के लिए तुम किसी की मुहताज न रहो। भूतनाथ जिस किताब को पाकर फूल रहा है और जिसकी मदद से वह इस तिलिस्म के अन्दर चला आया है उस किताब में इस इमारत का हाल कुछ भी नहीं लिखा है इसलिए समझ रखना कि भूतनाथ इसके अन्दर आकर तुम लोगो को सता नही सकता। (सामने की दीवार की तरफ इशारा करके) देखो दीवार में जो वह आलमारी दिखाई

देती है वही यहाँ से जाने का रास्ता है, इसमें एक ही पल्ला है और खैंचने के लिए एक मुट्ठा लगा हुआ है, इसी मुट्ठे को चाभी समझना चाहिए। और देखो उस आलमारी के ऊपर क्या लिखा हुआ है ?"

इतना कह कर नारायण ठहर गया और जमना का मुह देखने लगा जो कि उन बडे हरफो को गौर से देख रही थी। इन्दुमति आगे बढ़ गई और उसने उन अक्षरो को पढ़ कर नारायण को सुनाया। यह लिखा हुआ था—

"दक्षिण ऋषि वसुवाम, पुनरपि चन्दादित्य इमि
पुनि इमि गनहु सुजान, जौनो वेद न पूरही ॥"

नारायण०। ठीक है, यही लिखा हुआ है, अच्छा बताओ इसका मतलब क्या है ?

इन्दु०। मेरी समझ मे तो कुछ भी नही आया, चाहे शब्दो का अर्थ कुछ लगा सकू मगर यह लिखा क्या है सो आप जानिए।

नारायण०। यह इस दरवाजे को खोलने के विषय मे लिखा है। इसका मतलब यह है कि इस मुट्ठे को (जो दर्वाजे में लगा हुआ है) सात दफे दाहिने, आठ दफे वायें, फिर एक दफे दाहिने और बारह दफे बाए घुमाओ, इस तरह चार दफे करो तो दर्वाजा खुल जायगा।

जमना०। (कुछ देर तक उस लेख पर गौर करके) ठीक है, इस लेख का यही मतलब है, मगर पढने वाला यह कैसे जान सकेगा कि यह लेख इसी मुट्ठे को घुमाने के विषय मे लिखा है ?

नारा०। यह बात होशियार आदमी अपनी अक्ल से समझ सकता है, तिलिस्म बनाने वाले बिल्कुल साफ साफ तो लिखेंगे नही।

जमना०। ठीक है।

नारायण०। अच्छा तो अब आगे बढो और अपने हाथ मे दर्वाजा खोलो।

नारायण की आज्ञानुसार जमना ने ऊपर लिखे ढग से उस मुट्ठे को घुमाया। दर्वाजा खुल गया और नीचे उतरने के लिए सीढियाँ दिखाई दी। सामने एक आला था और उसमे एक छोटा सा पीतल का सन्दूक रक्खा हुआ था जिसमें किसी तरह का ताला लगा हुआ न था। नारायण ने वह

सन्दूक खोल कर सभी को दिखाया कि इसमे रोशनी करने का काफी सामान मौजूद है अर्थात् कई मोमबत्तियां और चकमक पत्थर वगैरह उसमें मौजूद है।

एक मोमबत्ती जलाई गई और उसी की रोशनी के सहारे दर्वाजा बन्द करने के बाद सब कोई नीचे उतरे। जिस तरह दर्वाजा खुलता था उसी ढङ्ग से बन्द भी होता था और यह बात दर्वाजे के पिछली तरफ लिखी हुई थी।

कई सीढ़िया नीचे उतर जाने के बाद एक सुरङ्ग मिली। ये चारो आदमी सुरङ्ग के अन्दर चले गये और जब सुरंग खतम हुई तो सब कोई एक सरसब्ज मैदान में पहुचे जहा दूर तक खुशनुमा पहाड़ा गुल बूटे लगे हुए थे और एक छोटा सा सुन्दर मकान भी मौजूद था जिसके आगे छोटा सा झरना बह रहा था और झरने के किनारे बहुत से केले के दरख्त लगे हुए थे जिनमें कच्चे और पक्के सभी तरह के फल मौजूद थे।

नारायण ने जमना सरस्वती और इन्दुमति से कहा, "अब दो तीन दिन तक तुम लोग इसी मकान में रहो तब तक मै जाकर देखता हू कि नकली हरदेई और प्रभाकरसिंह मे क्योंकर निपटी। नकली हरदेई की तरफ से उन्हें होशियार कर देना बहुत जरूरी है। (एक छोटी सी किताब जमना के हाथ मे देकर) लो इस किताब को तुम तीनो अच्छी तरह पढ़ जाओ और जहा तक हो सके खूब याद कर लो, इसमें उससे ज्यादा हाल लिखा है जो इन्द्रदेव ने तुम्हें बताया है या उस किताब मे लिखा हुआ है जो प्रभाकरसिंह के हाथ से निकल कर भूतनाथ के कब्जे मे चली गई है।"

इतना कह कर नारायण वहा से चले गये।

नौवां बयान

जमानिया मे आधी रात के समय तिलिस्मी दारोगा* अपने मकान में

* तिलिस्मी दारोगा का परिचय चन्द्रकान्ता सन्तति मे दिया जा चुका है। इस समय यह बेईमान कुंअर गोपालसिंह के बाप राजा गिरधरसिंह का खास मुसाहब था और दीवानी के काम मे भी दखल दिया करता था।

बैठा किसी विषय पर विचार कर रहा है। उसके सामने कई तरह के कागज और चीठियों के लिफाफे फैले हुए हैं जिनमें से एक चीठी को यह बार बार उठा कर गौर से देखता और फिर जमीन पर रख कर कुछ सोचता है। दारोगा के बगल में सट कर एक कमसिन खूबसूरत और हसीन औरत बैठी हुई है। उसके कपड़े और गहने के ढग तथा भाव से मालूम होता है कि वह बाबाजी (दारोगा) की स्त्री या गृहस्थ औरत नही है बल्कि कोई वेश्या है जो कि तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बाबाजी से कोई घना सबध रखती है।

एक चीठी पर कुछ देर तक विचार करने के बाद दारोगा ने उस औरत की तरफ देखा और कहा—"बीबी मनोरमा, वास्तव में यह चीठी गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है। इस चीठी को देकर तुमने मुझ पर बड़ा अहसान किया, अब वह जरूर मेरे कब्जे में आ जायेगा। मैं उसे अपना साथी बनाने के लिए बहुत दिनो से उद्योग कर रहा हू पर वह मेरे कब्जे मे नही आता था, मगर अब उसे भागने की जगह न रहेगी।

मनोरमा०। (मुस्कुराती हुई) ठीक है, मगर मैं अफसोस के साथ कहती हू कि इस चीठी को जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है बल्कि उसकी लिखी हुई और चीठियो को भी जो आपके सामने पड़ी हुई है और जिन्हें मैं जबरदस्ती नागर से ले आई हू आज ही वापस ले जाऊगी, क्योंकि नागर से तुरत ही वापस कर देने का वादा करके ये चीठिया आपको दिखाने के लिए मैं लाई थी।

दारोगा०। (कुछ उदास चेहरा बना के) ऐसा करने से तो मेरा काम नही चलेगा।

मनोरमा०। चाहे जो कुछ हो, आपने भी तो तुरत वापस कर देने का वादा किया था।

दारोगा०। ठीक है, मगर अब जो मैं देखता हू तो इन चीठियों की बदौलत मेरा बहुत काम निकलता दिखाई देता है।

मनो०। तो क्या आप चाहते हैं कि मैं नागर से झूठी बनू और वह मुझे दगाबाज कहके दुश्मनो की निगाह से देखे जिसे मैं अपनी बहिन से भी

ज्यादा बढ कर मानती हू।

दारो०। नही नही, ऐसा क्यो होने लगा, जब तुम उसे बहिन से बढ कर मानती हो और वह भी तुम्हें ऐसा ही मानती है तो क्या वह दो तीन चीठिया तुम्हारी खुशी के लिए नही दे सकती और तुम मेरी खुशी के लिए उन्हें मेरे पास नही छोड सकती ?

मनो०। नही, ऐसा नही हो सकता। गदाधरसिंह और नागर मे बहुत गहरी मुहब्बत का वर्ताव हो रहा है, क्या उसे आप मेरे ही हाथ से खराब कराया चाहते है ?

दारो०। नही नही, मै ऐसा नही चाहता। मगर तुम और नागर चाहोगी तो गदाधरसिंह को इन चीठियो के बारे में कुछ भी खबर न होने पावेगी और उन दोनो की मुहब्बत का सिलसिला ज्यो का त्यो कायम रहेगा।

मनोरमा०। क्या खूब ! आप भी कैसी भोली भाली बातें कहते है, इन्ही चीठियो को दिखा कर ता आप गदाधरसिंह को अपने कब्जे में किया चाहते है और फिर कहते है कि इन चीठियो के बारे मे गदाधरसिंह को कुछ भी खबर न होगी कि वे आपके कब्जे मे आ गई है।

दारो०। (शर्मिन्दा हो कर) तुम जानती हो कि मै तुम्हें कितना प्यार करता हू और किस तरह तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार हू।

मनोरमा०। मै खूब जानती हू और इसीलिए आपकी खातिर इन चीठियो को थोडी देर के लिए नागर से माँग लाई हू नही तो क्या गदाधरसिंह की शैतानी और उद्दण्डता को नही जानती। वह बात की बात मे बिगड खडा होगा और मुझको तथा नागर को जहन्नुम मे मिला देगा, बल्कि मै जहा तक समझती हू इन चीठियो का भेद खुलने से वह आपका भी दुश्मन हो जायगा।

दारोगा०। नही ऐसा नही है। इन चीठियो का भेद खुलने से यद्यपि वह हम लोगो का दुश्मन हो जायगा मगर वह हम लोगो को तब तक तकलीफ न दे सकेगा जब तक ये चीठिया पुन. लौट कर उसके कब्जे में न चली जायं, मगर ऐसा होना बिल्कुल ही असम्भव है। इन चीठियो की

नकल दिखा कर मैं उसे धमकाऊंगा सही मगर इन असल चीठियो को ऐसी जगह रक्खू गा कि उसके देवता को भी पता न लगने पावेगा ।

मनोरमा० । यह सब आपका ख्याल है । आपने सुना नही कि जब बिल्ली मजबूर होती है तब कुत्ते के ऊपर हमला करती है ! न मालूम नागर के ऊपर गदाधरसिंह को कितना भरोसा है कि ये सब खबरें गदाधरसिंह ने नागर को लिखी, नही तो भूतनाथ ऐसे होशियार आदमी को ऐसी भूल न करनी चाहिए थी । इन चीठियो को पढ़ करके एक अदना आदमी भी समझ सकता है कि दयाराम का घातक गदाधरसिंह ही है और वही अब उनकी जमना सरस्वती नाम की दोनो स्त्रियों को मारना चाहता है । क्या ऐसी चीठी का प्रगट हो जाना गदाधरसिंह के लिए कोई साधारण बात है ? और ऐसा होने पर क्या वह नागर को जीता छोड देगा ? कदापि नही । इसके अतिरिक्त अभी तो चीठियो का सिलसिला जारी ही है और वह जमना तथा सरस्वती को मारने के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसा ही है, आगे चल कर देखिए तो सही कि कैसी कैसी चीठिया आती है और उनमें क्या क्या खबरें वह लिखता है । सिर्फ इन्ही दो चार चीठियो पर अभी आप क्यो इतना फूल रहे हैं ?

दारोगा इसका जवाब कुछ दिया ही चाहता था कि दरवाजे की तरफ से घण्टी बजने की आवाज आई । उसके जवाब मे दारोगा ने भी एक घण्टी बजाई जो उसके पास पहिले ही से रक्खी हुई थी । एक लडका लपकता हुआ दारोगा के सामने आया और बोला, "गदाधरसिंह आए हैं, दर्वाजे पर खडे हैं।"

लडके की बात सुन कर दारोगा ने मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "आया तो है बडे मौके पर !"

"मौके पर नही बल्कि बेमौके !" इतना कह कर मनोरमा ने वे चीठिया दारोगा के सामने से उठा ली जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई थी या जिनके बारे में बडी देर से बहस हो रही थी, और यह कह कर उठ खडी हुई कि 'मैं दूसरे कमरे में जाती हूं, उसे बुलाइये मगर मेरे यहा रहने की उसे खबर न होने पावे ।'

दसवां बयान

गदाधरसिंह को लेने के लिए दारोगा खुद दर्वाजे तक गया और बड़े आवभगत के साथ अपनी बैठक मे ले आया। मामूली बातचीत और कुशल मंगल पूछने के बाद दोनों मे इस तरह की बातचीत होने लगी —

दारोगा०। मैंने आपके घर आदमी भेजा था मगर वह मुलाकात न होने के कारण सूखा ही लौट आया और उसी की जुबानी मालूम हुआ कि आप कई दिनो से किसी कार्यवश बाहर गए हुए हैं।

गदाधर०। ठीक है, मैं कई दिनो से अपने घर पर नही हू, मगर आप को आदमी भेजने की जरूरत क्यो पड़ी?

दारोगा०। आप जानते हैं कि मैं जब किसी तरद्दुद में पड़ जाता हू तब सब के पहिले आपको याद करता हू क्योंकि मेरे दोस्तो में सिवाय आपके कोई भी ऐसा लायक और हिम्मतवर नही है जो समय पड़ने पर मेरी मदद कर सके।

गदाधर०। कहिए क्या काम है? मैं आपके लिए हर वक्त तैयार रहता हूं और आपसे भी बहुत उम्मीद रखता हू। मैं सच कहता हू कि आपकी दोस्ती का मुझे बहुत बड़ा घमण्ड है और यही सबब है कि मैं इस समय आपके पास आया हूं क्योंकि इधर महीनो से मैं सख्त मुसीबत में गिरफ्तार हो रहा हूं, अगर मेरी इस मुसीबत का शीघ्र अन्त न होगा तो मुझे इस दुनिया से एक दम अन्तर्ध्यान हो जाना पड़ेगा।

दारो०। आपने तो बड़े ही तरद्दुद की बात सुनाई। कहिये तो सही क्या मामला है?

गदाधर०। पहिले आप ही कहिये कि मुझे क्यो याद किया था?

दारोगा०। नही पहिले मैं आपका हाल सुन लूगा तो कुछ कहूंगा।

गदाधर०। नहीं, पहिले आपका हाल सुने बिना कुछ भी नही बताऊंगा।

दारोगा०। अच्छा पहिले मेरी ही रामकहानी सुन लीजिए। आप जानते

ही है कि शहर के आस पास ही में कोई कुमेटी* है जिसके स्थान का और

सभासदो का कुछ भी पता नहीं लगता।

गदाधर०। हाँ मैं सुन चुका हूँ, (मुस्कुरा कर) मगर मेरा तो खयाल है कि आप भी उस कुमेटी के मेम्बर हैं।

दारो०। हरे हरे, आप अच्छी दिल्लगी करते हैं, भला जिस राजा की वदौलत मैं इस दर्जे को पहुच रहा हूँ और इतना सुख भोग रहा हूँ उसी के विपक्ष में हुई किसी कमेटी का मेम्बर हो सकता हू ? आज भी अगर मुझे उस कुमेटी का पता लग जाय और सभासदो का नाम मालूम हो जाय तो मैं एक एक को चुन कर कुत्ते की मौत मारूँ और कलेजा ठडा करूँ !

गदाधर०। (मुस्कुराता हुआ) कदाचित् ऐसा ही हो, मगर इस विषय पर आज मुझसे बहस न कीजिए जाने दीजिए, अपना हाल कहिए। मैं उस कुमेटी का हाल अच्छी तरह जानता हू।

दारो०। (जिसका चेहरा गदाधरसिंह की बातो से कुछ फीका पड गया था) आप ही की तरह हमारे महाराज के छोटे भाई शकरसिंहजी का भी उस कुमेटी के विषय में मुझ पर शक पड गया है। उनका भी यही कथन है कि मै उस कुमेटी का मेम्बर हू।

गदाधर०। ठीक है, शंकरसिंहजी वडे ही होशियार और बुद्धिमान आदमी है, आपके महाराज की तरह वोदे और वेवकूफ नही है जिन्हें आप मदारी के वन्दर की तरह जिस तरह चाहते हैं नचाया करते हैं।

दारोगा०। वेशक वे वहुत होशियार और तेज आदमी है मगर मुझे विश्वास हो गया है कि वे मेरी जड खोदने के लिए तैयार है। यद्यपि मै अपने को चालाक और धूर्त लगाता हू मगर सच कहता हू कि शकरसिंहजी का मुकावला किसी तरह नही कर सकता। तिलिस्म के विषय में भी जितनी जनकारी उनको है उतनी हमारे महाराज को नही है। कुवर गोपालसिंहजी को भी वह हद्द से ज्यादा प्यार करते हैं। अभी थोडे दिन का जिक्र है

---

* इस कुमेटी का हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है। इसी कुमेटी का हाल इन्दिरा ने अपने किस्से में दोनों कुमारो से वयान किया था।

कि स्वयम् मुझे लाल लाल आँखें करके धमका चुके हैं और कह चुके हैं कि 'देख दारोगा, होशियार हो जा, अपने राजा के भरोसे पर भूला न रहियो मैं बहुत जल्द साबित कर दूंगा कि तू उस कुमेटी का मेम्बर है और इसके बाद तुझे सूअर के गलीज में रख कर फुकवा दूंगा। खबरदार, मेरे धमकाने का हाल भाई साहब से कदापि न कहियो नहीं तो दुर्दशा का दिन . . . .'

गदाधर०। इससे मालूम होता है कि आपकी उस गुप्त कुमेटी का हाल उन्हें मुझसे ज्यादा मालूम हो चुका है, ऐसी अवस्था में आपको चाहिए कि उन्हें इस दुनिया से उठा कर हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाइए नहीं तो उनका जीते रहना आपके लिए सुखदाई न रहेगा।

दारोगा०। (कुछ देर तक आश्चर्य से भूतनाथ का मुंह देख कर) क्या यह बात आप हमदर्दी के साथ कह रहे हैं?

गदाधर०। बेशक, मैं आपसे दिल्लगी नहीं करता।

दारोगा०। अगर मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो जाऊं तो जरूरत पड़ने पर क्या आप मेरी मदद करेंगे?

गदाधर०। जरूर मदद करूंगा मगर शर्त यह है कि आप अपना कोई भेद मुझसे छिपाया न करें?

दारोगा०। मैं तो अपना कोई भेद आपसे नहीं छिपाता और भविष्य के लिए भी कहता हूं कि न छिपाऊंगा।

गदाधर०। बेशक आप छिपाते हैं।

दारोगा०। नमूने के तौर पर कोई बात कहिये?

गदाधर०। पहिले तो इस कुमेटी के विषय में ही देख लीजिए, आज तक आपने उस विषय में मुझसे कुछ कहा?

दारोगा०। (कुछ देर तक सिर नीचा करके और सोच के) अच्छा मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूं और कसम खाकर एकरार करता हूं कि इस कुमेटी का भेद और स्थान तुमको बता दूंगा।

गदाधर०। मैं भी कसम खाकर एकरार करता हूं कि हर एक काम में आपकी मदद तब तक बराबर करता रहूंगा जब तक आप मेरे साथ या मेरे

का एक अपूर्व आनन्द मिल रहा है। बातें करती हुई जमना की निगाह उस

तरफ जा पडी जिधर से झरने का पानी बडी सफाई के साथ बहता हुआ आ रहा था और ऐसा मालूम होता था कि तिलिस्मी कारीगर ने इस पानी के ऊपर भी चाद की कलई चढा दी है। किसी आदमी का आहट पाकर जमना चौकी और बोली, "बहिन, देखो तो सही वह क्या है ? मै तो समझती हू कि कोई आदमी है।"

इन्दु०। मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है।

सरस्वती०। यद्यपि किसी आदमी का यहा तक आ पहुचना असभव है, परन्तु मै यह भी नही कह सकती कि यह आदमी नही कोई जानवर है।

जमना०। (जोर देकर) बेशक आदमी है।।

इन्दु०। देखो इसी तरफ चला आ रहा है, कुछ और इधर आ जाने से अब साफ मालूम होता है कि आदमी है, जरा रुक कर दबकता और आहट लेता हुआ आ रहा है इससे मालूम होता है कि हमारा दोस्त नही बल्कि दुश्मन है। देखो यह मेरी दाहिनी आख फडकी, इश्वर ही कुशल करे। (चौक कर) बहिन वह देखो उसके पीछे और भी एक आदमी मालूम पडता है।

सरस्वती०। (अच्छी तरह देख कर) हा ठीक तो है, दूसरा आदमी भी साफ मालूम पडता है, आश्चय नही कि कोई और भी दिखाई दे। बहिन, मुझे भी खुटका होता है और दिल गवाही देता है कि ये आने वाले हमारे दोस्त नही बल्कि दुश्मन है।

जमना०। बेशक ऐसा ही है, अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इन्दु०। इनसे मुकबला करना मुनासिब होगा या भाग कर अपने को छिपा लेना ? लो अब तो वे लोग बहुत नजदीक आ गये और मालूम होता है कि उन्होने हम लोगो को देख भी लिया।

जमना०। बेशक उन लोगो ने हमे देख लिया, चलो हमलोग भागकर मकान के अन्दर चले और दर्वाजा बन्द कर लें मुकावला करना ठीक न होगा।

इतना कह कर जमना मकान की तरफ तेजी के साथ चल पड़ी, सरस्वती तथा इन्दुमति ने भी उसका साथ दिया।

यह मकान देखने मे यद्यपि बहुत छोटा था मगर इसके अन्दर गुंजाइश बहुत ज्यादे थी और बनिस्बत ऊपर के इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन के अन्दर था। इसके रास्तो का पता लगाना अनजान आदमी के लिए कठिन ही नही बल्कि बिल्कुल ही असम्भव था। दो चार आदमी तो क्या पचासो आदमी इसके अन्दर छिप कर रह सकते थे जिनका पता सिवाय जानकार के कोई दूसरा नही लगा सकता। इस मकान के अन्दर कैसी कैसी कोठरिया, कैसे कैसे तहखाने और कैसी कैसी सुरगें या रास्ते थे इसे उस तिलिस्म से सबंध रखने वाला भी हर एक आदमी नही जान सकता था, परन्तु नारायण ने जो किताब जमना को दी थी उसमे वहा का कुल हाल अच्छी तरह लिखा हुआ था।

अब हम यह लिखते हैं कि वे दोनो आने वाले कौन थे जिन्हे देख कर जमना सरस्वती और इन्दुमति भाग कर घर मे चली गई थी।

वे दोनो भूतनाथ और तिलिस्मी दारोगा साहब थे। दारोगा भूतनाथ की मदद पर तैयार हो गया था और उसने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर ले चल कर जमना, सरस्वती और इन्दुमति को गिरफ्तार करा दूंगा तथा प्रभाकरसिंह को दूसरी दुनिया में पहुचा दूंगा। इसी तरह भूतनाथ ने भी दारोगा से वादा किया था कि महाराज जमानिया के भाई शंकरसिंह के मारने में मैं तुम्हारी मदद करूंगा और यह कार्रवाई इस ढंग से की जायगी कि किसी को इस बात का गुमान भी न होगा कि शंकरसिंह कब और कहा मारे गये या उन्हें किसने मारा इत्यादि।

यही सबब था कि वे दोनो इस समय तिलिस्म के अन्दर दिखाई दिए। यहा का बहुत कुछ हाल दारोगा को मालूम था मगर शंकरसिंह को यह आशा न थी कि दारोगा उनके साथ यहा तक बुरा बर्ताव कर गुजरेगा, अस्तु वे दारोगा की तरफ से बिल्कुल ही बेखबर थे।

दारोगा और भूतनाथ दोनो आदमी सूरत बदलने के अतिरिक्त चेहरे

-आदमियो को धोखा दिया चाहता है ।

भूत० । (बडी चाह के साथ) मै जरूर उसकी तस्वीर देखू गा और पहिचानू गा ।

भीम ने अपनी जेब से निकाल कर एक पीतल की डिबिया भूतनाथ के हाथ मे दी और कहा, "देखो हिफाजत से खोलो, इसी के अन्दर उसकी तस्वीर है ।"

भूतनाथ ने भीम के हाथ से डिबिया ले ली और दो कदम बढ कर चन्द्रमा की चादनी मे वह डिबिया खोलने लगा । डिबिया बडी मजबूती के साथ बन्द थी और हल्के हाथो से उसका खुलना कठिन था अस्तु गर्दन झुका कर और दोनो हाथो से जोर लगा कर भूतनाथ न वह डिबिया खोली । उसके अन्दर बहुत हल्की और गर्द के समान बारीक बुकनो भरी हुई थी जो झटके के साथ डिबिया खुलने के कारण उसमें से उछली और उड कर भूतनाथ की आख और नाक मे पड गई । वह बहुत ही तेज बेहोशी की बुकनी थी जिसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी ' वह तुरत चक्कर खाकर जमीन पर गिर पडा और बेहोश हो गया । भीम ने झपट कर अपनी डिबिया सम्हाली और भूतनाथ के हाथ से लेकर अपनी जेब मे रख ली, इसके बाद अपने लबादे मे भूतनाथ की गठरी बाधी और उसे पीठ पर लाद एक तरफ का रास्ता लिया ।

अब उधर का हाल सुनिये । भीम के साथ ही जाकर भूतनाथ तो बहुत दूर निकल गया मगर दारोगा अपनी जगह से न हिला । उसने मकान का दर्वाजा खोला और जमना सरस्वती तथा इन्दुमति को गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा । दर्वाजा खोलता हुआ वह एक दालान में पहुचा, जिसके दोनो तरफ दो कोठडिया थी और उन सभी कोठडियो के दर्वाजे किस तरह खुलते थे इसका पता केवल देखने मे नही लग सकता था । किसी खास तर्कीब से दारोगा ने बाई तरफ वाली कोठरी का दर्वाजा खोला और हाथ में नगी तलवार लिए हुए उसके अन्दर घुसा । यह एक छोटी सी सुरग थी जिसमें दस बाहर हाथ चल कर दारोगा एक बारहदरी में पहुँचा

जहा बिल्कुल ही अन्धकार था, सिर्फ दो तीन जगह किसी सूराख की राह से चन्द्रमा की रोशनी पड रही थी मगर उससे वहा का अन्धकार दूर नही हो सकता था।

दारोगा को विश्वास था कि जमना, सरस्वती और इन्दुमति जरूर इसी दालान में होगी और उनके हाथ मे किसी तरह का कोई हर्बा भी जरूर होगा, इसी ख्याल ने उसकी हिम्मत न पडी कि वह इस अन्धकार मे आगे की तरफ बढे अस्तु वह चुपचाप खडा रह कर वहा की आहट लेने लगा। कुछ ही देर बाद किसी के धीरे धीरे बोलने की आवाज उसके कान में आई और उसके बाद मालूम हुआ कि कई आदमी आपुस मे धीरे धीरे बातें कर रहे है। आवाज हल्की और नाजुक थी इसी लिए दारोगा समझ गया कि जरूर यह जमना सरस्वती और इन्दुमति हैं। दारोगा ऐयारी का छोटा सा बटुआ अपने कपडो के अन्दर छिपाये हुए था जिसमे मे उसने टटोल कर एक छोटी डिबिया निकाली, उस डिबिया में कई तरह के खटके और पुरजे लगे हुए थे। दारोगा ने एक खटका दबाया जिससे वह डिबिया चमकने लगी और उसकी रोशनी ने वहा के अन्धकार को अच्छी तरह दूर कर दिया। अब दरोगा ने देख लिया कि उसके सामने दालान में तीन औरतें हाथ मे खंजर लिए खडी है।

जमना सरस्वती और इन्दुमति को दारोगा अच्छी तरह पहिचानता न था मगर सुनी सुनाई बातो से वह अनुमान जरूर कर सकता था। इस मौके पर तो उसे यह मालूम ही था कि यहा पर जमना सरस्वती और इन्दुमति विराज रही है और ये तीनो औरत अपनी असल सूरत में भी थी इसलिए दारोगा को विश्वास हो गया कि जमना सरस्वती और इन्दुमति ये ही है। दारोगा ने उसी जगह खडे रह कर जमना की तरफ देखा और कहा, "तुम लोग मुझसे व्यर्थ ही डर कर भाग रही हो! मै तुम्हारा दुश्मन नही हू और न तुम्हारे किसी दुश्मन का भेजा हुआ हू।"

जमना०। फिर तुम कौन हो और हम लोगो का पीछा क्यो कर रहे हो?

दारोगा०। मै इस तिलिस्म का पहरेदार हू और प्रभाकरसिंह का भेजा

हुआ तुम लोगो के पास आया हू। उनका हुक्म है कि तुम तीनो को अपने साथ ले जाकर उनके पास पहुँचा दूं !

जमना०। तुम्हारी बातो का हमे क्योंकर विश्वास हो ? क्या उनके हाथ की कोई चीठी भी लाये हो ?

दारोगा०। हा, मै चीठी लाया हू। उन्होने खुद ही ख्याल करके एक चीठी भी अपने हाथ से लिख कर दी है।

जमना०। अगर ऐसा है तो लाओ वह चीठी मुझे दो, मै पहिले उसे पढ लू तब तुम्हारी बातो पर विचार करु।

दारोगा०। हा लो मै चीठी देता हू यह रोशनी जो मेरे हाथ मे है ज्यादे देर तक ठहर नही सकती इसलिए पहिले मै दूसरी रोशनी का इन्तजाम कर लू तब चीठी तलाश कर दू ।

इतना कह कर दारोगा ने वह डिबिया जमीन पर रख दी और उसी की रोशनी मे उसने अपना बटुआ खोल कर एक खाकी र ग की मोमबत्ती निकाली और चकमक से आग पैदा करके उससे रोशनी करने बाद वह डिबिया बन्द करके अपने बटुए मे रख ली। अब दालान भर मे उसी मोमबत्ती की रोशनी फैली हुई थी। वह मोमबत्ती कुछ खास तर्कीब और कई दवाइयो के योग से तैयार की गई थी। उसका र ग खाकी था और बलने पर उसमे से बेहोशी पैदा करने वाला बहुत ज्यादा धूआ निकलता था। दारोगा ने यह सोच कर कि शायद आज की कार्रवाई मे इस मोमबत्ती की जरूरत पडे, पहिले ही से अपने बचाव का बन्दोबस्त कर लिया था अर्थात् किसी तरह की दवा खा या सूघ ली थी मगर जमना सरस्वती और इन्दुमति अपने को इस धूए मे बचा नही सकती थी और न इस बात का उन्हे गुमान ही हुआ कि इस बेहिसाब धूआ पैदा करने वाली मोमबत्ती मे कोई खास बात है।

दारोगा ने मोमबत्ती बाल कर जमीन पर जमा दी और उसकी रोशनी मे प्रभाकरसिंह के हाथ की चीठी खोजने के बहाने से अपना बटुआ टटोलने लगा।

कभी बटुए की तलाशी लेता, कभी अपने जेवों को टटोलता और कभी कमर में देख कर बनावटी ताज्जुब से हाथ पटकता और कहता कि 'न मालूम चीठी कहाँ रख दी है ! मेरे ऐसा बेवकूफ भी कोई न होगा ! भला ऐसी जरूरी चीठी को इस तरह रखना चाहिए कि समय पर जल्दी मिल न सके ।'

चीठी की खोज और कपडो की तलाशी में दारोगा ने बहुत देर लगा दी और तब तक उस मोमबत्ती का धूंआ तमाम कमरे में फैल गया। बेचारी जमना सरस्वती और इन्दुमति चीठी की चाह में बडी उत्कण्ठा से दारोगा की हरकतो को खडी खडी देख रही थी मगर उन लोगो को यह नही मालूम होता था कि इस धूए की बदौलत हम लोगो की हालत बदलती चली जा रही है ।

थोडी देर ही में वे तीनो बेचारी औरतें बेहोश होकर जमीन पर लेट गई और तब दारोगा ने बडी फतहमन्दी और खुशी की निगाह से उन तीनो की तरफ देखा ।

बारहवां बयान

यह नही मालूम होता कि कृष्णपक्ष है या शुक्लपक्ष अथवा रात है या दिन क्योंकि हम इस समय जिस स्थान पर पहुचते हैं वहा चिराग या इसी तरह की किसी रोशनी के सिवाय और किसी सच्चे उजाले या चांदनी का गुजर नही हो सकता । हम यह भी नही कह सकते कि यह कोई तहखाना है या सुरंग, अन्धकारमयी कोई कोठडी है या बालाखाना, सिर्फ इतना ही देख रहे है कि एक मामूली कोठडी में जिसमें सिवाय एक मद्धिम चिराग के और किसी तरह की रोशनी नही है, जमना, सरस्वती और इन्दुमति बैठी हुई गर्म गर्म आंसू गिरा रही है, जिनका विशेष पता उनकी हिचकियो से लग रहा है । उन तीनो के पैर बंधे हुए है और किसी मोटी रस्सी के सहारे वे एक लकडी के खम्भे के साथ भी बंधी हुई हैं जिसमें पैर से चलना तो असम्भव ही है खिसक कर भी दो कदम इधर उधर न जा सकें। उन तीनो

ामने बैठे हुए तिलिम्मी दारोगा पर निगाह पडने ही से विश्वास होता
क इन तीनो पर इतनी सख्ती होने का कारण यही बेईमान दारोगा है।
पहिले क्या क्या हो चुका है सो हम कुछ नही कह सकते परन्तु इस
य हम देखते हैं कि वे तीनो अपनी बेबसी और मजबूरी पर जमीन की
ह देखती हुई गर्म गर्म आसू गिरा रही हैं और इस अवस्था मे कभी
सर उठा कर दारोगा की तरफ देख भी लेती है।

कुछ देर तक सन्नाटा रहने के बाद जमना ने एक लम्बी सास ली और
उठा कर दारोगा की तरफ देख धीमी आवाज में कहा—"बहुत देर
सोचने के बाद अब मैं आपको पहिचान गई और जान गई कि आप
ानिया राज के कर्ताधर्ता दारोगा साहब हैं।"

दारोगा०। बेशक मैं वही हू, इस समय अपने आपको छिपाना नहीं
ता इसलिए असली सूरत में तुम लोगो के सामने बैठा हुआ हूं।

जमना०। ठीक है, तो मै समझती हू कि उस तिलिस्म के अदर हम
ों को बेहोश करके यहा ले आने वाले भी आप ही हैं।

दारोगा०। बेशक।

जमना०। आखिर इसका कारण क्या है। हम लोगो ने आपका क्या
ाडा है जो आप हमारे साथ इतनी सख्ती का बर्ताव कर रहे है?

दारोगा०। मेरा तो तुम लोगो ने कुछ भी नही बिगाडा है मगर मेरे
त भूतनाथ को तुम लोग व्यर्थ सता रही हो इसलिए मुझे मजबूर
र तुम लोगो के साथ ऐसा बर्ताव करना पड़ा।

जमना०। (क्रोध में आकर कुछ तेजी से) क्या भूतनाथ को हम लोग
ा रही हैं। क्या वह हमलोगो को मिट्टी मे मिला कर भी अभी तक बाज
ो आना और बराबर जख्म लगाता नही जा रहा है।।

दारोगा०। कदाचित् ऐसा ही हो परन्तु उसका कहना तो यही है कि
ा लोग व्यर्थ ही उसे कलकित करके दुनिया में रहने के अयोग्य बनाने की
टा कर रही हो।

जमना०। आह। बडे अफसोस की बात है कि आप अपने मुह से ऐसे

शब्द निकाल रहे हैं और अपने को उन बातो से पूरा पूरा अनजान साबित किया चाहते हैं ?

दारोगा० । सो क्या ? मुझे इन बातो से क्या सम्बन्ध ?

जमना० । अगर कुछ सम्बन्ध नही है तो हम लोगो को वहा से क्यो कैद कर लाये ?

दारोगा० । केवल अपने दोस्त की मदद कर रहा हू ।

जमना० । और आप इस बात को नही जानते कि हमारा पति इसी दुष्ट के हाथो से मारा गया है ? और क्या आपकी मण्डली में यह बात मशहूर नही है ?

दारोगा० । हाँ, दो चार आदमी ऐसा कहते हैं, परन्तु भूतनाथ का कथन है कि इसका कारण तुम ही हो, अर्थात् केवल तुम ही लोगो ने यह बात व्यर्थ मशहूर कर रखी है । मुझे स्वयं इस विषय में कुछ भी नही मालूम है ।

जमना० । (ताने के ढग पर) बहुत सच्चे ! अगर यह बात आपको मालूम नहीं है तो भूतनाथ आपका दोस्त भी नही है ।

दारोगा० । भूतनाथ मेरा दोस्त जरूर है और वह मुझसे कोई बात छिपा नही रखता । खैर थोडी देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि तुम्हारा ही कहना ठीक है तो मैं तुमसे पूछता हू कि तुम भूतनाथ को बदनाम करके क्या फायदा उठा सकती हो ? भूतनाथ इस समय स्वतन्त्र है किसी रियासत का तावेदार नही जो उस पर नालिश कर सकोगी, फिर ऐसी अवस्था में उससे दुश्मनी करके तुम अपना ही नुकसान कर रही हो, इसके अतिरिक्त मैं खूब जानता हूं कि भूतनाथ तुम्हारे पति का सच्चा और दिली दोस्त था और तुम्हारे पति भी उसको ऐसा ही मानते थे, ऐसी अवस्था में यह कब सम्भव है कि स्वयं भूतनाथ अपने ही हाथो से तुम्हारे पति को मारे । ऐसा करके वह क्या फायदा उठा सकता था ! क्या तुमको विश्वास है कि भूतनाथ ने तुम्हारे पति को मारा ? अच्छा तुम बताओ कि ऐसा करके उसने क्या फायदा उठाया ?

जमना० । हम लोगो ने एक तौर पर इस दुनिया ही को छोडा हुआ है और बिल्कुल मुर्दो की सी हालत मे पहाडो खोह और कन्दराओ मे रह कर जिन्दगी के दिन बिता रही है, इसलिए आज कल की दुनिया का हाल मालूम नही है अस्तु मै नही कह सकती कि उसने मेरे पति को मार कर क्या फायदा उठाया, परन्तु इतना मै जरूर जानती हूँ कि मेरे पति की मौत भूतनाथ के ही हाथ से हुई है ।

दारोगा० । यह बात तुमसे किसने कही ?

जमना० । सो मै तुमसे नही कह सकती ?

दारोगा० । खैर न कहो, तुम्हे अख्तियार है, मगर मैं फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि तुम्हारा ख्याल गलत है । भूतनाथ ने तुम्हारे पति को कदापि नही मारा और कदाचित् धोखे मे ऐसा हो भी गया हो तो धोखे की बात पर सिवाय अफसोस करने और कुछ भी उचित नही है। कई दफे ऐसा होता है कि धोखे मे मा का पैर बच्चे के ऊपर पड जाता है। तो क्या इसका बदला बच्चे को मा से लेना चाहिए ? कभी नही । तुम खुद जानती हो कि भूतनाथ से जो वास्तव में गदाधरसिंह है तुम्हारे पति की कैसी दोस्ती थी ।

जमना० । बेशक मै इस बात को जानती हूँ और यह भी मानती हूँ कि कदाचित् धोखे हो मे भूतनाथ से वह काम हो गया, परन्तु आप ही बताइए कि क्या इस अधर्म को छिपाने के लिए भूतनाथ को हम लोगो का पीछा करना चाहिए ?

दरोगा० । हा, यह बेशक उसकी भूल है, इसके लिए मै उसे ताडना दूगा, परन्तु मैं तुम्हे सच्चे दिल और हमदर्दी के साथ राय देता हू कि तुम भूतनाथ के साथ दुश्मनी का खयाल छोड दो नही तो पछताओगी और तुम्हारा नस्त नुकसान होगा क्योकि तुम भूतनाथ का मुकाबला नही कर सकती, तुम अबला और निर्बल ठहरी और वह होशियार ऐयार तिस पर उसके दोस्त भी बहुत गहरे लोग है ।

जमना० । मै जानती हू कि उसके और हमारे बीच हाथी और चिऊटी

का सा फर्क है और आप ऐसे समर्थ लोग उसके दोस्त भी है और इस बात को भी मानती हू कि मैं उसका कुछ विगाड नही सकती, परन्तु आप ही वताइये कि ऐसी अवस्था मे वह हम अवलाओ से डरता ही क्यो है ?

दारोगा० । सिर्फ वदनामी के खयाल से डरता है, क्योकि अगर यह झूठा कलक उस पर लग जायगा और वह दयाराम का घाती मशहूर हो जायगा तो फिर वह दुनिया मे किसी को मु ह न दिखा सकेगा और अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह खुशी से किसी रियासत मे रह कर अपनी जिन्दगी विता सकेगा और जन्म भर तुम्हारा मददगार भी वना रहेगा ।

जमना० । मुझे उसकी मदद की कोई जरूरत नही है और न मेरे दिल का वहुत वडा जख्म जो उसके हाथो से पहुँचा है आराम हो सकता है । समझ लीजिए कि अव चूहे और विल्ली मे दोस्ती कायम नही हो सकती ।

दारोगा० । यह समझना तुम्हारी नादानी है । मै कह चुका हू कि ऐसा करने से तुम्हे सख्त तकलीफ पहुचेगी ।

जमना० । वेशक ऐसा ही है, तभी तो मै कैद करके यहा लाई गई हू ं ।

दारोगा० । तुम खुद ही सोच लो कि यह कैसी वात है, अगर तुम मार ही डाली जाओगी तो फिर दुनिया मे उसके लिए उससे वदला लेने वाला कौन रह जायगा ?

जमना० । मेरे पीछे उसका पाप उससे वदला लेगा या इस वात के मशहूर हो जाने ही से वह दीन दुनिया के लायक न रहेगा और यही उस वात का वदला समझा जायगा । आपने उसकी मदद की है और इसलिए हम लोगो को यहा कैद कर लाये है तो वेशक हम लोगो को मार कर अपना कलेजा ठण्डा कर लीजिए, हम लोग तो खुद अपने को मुर्दा समझे हुए है मगर इस वात को समझ रखियेगा कि हम लोगो के मारे जाने से उसकी वदनामी का झण्डा जो वडी मजवूती के साथ गाडा जा चुका है गिर न पडेगा और उन झगडे के उठाने वाले तथा उससे वदला लेने वाले कई जवर्दस्त आदमी कायम रह जायगे ।

दारोगा० । यह तुम्हारा ख्याल ही ख्याल है, जिस तरह तुम उसकी

केवल इच्छामात्र से गिरफ्तार कर ली गई हो उसी तरह उसके और दुश्मन भी बात की बात में गिरफ्तार हो जायगे ।

जमना० । इस बात को मै नही मान सकती ।

दारोगा० । नही मानोगी तो मैं मना दूगा क्योकि इसका काफी सबूत मेरे पास मौजूद है ।

जमना० । हा, अगर मेरा दिल भर जाने के लायक कोई सबूत मिल जायगा तो मैं जरूर मान जाऊगी ।

दारोगा० । अच्छा अच्छा, पहिले मै तुमको इस बात का सबूत दे लूगा तब तुमसे बात करूगा ।

इतना कह कर दारोगा अपनी जगह से उठ खडा हुआ और उस जगह गया जहा खम्भे के साथ ये तीनो औरतें बधी हुई थी । उस खम्भे में से जमना सरस्वती और इन्दुमति को खोला मगर उनकी हथकडी तथा बेडी नही उतारी, हा बेडी की जजीर जरा ढीली कर दी जिसमें वे धीरे धीरे कुछ दूर तक चल सकें । इसके बाद उन तीनो को लिए सामने की दीवार के पास गया जहा एक छोटा सा दर्वाजा था और उसमें मजबूत ताला लगा हुआ था । दारोगा ने कमर में से ताली निकाल कर दर्वाजा खोला और उन तीनो को लिएहुए उसके अन्दर घुसा । रास्ता सुरग की तरह था जो कि दस बारह कदम जाने के बाद खतम हो जाता था अस्तु उसी अन्धकारमय रास्ते में उन तीनो को लिए हुए दारोगा चला गया । जब रास्ता खतम हुआ तब उसने एक खिडकी खोली जो कि जमीन मे छाती बराबर ऊँची थी । उस खिडकी के खुलने से उजाला हो गया और तब दारोगा ने उन औरतों को नीचे की तरफ झाक कर देखने के लिए कहा ।

उस समय जमना सरस्वती और इन्दुमति को मालूम हुआ कि वे तीनो जमीन के अन्दर किसी तहखाने में कैद नही हैं बल्कि उनका कैदखाना किसी मकान के ऊपरी हिस्से पर है ।

खिडकी की राह से नीचे की तरफ झांक कर उन्होने देखा कि एक छोटा ना मामूली नजरबाग है जिसके चारो तरफ की दीवारें बहुत ऊची

ची है। उस बाग में एक बेडी से मजबूर प्रभा-
रसिंह बंधे हुए हैं। उन्हें देखते ही इन्दुमति का कलेजा काँप गया और
मना तथा सरस्वती के रोंगटे खडे हो गये। उस समय दारोगा ने जमना
की तरफ देख कर कहा —

दारोगा०। तुम लोगों ने अच्छी तरह देख लिया कि तुम्हारे प्यारे प्रभा-
रसिंह जो तुम लोगों के बाद भूतनाथ पर कलक लगा सकते थे तुम लोगों के
साथ ही गिरफ्तार कर लिए गए, बताओ अब तुम्हें किस पर भरोसा है?

जमना०। भरोसा तो हमें केवल ईश्वर पर ही है मगर फिर भी इतना
जरूर कहूँगी कि मेरे मददगार कोई और ही लोग हैं जिनका नाम तुम्हें
किसी तरह भी मालूम नहीं हो सकता।

दारोगा०। तुम्हारा यह कहना भी व्यर्थ है, मुझसे और भूतनाथ से
कुछ भी छिपा नहीं है।

इतना कह कर दारोगा ने खिडकी बन्द कर दी और वहाँ पुन अन्धकार हो
गया। इसके बाद उन तीनों को लिए हुए उसी पहिले स्थान पर चला आया
और उसी खम्भे के साथ पुन तीनों को बाँध कर पैर की जंजीर कस दी।

प्रभाकरसिंह को कैद की हालत में देख कर वे तीनों बहुत ही परेशान
हुई और उनके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। दारोगा ने
पुन जमना की तरफ देख कर कहा —

दारोगा०। मैं फिर कहता हूँ कि भूतनाथ से दुश्मनी रख कर तुम लोग
इस दुनिया में सुखी नहीं रह सकतीं।

जमना०। (ऊँची साँस लेकर) अब मेरे लिए इस दुनिया में क्या रक्खा
है। जिस सुख के लिए मैं जीवन की लालसा कर सकती हूँ, दुनिया में
अगर चाहती हूँ तो केवल इस बात को कि भूतनाथ से बदला लूँ।

दारोगा०। सो तो नहीं जानता और न भूतनाथ ने वास्तव में तुम्हारा
कुछ बिगाड़ा ही है। तुम खुद सोच लो और समझ लो, मैं सच कहता हूँ
कि भूतनाथ अब भी तुम्हारी खिदमत करने के लिए हाजिर है। अगर तुम
उसे अपना ताबेदार मान लोगी तो कल दिनों में वह उद्योग करके तुम्हारे

प त के घातक को भी खोज निकालेगा, मगर तुम तो अव तुम लोग उसके पजे मे आ ही चुकी हो। तुम लोग मुफ्त मे अपनी जान दोगी, और अपने साथ वेकसूर इन्दुमति और प्रभाकरसिह को भी वर्बाद करोगी, क्योकि इन दोनों की जान का सम्वन्ध भी तुम्हारी जान के साथ है। मै तुमको दो घण्टे की मोहलत देता हू तब तक तुम अपने भले बुरे को अच्छी तरह सोच लो, दो घण्टे के वाद जव मैं आऊगा तो भूतनाथ भी मेरे साथ होगा, उस समय या तो तुम लोग भूतनाथ को अपना सच्चा दोस्त समझ कर उसके निर्दोष होने का एक पत्र उसे लिख दोगी और या फिर दूसरी अवस्था मे तुम तीनों ठढे ठढे दूसरी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओगी और प्रभाकरसिह भी तुम तीनो के साथ ही साथ खबरदारी के लिए रवाना कर दिये जायगे।

इतना कह कर दारोगा वहा से रवाना हो गया और जब वह वाहर हो गया तो पुन उस जहन्नुमो कैदखाने का दर्वाजा वन्द हो गया और वाहर से भारी जजीर के खडकने की आवाज आई।

॥ तीसरा हिस्सा समाप्त ॥

२४ वा सस्करण] १९६९ [११०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।